भोजपुरी ग्राम गीत

सम्पादक

श्री कृष्णदेव उपाध्याय

एम० ए०, साहित्यरत्न

भूमिका-लेखक

श्री बलदेव उपाध्याय

एम० ए०, साहित्याचार्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग
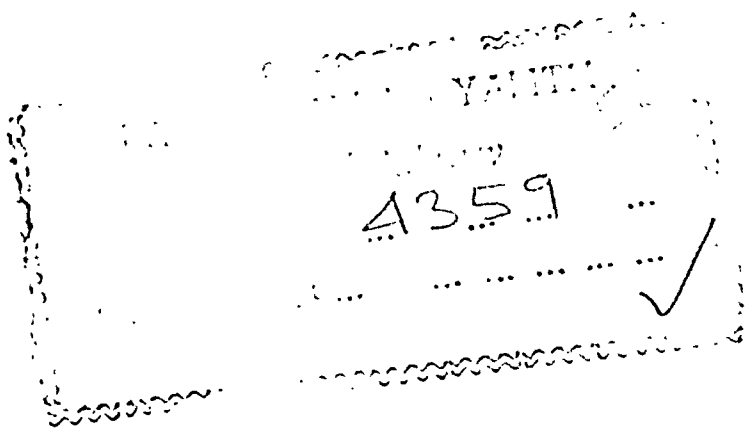
प्रथम संस्करण :: ५०० :: मूल्य ४॥)

मुद्रक—मगनकृष्ण दीक्षित, दीक्षित प्रेस, प्रयाग

प्रकाशकीय वक्तव्य

हमारे ग्राम-साहित्य में, जो प्रायः लिपिबद्ध नहीं है, हमारे देश की संस्कृति कितनी सुरक्षित है, इसका अनुमान शिक्षितवर्ग को अधिकाधिक होता जा रहा है। इस साहित्य में कवित्व और रस भी थोड़ा नहीं है। यह हर्ष का विषय है कि पिछले कुछ वर्षों में हमारे कई उत्साही और प्रेमी साहित्यिकों ने ग्राम-गीतों के कई संग्रह प्रस्तुत किए हैं। इस वर्ष ही सम्मेलन से मैथिली तथा राजस्थानी लोकगीतों के संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। यह तीसरा भोजपुरी गीतों का संग्रह भी पाठकों के सामने है। योग्य संपादक ने सुरुचिपूर्ण ढंग से गीतों का संकलन किया है। श्री बलदेव उपाध्यायजी ने एक विद्वत्तापूर्ण भूमिका लिखकर पुस्तक का महत्त्व बढ़ा दिया है। गीतों के संग्रह में संपादक की पूजनीया माता श्री मूर्ति देवीजी ने सहायता दी है।

श्रीमान् बड़ौदा-नरेश स्वर्गीय सर सयाजी राव गायकवाड़ महोदय ने बंबई सम्मेलन में उपस्थित होकर पाँच सहस्र रुपये की सहायता सम्मेलन को प्रदान की थी। उस सहायता से सम्मेलन ने 'सुलभ साहित्यमाला' संचालित कर कई सुन्दर पुस्तकों का प्रकाशन किया है। प्रस्तुत पुस्तक भी उसी पुस्तक-माला के अंतर्गत प्रकाशित हो रही है।

रामचंद्र टंडन
साहित्य मंत्री

विषय-सूची

भूमिका भाग

खण्ड १

खण्ड २

खण्ड ३

संग्रह भाग

प्रस्तावना

१

(१) ग्राम गीतों का परिचय तथा विशेषता

एक समय था जब संसार के समग्र देशों में मनुष्य प्रकृति देवी का उपासक था; प्राकृतिक जीवन व्यतीत करता था। उस समय उसका आचार-विचार, रहन-सहन, सब सरल, सहज तथा स्वाभाविक थे। वह आडम्बर, दिखावा तथा कृत्रिमता से कोसों दूर रहता था। उसके कोश में 'कृत्रिमता' शब्द का एकदम अभाव था। वह तो स्वाभाविकता की गोद में पला हुआ जीव था। उसके समस्त कार्य—उठना-बैठना, बोलना-चालना, हँसना-गाना, स्वाभाविकता में पगे रहते थे। कविता उस युग में भी होती थी। चित्त के आह्लाद के निमित्त कविता की रचना उस समय भी होती थी और आज भी होती है, परन्तु दोनों युगों की कविताओं में जमीन आसमान का अन्तर है। आज की कविता नियम की पाबन्दी में जकड़ी हुई है, छन्द की नपी तुली नालियों से प्रवाहित होती है, अलङ्कार के बोझिल भार से वह दबी हुई है, परन्तु जिस प्राचीन युग की चर्चा हम कर रहे हैं उस युग की कविता का प्रधान गुण था स्वाभाविकता, स्वच्छन्दता तथा सरलता। वह उतनी ही स्वाभाविक थी जितना जंगल का फूल; उतनी ही स्वच्छन्द थी जितनी आकाश में उड़ने वाली चिड़िया; वैसी ही सरल थी जैसे गंगा का प्रवाह। उस समय की कविता का जो अंश आज अवशिष्ट रह गया है वही हमें ग्राम-साहित्य, लोककाव्य अथवा लोकगीत के रूप में उपलब्ध हो रहा है।

भारतवासियों का जीवन सदा से संगीतमय रहा है। शायद ही दूसरी कोई जाति होगी जिसके जीवन पर संगीत का इतना प्रचुर प्रभाव पड़ा हो। प्रत्येक उत्सव, पर्व, त्योहार के अवसर पर समयोचित गीत गाकर चित्त-

विनोद करना हमारी दिनचर्या का एक आवश्यक अङ्ग है। पुत्र-जन्म, यज्ञोपवीत, विवाह, द्विरागमन आदि हमारे समस्त उत्सवों के अवसर पर स्त्रियाँ अपने कोमल कल-कण्ठों से रमणीय गीत गाकर अपना तथा उपस्थित मण्डली का पर्याप्त मनोरञ्जन किया करती हैं। यह प्रथा आधुनिक न होकर अत्यन्त प्राचीन है। वैदिक युग में भी इन पर्वों के अवसरों पर मनोहर 'गाथाओं' के गाने का निर्देश वैदिक ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। मैत्रायणी संहिता (३ । ७ । ३) में विवाह के अवसर पर गाथा गाने की विधि उल्लिखित है। पारस्कर गृह्यसूत्र, (१ काण्ड, ७ कण्डिका) में विवाह के अवसर पर और आश्वलायन गृह्यसूत्र में सीमन्तोन्नयन के समय वीणा पर गाथा (गीत) गाने का प्रचलन निर्दिष्ट है। अतः विवाह के समय वैदिककाल में स्त्रियाँ सुन्दर गाथाएँ गाती थीं और वह परम्परा आज भी अक्षुण्ण रीति से चल रही है।

वाल्मीकीय रामायण में रामजन्म के समय तथा श्रीमद्भागवत (दशम स्कन्ध) में कृष्ण जन्म के अवसर पर स्त्रियों के एकत्र होकर मनोरञ्जक सामयिक गीतों के गाने का स्पष्ट वर्णन मिलता है। इतना ही नहीं, मेहनत-मज़दूरी करने के (चक्की पीसना, धान कूटना, ढेंकी कूटना, खेती निराना आदि) समय जिस प्रकार स्त्रियाँ झुंड बाँध कर गीत गाकर अपनी थकावट हलका किया करती हैं, प्राचीनकाल में भी ठीक इसी प्रकार होता था। प्रसिद्ध कवयित्री विज्जका (१२ वीं सदी) ने धान कूटनेवालियों के गीत गाने का जो वर्णन किया है, वह बड़ा ही रोचक है। स्त्रियाँ धान कूट रही हैं और साथ-साथ गाना भी गा रही हैं। मूसल के उठाने और गिराने के कारण उनकी चूड़ियाँ झनझना रही हैं, उरःस्थल उनका हिल रहा है; मीठी हुंकार की आवाज़ तथा चूड़ियों के शब्द से मिलकर उनका गाना विचित्र आनन्द पैदा कर रहा है—

विलासमसृणोल्लसन्मुसल लोलदोः कन्दली-
परस्परपरिस्खलद्वलयनिःस्वनोद्वन्धुराः ॥
लसन्ति कलहुङ्कृति प्रसभकम्पिरोरःस्थल-
त्रुटद्गमक संकुलाः कलमकण्डनी गीतयः ॥

इन लोकगीतों का लिखित गीतों से पार्थक्य नितान्त स्पष्ट है। लिखित

गीत किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा किसी अवसर को लक्ष्य में रखकर निर्मित हुए हैं, वे छन्द की चहारदिवारी के भीतर बन्द होने को स्वच्छन्दता की विहीन हैं तथा रचयिता के मस्तिष्क की उपज होने से व्यक्तिगत भावों का दिग्दर्शन कराते हैं। परन्तु लोकगीतों की गति-विधि दूसरे ही ढंग की है। न तो वे लिपिबद्ध होते हैं, न उनके रचयिता का ही पता होता है। स्त्री-पुरुषों की जिह्वा ही उनकी आवासस्थली है। कृत्रिमता उनमें छूकर भी न मिलेगी। उनमें मिलेगी सरलता और स्वाभाविकता। जिन भावों में तनिक भी बनावटीपन नहीं है और जो मानव प्रकृति के साथ जन्मतः सम्बद्ध हैं उन्हीं भावों का प्रकाश हमें इन गीतों में मिलता है। उनमें एक विचित्र मिठास मिलती है, जिसके कारण जो कोई इन्हें एक बार भी चख लेता है, वह इनके स्वाद को जन्म भर भूल नहीं सकता। वैयक्तिकता के स्थान पर इनमें सार्वजनीनता विद्यमान रहती है। गीतों में वर्णित भाव किसी एक व्यक्ति के हृदय के उच्छ्वास नहीं होते, प्रत्युत उनमें उस समाज के समस्त व्यक्तियों के हृद्गत भाव अभिव्यक्त होते हैं। यही कारण है कि इनमें हृदय में घर कर लेने का, मर्मस्थल को स्पर्श करने का विशेष गुण पाया जाता है। अलंकृता लिखित कविता आँखों में चकाचौंध जरूर पैदा कर देती है, परन्तु वह हृदय में वह मोहकता पैदा नहीं कर सकती जो सरल कविता अनायास सम्पादन कर सकती है। ये लोकगीत उसी प्रकार स्वाभाविक हैं जैसे जंगल के फूल, उसी भाँति मीठे हैं जैसे गन्ने का रस। महाकवि राजशेखर ने प्राकृत कविता की जो दिल खोलकर प्रशंसा की है वह इन लोकगीतों के विषय में बिल्कुल ठीक जँचती है।

> यद्योनिः किल संस्कृतस्य, सुदृशांजिह्वासु यन्मोदते,
> यत्र श्रोत्रपथावतारिणि कटुर्भाषाक्षराणां रसः।
> गद्यं चूर्णपदं पदं रतिपते स्तत् प्राकृतं यद्वच-
> स्तान लाटान् ललिताङ्गि पश्यनुदतो दृष्टेर्निमेषव्रतम्
>
> (बालरामायण—१० अङ्क, ७८ पद्य)

ठीक! बहुत ठीक! यदि एक बार भी इन रसमय लोकगीतों की अंगूरी

शराब का मज़ा ले लिया जाय, तो क्या मजाल कि वह जीभ कृत्रिम गीतों की निबौरी की ओर तनिक भी लगे ! "जीभ निबौरी क्यों लगे बौरी चाखि अँगूर ।"

(२) लोक-गीत की भारतीय परम्परा

भारतीय साहित्य में लोकगीत की उत्पत्ति तथा विकास की कहानी बड़ी मनोरञ्जक है। किस प्रकार सुदूर प्राचीन काल में लोकगीत का प्रथम प्रचार हुआ और किस प्रकार वह भिन्न-भिन्न शताब्दियों से होकर वर्तमान अवस्था तक पहुँच गया है ? यह विषय नितान्त विचारणीय, मननीय तथा व्यापक है। इसके लिए अलग एक बड़े अध्ययन की जरूरत है। केवल प्रधान बातें पुरातत्त्व के प्रेमी पाठकों के सामने पेश की जा रही हैं।

प्राचीन साहित्य में जिन गाथाओं का उल्लेख स्थान-स्थान पर पाया जाता है, वे ही लोकगीत की पूर्व प्रतिनिधि हैं। 'गाथा' का अर्थ है पद्य या गीत और इस अर्थ में इसका व्यवहार ऋग्वेद के अनेक मन्त्रों में पाया जाता है (ऋग्वेद ८ । ३२ । १ = कण्व इन्द्रस्य गाथया, ८ । ७१ । १४, ८ । ६८ । ६; ६ । ६६ । ४) । गानेवाले के अर्थ में 'गाथिन्' शब्द का व्यहार ऋग्वेद (१ । ७ । १) में किया गया है (इन्द्रमिद गाथिनो बृहत्) । 'गाथा' का प्रयोग एक प्रकार के विशिष्ट साहित्य के अर्थ में ऋग्वेद (१० । ८५ । ६) में ही किया गया है जहाँ इसे रैभी और नाराशंसी से अलग निर्दिष्ट किया गया है। ब्राह्मण और आरण्यक में गाथाओं का विशिष्ट उल्लेख उपलब्ध होता है। ऐतरेय ब्राह्मण (७ । १८) ने ऋक् और गाथा में पार्थक्य दिखलाया है—ऋक् देवी होती थी और गाथा मानुषी अर्थात् गाथाओं की उत्पत्ति में मनुष्य का उद्योग ही प्रधान कारण होता था। ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुशीलन से यही प्रतीत होता है कि गाथाएँ ऋक्, यजुः और साम से पृथक् होती थीं, अर्थात् गाथाओं का व्यवहार मंत्र के रूप में नहीं किया जाता था। अतः प्राचीन काल में किसी विशिष्ट राजा के किसी अवदान—सत्कृत्य—को लक्षित कर जो गीत लोक-समाज में प्रचलित रूप से गाये जाते थे वे ही 'गाथा' नाम से साहित्य का एक पृथक् अंग माने जाते थे। निरुक्त (४ । ६) में दुर्गाचार्य

ने गाथा का यह अर्थ स्पष्ट रूप से दिखलाया है—स पुनरितिहास ऋग्बद्धो गाथा बद्धश्च। ऋक् प्रकार एव कश्चित् गाथेत्युच्यते गाथाः शंसति, नाराशंसीः शंसति इति उक्तं गाथानां कुर्वीतेति। आशय है कि वैदिक सूक्तों में कहीं-कहीं जो इतिहास उपलब्ध होता है, वह कहीं ऋचाओं के द्वारा और कहीं गाथाओं के द्वारा निबद्ध होता है। ऋचाओं के समान गाथा भी छन्दोबद्ध होती है।

वैदिक गाथाओं के नमूने शतपथ ब्राह्मण (१३।५।४, १३।४।३।८) तथा ऐतरेयब्राह्मण (८।४) में उपलब्ध होते हैं जिनमें अश्वमेध याग करने वाले राजाओं के उदात्त चरित्र का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। ऐतरेयब्राह्मण में ये गाथाएँ कहीं केवल श्लोक नाम से निर्दिष्ट हैं और कहीं यज्ञ-गाथाएँ कहीं गई हैं। एक-दो गाथाओं का निरीक्षण कीजिए—

जन्मेजय के विषय में—

आसन्दीवति धान्यादं रुक्मिणं हरितस्रजम्
अश्वं बबन्ध सारङ्गं देवेभ्यो जन्मेजयः ॥

दौष्यन्ति (दुष्यन्तपुत्र) भरत के विषय में—

हिरण्येन परीवृतान् शुक्लान् कृष्णदतो मृगान्
मष्णारे भरतोऽददाच्छतं बद्वानि सप्त च ॥
अष्टासप्ततिं भरतो दौष्यन्ति र्यमुनामनु।
गङ्गायांवृत्रघ्नेऽबध्नात् पञ्च पञ्चाशतं हयान् ॥
महाकर्म भारतस्य न पूर्वे नापरे जनाः
दिवं मर्त्य इव हस्ताभ्यां नोदापुः पञ्च मानवाः ॥

इन ऐतिहासिक गाथाओं की परम्परा महाभारत-काल में भी अक्षुण्ण दीख पड़ती है। इसी दुष्यन्त-पुत्र भरत के सम्बन्ध में अनेक अन्य गाथाएँ दी गई हैं जो नितान्त प्राचीन प्रतीत होती हैं (महाभारत आदि पर्व ७४ अ० ११०—११३)। ऐतरेय वाली गाथाएँ ठीक उसी रूप में श्रीमद्भागवत के सप्तम स्कंद में भी उपलब्ध होती हैं।

ये गाथाएँ राजसूय के अवसर पर गाई जाती थीं, परन्तु विवाह के अवसर पर भी गाथा के गाने का विधान मैत्रायणी संहिता (३।७।३) में दिया गया है और इसी नियम के अनुसार पारस्कर ने गृह्यसूत्र में (१।७) विवाह-विषयक दो गाथाएँ दी हैं:—अथ गाथां गायति:

सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवती ।
या त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः ।
यस्यां भूतं समभवद् यस्यां विश्वमिदं जगत्
तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः ॥

आश्वलायन गृह्यसूत्र (१ अ०, १२ खण्ड) में सीमन्तोन्नयन के अवसर पर गाथा गाने की चाल बतलाई गई है और सोम की प्रशंसा में यह गाथा दी गई है—सोमो नु राजावतु मानुषीः प्रजा निविष्टचक्रासौ । इन समस्त उल्लेखों से यही प्रतीत होता है कि राजसूय, विवाह और सीमन्तोन्नयन के शुभ अवसरों पर ऐसी गाथाएँ गाई जाती थीं जो प्राचीन काल से परम्परा-गत रूप से चली आती थीं । राजसूय में ऐतिहासिक गाथाओं तथा विवाहादि के समय देवता-विषयक प्रचलित गाथाओं के गाने का नियम था, यह बात ऊपर दिये गये उदाहरणों से स्पष्ट ज्ञात होती है ।

वैदिक गाथाओं के समान अवस्ता में उपलब्ध गाथाएँ अवस्ता के अन्य भागों की अपेक्षा अधिक प्राचीन स्वीकृत की गई हैं । इन गाथाओं में पारसी धर्म के मूल सिद्धान्त बड़ी ही सुन्दरता के साथ प्रतिपादित किये गए हैं । पाली जातकों के अनुशीलन से पाली भाषा में उपनिबद्ध गाथाओं का पता चलता है, जो प्राचीन काल से प्रचलित थीं और जिनमें उस काल की विख्यात लौकिक कहानियों का सारा अंश उपस्थित किया गया है । गौतम बुद्ध के प्राचीन जीवन से सम्बद्ध कथाएँ (जिन्हें 'जातक' के नाम से पुकारते हैं) इन्हीं गाथाओं के पल्लवीकरण से आविर्भूत हुई हैं । ये गाथाएँ बुद्धभगवान् की समसामयिक प्रतीत होती हैं । सुप्रसिद्ध सिंहचर्मजातक में (जिसमें व्याघ्रचर्म से आच्छादित गर्दभ की मनोरञ्जक कहानी है) ये दो गाथाएँ दी गई हैं जिनसे कथा की मूल घटना की पर्याप्त सूचना मिलती है—

नेतं सीहस्स नदितं न व्यग्घस्स न दीपिनो
पारुतो सीहचम्मेन जम्मो नदति गद्रभो ।
चिरं पि खो तं खादेय्य गद्रभो हरितं यवं
पारुतो सीहचम्मेन रवमानो च दूसयी ॥

विक्रम संवत् की तृतीय शताब्दी में, जब प्राकृत भाषा का बोल-बाला था, लोकगीतों की उन्नति बड़े जोर-शोर से हुई। राजा 'हाल' या 'शालिवाहन' के द्वारा संगृहीत 'गाथा सप्तशती' से पता चलता है कि उस समय लोकगीतों के बनाने और गाने की धुन बहुत ही अधिक थी। करोड़ गाथाओं में से केवल सात सौ गाथाएँ चुनकर इस कोश में संगृहीत कर दी गई हैं और काल के गाल से बचा ली गई हैं। ये गाथाएँ सरस गीति-काव्य के उत्कृष्ट नमूने हैं। रस से सनी इन गाथाओं को पढ़कर लोक-साहित्य की माधुरी का तनिक परिचय प्राप्त किया जा सकता है। रसोई बनाते समय सुन्दरी फूँक मारकर आग जलाना चाहती है, परन्तु आग जलती नहीं। इसका कितना रसमय हेतु इस गाथा में खोजा गया है—

रन्धणकम्मणिउणिए मा जूरसु रत्तपाडल सुअन्धम्
मुहमारुअं पिअन्तो धूमाइ सिही न पज्जलइ ॥

विरहिणी की भावना का कितना सुन्दर चित्र अङ्कित किया है इस भावमयी गाथा ने—

अज्जं गओत्ति अज्जं गओत्ति अज्जं गओत्ति गणरीए
पढ़स व्विअ दिअहद्धे कुड्डो रेहाहिँ चित्तलिओ ॥ (३ । ८)

वह आज गया है, आज गया है, आज गया है, इस प्रकार पति के जाने के दिनों को गिनने वाली विरहिणी ने दिन के पहले अर्ध भाग में ही दीवाल (कुड्य) को रेखा खींच कर चित्रित बना डाला है।

ललित-कलेवरा ललना के सर्वाङ्गों की सुषमा आजतक किसी ने देखी ही नहीं। क्यों ? आँखें जहाँ गिरती हैं, वहीं चिपककर रह जाती हैं, आगे बढ़ें, तब तो दूसरे भागों का सौन्दर्य देखें ! इस भाव की अभिव्यञ्जिका गाथा कितनी साफ़-सुथरी, सीधी-सादी है—

जस्स जहं विअ पढ़मं तिस्सा अङ्गम्मि णिवडिआ दिट्ठी
तस्स तहिं चेअ ठिआ, सव्वंगं केण वि न दिट्ठम् ॥
—३ शतक, ३४ गाथा

अपभ्रंश काल में भी लोकगीतों का ह्रास नहीं हुआ। उस समय के अनेक कथा-ग्रन्थों में नाना प्रकार की गाथाओं का उद्धरण दिया गया है। इस प्रकार लोकगीतों की भारतीय परम्परा बड़ी प्राचीन है। भारत के भिन्न भिन्न प्रान्तों के आजकल उपलब्ध गीतों में पारस्परिक साम्य तो है ही, साथ ही साथ प्राचीन-काल की गाथाओं की भी छाया उनमें जानकारों को स्पष्ट दीख पड़ती है। इस आवश्यक विषय की छानबीन कभी फिर की जायगी।

(३) लोकगीतों की पाश्चात्य परम्परा

पाश्चात्य जगत् में भी लोकगीतों का व्यापक प्रभाव है। वहाँ विद्वानों ने बड़े अध्यवसाय के साथ लोकगीतों की गहरी खोज कर उनका सूक्ष्म अध्ययन किया है। लोकगीतों को अंग्रेजी में बैलेड और जर्मन भाषा में 'फोल्कसलीदर' कहते हैं। 'बैलेड' शब्द की व्युत्पत्ति नर्तनार्थक लैटिन 'बेलारे' धातु से मानी जाती है। अतः इनका मूल अभिप्राय उस गीत से है जिसे किसी नर्तक मण्डली के लोग नाच के साथ-साथ कोरस में गाते हों। जर्मन शब्द 'फोल्क्स-लीदर' का अक्षरशः अनुवाद है—लोकगीत जिसे किसी लोक-मण्डली ने लोगों के लिये तैयार किया हो, जो गतानुगतिक रूप से चला आता हो और जो रीति, वर्णन तथा घटनाओं के विन्यास में भी यूरोप की समग्र जातियों में एक समान पाया जाता हो। लोकगीतों के लक्षण विस्तार के साथ फ्रेञ्च विद्वान् मोशिए ऑपेर ने १८५२-५३ में फ्रेंच लोकगीतों के संग्रह-कर्ताओं के सामने इस प्रकार किया था—(क) अन्त्यानुप्रास के स्थान पर ध्वनि-साम्य का प्रयोग; (ख) व्यक्तियों के कथनोपकथन की अक्षरशः पुनरुक्ति; (ग) कतिपय संख्याओं, जैसे तीन और सात, का बारंबार उपयोग; (घ) रोजमर्रे की सर्वसाधारण चीजों को सोने चाँदी का बना हुआ बतलाना। इन लक्षणों की सत्ता भारतीय लोकगीतों में विलक्षण प्रकार से उपलब्ध होती

है। इन हमारे देशी गीतों में तुक भले न मिले, परन्तु अन्त में ध्वनियों की समता अवश्य ही रहती है। व्यक्तियों के कथन ठीक उन्हीं शब्दों में इतनी बार दोहराये गए हैं कि इसके साहित्यिक मूल्य से अपरिचित पाठकों के लिए यह वैरस्यका कारण बन सकता है। यह पुनरुक्ति श्रोताओं के हृदय पर उत्कृष्ट प्रभाव उत्पन्न करने के अभिप्राय से जान-बूझ कर की गई है। यह पुनरुक्ति याहच्छिकी न होकर आभिप्रायिकी है, आकस्मिक न होकर मौलिक है। कतिपय संख्याओं का प्रयोग बारंबार पाया जाता है। कन्या को पतिगृह ले जाने की डोली सात काठ की बनी बताई जाती है और सात सहेलियों ने (सात सलेहरी) मिलकर नायिका के शरीर को सजाया है, ऐसा वर्णन गीतों में विशेषरूप से मिलता है, जिसमें घर की साधारण चीजें भी सोने-चाँदी की बनी बताई जाती हैं। भोजपुरी गीतों में जहाँ किसी पाहुने के लिये भोजन परोसने की बात है वहाँ वह सदा सोने की थाली में ही परोसा जाता है (सोने की थारी में जेनवा परोसल)। कई विद्वानों की सम्मति में यह अन्तिम लक्षण पश्चिमी गीतों पर पूर्वी देशों के प्रभाव के कारण है, परन्तु जान पड़ता है कि लोकगीतों में ऐसा वर्णन बहुत कुछ स्वाभाविक है। ग्रीस देश के पुराने काव्यों तक में यह बात पाई जाती है। प्रसिद्ध प्रहसनों के रचयिता एरिस्टो-फेनीज़ ने केवल राजाओं की धुरियों को ही सुनहली नहीं बल्कि घोड़ों के पैरों को भी चाँदी से मढ़ा बतलाया है। कतिपय विशेषण निश्चित कर दिये गए हैं जिनका बारबार प्रयोग आवश्यक होता है। भोजपुरी गीतों में सास सदा 'बढ़ैतिन' और ससुर हमेशा 'बढ़ैता' कहा गया है। यह बात होमर में भी उसी तरह पाई जाती है जैसे बाल्मीकि में। इस प्रकार भारतीय लोकगीतों तथा पाश्चात्य बैलेडों में विलक्षण साम्य है, परन्तु वैषम्य भी कम नहीं है। बैलेडों में किसी परम्परागत आख्यान का छन्दोबद्ध वर्णन प्रस्तुत मिलता है; ये भिन्न-भिन्न लय और तालों के साथ गाये जाते हैं। अतः वे संगीतमय भी हैं, परन्तु रसात्मक नहीं है। घटना का वर्णन उनका लक्ष्य है, मानव हृदय को स्पर्श करनेवाले कोमल भावों का व्यक्तीकरण नहीं। परन्तु भारतीय गीतों का मुख्य उद्देश्य श्रोताओं के हृदय में रस संचार करना है, उन्हें अपने

वर्णित भावों से भावित कर देना है। यही कारण है कि हमारी दृष्टि में भारतीय लोकगीतों का साहित्यिक मूल्य बैलेडों से कहीं अधिक है। छन्दोबद्ध लोक-कथा के रूप में बैलेड लोकगीत के अन्तर्गत हैं, परन्तु विषय तथा वर्णन दोनों दृष्टियों से हमारे लोकगीत कहीं अधिक व्यापक, सरस तथा मर्मस्पर्शी हैं।

परन्तु लोकगीतों का सत्कार करना हमें पाश्चात्यों से सीखना है। यूरोप के प्रत्येक देश के विद्वानों ने अपने लोकगीतों का संग्रह, समुचित संरक्षण तथा साहित्यिक समीक्षण कर उन्हें नष्ट हो जाने से ही नहीं बचाया है, बल्कि जातीय साहित्य की अभिवृद्धि पर उनका विशेष प्रभाव डाला है। जर्मन, अंग्रेज और अमेरिकन लोगों का प्रयत्न विशेष श्लाघनीय है। जर्मनी में १८वीं शताब्दी में गेटे और ग्रिम ने इस ओर खूब ध्यान दिया था। ग्रिम का कार्य तो समधिक मे महत्त्वपूर्ण है। प्राचीन जर्मन भाषा में उपलब्ध लोकगीतों और लोक-कथाओं का विशाल संग्रह कर उन्होंने इस विषय के अध्ययन की प्रतिष्ठा की। इङ्गलैण्ड में १७६५ ई० में बिशप पर्सी ने प्राचीन बैलेडों का संग्रह प्रस्तुत किया। स्काट-लैण्ड के लोकगीतो तथा आख्यानों को जनप्रिय बनाने का काम औपन्यासिक सर वाल्टर स्काट ने किया, परन्तु हारवर्ड के फ्रैन्सिस जेम्स चाइल्ड (१८२५-१८९६) ने जिस अध्यवसाय के साथ इङ्गलैण्ड और स्काटलैण्ड के प्रचलित लोकगीतों का ५ भागों में संग्रह कर इस विषय को शास्त्रीय और वैज्ञानिक रूप दिया है वह प्रसिद्ध ही है। इस विषय के अध्ययन की शैली में भी अन्तर है। १८वीं और १९वीं शताब्दी के मध्यकाल तक लोकगीतों का अध्ययन केवल शुद्ध साहित्यिक दृष्टि से ही किया जाता था और इसी कारण इनका प्रभाव हर्डर, गेटे और हाइने की जर्मन गीतिकाओं में और कोलरिज तथा वर्ड्सवर्थ की कविता में विशेषरूप से पड़ा। आजकल की विशेषता है लोकगीतों का बहुमुखी शास्त्रीय अध्ययन। यूरोप की भिन्न-भिन्न जातियों के लोकगीतों में अनेकांश में साम्य विद्यमान है। अतः लोककथा के समान, जिन्हें अंग्रेजी में—'फेयरी टेल्स' और जर्मन भाषा में 'मेरकेन' कहते हैं, ये समग्र गीत समग्र यूरोपी जातियों की पैतृक सम्पत्ति है जो अति प्राचीनकाल से उनके हिस्से में चली आती है। पाश्चात्य विद्वानों की शैली का अनुसरण कर अपने लोक-

गीतों का संरक्षण तथा अध्ययन करना भारतीय विद्वानों का भी परम कर्तव्य है। सिजविक का यह कहना बिल्कुल ठीक है कि लिखित रूप में आते ही लोकगीतों की मोहकता नष्ट हो जाती है, परन्तु संरक्षण के लिए वह जरूरी है ही। इसकी अवहेलना एक महान् जातीय अपराध है जिसे भारत के विद्वान् मुक्त नहीं माने जा सकते। आशा है साहित्य की नवीन जागृति के इस युग में लोकगीतों का समुचित सत्कार होगा, साहित्यिक समीक्षा कर उनके गुण-दोषों का पर्याप्त विवेचन सर्व-साधारण के सामने रखा जायगा।

(४) ग्रामगीतों का महत्त्व

ग्राम-गीतों का संग्रह तथा अध्ययन अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। रसमय होने के कारण से ये गीत केवल हमारे जीवन को ही सरस तथा मधुर नहीं बनाते, इन गीतों के अध्ययन से पाठक केवल अपने दुःखों को भूल कर आनन्द सरोवर में डुबकियाँ ही लगाने नहीं लगता, प्रत्युत इनके अध्ययन से वह अनेक ज्ञातव्य विषयों की जानकारी प्राप्त कर सकता है। इन गीतों का महत्त्व चार विभिन्न दृष्टियों से कूता जा सकता है।

(१) भाषा शास्त्र की दृष्टि से इन गीतों का महत्त्व बहुत अधिक है। भारत की बहुत सी ऐसी प्रान्तीय बोलियाँ हैं जिनका लिखित साहित्य उपलब्ध नहीं है। उनके उदाहरण केवल इन गीतों में ही मिल सकते हैं। उदाहरण के लिये, भोजपुरी बोली को ही लीजिए। इसका लिखित साहित्य नहीं के बराबर है। अतः इस बोली का यदि कोई विशेष अध्ययन करना चाहे तो ये ही गीत उसके अध्ययन की आधार-शिलायें होंगे। इन बोलियों में अनेक कहावतें तथा मुहावरे मिलते हैं जो साहित्यिक भाषा में उपलब्ध नहीं हैं। ये मुहावरे इतने उचित और अनूठे हैं कि उनका प्रयोग साहित्यिक भाषा में न करना एक महान् जातीय अपराध है। उदाहरण के लिये, 'हाथ में दही जमना' तथा 'तलवा में आग लग जाना' को लीजिए, जिनका अर्थ पराक्रम न दिखलाना तथा क्रोध से अभिभूत हो जाना है। इन भावों को प्रकट करने के लिये इनके साहित्यिक भाषा में लिए जाने से हमारी भाषा की महती अभिवृद्धि

होने की आशा है। कृषि तथा पशुपालन संबंधी अनेक पदार्थों के वाचक शब्द इन भोजपुरी गीतों में मिलते हैं, जिनका ठेठ हिन्दी में अत्यन्त अभाव है। बाँझ गाय के लिये 'बहिला' शब्द तथा गर्भघातिनी गाय के लिये 'लड़ाइल' शब्द इसी कोटि के हैं। इनका हिन्दी में उपयुक्त पर्याय नहीं मिल सकता। व्यवसाय सम्बन्धी शब्दों की भी यही दशा है। इन शब्दों के ग्रहण करने से भाषा का भण्डार भरेगा इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

शब्दों की ऐतिहासिक परम्परा को जानने के लिए भी इन गीतों का अध्ययन उपादेय है। उदाहरण के लिए 'जुगवत' शब्द को लीजिए। इस शब्द का प्रयोग इन गीतों में खूब खबरदारी करने के अर्थ में हुआ है। इसका संबन्ध संस्कृत के 'गुपु रक्षणे' धातु से है। भोजपुरी में सौभाग्यवती स्त्री के लिये प्रयुक्त 'सुहवा' शब्द संस्कृत 'सुभगा' से ही निकला है, यह बात भाषा शास्त्रवेत्ताओं से छिपी नहीं है।

(२) भौगोलिक ज्ञान की दृष्टि से भी इन गीतों के पढ़ने से हमें यह ज्ञात होता है कि किस देश तथा शहर में कौन सी विशिष्ट वस्तु पैदा होती या बनती थी, किस स्थान की कौन सी वस्तु प्रसिद्ध थी। इन गीतों में मगहर का पान, मिर्जापुर का पत्थर, पटने की भूल या गोरखपूर के हाथी प्रसिद्ध बतलाये गए हैं। आज भी कौन नहीं जानता कि 'मगहिया पान' स्वाद में अपना सानी नहीं रखता तथा मिर्जापूर का पत्थर बड़ा ही मजबूत और टिकाऊ होता है। इस प्रकार इन गीतों से भारत के प्रादेशिक भूगोल का अच्छा ज्ञान प्राप्त होता है।

(३) ऐतिहासिक दृष्टि से भी ये ग्राम-गीत उपेक्षणीय नहीं हैं। इनमें बहुत सी ऐतिहासिक सामग्री बिखरी पड़ी है जिनके संग्रह करने से भारत का सच्चा, जीता-जागता इतिहास प्रस्तुत किया जा सकता है। इन गीतों में कई स्थानों में मुगलों के अत्याचार तथा उनकी परस्त्री-कामुकता का वर्णन है, जिससे पता चलता है कि उनके शासन काल में कितना अन्धेर था। किसी की बहूबेटी का सतीत्व सुरक्षित नहीं था। इसी प्रकार से कुँवर सिंह के अँग्रेजों से लड़ने के वर्णन से बहुत सी सच्ची ऐतिहासिक घटनाओं का पता चलता है।

(४) सामाजिक दृष्टि से भी ये ग्राम-गीत बड़े उपयोगी हैं। चूँकि ये गीत विशेष कर सामाजिक उत्सवों—जनेऊ, विवाह, गौना और विदाई—पर ही गाये जाते हैं अतएव इन संस्कारों से संबंध रखनेवाली बहुत सी बातों का वर्णन इन में पाया जाता है। जनेऊ के अवसर पर ब्रह्मचारी के भीख माँगने तथा काशी जाकर पढ़ने का बड़ा अच्छा वर्णन है। कन्या के विवाह के लिए जब पिता वर खोजने के लिए जाता है तब पुत्री कहती है—ऐ पिता जी मेरे लिए सयाना वर खोजना। इन गीतों में दहेज-प्रथा का भी बड़ा ही मार्मिक चित्रण है। ननद तथा भौजाई का शाश्वत विरोध और झगड़ा, सास तथा बहू का दैनिक कलह, परदे की प्रथा का अभाव, विधवा स्त्री की दयनीय दशा, पुत्री के जन्म की निन्दा तथा उसके साथ अत्यन्त कटु-व्यवहार आदि विषयों की बाँकी झाँकी इन गीतों में उपलब्ध होती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि इन ग्राम-गीतों में भोजपुरी समाज का बड़ा ही सजीव और जीता-जागता चित्र प्रस्तुत किया गया है।

(५) सांस्कृतिक दृष्टि से भी ये गीत बड़े काम की चीजें हैं। इन गीतों में भोजपुरी संस्कृति का जैसा सुन्दर चित्रण किया गया है वैसा अन्यत्र उपलब्ध नहीं। इन गीतों में स्त्रियों का चरित्र बड़ा ही उदात्त, शुद्ध तथा पवित्र दिखलाया गया है। स्त्री एक पतिव्रता, सती, साध्वी के रूप में चित्रित की गई है। एक स्त्री का देवर अपनी भावज से जब अनुचित प्रस्ताव करता है तब वह कहती है कि "मैं तुम्हारे इस कुत्सित आचरण के कारण तुम्हारी बाहों को कटा दूँगी।" स्त्रियों की तो बात ही क्या, एक हरिनी भी अपने पति की हड्डियों को लेकर सती होने को तैयार है। कितना उदात्त भाव है। एक मुगल आततायी के हाथों से कुसुमा देवी ने किस बहादुरी से अपने सतीत्व की रक्षा की, इसका पता इन गीतों से ही लगता है। इस प्रकार भोजपुरी संस्कृति का बड़ा सुन्दर चित्रण इन गीतों में उपलब्ध है।

(५) भारतीय भाषाओं में ग्राम-गीतों का संग्रह

भारत भूमि बड़ी विस्तृत है। इसमें भिन्न जातियाँ निवास करती हैं तथा भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। इन भाषाओं तथा बोलियों की संख्या बहुत

अधिक है। प्रत्येक प्रान्त की एक अपनी भाषा है, जिसके भीतर अनेक बोलियाँ हैं। प्रत्येक प्रान्त में सामाजिक उत्सवों के अवसरों पर गाने योग्य अनेक गीत प्रचलित हैं। लोक-साहित्य की उपज के लिए भारतवर्ष के समान उर्वर देश शायद ही दूसरा मिले। भिन्न-भिन्न जातियों तथा भाषाओं की क्रीड़ास्थली इस भारत-भूमि में ग्राम-साहित्य का विकास जितना समृद्ध हो सका है उतना अन्यत्र मिलना नितान्त असंभव है। इस देश के हर एक प्रान्त में, प्रादेशिक बोलियों में, हजारों गीत आज भी प्रचलित मिलते हैं। परन्तु शिक्षित समाज का इनकी ओर इतनी उपेक्षा-बुद्धि है कि यह हमारी सम्पत्ति दिनोदिन क्षीण होती चली जा रही है, और यह असंभव नहीं दीखता जब वह एक दिन बिल्कुल ही लुप्त हो जावेगी। हमारी इस अमूल्य जातीय निधि का समुचित संरक्षण करना प्रत्येक शिक्षित भारतीय का कर्तव्य है।

हर्ष का विषय है कि इधर कुछ सालों से विद्वानों की दृष्टि इधर आकृष्ट हुई है। उन्होंने कठिन परिश्रम को स्वीकार कर मजदूरों से, स्त्रियों से, तथा अनेक नीच जातियों के मुँह से सुन कर इन गीतों का संग्रह कर प्रकाशित किया है। इस दिशा में कलकत्ता विश्वविद्यालय तथा बंगाली विद्वानों का प्रयत्न अत्यन्त सराहनीय है, क्योंकि इनके प्रयत्न से पूर्व बंगाल में प्रचलित गीतों का बहुत ही सुन्दर प्रामाणिक तथा सानुवाद संग्रह प्रकाशित हुआ है।

बँगला के विख्यात विद्वान् डाक्टर दिनेशचन्द्र सेन के सम्पादकत्व में केवल मैमनसिंह जिले से संग्रहीत लोक गीतों का संग्रह 'मैमनसिंह गीतिका' के नाम से एक भाग में प्रकाशित किया गया है, तथा पूर्व बंगाल के अन्य जिलों से संग्रहीत गीतों का संग्रह तीन भागों में 'पूर्व-बंग-गीतिका' के नाम से कलकत्ता विश्वविद्यालय से प्रकाशित हुआ है। मूल बँगला गीतों का अंग्रेजी में प्रामाणिक अनुवाद चार बृहत् भागों में भी प्रकाशित किया गया है।

गुजराती लोकगीतों के संग्रह, संरक्षण तथा प्रचारण में झवेरचन्द मेघाणी का नाम सर्वश्रेष्ठ है। इन्होंने गुजराती लोकगीतों का केवल संग्रह ही नहीं किया है, बल्कि लोक-साहित्य के महत्त्व की पर्याप्त समीक्षा भी प्रस्तुत की है। इनकी लिखी पुस्तकों में 'रढ़ियाली रात', ३ भाग और 'लोक-साहित्य'

प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त रणजीत राय मेहता का 'लोकगीत' और नर्वदा-शंकर लालशंकर की 'नागर स्त्रियों माँ गवाता गीत' नामक पुस्तकें भी हैं।

मराठी लोकगीतों का विशाल संग्रह तथा समीक्षात्मक विवेचन श्रीमती अनुसूया बाई भागवत ने किया है जो 'महाराष्ट्र-साहित्य-पत्रिका' में छप रहा है। इनमें से कई गीतों का अनुवाद जर्नल आफ़ बाम्बे यूनिवर्सिटी में इधर प्रकाशित हुआ है।

राजस्थान में भी लोक-गीतों की प्रचुरता है। परन्तु जिस प्रकार प्राचीन गीत विशुद्ध और साहित्यिक हैं उसी प्रकार नवीन गीत प्रायः अश्लील तथा कुरुचिपूर्ण हैं। राजस्थानी गीतों के उद्धार का कार्य अनेक विद्वान् कर रहे हैं जिनमें सूर्यकरण पारीक, एम० ए० का नाम उल्लेख योग्य है। आपने हिन्दुस्तानी पत्रिका (भाग ७ अंक २, पृष्ठ १५६ से २१६) में राजस्थानी लोक-गीतों का बड़ा ही विस्तृत विवरण दिया है। आपका संग्रहीत राजस्थानी लोक-गीत सम्मेलन द्वारा पुस्तकरूप में प्रकाशित हो चुका है।

हिन्दी भाषा-भाषियों के ग्राम-गीतों का संग्रह कर पं० रामनरेश त्रिपाठी ने बड़ा प्रशंसनीय कार्य किया है। आपने 'ग्राम-गीत' नाम से हिन्दी तथा हिन्दी से इतर भाषाओं के गीतों का संग्रह कविता-कौमुदी नामक ग्रन्थ में दो भागों (भाग ५, ६) में किया है। हम लोग उनके इस कार्य के लिए चिर ऋणी रहेंगे। परन्तु त्रिपाठीजी के इन संग्रहों में 'मिशनरी स्पिरिट' अधिक है। वैज्ञानिक दृष्टि बहुत ही कम। इन गीतों में पूर्वी तथा पश्चिमी हिन्दी के गीतों का ऐसा घपला किया गया है कि भाषा-शास्त्र की दृष्टि से उसका महत्त्व विशेष नहीं है। अतएव ऐसे संग्रहों की बड़ी आवश्यकता थी जो वैज्ञानिक दृष्टि से संग्रहीत केवल एक ही बोली के हों। बड़े सौभाग्य की बात है कि पं० अमरनाथ झा के सभापतित्व में हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने इस कार्य को करने का बीड़ा उठाया है। अभी हाल ही में 'मैथिल लोकगीतों' का एक प्रामाणिक बहुमूल्य संग्रह सम्मेलन से प्रकाशित हुआ है। 'भोजपुरी ग्राम-गीतों' का यह संग्रह भी अपने विषय का सर्वप्रथम प्रयत्न है। स्त्रियों के मुख से ये गाने जिस प्रकार से सुने गए हैं उसी प्रकार से लिपि-बद्ध किये गए हैं। संग्रहकर्ता

ने इसे विशुद्ध तथा प्रामाणिक ढंग से संग्रहीत किया है जिससे भोजपुरी के भाषाशास्त्र की दृष्टि से अध्ययन करनेवाले विद्यार्थियों के लिए यह एक अनमोल सामग्री है।

अन्त में, इस प्रसंग में श्री देवेन्द्र सत्यार्थी का नाम लिये बिना यह प्रकरण अधूरा ही रहेगा। इन्होंने भारत के विभिन्न प्रान्तों में घूम-घूमकर लोक-गीतों का अमूल्य संग्रह किया है और 'माडर्न रिव्यू' में समय-समय पर आपने इन गीतों के अंग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित किए हैं। परन्तु इनके लोकगीत-संबंधी लेखों की सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि उनमें मूल गीतों का अभाव है। अतः उन गीतों के अनुवाद में वह मज़ा नहीं आता जो मूल गीतों में मिलता।

२

(१) भोजपुरी-भाषा

इस पुस्तक में संगृहीत गीत भोजपुरी भाषा के हैं। संग्रहकर्ता की बड़ी इच्छा थी कि गीतों के प्रधान-प्रधान शब्दों के ऊपर भाषाशास्त्र विषयक टिप्पणियाँ लिखी जायँ, परन्तु पुस्तक की कलेवर-वृद्धि होने के डर से वह इस इच्छा को पूर्ण नहीं कर सके। इन गीतों की सहायता से भोजपुरी के व्याकरण की छानबीन प्रामाणिक रूप से की जा सकती है। इस भाषा के विषय में छोटी-मोटी बातें संक्षेप में दी जा रही हैं, जिससे पाठकों को इन गीतों को भलीभाँति समझने में पूरी मदद मिलेगी।

भोजपुरिया का नामकरण बिहार में बक्सर के समीप डुमरॉवराज की पुरानी राजधानी, 'भोजपुर' के कारण है। वर्तमान भोजपुर आजकल एक सामान्य गाँव होने पर भी ऐतिहासिक दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसी भोजपुर भूमि को विख्यात वीर अल्हा तथा ऊदल की प्रसविनी भूमि होने का श्रेय प्राप्त है। पिछले समय में राजपूताने से आकर 'उज्जैन' राज-पूतों ने यहाँ अपना विस्तृत राज्य स्थापित किया और 'भोजपुर' को प्रधान नगर बनाया। इस बोली के बोलनेवालों की संख्या अढ़ाई करोड़ के लगभग कूती गई है। यह बोली उन लोगों की मातृ बोली है, जिनकी नस-नस में वीर रस का संचार होता है, 'तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणः क्षारं जलं कापुरुषाः

पिबन्ति' के गर्हणीय सिद्धान्त का पूर्ण तिरस्कारकर जो अपने पराक्रमी भुजाओं का सहारा लेते हैं और सुदूर विदेशों में भी अपने प्रबल प्रताप की पताका फहराते हैं, जो कूपमंडूकत्व का बहिष्कारकर स्वतन्त्रता की पवित्र वायु के सेवन करने वाले हैं। भोजपुर मण्डल, शाहाबाद, बलिया और गाज़ीपुर जिलों की भूमि वीरता के लिए उसी प्रकार विख्यात है, स्वतन्त्रता के नाम पर मर मिटनेवाले अपने सपूतों की वीर गाथाओं से उसी प्रकार पवित्र है, जिस प्रकार भारत के भाल को ऊँचा करनेवाला वीर पुरु राजस्थान। भोजपुरियों के अक्खड़पन के विषय में यह कहावत समूचे बिहार में खूब मशहूर है—

भागलपुर का भगेलुआ भैया, कहल गाँव का ठग्ग।
जो पावै भोजपुरिया, तोड़ै दोनों का रग्ग॥

डाक्टर ग्रियर्सन का यह कहना बिल्कुल ठीक है—"भोजपुरी उस उत्साही जाति की व्यावहारिक भाषा है जो परिस्थिति के अनुरूप अपने को बदलने के लिए हमेशा तैयार रहती हैं और जिसका प्रभाव हिन्दुस्तान के हर एक भाग पर पड़ा है। हिन्दुस्तान में सभ्यता फैलाने का यश बंगालियों और भोजपुरियों को प्राप्त है। इस काम में बंगालियों ने अपने कलम से काम लिया है और वीर भोजपुरियों ने अपने डंडे से। भोजपुरियों की इस वीर प्रकृति में बिरहा, लोरकी आदि वीररस प्रधान लोकगीतों के उत्थान का रहस्य छिपा हुआ है। गिरिधर कविराय की निम्न कमनीय 'कुण्डलिया' को भोजपुर निवासियों का जातीय गान करार दिया जाय, तो अनुचित न होगा। अक्खड़पन को जताने वाली 'लाठी' का यह वर्णन वास्तविक है—

लाठी में गुण बहुत है, सदा राखिए संग।
नदी नार अगाह जल, तहाँ बचावै अंग॥
तहाँ बचावै अंग, झपट कुत्तों के मारै।
दुश्मन दावागीर होइ, तिनहूँ को झारै॥
कह गिरिधर कविराय, बात बाँधा यह गाँठी।
सब हथियारन छाड़ि, हाथ में राखा लाठी॥

भोजपुरिया बिहार की सब से पश्चिमी बोली है जिसका विस्तार बिहार के राँची, पलामू, शाहाबाद, सारन और चम्पारन जिलों में, और संयुक्त प्रान्त के बनारस, मिर्जापुर, जौनपुर, आजमगढ़, फैजाबाद, गाजीपुर और बलिया जिलों में सर्वत्र है। आजकल हिन्दी के सामान्य नाम से जो भाषा अभिहित की जाती है उसको भाषा-विज्ञान-वेत्ताओं ने तीन बड़े विभागों में बाँटा है—पश्चिमी हिन्दी (शौरसेन-अपभ्रंश से उत्पन्न), बिहारी (मागध अपभ्रंश से उत्पन्न) तथा पूर्वी हिन्दी (अर्ध मागधी प्राकृत से उत्पन्न)। मागधी से उत्पन्न होने के हेतु भोजपुरी का सम्बन्ध बँगला के साथ जितना घनिष्ट है, उतना पश्चिमी हिन्दी-व्रजभाषा आदि से नहीं। व्रजभाषा और बिहारी का भेद उनके क्रिया-पद पर दृष्टि डालने से स्पष्ट हो जाता है। संस्कृत के क्त प्रत्ययान्त भूतकालिक क्रिया पद 'मारितः' का परिवर्तन दोनों भाषाओं में देखने से पारस्परिक पार्थक्य साफ़ दीखता है। शौरसेनी भाषा में 'मारितः' का अपभ्रंश हुआ 'मारिदो', जो प्राकृत के नियमानुसार दशर के लोप होने से 'मारिओ' बन गया। इस से व्रजभाषा का भूतकालिक पद 'मार्यो' तैयार होता है। यही कारण है कि शौरसेनी से उद्भूत समस्त भाषाओं तथा बोलियों में 'इओ' प्रत्यय भूतकाल की सूचना के लिये धातु के अन्त में प्रयुक्त होता है। उधर मागधी में तकार के स्थान पर लकार होने से 'मारितः' 'मारिलो' के रूप में परिवर्तित हो गया है। मागधी से सम्भूत भाषाओं का भूतकाल इसी प्रकार 'ल' प्रत्यय के योग से बनता है।

एक बात और। व्रजभाषा के भूतकालिक रूपों में पुरुष का निर्देश कथमपि नहीं होता। 'मार्यो' कहने से पता नहीं चलता कि किसने मारा ? उसने, तूने या मैंने मारा ? इस पुरुष-सम्बन्धि त्रुटि का मार्जन मागधी से उत्पन्न भाषाओं में स्पष्ट दीख पड़ता है। इनमें क्रिया के आगे पुरुष-वाचक सर्वनाम का संक्षिप्त रूप भी जुटा हुआ मिलता है। बँगला के 'मारिलाम' (मैंने मारा) पद के आगे 'आमि' (मैंने) देने की तनिक भी जरूरत नहीं है, क्योंकि उत्तम पुरुष का द्योतक सर्वनाम पद 'आम' के रूप में उसमें पहले से जोड़ा गया है। इसी प्रकार भोजपुरी के भूतकालिक रूप 'मारलों' में भूतकालिक 'ल' प्रत्यय के साथ

उत्तम पुरुष का सूचक 'ओं' भी विद्यमान है। 'मारिलसि' और 'मारिलन' में प्रथम पुरुष के एक वचन और बहुवचन सूचक सर्वनाम पद क्रमशः रखे गए हैं।

भविष्यकाल में भी ठीक इसी प्रकार का विभेद है। ब्रजभाषा में जहाँ 'ह' प्रत्यय के योग से भविष्यकालिक रूप तैयार होता है, वहाँ बिहारी में 'ब' प्रत्यय ही उसका काम करता है। ब्रज का 'चलिहै' संस्कृत के 'चलिष्यति' से बना हुआ है और चलिस्सदि, चलिहइ के रूपान्तरों को पार कर वर्तमान रूप में आया है; किन्तु भोजपुरी का भविष्य कालिक रूप 'चलबि' 'चलिष्यति' से न निकल कर कर्म-कर्तृक 'चलितव्यम्' से निकला है। चलितव्यं—चलितव्वं—चलिअव्वं—चलव्वं रूपों को तै कर यह शब्द 'चलब' के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत है। परन्तु भोजपुरी में इस विषय में एक विचित्रता दीख पड़ती है। उत्तम और मध्यम पुरुष के रूपों में तो 'ब' ही लगता है, परन्तु प्रथम पुरुष में ब्रज तथा अवधी की तरह 'ह' प्रत्यय लगता है।

	एक वचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	देख+ब+ओं (देखबों)	देखबि
मध्यम ,,	देखबे	देखब
प्रथम ,,	देखिहे (देखी)	देखिहें या देखिहेन

इस प्रकार बिहारी का ब्रज से पार्थक्य निःसन्दिग्ध रूप से दृष्टिगोचर होता है।

बिहारी के अन्तर्गत तीन बोलियाँ मानी जाती हैं—मैथिली, मगही और भोजपुरी, परन्तु प्रथम दोनों बोलियों का आपस में इतना अधिक साम्य है और भोजपुरी से इतना अधिक वैषम्य है कि बिहारी को दो भागों में ही विभक्त करना अधिक उचित प्रतीत होता है—पूरबी बिहारी (जो मैथिली और मगही भेद से द्विविध मानी जायगी) और पश्चिमी बिहारी (भोजपुरिया)। इन दोनों में उच्चारण, तथा रूपगत अनेक भेद दीख पड़ते हैं। मैथिली में विशेषतः, और मगही में सामान्यतः, 'अकार' का उच्चारण बँगला के उच्चारण से मिलता जुलता है, क्योंकि 'अ' की ध्वनि ओकार के समान मुँह को गोलाकार बनाने

से होती है, परन्तु भोजपुरिया में अकार का उच्चारण पश्चिमी हिन्दी के समान नितान्त सुस्पष्ट अकार ही होता है। भोजपुरी में अकार की एक विभिन्न ध्वनि है, जो 'हवे' (है) शब्द में वर्तमान है। यह कुछ विचित्र है और कुछ ओकार के समान मुँह को अधिक गोल बनाने पर उच्चरित होती है। मध्यम पुरुष के लिए आदरार्थ मैथिली और मगही में बोलते हैं 'अपने'। परन्तु भोजपुरिया में 'रउरे'। यह 'रउरे' तथा 'राउर' (आपका) का प्रयोग भोजपुरिया का स्पष्ट संकेत है। तुलसीदास ने 'मोहि लगत दुख रउरे लागा' और 'जो राउर अनुशासन पाऊँ'. आदि चौपाइयों में इन्हीं भोजपुरिया शब्दों का प्रयोग किया है। सहायक क्रिया के रूप में या सत्तार्थक धातु के लिए मैथिली में प्रयोग करते हैं 'छइ' या 'अछि', मगही में 'हइ', परन्तु भोजपुरिया में 'बाटी', 'बाड़ी' या 'बानी'। इन पदों के अतिरिक्त भोजपुरिया का व्याकरण यहाँ के निवासियों के स्वभावानुसार व्यावहारिक तथा सीधा है; वह मैथिली व्याकरण के समान जटिल तथा विषम नहीं है।

इस भोजपुरिया के भी तीन प्रधान भेद माने गए हैं :—(१) आदर्श भोजपुरी, जो समग्र शाहाबाद, छपरा, बलिया और गाज़ीपुर के पूरबी भाग में बोली जाती है। भोजपुर के समीप होने से इन स्थानों की बोली आदर्श (स्टैन्डर्ड) मानी गई है।[1] (२) पश्चिमी भोजपुरी जो आज़मगढ़, जौनपुर, बनारस, फ़ैजाबाद के पूर्वी भाग, मिर्ज़ापुर और गाजीपुर के पश्चिमी भाग में बोली जाती है। (३) नागपुरिया जो छोटा नागपुर में बोली जाती है और राँची तक फैली हुई है। नागपुरिया के ऊपर पूरबी हिन्दी की छत्तीसगढ़ी का प्रभाव अधिक पड़ा है। इन तीन बड़े-बड़े भेदों के अतिरिक्त दो छोटे-छोटे उपविभाग भी हैं—(१) मधेसी चम्पारन जिले में। यह तिरहुत की मैथिली और गोरखपुर की भोजपुरी के बीच वाले स्थानों में बोली जाती है। (२) थरुई भोजपुरी—जो नैपाल की तराई में रहने वाले 'थारू' लोगों की बोली है। इन

---

[1]इस पुस्तक में संगृहीत अधिकांश गीत आदर्श भोजपुरी के हैं। इस बोली के व्याकरण के लिए देखिए पं० उदयनारायण त्रिपाठी लिखित 'ए डायलेक्ट आफ़ भोजपुरी'।

सब बोलियों में आदर्श भोजपुरी से अधिक भेद नहीं है, परन्तु पश्चिमी भोजपुरी इस से कई बातों में भिन्न दीखती है।[1] पश्चिमी भोजपुरी में करण कारक के लिए क्रिया के आगे 'अन' प्रत्यय का प्रयोग दीख पड़ता है, जो आदर्श भोजपुरी में बिल्कुल ही नहीं है। पश्चिमी भोजपुरी में आदरसूचन के लिए 'रउरा' के स्थान पर 'तुँह' का प्रयोग दीख पड़ता है। दोनों बोलियों में सहायक क्रिया के दो रूप पाये जाते हैं—बानी और हवीं। परन्तु पश्चिमी में 'हवीं' का रूप 'हौं' पाया जाता है। उच्चारण की विशेषता से भी अनेक प्रभेद दृष्टिगोचर होते हैं। बलिया की तरफ उत्तम पुरुष के रूपों के साथ कुछ अनुस्वार सा मिला रहता है, अतः उसके उच्चारण के लिए नाक की सहायता अवश्य ली जाती है; परन्तु पश्चिमी बोली में अनुनासिक का नाम तक नहीं है। "मैंने काम किया", इसके लिए हम लोग सानुनासिक बोलेंगे—"काम कइलीं" परन्तु बनारस के लोग बोलेंगे—"काम कइली"। उच्चारण का यह स्पष्ट भेद प्रत्येक मनुष्य को मालूम हो सकता है। अन्यपुरुष के बहुवचन के रूप में भी अन्तर पड़ता है। संज्ञा के रूपों में भी एक प्रसिद्ध विशेषता है। जहाँ आदर्श भोजपुरी में सम्बन्ध के लिए 'के' का प्रयोग करते हैं वहाँ पश्चिमी भोजपुरी में 'का' या 'कई' प्रयुक्त होता है। 'के' का परिवर्तित रूप तो 'का' बन जाता है परन्तु 'क' का 'के' होता है। आदर्श भोजपुरी वाले "ओह देस का एक सहर का रहवइया का पास" बोलेंगे परन्तु पश्चिमी भोजपुरी में "ओह देश के एक शहर के रहवैये के पास" बोला जावेगा। सम्प्रदान कारक का 'परसर्ग' दोनों में भिन्न है—'लागि' आदर्श भोजपुरी में, पर बनारसी में 'के बदे' या 'वास्ते' है। "तोहरा लागि उड़बों अकाह" और "किनली है रजा लाल दुसाला तोरे बदे" में दोनों का पार्थक्य बिल्कुल स्पष्ट है। इस प्रकार नागपुरिया, मधेसी, भोजपुरी, सरवरिया (गोरखपूर तथा बस्ती के आसपास), थरुई आदि के परस्पर भेद उतने महत्त्व के नहीं है जितने आदर्श भोजपुरी और पश्चिमी भोजपुरी के हैं। बलिया की बोली तथा बनारस की बोली[2] में उच्चारण तथा रूपगत इतनी

[1] देखिए लिंग्विस्टिक सर्वे जि० ५, भा० २ पृष्ठ ४२–४४।

[2] द्रष्टव्य वाचस्पति उपाध्याय, एम० ए० कृत 'बनारसी बोली'।

विभिन्नता है कि एक बार सुनने पर भी विभेद स्पष्ट रूप से मालूम पड़ सकता है। एक उदाहरण से यह भेद स्पष्ट हो जावेगा—

(१) आदर्श भोजपुरी—

तलवा झुरइले कँवल कुम्हलइले,
हँस रोये विरह वियोग।
रोवत बाड़ी सरवन के माता,
के कावर ढोइहें मोर।

(२) बनारसी—

भौंचूमि लेइला केहु सुन्नर जे पाइला।
हम उ हई जे ओठे पै तलवार उठाइला॥

× × ×

हम उनसे पूछलि, आँखी में सुरमा काहे वदे लगाइला।
ऊ हँस के कहलन, छूरि पत्थर से चटाइला।

× × ×

हम खर-मिटाव कैली हा रहिला चवाय के।
भेंवल धरल वा दूध में खाजा तोरे वदे॥१॥
अपने के लोई लेहली है कमरी भी वा धइल।
किनली है रजा, लाल दुसाला तोरे वदे॥२॥
पारस मिलल वा, वीच में गंगा के रामधे।
सजवा देइला सोने कै बँगला तोरे वदे॥३॥
अत्तर तू मल के रोज नहायल कर, रजा।
वीसन भरल धयल वा करावा तोरे वदे॥४॥
जानीला आजकल में झनाझन चली रजा।
लाठी, लोहाँगी, खंजर औ विछुआ तोरे वदे॥५॥
बुलबुल, वटेर, लाल लड़ावैलँ दुकड़हा।
हम काबुली मँगौली है मेढ़ा तोरे वदे॥६॥

कासी पराग द्वारिका, मथुरा औ बृन्दावन।
धावल करैलें 'तेग', कन्हैया, तोरे बदे ॥७॥

—तेग़ अली

भोजपुरी व्याकरण की बातें—भोजपुरी का व्याकरण जटिल नहीं है। शब्दरूपों के बनाने के नियम सीधे-सादे हैं।

संज्ञा—प्रत्येक संज्ञा-पद के तीन रूप होते हैं, लघु, दीर्घ और दीर्घतम; जैसे घोड़ा, घोड़वा और घोड़उअवा; बेटा, बेटवा, बेटउअवा; नाऊ, नउआ, नउअवा। इनमें मूल या लघु रूप शब्द-कोश में स्थान पाता है, परन्तु दीर्घ और दीर्घतम रूप लोगों के मुख में। 'वा' स्वार्थिक प्रत्यय है, परन्तु कभी-कभी दूसरे योग से बने रूपों में अर्थ-भेद भी पाया जाता है। 'घोड़वा ले आव' में हमारा अभिप्राय किसी खास घोड़े से है। बहुवचन के लिए एकवचनान्त पद में नि, न्ह, या न जोड़ते हैं। कभी-कभी समूह-सूचक 'लोग' और 'सभ' शब्दों के योग से भी बहुवचन बनाया जाता है जैसे 'राजा लोग' और 'आदमी-सभ'। कारक बनाने के लिए अनेक प्रत्यय जोड़ने की व्यवस्था है, जैसे 'के' (कर्मकारक), से, ते, सन्ते या कर्ते (करण कारक), 'खातिर', लाग या ला (सम्प्रदान), से, ले (अपादान), क, के, कई, (सम्बन्ध), में, मों (अधिकरण)। इनके अतिरिक्त करम और अधिकरण के लिए 'एँ', 'ए' प्रत्यय शुद्ध कारक प्रत्यय हैं, जिसके पहले 'आ' का लोप हो जाता है, परन्तु अन्तिम 'ई' या 'ऊ' को ह्रस्व बना दिया जाता है। जैसे घोड़ें, घोड़े. माली से मलिएँ, मलिए।

क्रिया—उत्तम पुरुष का एक वचन का प्रयोग कविता को छोड़कर बोलचाल में बहुत कम होता है। उसकी जगह पर सदा बहुवचन का ही प्रयोग होता है। उसी प्रकार मध्यम पुरुष के एकवचन का प्रयोग तिरस्कार सूचित करता है (तू बाड़)। इसलिये इसके लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। आदर-सूचन के लिए (रौरा शब्द के साथ) मध्यम पुरुष के स्थान पर उत्तम के बहुवचन का प्रयोग किया जाता है ('रउरा आईं', परन्तु साधारण मध्यम पुरुष के लिये 'तूँ लोग आव')

सहायक क्रिया के लिये और सत्ता दिखलाने के वास्ते दो धातु हैं—बाड़, बाड़ी या बानी और हवीं। वर्तमान काल में:—

उत्तम	(बाड़ों)	बाड़ी, बानी	(हवों)	हवीं
म०	बाढ, बाड़े	बाड़	हवे	हव
प्र०	बा, बाड़े	बाड़न	हा, हवे	हवन

भूतकाल में—

	पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
	ए० व०	ब० व०	ए० व०	ब० व०
उत्तम	रहलों	रहलीं	×	रहल्यूँ
मध्यम	रहले, रहलस	रहल	रहली, रहलिस	रहलूँ
अन्य	रहल, रहले	रहलन	रहली	रहलिन

मुख्य क्रियाओं के रूप भी सीधे ढंग पर तैयार होते हैं। वर्तमान दो प्रकार का होता है। एक तो साधारण धातु से बनता है, परन्तु दूसरे प्रकार के लिए 'ल' प्रत्यय का योग आवश्यक है। यदि अन्य पुरुष का साधारण रूप देखे, देखसि, देखसु या देखस (ए० व०)—देखन या देखनि (ब० व०) है, तो दूसरा रूप है देखला, देखेला (ए० व०)—देखले, देखलन, देखलनि या देखेले, देखेलन, देखेलनि (ब० व०)। भूतकाल के लिए 'ल' प्रत्यय जोड़ा जाता है (जैसे देखले, देखलस या देखलसि=उसने देखा; देखलन या देखलनि=उन्होंने देखा)। भविष्यकाल का सूचक 'ब' प्रत्यय है उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष के लिए, परन्तु 'ह' अन्य पुरुष के लिए। रूप पहले ही दिया गया है।

क्रियाओं के परिवर्तन में कभी-कभी विषमता दीख पड़ती है—जैसे

करल (करना), भू० का० करल या कइल;
मर (मरना) ,, ,, मरल या मूअल;
जाइल (जाना) ,, ,, गइल;
देल (देना) ,, ,, दिहल, देल;

होऊल (होना) भू० का० भइल;

(२) भोजपुरी साहित्य

भोजपुरी का विस्तार बहुत अधिक है। इसके बोलनेवालों की संख्या मराठी बोलनेवालों से भी अधिक है। मराठी बोलनेवालों की संख्या दो करोड़ से भी कम है (१, ८७, ६७,८३१—१६२१ ई० की गणना), परन्तु भोजपुरी वालों की संख्या दो करोड़ से कहीं ऊपर है (२,०४,१२,६०८—१६२१ की गणना); ब्रज के बोलनेवाले केवल ८० लाख के करीब हैं (७८,३४,२७४) बिहारी की तीनों बोलियों में भी भोजपुरीवालों का नम्बर पहला है। मैथिली बोलनेवालों की संख्या एक करोड़ से कुछ ऊपर है, मगही की लगभग ७० लाख के। इस तरह भोजपुरी अपनी हमजोलियों से ही संख्या तथा विस्तार में बढ़कर नहीं है, प्रत्युत दूरस्थित अपनी बहनों (ब्रज और मराठी) से भी कहीं बढ़-चढ़कर है। इतना होने पर भी यह कम दुःख की बात नहीं है कि इसका साहित्य अभी तक समृद्ध रूप में नहीं दीख पड़ता। वह अभी तक लिखित अवस्था में भी नहीं है, बल्कि जीविका के लिए इधर-उधर भ्रमण करनेवाले गायकों और अनपढ़ देहातियों की जिह्वा पर निवास कर रहा है। भोजपुरी साहित्य की अभिवृद्धि न होने का प्रधान कारण है राजाश्रय का अभाव। भोजपुर मण्डल में किसी प्रभावशाली, व्यापक प्रतापी नरेश का पता नहीं चलता। अधिकतर इसमें किसानों की बस्तियाँ हैं। किसी गुणग्राही नरपति के आश्रय न मिलने से साहित्य सम्पन्न न हो सका। भोजपुरी को तो न विद्यापति ही मिले, न सूर ही। मैथिली और ब्रज के समान इसकी वृद्धि हो तो कैसे हो ? विद्यापति के कारण मैथिली साहित्य का उदय हुआ और सूरदास के कारण ब्रजभारती चमक पड़ी, और ये दोनों रसिक काव्य की भाषा समझी जाने लगीं, किंतु उत्साह तथा प्रतिभा के अभाव में भोज-पुरी साहित्य पनप न सका। यदि प्रतिभासम्पन्न कवि इसे मिल गया होता, तो स्वभावतः सरस तथा मधुर होने के हेतु इसका भी साहित्य, रसिकों के गले का हार बन गया होता। परन्तु इस संग्रह के गायनों को पढ़कर किसी सहृदय को सन्देह नहीं हो सकता कि भोजपुरी में भी माधुर्य है, हृदय को बरबस अपनी

ओर खींचनेवाले शब्दों और भावों का मधुमय सम्मिलन है, चित्त को आनन्द सागर में विभोर बना देनेवाले रसों का शोभन परिपाक है।

भोजपुरी भाषा का प्रयोग काव्य-ग्रन्थों में कुछ कम प्राचीन नहीं है। हिन्दी के अनेक महाकवियों ने इस भाषा के शब्दों को अपनी कविता में स्थान दिया है। कबीरदास, जायसी तथा तुलसीदास की कविताओं में इस भाषा के शब्द अनेक स्थानों पर बिखरे पड़े हैं। कबीरदासजी भोजपुर प्रान्त के ही रहनेवाले थे। यद्यपि इनकी भाषा में अनेक भाषाओं के शब्द पाये जाते हैं तोभी भोजपुरी का कुछ कम प्रयोग इन्होंने नहीं किया है। इनकी भोजपुरी कविता के कुछ उदाहरण लीजिए—

(१) कनवा फराय जोगी जटवा बढ़वलें,
दाढ़ी बढ़ाय जोगी होइ गइलें बकरा।
कहहिं कबीर सुनो भाई साधो,
जम दरवजवा बान्हल जैबे पकरा॥

(२) बाबा घर रहलौं बबुई कहवलौं।
सइयाँ घर चतुर सयान।
चेतब घरवा आपन रे॥

(३) का लेइ जैबों पितम घर अइवां,
गाँव के लोग जब पूछन लगिहें।
तब हम का रे तवइयों॥

(४) सुतल रहलौं माइ नींद भरिहौ, पिया दिहलें जगाय।
चरन कवल के अञ्जन हो, नैना लेलू लगाय॥

कबीर के अतिरिक्त हिन्दी के जायसी तथा तुलसीदास आदि महाकवियों ने भी भोजपुरी शब्दों का अपने काव्यों में प्रचुर प्रयोग किया है। तुलसीदास की अपेक्षा जायसी ने भोजपुरी शब्दों का प्रयोग कम किया है परन्तु जिन शब्दों का उन्होंने व्यवहार किया है वे ठेठ भोजपूरी के हैं। जायसी का कार्यक्षेत्र अवध में ही सीमित रहा, अतः उनके काव्य में भोजपुरी शब्दों की कमी स्वाभाविक है। परन्तु तुलसीदास का क्षेत्र जायसी की अपेक्षा अधिक

व्यापक था, वे काशी में अनेक वर्षों तक रह चुके थे, अतएव उनकी रचनाओं में भोजपुरी के शब्दों की प्रचुरता प्राकृतिक है। रामचरितमानस में तो भोजपुरी के शब्दों की इतनी अधिकता है कि यदि उनका संग्रह किया जाय तो एक लम्बी लिस्ट तैयार हो सकती है। हम अब जायसी तथा तुलसी के ग्रन्थों में आये हुए कुछ भोजपुरी शब्दों को नमूने के तौर पर देते हैं।

जायसी (पद्मावत से)

साजि सबै चंडोल चलाये, सुरंग ओहार मोति बहु लाये।
छूँछि जौ घरी, फेरि विधि भरी।
का पछिताव आउ जो पूजी।

सबै कटक मिलि गोरेहिं छेंका, गूँजत सिंह जाइ नहिं टेका।
सिंघ जियत नहिं आप धरावा; मुये पाछ कोई घिसियावा।
पहुँचा आइ सिंह असवारू; जहाँ सिंह गोरा बरियारू।
कोई नियरै नहिं आवै, सिंघ सदूरहि लागि।
भइ परलय अस सबही जाना; काढ़ा खड़ग सरग नियराना।

तुलसीदास (रामायण से)

जो राउर अनुशासन पाऊँ। कन्दुक इव ब्रह्माण्ड उठाऊँ॥
रामु रामु रटि भोरु किय, कहेउ न मरमु महीसु॥
तदपि धीर धरि समय विचारी। पूछी मधुर बचन महतारी॥
सुमिरि महेसहिं कहइ निहोरी। विनती सुनहु सदासिव मोरी॥
छुवत चढ़ी जनु सब तन बीछी।
जिवन मूरि जिमि जुगवत रहेऊँ। दीप बाति नहिं टारन कहेऊँ॥
आपन मोर नीक जो चहहू। बचन हमार मानि गृह रहहू।
जिमि गँव तिकइ किरात किशोरी।
बार बार मृदु मूरति जोही। लागहि ताति बयारि न मोही॥

अचल होइ अहिवात तुम्हारा। जब लग गंग जमुन की धारा॥
गुरु, पितु, मातु न जानौ काहू। कहौ सुभाउ नाथ पतिआहू॥

(*कवितावली से*)

राजिव लोचन राम चले, तजि बाप को राज बटाऊ की नाईं।
पोंछि पसेउ बयारि करूँ, अरु पाँय पखारिहौं भूभुरि डाढ़े।

तुलसीदासजी के अन्य ग्रन्थों से भोजपुरी शब्दों के प्रयोग के उदाहरण देकर इस भूमिका को मैं बढ़ाना नहीं चाहता। यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त है कि तुलसीदास ने कुछ ऐसे भोजपुरी शब्दों का प्रयोग किया है जो ठेठ भोजपुरी भाषा के शब्द हैं। उदाहरण के लिये 'जुगवत' शब्द को लीजिए, जिसका अर्थ भोजपुरी में किसी वस्तु की बड़ी सावधानी से रक्षा करना है। यह शब्द भोजपुर प्रान्त में ही बोला जाता है, अन्यत्र नहीं। दूसरा शब्द 'अहिवात' है, जिसका अर्थ सौभाग्य है। यह भी ठेठ भोजपुरी है, इसका प्रचलन अन्यत्र नहीं। तीसरा शब्द 'लूगा' है जिसका प्रयोग तुलसीदास ने 'विनय-पित्रका में' अनेक स्थानों पर किया है। भोजपुरी में 'लूगा' का अर्थ स्त्रियों के पहिनने का कपड़ा है। परन्तु भोजपुरी का ठेठ शब्द होने के कारण विनय पत्रिका के प्रसिद्ध टीकाकार पं० रामेश्वर भट्ट ने भ्रमवश इसका अर्थ क्रियापद 'लूँगा' किया है, जो नितान्त अशुद्ध है। कहने का तात्पर्य केवल यही है कि तुलसीदासजी ने भोजपुरी के ठेठ शब्दों का प्रयोग किया है।

यद्यपि जायसी की भाषा अवधी है, परन्तु ऊपर के उदाहरण से यह सिद्ध होता है कि उनकी भाषा पर भी भोजपुरी की छाप अवश्य है।

अंग्रेज़ी अफ़सरों का ध्यान भोजपुरी के गीतों के संग्रह की ओर बहुत दिनों से है। आज से पचास-साठ साल पहले डाक्टर ग्रियर्सन का ध्यान मैथिली तथा भोजपुरी कविताओं को एकत्र करने की ओर आकृष्ट हुआ। विद्यापति की कविता का अंग्रेज़ी में अनुवाद कर उन्होंने मैथिली के छिपे

जौहर को विज्ञों की मण्डली में लाकर उपस्थित किया। भोजपुरी के भी अनेक गीतों का संग्रह अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ लंडन की रायल एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका (१६ वीं तथा १८ वीं जिल्द) तथा इन्डियन एन्टिक्वेरी (१८८५ ई०) में प्रकाशित किया। भोजपुरी का व्याकरण भी उन्होंने 'सेविन ग्रामर्स आफ़ दि डाइलेक्ट्स एण्ड सब-डाइलेक्ट्स आफ़ दि बिहारी लैंग्वेज' (कलकत्ता, १८८४) नामक पुस्तक के द्वितीय भाग में विस्तार के साथ लिखा। इनके पहले भी डा० बीम्स, डा० हार्नली तथा सर कम्पबेल ने इस बोली की विशेषताओं तथा शब्दों के विषय में बहुत कुछ लिखा था, परन्तु ग्रियर्सन का प्रयत्न नितान्त श्लाघनीय था। उसी समय एतद्देशीय विद्वानों की भी दृष्टि भोजपुरी पर पड़ी, और उन लोगों ने इसके उदाहरण अपने ग्रन्थों में दिए। साहित्यप्रेमी लाला खड्ग बहादुर मानन ने 'सुधा बूँद' में ६० कजरियों का संग्रह किया (बाँकीपुर, १८८४)। पण्डित रविदत्त शुक्ल ने 'देवाक्षर चरित' नामक नाटक के अनेक दृश्य भोजपुरी बोली में लिखे हैं (बनारस १८८४), तथा 'जंगल में मंगल' नामक पुस्तक में उस समय बलिया में घटित होने वाली घटनाओं का वर्णन भोजपुरी में किया है (बनारस, १८८६)। पण्डित रामगरीब चौबे ने 'नागरी विलाप' में भोजपुरी का प्रयोग किया है (काशी, १८८६), परन्तु इन ग्रन्थों की रचना १८८६ ई० के आसपास की गई है। उसके अनन्तर भारत जीवन प्रेस के स्वामी स्वर्गीय बाबू रामकृष्ण वर्मा ने 'बिरहा नायिका भेद' लिखकर साहित्यिकों का विशेष मनोरञ्जन किया है। बलिया जिले के स्वर्गीय पं० दूधनाथ उपाध्याय द्वारा रचित भोजपुरी कविताओं का स्वाद उन लोगों को अवश्य ही मिला होगा, जिन्होंने इनकी 'गोविलाप छन्दावली' और 'भर्ती के गीत' पढ़ने का प्रयास किया होगा। सन् १८८८ ई० में तेग़अली का 'बदमाश दर्पण' बनारसी गुण्डों के विचित्र चरित्र का ही दर्पण नहीं है, प्रत्युत बनारसी में विरचित मनोहर कविताओं का कमनीय संग्रह है। पश्चिमी भोजपुरी की विशेषताओं के अध्ययन करने का इसमें महान् साधन उपलब्ध है। परन्तु विशुद्ध भोजपुरी के गीतों का इतना बड़ा संग्रह

प्रस्तुत पुस्तक के पहले कहीं भी प्रकाशित नहीं था। यह पहला ही अवसर है कि परिश्रमी तथा विद्वान् सम्पादक ने साहित्य-प्रेमियों तथा भाषाविदों के काम की एक अपूर्व चीज़ तैयार की है। इस संग्रह के द्वारा भोजपुरी की कमनीयता का ही पता नहीं चलता, प्रत्युत उसे भाषाशास्त्र की दृष्टि से अध्ययन करने के लिए भी अनुपम सामग्री का यह अपूर्व भण्डार है।

इन गीतों के अध्ययन का यह सुचारु परिणाम होगा कि हिन्दी भाषा की शब्द-सम्पत्ति नितान्त समृद्ध होगी। हिन्दी की इतनी उन्नति होने पर भो जानकारों से यह बात छिपी नहीं है कि देहाती ग्रामीण विषयों पर भी लिखने के समय लेखक को शब्दों का टोटा होने लगता है। यह बात बेतरह सी दीखती है, परन्तु है सोलहों आने सच्ची कि अपने रोजमर्रे के परिचित विषयों के नाम से भी हम अनभिज्ञ ही हैं। विशेषकर खेती बारी के सम्बन्ध की चीज़ों से। उदाहरण के लिए कई जरूरी शब्दों को परखिए। जवान, बियाने लायक होने पर अनवियाई गाय को कहते हैं—'कलोर'; गाय के सद्योजात शिशु (वैदिक नाम—धरुण) को कहते हैं—लेरुआ। गर्भघातिनी गाय ('वेहद्') का नाम है 'लड़ायल गाय' तथा बाँझ गाय (वशा) को कहते हैं 'बहिला', जो भाषा-शास्त्र की दृष्टि से भी 'वशा' के अनुरूप ही है। इन पदार्थों के यथार्थतः सूचक शब्दों का हिन्दी में सर्वथा अभाव ही है। इसी प्रकार हिन्दी में प्रयोग योग्य अन्य शब्द हैं—आसावती = गर्भिणी; उरेहना = चित्र खींचना; हँकार = बुलावा; चेलिक = छैला, युवक; मनुहारी = प्रार्थना, मनावा; सुहवा = सुभगा, दुलहिन; फोकट = मुफ़्; बोहनी-बट्टा = प्रातःकाल की पहली बिक्री; रमझल्ला = हल्ला-गुल्ला। ये शब्द इतने सार्थक तथा अर्थाभिव्यञ्जक हैं कि इनके अपनाने से हिन्दी में व्यापकता के साथ-साथ जीवट भी आवेगा। परन्तु आजकल तो हिन्दी-लेखकों का ढर्रा ही नया है। वे या तो अरबी-फारसी लफ़्ज़ों की भरमार कर मजमून को दुर्बोध बनाने के आदी हैं अथवा संस्कृत के अप्रचलित कठिन शब्दों को ठूसठास कर अपनी विद्वत्ता दिखाने के लिये उद्यत रहते हैं। ये दोनों बातें 'अति' होने के कारण वर्जनीय हैं। तद्भव शब्दों का तिरस्कार कथमपि श्लाघनीय नहीं है।

ये गीत नये-नये मुहावरों की खान हैं। इनमें से कुछ तो इतने अनूठे तथा भावपूर्ण हैं कि उनको व्यापक रूप देकर प्रयोग करने से हिन्दी का महान् कल्याण होने की संभावना है। उन्हें प्रान्तीय और ग्रामीण कहकर हिकारत की नज़र से देखना किसी तरह भला नहीं जँचता। ये ग्राह्य हैं, उपेक्ष्य नहीं। कुछ उदाहरण लीजिए—

पाताल खिलना = बहुत दूर चला जाना।

फिरहिरि होना = कार्य में नितान्त व्यग्र होना।

लग्गा लगाना = किसी काम को आरम्भ करना।

हेठी दिखलाना = अपमान सूचित करना।

तरवा में आग लगना = क्रोध में आग बबूला होना।

हाथे दही जामना = मारने पर क्रुद्ध न होकर चुप रहना।

हाँका हाँकी बदना = स्पर्धा करना।

हाथ झुलावत आना = असफल होकर लौटना।

इन मुहावरों में इतना अधिक औचित्य तथा भावव्यञ्जकता विद्यमान है कि इनकी उपेक्षा सर्वथा गर्हणीय है। हिन्दी-लेखकों को इस ओर ध्यान देना चाहिए। हर्ष का विषय है कि पण्डित उदयनारायण तिवारी ने लगातार कई सालों के परिश्रम से भोजपुरी बोली की कहावतें और मुहावरों का एक बड़ा संग्रह 'हिन्दुस्तानी' के कई अंकों में प्रकाशित किया है (हिन्दुस्तानी सन् १६३६ तथा ४० की)। इसके लिए वे हमारे धन्यवाद के भाजन हैं।

(३) भोजपुरी गीतों के गाने के ढंग

भोजपुरी गीतों के गाने के ढंग निराले हैं। इनमें अधिक गीत कामिनियों के कोमल कण्ठ के लिए उपयुक्त हैं, परन्तु कुछ गीत (जैसे चैता और बिरहा) पुरुषों के ही लिए हैं। इन गीतों को पढ़ने के समय याद रखना चाहिए कि ये गाने हैं, इनका आनन्द गाकर ही उठाया जा सकता है। ये काव्य नहीं हैं जिनका आनन्द पाठमात्र से मिल सकता है। पिंगल के नियम का ये अक्षरशः पालन नहीं करते, परन्तु फिर भी इनमें छन्दोबद्धता है—लघुगुरु के नियम की

पूरी पाबन्दी है। गान के सौन्दर्य के लिए कभी-कभी शब्दों को तोड़ने-मरोड़ने की भी जरूरत आ पड़ती है। यही कारण है कि 'निरमोहिया' 'निरवा मोहिया' के रूप में, और 'निरदरदी' 'निरवा दरदी' के रूप में परिणत पाये जाते हैं। कहीं-कहीं 'रे' 'हो' तथा 'ये' आदि सहायक अव्ययों की भी सहायता उपेक्षणीय नहीं होती, और कहीं-कहीं दीर्घ स्वर को ह्रस्व रूप से ही पढ़ना पड़ता है। भोजपुरी गीतों में अनेक स्थलों पर दीर्घ स्वर को विना ह्रस्व पढ़े छन्दोभंग की भूयसी आशंका बनी रहती है। यह दशा आ, ई तथा ऊ के ही विषय में लागू नहीं है, बल्कि एकार तथा ओकार के विषय में भी (जिनके ह्रस्व की कल्पना संस्कृत व्याकरण के स्वप्न का भी विषय नहीं है)। इन गीतों के प्रत्येक पद्य के अन्तिम शब्द का उपान्त्य स्वर दीर्घकाल तक उच्चारित किया जाता है और अन्तिम स्वर बहुत ही हलका। कुछ उदाहरण लीजिए—

गोरि के छतिया पर उठेला जोवनवा
हँसेला सहरिया के लोग।
लेबू गोरि दमवा, देबू हो जोवनवा
तोरा से जतनवा ना होई॥

इस बिरहा में के, उठेला में 'ठे', 'जोबनवा' में 'जो', 'हँसेला' में 'से', और 'के', ये समग्र स्वर ह्रस्वरूप हैं। तथा 'लोग' और 'होई' शब्दों का उपान्त्य स्वर—लो और हो—देर तक उच्चारण चाहता है। इसके अभाव में बिरहा का सारा मज़ा किरकिरा हो जायगा। सोहर, जँतसारि आदि अन्य गीतों में भी इस बात का ख़याल रखा जाता है। "नाहीं कोठी लवलू पेहान", "भउजी नयनवों न लोर", "चनन अस गमकीले"—इन पदों में उपान्त्य स्वर 'हा', 'लोर', 'की' को देर तक पढ़ने से ही छन्द की यथाविधि पूर्ति होती है।

२

(१) भोजपुरी गीतों के प्रकार

भोजपुरी गीतों में अनेक प्रभेद हैं। हमारा जीवन नाना प्रकार के संस्कारों के द्वारा संस्कृत बनाया जाता है। हिन्दुओं के प्रधान १६ संस्कार हैं, परन्तु

इनमें यज्ञोपवीत (जनेऊ) और विवाह की मुख्यता है। इन अवसरों पर ब्राह्मण पुरोहित वैदिक मन्त्रों का उच्चारण कर विधि-व्यवहार को सुसम्पन्न बनाता है, परन्तु स्त्रियाँ अवसर के अनुरूप नाना प्रकार की भावभङ्गियों से संवलित मनोहर गीत गाकर उसे मधुर तथा संगीतमय बनाती हैं। ऋतु-परिवर्तन के कारण भी गीतों में अनेक भेद दीख पड़ते हैं। इन सब बातों को दृष्टि में रखकर इस संग्रह में संगृहीत गीतों का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है—

(१) **सोहर**—पुत्र-जन्म के अवसर पर गाये जाने वाले गीत 'सोहर' के नाम से प्रसिद्ध हैं। 'सोहिलो' तथा 'मंगल' के अभिधान से इन्हींका संकेत किया जाता है। पुत्र-जन्म का अवसर सौभाग्यशाली पुरुष के ही जीवन में, कभी-कभी आया करता है। स्त्रियाँ पुत्र होने के लिए लाख मनौती मानती रहती हैं। अतः पुत्रजन्म भारतीय ललनाओं की ललित कामनाओं की चरम परिणति है, मानी गई मनौतियों का मनोरम परिणाम है। इस शुभ अवसर पर पास-पड़ोस की स्त्रियाँ, विशेषतः ग्रामगीतों की पण्डिता वृद्धाएँ, एकत्र होकर जच्चा के सूतिकागृह के दरवाजे पर बैठ जाती हैं और रमणीय गीतों को सुनाकर घर भर की स्त्रियों का, विशेषतः जच्चा का मनोरञ्जन किया करती हैं। 'सोहर' वस्तुतः हिन्दी कविता में गृहीत एक छन्द विशेष है, जिसे तुलसीदास ने अपने 'रामलला-नहछू' में व्यवहृत किया है; परन्तु भोजपुरी सोहर किसी पिंगल के नियम से विरचित नहीं है, तथापि इनमें एक विचित्र प्रकार की लय रहती है जो सुनने वालों के हृदयों को बरबस खींच लेती है।

इन गीतों में आनन्द के उल्लास का विशद वर्णन होना स्वाभाविक है, परन्तु जच्चा के हृदय में गुदगुदी पैदा करने वाली मीठी हँसी की बाँकी झाँकी भी विद्यमान है। कहीं-कहीं सन्तानहीन बाँझ नारियों की करुण दशा का चित्र सहृदयों के हृदय में विशद सहानुभूति उत्पन्न करता है! गर्भ का जैसा साङ्गोपाङ्ग तथा विस्तृत वर्णन इन गीतों में उपलब्ध होता है उतना अन्यत्र मिलना विरल है। गर्भिणी का शरीर पिराने लगता है, तरह-तरह के भोजन करने की इच्छा (जिसे संस्कृत में दोहद कहते हैं) उत्पन्न होती है,

जिसकी पूर्ति करने के लिए पति उसकी सखियों से कह देता है। प्रसव काल की वेदना को दूर करने के लिए नाना प्रकार के जतन किये जाते हैं। रानी की विषम वेदना से व्यथित-चित्त होकर राजा स्वयं ही धाय (धगड़िनि) को बुलाने के लिए जाता है। धाय के घर का पता उसे मालूम नहीं है। इसलिये वह राहगीरों से पूछता चलता है। जब आधीरात के समय वह धाय के घर पहुँचता है, धाय मीठी नींद सो रही है। दरवाजे का खटखटाना सुनकर वह जगती है और इस अनुपयुक्त समय पर आनेवाले पुरुष का परिचय पाकर चलने के लिए तैयार हो जाती है, परन्तु अपने लिए लाल ओहार वाली पालकी पर चढ़ने की माँग पेश करती है। वह कहती है—

आपना के राजा हाथी करु अवरु घोड़ा करु रे।
ऐ राजा, हमारा लाल ओहार चढ़ि हम जाइवि रे॥

यह वर्णन कितना स्वाभाविक है!

(२) खेलवना—यह भी सोहर के समान पुत्र-जन्म के सुखद अवसर पर गाया जाता है, परन्तु सोहर से इसमें कुछ भिन्नता रहती है। सोहर में विशेष कर पुत्रजन्म की पूर्वपीठिका का वर्णन रहता है, 'खेलवना' में उत्तर पीठिका का। लड़के के लिए ललचनेवाली वनिता, गर्भ की वेदना से व्याकुल तरुणी, वहू के मंगल साधन में लगी सासु, धाय को दौड़कर बुलानेवाले पति, बालक के उत्पन्न होने पर राजपाट माँगनेवाली धाय—ये सोहर के प्रतिपाद्य विषय हैं; परन्तु सद्योजात शिशु का रोदन, माता का आनन्द, सास की प्रसन्नता, अपने कलांकुर के पैदा होने से सर्वस्व लुटानेवाले पिता का हर्ष 'खेलवना' के मुख्य विषय हैं।

(३) जनेऊ के गीत—मुण्डन तथा यज्ञोपवीत के अवसर पर गाने योग्य गीत, जिनमें ब्रह्मचारी के साधनों तथा नियमों का विशेष उल्लेख रहता है।

(४) विवाह के गीत—भोजपुरी गाँवों में विवाह एक लम्बा व्यापार है। वर के प्रथम पूजन को 'वररक्षा' कहते हैं, जिसके बाद कन्यापक्ष वाले अनेक पात्र, पत्र-पुष्प तथा द्रव्य लेकर वर की विशेष पूजा करते हैं। इसे

'तिलक' कहते हैं। वर को विवाह के लिये जाते समय जो मांगलिक पूजन होता है उसे 'परीछन' के नाम सें पुकारते हैं। कन्यापूजन का नाम 'गुरहथी' है। इनमें से हर एक अवसर के लिए भिन्न-भिन्न गीत तथा उनके विषय भी भिन्न-भिन्न हैं। विवाह के पहले शिव-पार्वती के विवाह विषयक गीत भी मंगलाचार के तौर पर गाये जाते हैं।

(५) **वैवाहिक परिहास के गीत**—जिनमें वर के साथ दुलहिन की सहेलियाँ नाना प्रकार की समयोचित हँसी की बातें रहती हैं। इनमें हास्य रस का अच्छा पुट रहता है।

(६) **गवना के गीत**—बधू के पतिगृह में प्रथम आगमन को 'गवना' कहते हैं। इस अवसर पर गीतों का ममतामयी माता, परिचित स्निग्ध बन्धुओं और प्रेमी पिता से बिछुड़ना प्रधान विषय रहता है। इन गीतों में बिछोह तथा करुणरस का निरन्तर संचार रहता है।

(७) **बारहमासा**—पति के परदेश जाने पर साल के बारहों मासों में नई-नई चीजों का होना तथा बधू का क्लेशमय जीवन का विशद वर्णन इन गीतों में रहता है। इसी के भीतर सावन में झूला झूलने के समय के गीतों का समावेश समझना चाहिए।

(८) **जाँत के गीत**—जिनका भोजपुरी नाम है 'जँतसारि'। विषय वही प्रियतम-वियोग। जाँत पीसने के समय, विशेषतः रात के तीसरे पहर, बिल्कुल सन्नाटा होने के कारण ये गीत दूर तक सुनाई देते हैं। गाने का ढंग विचित्र होता है।

(९) **सोहनी के गीत**—बरसात के शुरू में खेत में उगे पौधों को नुकसान पहुँचानेवाले घासपात को निकाल बाहर करना सोहनी करना कहलाता है। इस काम के लिए नीच जाति की स्त्रियाँ रखी जाती हैं। आवश्यकतानुसार इन गीतों के पद छोटे-छोटे होते हैं।

(१०) **छठीं माता**—सन्तान की कामना से कार्तिक शुक्ल षष्ठी को सूर्य की विशेष पूजा होती है। उस समय ये गीत गाये जाते हैं।

(११) शीतलाके गीत—चेचक हो जाने पर शीतला देवी की प्रसन्नता सम्पादन करने के लिए ये गीत गाये जाते हैं। इनमें शीतला की नाना प्रकार की क्रीड़ाओं तथा भक्तों के प्रति दया की कथाओं का विशेष वर्णन रहता है।

(१२) झूमर—ये गीत द्रुत लय से गाये जाते हैं। सब स्त्रियाँ खड़ी होकर एक साथ झूम-झूमकर स्वर में स्वर मिलाकर इन गीतों को गाती हैं इसी कारण इन्हें 'झूमर' कहते हैं। विषयों में एकता नहीं है। जब सुन्दरियाँ मस्ती में झूम-झूमकर अपने कलकण्ठ से झूमर गाती हैं, तब श्रोताओं के हृदय में एक विचित्र हर्ष का प्रादुर्भाव होता है। द्रुत लय से होने के कारण इन गीतों में एक विशेष ढंग का प्रवाह है।

(१३) चैता—चैत के महीने में (वसन्त के आरंभ में) ये गीत मर्दों के द्वारा गाये जाते हैं। इन्हें 'घाँटो' भी कहते हैं। इनकी लय बड़ी ही मनोमोहक होती है। लय विलम्बित होता है। गानेवाला अपनी मधुर श्लथ लय से चैत महीने की रुचिर वस्तुओं का सुन्दर वर्णन करता है और विरहिनों के चित्त को आश्वासन देता है। घाँटों के प्रसिद्ध लेखक कोई 'बुलाकीदास' हो गये हैं जिनका नाम अनेक गीतों के अन्त में आता है।

(१४) बिरहा—बड़े उमंग का मर्दाना गाना है। अहीर लोगों का तो यह जातीय गान है। किसी भी शुभ अवसर पर अहीर इन बिरहों को जरूर गावेगा। शादी के मौके पर तो बिरहा ही अहीरों के मनोरञ्जन का प्रधान साधन है। बिरहा का विशेषज्ञ पुरुष अहीर समाज में विशेष आदर तथा सत्कार पाता है। बिरहा एक प्रकार का छन्द है। विषय—कभी वीर, कभी शृंगार, कभी नीति और कभी अहीर-जीवन।

(१५) भजन—मेला तथा तीर्थयात्रा के समय अनेक भजनों के गाने की चाल है। स्त्रियों का झुंड एक साथ मिलकर भगवान की स्तुति, जीवन की क्षणभङ्गुरता भजनपूजन की उपादेयता आदि विषयों पर रमणीय गीत गाता है। बड़ा रस भरा है इन भजनों में, तथा रहस्यवाद की मधुर झाँकी मिलती है इन सामूहिक गीतों में।

(२) गीतों की दुनिया

गीतों की दुनिया ही निराली है । इनमें जिस समाज का वर्णन किया गया है वह कितना स्वस्थ, कितना स्वाभाविक, कितना सुन्दर तथा कितना निर्मल है ! गीतों में अभिव्यक्त गृहस्थी का चित्र कितना रँगीला दीख पड़ता है ! गृहस्थी में खाने-पीने के लायक ही सामान प्राप्त हैं; वह समृद्धि में लोट-पोट नहीं करती, परन्तु इस जीवन में जिस सन्तोष, आन्तरिक शान्ति, बाह्य सौन्दर्य की झाँकी दीख पड़ती है वह किसी दिव्य लोक की प्रतीत होती है । कितनी कोमल कल्पना तथा मधुर भावुकता का राज्य है इस गीत-सुलभ जगत् में ! परिचित वस्तुओं के लिए भी अनेक मधुर उपमानों की रमणीय कल्पना गीत-जगत् को संगीतमय बनाये डालती है । पतिदेव घर के मालिक होने की हैसियत से 'प्रभु जी' कहलाते हैं, रँगरलियाँ मचाने के कारण 'कन्हैया', रस के लोलुप होने के कारण 'भौंरा' तथा धर्म-कर्म के फल के साझी होने के कारण 'सझ-वइता' । उचित अवसरों पर इन साहित्यिक शब्दों का प्रयोग गीतों की काव्य-कला का पर्याप्त द्योतक है । जब प्रसव की वेदना से व्याकुल निःसहाय गर्भिणी वेदना को बाँट लेने के लिये अपने 'सझवइता' को खोजती है, तब वह कितना कवित्वमय प्रतीत होता है ! जब प्रिय धर्म-कर्म के समग्र फलों में साझी है, तब क्या उसे उचित नहीं है कि वह गर्भवेदना को भी बाँटकर व्याकुल पत्नी के बोझ को हलका बना डाले ? गीतों में चित्रित सुन्दरी की सौन्दर्य-कल्पना में कितनी नूतनता तथा नैसर्गिकता भरी है ! वह पान के समान पतली (तन्वङ्गी) है, तो सुपारी की भाँति सरस-चिक्कण (ढुरहुर) है । वह फूलों के समान कोमल (सुकुवाँर) है, तो चन्दन के समान सौरभ फैला रही (गमकती) है । उसके केश काले और लम्बे हैं । जब अपने बाबा के तालाब पर माथा मीसने और नहाने जाती है, तो उसके सौन्दर्य की छटा देखकर लोग मूर्च्छित हो जाते हैं । कभी-कभी उसका बाल टूटकर नदी में बह निकलता है जिसकी सुकुमारता और सुनहला रंग किसी देखनेवाले रसिक के हृदय को बरबस खींच लेता है और वह उस काञ्चन केश वाली कामिनी की खोज में बेचैन हो उठता है ।

उसके प्रेम के दो ही विषय हैं—माँग और कोख=पति और पुत्र, जिनको केन्द्र मानकर सुन्दरी स्नेह की अभिव्यक्ति अभिराम शब्दों में की गई है।

पुत्र के पाने की चाह कितनी मीठी है इन ललनाओं में !

पुत्र उत्पन्न होते ही माता के मन को भरता है; वह 'मनभरन' है; मन को रख लेता है—वह 'मनराखन' है, लीला का ललित निकेतन है—वह 'गोविंदजी' के नाम से अभिहित होता है।

बहू के हृदय में अपने सास-ससुर के लिए गहरा, निश्छल आदर का भाव बना है। सास मचिआ (छोटी खटिया) पर बैठकर गृह का पालन करती है। वह नितान्त आदरणीय होने से 'बढ़ैतिन' है। ससुर 'बढ़ैता' है। सासु का हृदय कितना कोमल और सहानुभूतिमय है ! जब उसे खबर लगती है कि बधू को गरमी के दिनों में बाहर से पानी भरकर लाने में क्लेश होता है, तब उसका हृदय पसीज जाता है और अपने पति से आग्रह कर आँगन में कुआँ खोदने की व्यवस्था कर देती है। पानी खींचने के लिए रेशम की डोर लगा देती है जिससे उसके हाथ में किसी किस्म की तकलीफ न हो। सास अपने पुत्र के मंगल के लिए तो चिन्तित रहती है, परन्तु इससे अधिक अपनी पतोहू के कल्याण-साधन में व्यग्र है। किसी पाहुने के आने पर भोजन सोने की थाली में परोसा जाता है और उसके स्वागत में रात भर चन्दन का तेल जलाया जाता है।

प्रियतम कार्यवश मोरँग चला जाता है और लौटने में बिलम्ब कर बैठता है। बेचारी पत्नी का हृदय बेचैन हो उठता है। वह कहती है कि यदि मैं जानती कि मेरा लोभिया मोरँग जायगा, तो मैं उसे रेशम की डोर से बाँध लेती। इतना ही नहीं, रेशम की डोर की टूटने की आशंका हो सकती है, इससे अधिक दृढ़ होता है वचन का बन्धन (प्रतिज्ञा की शृंखला) इसीमें उसे बाँध रखती। बड़ी कोमल कल्पना है इस वियोगिनी कामिनी की—

जहु हम जनितीं ए लोभिया, जइबे तुँहु मोरँगवा
बीचीं बाँही बँन्हितो ए लोभिया, रेसम के रे डोरिया।

रेसम के डोरिया ए लोभिया, टुटि फाटि जइहें;
बचन के बान्हल पियवा कतहीं ना राम जइहें ॥

प्रिय का यह विलम्ब पत्नी के लिए असह्य हो जाता है। वह अपने पड़ोसी भीमल मल्लाह के हाथ उसके पास पाती भेजना चाहती है, परन्तु पत्री कैसे तैयार हो? वह अपने नेत्र के काजल की स्याही बनाती है और अपना अँचल फाड़कर कागज तैयार करती है। मदन-लेख (प्रेमपत्र) लेकर भीमल मल्लाह मोरँग जाता है और उसके पति को लाने में समर्थ होता है।

बड़ा उदात्त, आदर्श तथा पवित्र चरित्र है इन भारतीय ललनाओं का जिनके सुकृत-सौरभ से ये गीत गमक रहे हैं। पति के परदेश चले जानेपर प्रोषितपतिका की व्याकुलता स्वाभाविक है, परन्तु वह कभी अनुचित व्यवहार में अपना हाथ नहीं डालती।' देवर उसके पास नेह गाँठने का प्रस्ताव लाकर उपस्थित होता है, परन्तु वह उसे दुत्कार देती है और क्रोध में आकर प्रिय के आने पर देवर की 'अलफी बाहों' (सुन्दर हाथों) को काट डालने की धमकी देती है'।

पत्नी का सन्देश पाकर निर्मोही पति जब नहीं लौटता, तब पत्नी की चिन्ता पराकाष्ठा को पहुँच जाती है। वह नालायक उसे दूसरा पति कर लेने की सलाह देता है, तब पतिव्रता की स्वाभाविक तेजस्विता चमक उठती है और वह कह बैठती है कि तुम्हारी बहन या माता दूसरा पति कर लें, वह आजन्म अपने व्रत को निभावेगी और तुम्हारे जैसे आदमी को ड्योढ़ीदार बना कर रखेगी। पति के अतिरिक्त बहू के सुख-स्वप्नों का केन्द्र उसका पीहर है और वह उसी ओर टकटकी लगाये जीवन बिता रही है। पीहर की हरएक चीज में उसके वास्ते कितनी मोहकता है! भाई और पिता के लिवा ले जाने की आशा उसकी जीवन-लता को हरी-भरी रखती है और अपनी माँ से फिर मिलने तथा परिचित देश में स्वतन्त्रता की वायु के सेवन की कोमल कल्पना उसके जीवन को सरस बनाये रहती है। बुरी ससुराल मिलने पर उसे सास, ननद और जेठानी के व्यङ्ग बाणों से बिद्ध होने के अवसरों की कमी नहीं रहती। यह वस्तुस्थिति बुरे दिन आने पर भारतीय समाज में आज विशेष

रूप से दीख पड़ती है, परन्तु ये गीत हमें उस दुनिया की सैर कराते हैं जहाँ किसान हल-बैल के सहारे अपनी निष्कपट जीविका उपार्जन करता है, मचिया पर बैठकर 'बड़ैतिन' सास गृह के अनुशासन में लगी रहती है, जहाँ रेशम की डोर से वधू अपने आँगन के कुएँ से पानी खींचती है, बच्चे अपनी छल-हीन हँसी से बड़ों का मनोरञ्जन किया करते हैं। भोजपुरी गीतों में चित्रित समाज का वातावरण कितना शान्त है, कितना निर्मल है, कितना मोहक है! इन गीतों में हमें तो किसी दिव्य लोक की बाँकी झाँकी मिलती है, जिसके सामने आधुनिक समाज का प्रकाश फीका, बनावटी तथा मलिन प्रतीत होता है।

(३) गीतों का भौगोलिक आधार

इन गीतों के अध्ययन से उनकी भौगोलिक पृष्ठभूमि का परिचय भली-भाँति चलता है। भोजपुर भारत के पूर्वी प्रान्त में आज ही नहीं, प्राचीनकाल में भी परिगणित किया जाता था। मनु के कथनानुसार विनशन (कुरुक्षेत्र के पास सरस्वती नदी के लुप्त होने का स्थान) के पूरब तथा प्रयाग के पश्चिम का भारत खंड 'मध्यदेश' माना जाता था। अतः मध्य देश से पूरब ओर स्थिति के कारण भोजपुर का पूर्वीय प्रान्त माना जाना बिल्कुल स्वाभाविक है। आज की भाँति इन गीतों के समय में भी भोजपुर का सम्बन्ध पूरब के देशों से अत्यधिक था। शिवजी 'पूरबी बनिजीया' पर जाते हैं; अपनी सुन्दरी को शोक-सागर में डुबाकर युवक पति भी जीविका की तलाश और वाणिज्य के नाते पूरब के देशों की ही ओर पयान करता है। इन देशों की विशेष उपज की भी गवाही गीतों से मिलती है। मगह अपने पान के लिए प्रसिद्ध है, तो मोरंग (नेपाल की तराई में देश विशेष) अपनी सुपारी के वास्ते मशहूर है। हाथी गोरखपुर से मँगाया जाता है और वर महोदय के चढ़ने के लिए वह पट-नहिया झूल से अलंकृत किया जाता है। कन्या के बाबा अपनी सयानी कन्या के लिए वर की तलाश में उत्तर-दक्षिण सब देशों को छान डालते हैं, परन्तु केवल 'तिरहुत' में ही उन्हें मनोवांछित सयाना वर मिलता है। वर के परीछने के लिए जो लोढ़ा मँगाया जाता है वह विन्ध्याचल के पत्थर का बना

मिर्जापुरी ही है। बंगाल की कीर्ति-कौमुदी इन गीतों में खूब गाई गई है। कलकत्ते में लाल रंग के छाते बिकते हैं। अपने लम्बे-लम्बे काले केशों को सजा कर खड़ी होनेवाली सुघर बंगालिन बिटिया 'पूरबी बनिजिया' पर जानेवाले भोजपुरी नायकों का मन बरबस हर लेती है। वह उनके पंजों में इतना फँस जाता है कि घर पर धर्म से ब्याही पत्नी के रहने पर भी वह बंगालिन को घर में डाल देता है, जिससे उपेक्षिता पत्नी का जीवन दूभर हो जाता है। भोजपुरी सुन्दरी ढाके के मलमल की साड़ी और पटने की झूलनी पहनकर अपने को कृतकृत्य समझने लगती है। ध्यान देने की बात तो यह है कि गीतों में वर्णित पूर्वीय वाणिज्य की परम्परा अधिक या न्यून मात्रा में, आज भी विद्यमान है। 'पूरब' को जाते हुए पति से प्रिय पत्नी का यह निवेदन कितना मार्मिक तथा हृदय स्पर्शी है तथा इसके विपरीत लम्पट पति का उत्तर कितना निष्ठुर और कठोर है—

> आरे जो तुहु जइब बलमू पूरुब बनिजिया हो;
> हमारा का तू ले अइब रावल मुनिया।
> तोरा के लाइब धनिया कसमस चोलिया हो;
> अपना के सुन्दर बंगालिन रावल मुनिया।

कहीं-कहीं इन गीतों में हाजीपूर के हाट—सोनपूर के हरिहर क्षेत्र के मेले का भी उल्लेख मिलता है। मालूम होता है कि उन दिनों में यह मेला उतना ही प्रसिद्ध था जितना आजकल है। यह मेला अपनी विशालता तथा प्रसिद्धि में भारतवर्ष में अद्वितीय है।

(४) गीतों में ऐतिहासिक वृत्त

इन गीतों का समय निर्णय करना कठिन है, परन्तु इतना तो निश्चित सा प्रतीत होता है कि इनकी परम्परा कम से कम दो सौ. तीन सौ वर्षों से. निरन्तर, अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित होती आ रही है। भोजपुर मण्डप सदा से अपने वीर 'बाँकुड़ों' के लिए विख्यात है। अतः शत्रुओं का मान मर्दन करनेवाले वीरों की अनेक कहानियाँ गीतों में गाई जाती हैं। सन् ५७ के

बलवे की बात, जिसमें भोजपुरी सिपाहियों का विशेष हाथ था, इन गीतों में आपको बिखरी मिलेगी। वीराग्रणी बाबू कुँवरसिंह भोजपुर के पास जगदीशपुर (आरा) गाँव के निवासी थे। उन्होंने जिस पराक्रम के साथ युद्ध किया था वह इतिहासवेत्ताओं को अविदित नहीं है। गीतों में वर्णित इनके उत्कृष्ट बाहुबल की कहानी सुनकर आज भी हमें रोमाञ्च हो आता है। उससे भी पहले मुसलमान-काल की दुरवस्था का भी पर्याप्त चित्रण हमें इन गीतों में उपलब्ध होता है। तुर्कों की विषय-लोलुपता तथा स्वेच्छाचारिता की गूँज इन गानों में खूब सुनाई पड़ती है। किस प्रकार कुसुमा देवी ने मिरजा साहब के अत्याचारों को सहकर भी अपने सतीत्व की रक्षा की थी तथा अपने चरित्र की ओजस्विता को प्रकट किया था वह भोजपुर के गाँवों में आज भी उसी उत्साह से गाया जाता है। सती कुसुमा देई का नाम इन गीतों ने अमर कर दिया है। मिर्जा नामक किसी तुर्क सरदार की दृष्टि कुसुमा देई के लावण्य-मण्डित शरीर पर पड़ी। वह उसे पाने के लिए बेचैन हो उठा। उसके पिता को कैदखाने की काली कोठरी में डाल दिया। पितृ परायण पुत्री मिर्जा के साथ चलने के लिए तैयार हो गई, परन्तु रास्ते में अपने पिता के तालाब में नहाने के बहाने उसने अपनी जान दे डाली। कुसुमा का यह दिव्य चरित्र हमारे लिए आज भी नारीत्व के उत्कृष्ट महत्त्व को प्रदर्शित कर रहा है। देखिए—

देहु न मैया रे कँगही कटोरिया हो ना।
बाबा के सगरवा मुड़वा मीजब हो ना॥
अरे सगरवा कुसुमा मुड़वा जो मीजै।
घोड़वा कुदावै मिरजा रजवा हो ना॥
घोड़वा कुदावत परिगै नजरिया हो ना।
केकरी तिरियवा मुड़वा मीजै हो ना॥
घोड़वा थमावै मिरजा वो घोड़सरिया।
बाबा का पकरि मँगावै हो ना॥
अपनी कुसुमा मोहि बिआहौ हो ना॥

कैसे मैं बिआहौं अपनी कुसुमिया।
तू तो तुरुक हम ब्राह्मन हो ना॥
एतना बचन सुनि मिरजा रजवा।
बाबा के डारै हथकड़िया हो ना॥
अगिया लगाओं बेटी तोरी सुन्दरइया।
बाबा के चढ़ी हथकड़िया हो ना॥
देहु न मैया रे अपनी चदरिया।
बाबा कै सँसतिया देखि आवों हो ना॥
जो तुही मिरजा हो हमही लोभानेउ।
बाबा जोगे हथिया बिसाहउ हो ना॥
जो तुही मिरजा हो हमही लोभानेउ।
भैया जोगे घोड़वा बेसाहउ हो ना॥
मैय्या जोगे गहना गढ़ावो हो ना।
भौजी जोगे चूनर रँगावो हो ना॥
हँसि हँसि मिरजा रे डोलिया फनावे।
रोइ रोइ चढ़ै कुसुमा रनिया हो ना॥
एक बन गइली दूसर बन गइली।
तिसरे में बाबा के सगरवा हो ना॥
तनियक डोलिया थमावो मिरजवा।
बाबा के सगरवा मुँहवा धोइत हो ना॥
बाबा के सगरवा सुन्दर बढ़इल पनियाँ।
हमरे सगरवा पनियाँ पीयो हो ना॥
तोहरा सगरवा मिरजा नित उठि होइ हैं।
बाबा कै सगरवा दूलम होइहै हो ना॥
एक घूँट पियली दुसर घूँट पियली।
तिसरे में गई है तराई हो ना॥
रोइ रोइ जलवा डरावै राजा मिरजा।

फँसि आवै घोंघिया सेवरिया हो ना ॥
हँसि हँसि जलवा डरावै भैया गंगाराम ।
आवै थी बहिनी कुसुमा हो ना ॥
मुँहवा पठुका देके रोवे राजा मिरजा ।
मोरे मुँह करिखा लगाइच हो ना ॥
सिर पै पगड़िया बाँधि हँसे भैया बाबा ।
दूनो कुल राखेउ बहिनी कुसुमा हो ना ॥

अब कुँवरसिंह की वीरता से परिपूर्ण इस गीत को पढ़िए और देखिए कि अंग्रेजों से कुँवरसिंह की बहादुरी का कितना जीता-जागता चित्र उपस्थित किया गया है। इस गीत में वर्णित घटनाएँ बिल्कुल ऐतिहासिक हैं।

लिखि लिखि पतिया के भेजलन कुँअरसिंह,
ए सुन अमरसिंह भाय हो राम ।
चमड़ा टोड़वा दाँत से हो काटे कि
छतरी के धरम नसाय हो राम ॥ १ ॥
बाबू कुँअरसिंह और भाई अमरसिंह,
दोनों अपने हैं भाय हो राम ।
बतिया के कारण से बाबू कुँअर सिंह,
फिरंगी से हो रेढ़ बढ़ाय हो राम ॥२॥
दानापुर से जब सजलक हो कम्पू,
कोइलवर में रहे छाय हो राम ।
लाख गोला तुँहु कै गनि के मरिहौं,
छोड़ बरहरवा के राज हो राम ॥३॥
रोवत बाड़े बाबू हो कुँअर सिंह,
मुखवा पर धर के रुमाल हो राम ।
ले ली लड़इआ हम तो बूढ़ा हो समय में,
अब कवन होइहे हवाल हो राम ॥४॥

इस गीत में विद्रोह का कारण कितना सटीक दिया गया है!

(५) गीतों में देव-चरित्र

गीतों में देवताओं का चरित बड़ी खूबी से अंकित किया गया है। विवाह के अवसर पर मंगल के लिए सबसे पहले शिव-पार्वती के विवाह विषयक गान गाये जाते हैं। देवताओं की कल्पना मनुष्य अपनी ही भावना के अनुरूप करता है। देवता लोग किसी काल्पनिक जगत् के पात्र न होकर ऐहिक लोक के जीते-जागते सुख दुःख को भोगनेवाले जीवों के रूप में अंकित किये गए हैं। भोजपुर मण्डल में विवाह के शुभ अवसर पर शिव-पार्वती के विवाह-विषयक गीतों के गाने की चाल है। इन गीतों में चित्रित शिव का चरित्र इस प्रदेश के मानवों की कल्पना के नितान्त अनुकूल है। महादेव का विवाह भोजपुरी विवाह का एक रमणीय प्रतिनिधि है। शिवजी के माता-पिता दोनों हैं। एक बार शिवजी पार्वती से एकान्त में भेंट करने जाते हैं। पार्वती उनके साथ चलने को कहती हैं। तब वे कहते हैं कि आज तो अपने 'बाबा की चोरी', पिता से छिप कर, आया हूँ। कल मैं अपने बन्धु-बान्धवों को इकट्ठा कर (सजन बटोरी) आऊँगा, तब तुम्हें अपने साथ ले चलूँगा। शिव-पार्वती में जो शादी के लिए शर्तें तय की जाती हैं, उनमें एक विचित्र ढंग का दुनियावीपन है। पार्वतीजी कहती हैं कि मेरे पिता बड़े गरीब हैं, आपको दहेज नहीं दे सकते, इसलिए ज्यादा गहना न लाकर मेरे लिए केवल ताग-पाट (सूत की बनी माला) ही लाइएगा। शिवजी इस पर तैयार हो जाते हैं, पर पार्वती से आग्रहपूर्वक कहते हैं कि हमारी माता को कभी जवाब न देना। इस पर वे कहती हैं कि "हे भोला, अपनी पूरी कमाई मुझे दे देना और कभी हिसाब न लेना, तभी मैं तुम्हारी माता की आज्ञाओं का सदा पालन करूँगी" —

हामारा ही आमा के गउरा जबाब जनी दीह।
जो कुछ अरजोह ए भोला, से लेखा जनी लीह।
तोहारा ही आमा के सीव जबाबो नाँही देबो॥

दूसरे दिन शिव की बारात पहुँचती है—चिताभस्म से भूषित बावला वर

(बर बौराह), बसहा बैल पर असवार, एकदम नंग-धिड़ंग ! बराती भूत, प्रेत, पिशाच ! ऐसे बर को देखकर पार्वती की माता चिन्तित हो उठती हैं, और कहती हैं—

धिया लेके उड़बि, धिया लेके बुड़बि ।
धिया लेके खिलबों पाताल ॥

अर्थात् मैं अपनी पुत्री को लेकर उड़ जाऊँगी, डूब मरूँगी और पाताल में खिल जाऊँगी अर्थात् पाताल-लोक में छिप जाऊँगी, जिससे मेरी पुत्री को कोई पा न सके; पर ऐसे बौड़म वर से शादी न होने दूँगी। वह केवल शब्दों में ही अपनी ग्लानि और चिन्ता प्रगट नहीं करतीं, बल्कि कार्यतः भी। वह माँड़ों (मण्डप) उखाड़ फेंकती हैं, कलश फोड़ देती हैं, पुरहथ बिखरा देती हैं; रंग में भंग उन्हें मंजूर है; गौरा का क्वारी बनी रहना उन्हें मंजूर है, परन्तु शिव जैसे बउराह वर से प्राणों से प्यारी पुत्री की शादी मंजूर नहीं। पार्वती शिव से अपना विकट वेष बदल देने की प्रार्थना करती हैं; तब वे अपना चिर-सुन्दर, त्रिभुवन-कमनीय, मारमदभञ्जन रूप धारण कर लेते हैं। विवाह आनन्द से सम्पन्न होता है।

पार्वती अपनी ससुराल से घर आती है। माता उसकी दीन दशा देखकर नितान्त दुःखी होती है। पार्वती का दिल भाँग पीसने से बेचैन है। धतूर की गोलियाँ बनाते-बनाते हाथ घिस गए हैं। दुःखित माता हाथ की चूरी फोड़ देने की और माथे का सिन्दूर मिटा देने की सलाह देती है, परन्तु पति-परायणा पार्वती माता को चुप रहने के लिए झिड़कती है और कहती हैं कि बुरा हो या भला, वह तपसी ही उसके जीवन की आशा है—

भँगीआ पीसन ए आमा, जीयरा अकुलाई ।
धतुरा के गोलिया ए आमा, हाथावा रे खीआई ॥
फोरि घाल आहो ए गउरा हाथ के रे चूरी ।
मेटि घाल आहो ए गउरा सिर के सेनुरवा ॥
दीनवा गवाँव ए गउरा हमरी ।

अइसन बोलिया ए आमा फेनु जनि बोलीह ।
उहे तपसीआ ए आमा हमारा जिअरा के आई ॥

इस गीत में गौरी की माता की पुत्री-चिन्ता और गौरी का निष्कपट पतिप्रेम कितने सरल शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है ! इस प्रकार शिव-गौरी की शादी में भोजपुरी माता तथा पुत्री के सरल स्नेह का ही हम प्रतीक पाते हैं। इस विषय में भोजपुरी गीतों की समानता उन उड़िया ग्राम्य गीतों से दी जा सकती है जिनमें राम का चरित्र एक सामान्य उड़िया किसान के रूप में चित्रित किया गया है।[1]

उड़िया लोकगीतों के राम अपने हाथों अपने घर का सारा काम काज करते हैं। राम हल चलाते हैं, लईखन (लक्ष्मण) जुताई करते हैं और सीता बीज बोती हैं। वे कपिला गाय का दूध पीते हैं, जो चन्दन की आग पर गरम किया जाता है। लक्ष्मणजी कच्चे आम लाते हैं। सीताजी चटनी पीसती हैं। सब चटनी राम ही चट कर जाते हैं। बेचारे लक्ष्मणजी को थोड़ी भी चटनी चाटने को नहीं मिलती। बड़े दुःखित होते हैं। राम पान भी खाते हैं। सुख के साथ-साथ दुःख भी उनके बाँटे में खूब पड़ा है। सीता फूटे बर्तन में दूध दुहती हैं। सारा दूध बह जाता है। राम के क्रोध का ठिकाना नहीं रहता—

दौदरा माठिया हाते धरि करि
खीर दुहिबाकु सीताया गला। मो राम रे।
सबु खीर जाको तले बहि गला
सीताया ए कथा जाणी न पारीला। मो राम रे।
बौहड़ीला राम हल काम सरि
खीर मंदे-वेगे सीताकु मागीला। मो राम रे।

[1]उड़िया ग्राम-साहित्य में रामचरित्र—ना० प्र० पत्रिका, भाग १५, पृष्ठ ३१७-३३०।

धाइ धाइ सीताया पाखकु अईला
घोइतांकु सब कथाटी कहिला । मो राम रे ।
रामंक आँखीटी रंग होई गला
मन कि तोर लो वाइया हेला । मो राम रे ॥

अर्थात्—फूटे हुए बर्तन को हाथ में लेकर सीताजी दूध दूहने के लिए गई । सब दूध नीचे वह गया । परन्तु सीता को इस बात का पता न चला । हल चलाकर राम घर पर आए और धीरे से सीता से दूध माँगा । वह दौड़ कर आई और पति से सारा हाल कह सुनाया । राम की आँख लाल हो गई और कहने लगे कि तुम्हारा मन क्या पागल हो गया है ? राम की आँखों के लाल हो जाने और सीता को पागल कह कर भर्त्सना करने में भी प्रेम की ही झलक दीखती है ।

भोजपुरी गीतों की गौरी पतिगृह के निवास-काल में अपनी माता के लिए उसी भाँति चिन्तित होती है जिस भाँति उड़िया गीतों की सीता । सीताजी के जीवन की एक झलक देखिए—

सरि गला दीप-र तेल
कि परि दीप जालिबी । महाप्रभु से ।
तेल आगी वावु जाओ हे राम
से तेल दीप-रे ढालिबी । महाप्रभु से ॥
सुना-र दीप रे चन्दन तेल
सीताया दीप जाल्छी । महाप्रभु से ॥
दीप जाली जाली सीताया
मा घर कथा भालछी । महाप्रभु से ॥

सीता की दयनीय दशा का कितना रोचक चित्रण है ! वह कहती हैं कि तेल खतम हो गया है । मैं दीपक कैसे जलाऊँ ? हे राम, तुम जाओ और तेल लाओ और उसी तेल को मैं दीपक में डालूँगी । सोने का दीपक है और चन्दन का तेल, जिससे सीता दीपक जला रही है । दिया जलाते-जलाते

सीता को अपनी माता के घर की कथा याद आती है। पुत्री सुख-समृद्धि के दिनों में भी, आराम करने के दिनों में भी, अपनी माता के घर को भूल नहीं सकती। भोजपुरी गानों में सोने के दीपक चन्दन के तेल जलाने का वर्णन अनेक प्रसङ्गों में आता है। इन गायनों में रामविषयक अनेक गाने हैं जिनमें रामजन्म से सम्बद्ध गीत बड़े सुहावने लगते हैं। राजा दशरथ के चित्रण में हम भोजपुर के किसी समृद्ध गृहस्थ की ही छाया पाते हैं। पत्नी की प्रसव वेदना को सुनकर उनका व्याकुल होना, धाय को बुलाने स्वयं जाना, आदर-पूर्वक उसे लाना तथा पुत्र-जन्म के अवसर पर अपनी दौलत लुटाना—इनका चित्रण इतना नैसर्गिक है कि पाठकों का चित्त अनायास इनकी ओर खिंच जाता है। इस तरह देवचरित के बहाने हमें भोजपुर के निवासियों के दैनिक जीवन का विशद वर्णन उपलब्ध होता है।

(६) गीतों में कवित्व

भोजपुरी गीतों में चित्रित दुनिया का संबंध गाँवों से हैं। परन्तु इनमें प्रदर्शित भावों में सर्वथा नागरिकता भरी पड़ी है। काव्य के जितने आवश्यक अंग और उपाङ्ग हैं—रस, अलंकार, गुण—उन सबका सन्निवेश उचित स्थान पर इन गीतों में पाया जाता है। इन गीतों में आलंकारिक चमत्कार की कमी नहीं है, परन्तु गीतों के अलंकारों में एक विचित्र प्रकार की सादगी है, नवीनता है जो काव्य की कृत्रिम कविताओं में देखने को नहीं मिलती। काव्य की अधिकांश उपमाएँ परम्परायुक्त होने से बासी तथा फीकी सी प्रतीत होती हैं परन्तु इन भोजपुरी गीतों की उपमाएँ वैसी ही स्वाभाविक हैं जैसा जंगल का अपने आप खिलनेवाला फूल। इस गीत में मुँह सूरज की ज्योति से, आँख आम की फली से, नाक सुग्गे की 'ठोर' से, भौंहें चढ़ी कमान से, ओठ काटे हुए पान से, बाँह सोने की छड़ी से, पेट पुरइन के पत्ते से, पीठ धोबी के पाट से, पैर केले के खम्भा से उपमित किये गये हैं। साहित्यज्ञों से यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि ये सब उपमाएँ काव्य-जगत् में बिल्कुल अनूठी और अपूर्व हैं—

गहिड़ि नदिया अगमि बहे राम पनिया।
पिया चलेले मोरङ्ग देसवा, बिहरेला राम छतिया ॥
जो हम जनितों ए लोभिया, जइब रे विदेसवा।
पिया के पएतवा ए लोभिया, अचरा छिपइतों ॥ १ ॥
दह रोवे चकवा चकइया।
बिछोहवा कइले राम बलमू ॥ २ ॥
मुँह तोरे हवे ए लोभिया, सुरुज के जोतिया।
आँखि तोर हवे ए लोभिया, अमवा के फरिया ॥ ३ ॥
नाक तोर हवे ए लोभिया, सुगवा के ठोरवा।
भहुँ तोर हवे ए लोभिया, चढ़ल कमनिया ॥ ४ ॥
ओठ तोर हवे ए लोभिया, कतरल पनवा।
और तोर हवे ए लोभिया, कड़ि कड़ि मोछिया ॥ ५ ॥
बाँहि तोर हवे ए लोभिया, सोबरन सोंटवा।
पेट तोर हवे ए लोभिया, पुरइनि पतवा ॥ ६ ॥
पीठि तोर हवे ए लोभिया, धोबिया के पटवा।
गोड़ तोर हवे ए लोभिया, केरवा के थुन्हना ॥ ७ ॥

कहीं-कहीं इन गीतों में भाव इतने अनूठे और अनोखे हैं कि उन भावों पर कितने काव्य निछावर किये जा सकते हैं। इस गीत की कन्या ससुराल से लौटकर अपने पिता से ससुराल की शिकायत करती है कि तुमने किस घर में मेरी शादी की ! इस पर पिता कहता है कि ऊँचे स्थान पर मैंने 'काकर' बोया, जिसकी डाल जंगल में दूर-दूर तक फैल गई। उसकी बतिया (छोटा फल) देखने में तो बड़ी सुहावनी जान पड़ती है, परन्तु आगे चलकर हमें क्या मालूम कि उसका फल मीठा होगा या तीता ?

ऊँच निवास बेटी काँकर बोअलों,
रन बन पसरेलें डालि्ह रे।
आरे ककरी के बतिया ए बेटी देखत सुहावन,
ना जानो तींत कि मीठ ए ॥

इस गीत का भाव बड़ा ही सुन्दर है। शोभन वर और सम्पन्न घर देख कर पिता ने अपनी कन्या का विवाह तो कर दिया, परन्तु बेचारे को क्या पता कि आगे चलकर लड़की को सुख होगा या दुःख। इसकी उपमा ककड़ी से देकर गीत के कर्ता ने इसमें जान डाल दी है।

उपमा की छटा और कल्पना की उड़ान तो आपने देख ही ली, अब रसों के परिपाक का भी आस्वादन कीजिए और यदि आपका जी भरे तो दिल खोल कर दाद दीजिए।

(७) गीतों में रस-परिपाक

भोजपुरी गीतों की शब्दार्थ-माधुरी बड़ी सुसम्पन्न है। शब्दमाधुर्य के साथ-साथ अर्थ चमत्कार की कभी कमी नहीं है। भोजपुरी (जैसा हमने ऊपर सप्रमाण दिखलाया है) मैथिली और बँगला की बहिन है। अतः यदि इसमें इन भाषाओं के समान शब्दसौष्ठव दीख पड़ता है, तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। भोजपुरी में ढलते ही कविता में एक अद्भुत शाब्दिक मोहकता उत्पन्न हो जाती है—ऐसी मोहकता कि आस्वाद लेनेवालों को बरबस मस्त बनाये देती है। बँगला का माधुर्य प्रसिद्ध ही है। उसी के समान, यदि बढ़कर नहीं, माधुर्य आपको दीख पड़ेगा इन भोजपुरी के भी गानों में। अर्थ-चमत्कार की भी न्यूनता नहीं है। परन्तु सबसे बढ़कर इन गीतों की साहित्यिक विशेषता है रस से ओतप्रोत होना। परिस्थिति के अनुकूल समुचित रस के आस्वादन कराने की विचित्र शक्ति इन लोकगीतों में पाई जाती है। विवाह तथा सोहर के गीतों में शृंगार का सुन्दर नमूना मिलता है तथा मन्द हास्य का उज्ज्वल दृष्टान्त। शिव-पार्वती के वैवाहिक गीतों में हास्य का भरपूर परिपोष है। गवना के गीतों में जब कन्या अपने मायके छोड़कर पति के घर पर पहले-पहल जाती है, करुण रस की सरिता उमड़ पड़ती है। कन्याओं का करुणरोदन इतना निश्छल तथा प्रभावशाली होता है कि पत्थर का भी कलेजा पसीज जाता है। शीतला माई तथा छठी देवी की पूजा के अवसर पर भक्ति-भाव के उद्रेक का मनोरम प्रसङ्ग आता है। गीतों की सरसता ही इनकी अपनी

विशेषता है। मधुर शब्द, परिचित भाव, गृहस्थी का मनोरम वातावरण, अवसर की उपयुक्तता—सब मिलकर इन गीतों में एक विचित्र तन्मयता उत्पन्न करने की क्षमता प्रदान करते हैं।

(क) शृङ्गार-रस

विवाह-संबंधी गीतों में शृङ्गार रस का मज़ा हमें अधिक मात्रा में मिलता है। हमारे यहाँ विवाह एक दीर्घ व्यापार है जिसके भीतर अनेक अवान्तर व्यापार सम्मिलित किये जाते हैं। वररक्षा, तिलक, वर का कन्या के घर जाना, परिछन, कन्या निरीक्षण, (गुरहथी), सिन्दूर-दान आदि रस्में विवाह के अन्तर्गत हैं। इन अवसरों पर जो गाने गाये जाते हैं उनमें शृङ्गार की पर्याप्त मात्रा है। इनके अतिरिक्त पुत्र-जन्म के उत्सव के ऊपर गाये जानेवाले सोहरों में भी शृङ्गार रसानुकूल सामग्री की कमी नहीं है। शृङ्गार-वर्णन में भोंड़े भावों की गुञ्जाइश नहीं है। समस्त भाव नितान्त उदात्त, पवित्र तथा विशुद्ध हैं। भोजपुरी गीतों में सोहर अपना एक विशेष स्थान रखते हैं। गर्भिणी की मानसिक अवस्था का जो चित्र इन गीतों में अंकित किया गया है वैसा सजीव वर्णन अन्यत्र मिलना अत्यन्त कठिन है। गर्भिणी के शरीर तथा मन पर जो-जो विकृतियाँ दिखाई पड़ती हैं उनका सूक्ष्म निरीक्षण तथा विशुद्ध वर्णन इन गीतों को साहित्यिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बनाये देतीं हैं।

गर्भिणी की शरीर-यष्टि का कितना सहानुभूतिपूर्ण वर्णन इस मनोरम गीत में किया गया है—

लीपी पोती अइलों ओबरीया[1]. अँगनवा में ठाढ़ भइलों रे।
ललना राजा के दुलरिया भितीआ ओठँघे, हरदी मुँहवा पीयर रे॥१॥
दुअरा से अइलें नन्दलाला, नाजो[2] के मुँहवा देखेलें हो।
आमा दुलहीनी के ओठवा झुरइलें, हरदी मुँहवा पीयर रे॥२॥
सासु मोरी मुँहवा निरेखे, ननद मुँहवा चूमेले हो।
बहुआ धीरे-धीरे अँगव[3] बेदनिया[4], होरिल तोहरा होइहें हो
सोहर हम सुनाइबी रे॥३॥

---

[1]भीतरी घर। [2]सुकुमारी, नाज़ुक बदन। [3]सहो। [4]बेदना, पीड़ा।

आपन मइया जहू रहीती बेदन बाँटी लीहीतीहू रे।
ललना प्राभू जी के मइश्रा नीरवादरदी[1] त होरिला होरिला करे
बेदन बहूत माँगेले रे ॥४॥
जनी केहु मुँहवा निरेखो, त जनी गलवा ये चूमसु रे।
ललना दुश्ररा सुतेला सभइतश्रा[2] बोलाय घरवा ये ले आश्रो रे ॥५॥
एहि अवसर पीश्रा के भेंटी तो तो लाते मूँके मरीतों हू रे।
ललना लपकी डँड़वाँ धरीतों बेदन आधा बटीतों हू रे ॥६॥
तब तूहुँ मथवा बँधुवलू त ताजावा लगवलू[3] हू हो।
पाजी अब जीयरा परल बा सकेतवा[4] कवनी सकिया ये चलाईं रे ॥७॥

प्रसव वेदना से व्याकुल कोई सुकुमारी अपनी दशा का विशद वर्णन सुना रहा ही है कि मैंने घरके भीतरी भाग को लीप पोत दिया है; आँगन में आकर खड़ी हूँ। अपने राजा (पिया) की दुलारी मैं भीत का सहारा लेकर लेट रही हूँ और मेरा मुँह हल्दी के समान पीला पड़ गया है ॥ १ ॥

नन्दलाल (प्रियतम) द्वार पर से भीतर आये, सुकुमारी का मुँह देखा और (माता से कहने लगे कि) ऐ माता! दुलहिन का होठ सूख गया है और हरदी के समान मुँह पीला पड़ गया है ॥ २ ॥

सासु मेरा मुँह देखती है, ननद मुँह को चूम रही है; ऐ बहूजी, इस पीड़ा को धीरे-धीरे सह लो। तुम्हें पुत्र होगा और मैं सोहर सुनाऊँगी ॥ ३ ॥

यदि अपनी माता होती तो पीड़ा बाँट लेती, प्रभु जी (पति जी) की माता बड़ी निर्दयी है, केवल 'लड़का' 'लड़का' चिल्ला रही है और अधिक पीड़ा माँगती है ॥ ४ ॥

(गर्भिणी कह रही है कि) कोई मेरा मुँह न तो देखो न गाल को चूमो; द्वार पर सोनेवाले मेरे सामी (पति) को बुला कर ज़रा घर के अन्दर तो लाओ ॥ ५ ॥

यदि इस समय अपने प्रिय को पाती, तो लात-मूकों से उनकी खबर लेती। लपककर मैं कमर पकड़ लेती और आधी वेदना बाँट लेती ॥ ६ ॥

---
[1]निर्दयी। [2]साम्भी, पति। [3]शिरोभूषण। [4]संकट।

(अपने पुत्र के मरम्मत किये जाने की बात सुन कर सासु खीझ उठती है और बहू को व्यंग्य सुना रही है कि) तब तो तुमने शौक से शृङ्गार किया, माथ बँधाया और शिरोभूषण पहना; अब, पाजी कहीं की, तुम्हारे प्राण संकट में पड़ गये हैं; अब कौन शक्ति चलाना चाहती हो ? अपने ही सहो। मेरे बबुआ को इसके लिए क्यों उलाहना दे रही हो ?

मुझे यह गीत गर्भिणी विषयक गीतों में सब से अधिक रमणीय जँचता है। इसमें गर्भिणी की शारीरिक विकृति की और पीड़ा के कारण विह्वलचित्त की दशा से जिस प्रकार सहृदयों के हृदय में सहानुभूति की सरिता बह चलती है, उसी प्रकार 'प्रभु जी की निरदर्दी माता'—सासु के लिए असीम धिक्कार मुँह से अनायास निकल पड़ता है। सासु के दिल में बहू के लिए ममता न होकर वेहद निर्दयता का भाव घर कर लेता है। गर्भिणी का यह चित्र कितना दयनीय है—पाठकों के दिल में चित्र कितना दर्द पैदा करता है !

नारी-जीवन की सार्थकता

नारी-जीवन की सार्थकता मातृत्व में है। जब तक नारी माता नहीं बनती तब तक उसका जीवन निरर्थक है। इस गीत में इसका विवेचन भली भाँति किया गया है—

बाय बहेले पुरवईआ, उतरही झकझोरेले हो
ए ललना, रुकुमिनी सुतेले रे ओसरवा, त गोदिया भतीज लेई रे।
घर में से नीकले भउजइआ, अँगनवा में ठाढ़ भइली रे
ए ललना, लपकी के छोवेले भतीजवा, रुकमिनी मनवा दुखीत रे।
घर में से निकलेली आमा रुकुमिनी समुझावे ले रे
ए रुकुमिनी का ओही अनका बलकवा, तोर जनम अकारथ रे॥
का ओही आमावा का खइले, अठीलीया का चटलेइ हो
रुकुमिनी, का ओही अनका बलकवा, तोर जनम अकारथ रे॥
लाल पीयर ना पहीरनी, चउक ना बइठली हू हो
रामजी गोदिया बलक ना खेलवलीं, मोर जनम अकारथ रे॥

भावार्थ—पुरवैया हवा बहती थी और उत्तरी हवा पेड़ों को हिला रही थी। रुक्मिणी (नायिका) गोद में भतीजा लेकर बरामदे (ओसारा) में सो रही थी। उसकी भौजाई ने घर से निकलकर बालक को छीन लिया। रुक्मिणी का मन उदास पड़ गया। माता घर में से निकलकर अपनी पुत्री को समझा रही है कि दूसरे के बालक से क्या पुत्रवती बनना है तुझे ? तेरा जनम तो व्यर्थ हो गया है। दूसरे की दी गई चीज से कब तक गुजारा हो सकता है ! दूसरे के दिये आम का स्वाद लेना तथा गुठली का चाटना जैसे बेकाम है, उसी प्रकार दूसरे के बालक से पुत्रवती कहलाने का शौक हँसी का विषय है। पुत्रहीन नारी का जीवन तो व्यर्थ होता ही है। माता के समझाने पर पुत्री स्वयं कह रही है कि माता, तेरा कहना सोलहो आने सच है। मेरे जीवन की व्यर्थता स्पष्ट है। मैंने लाल और पीला कपड़ा नहीं पहना, न तो पति के साथ किसी शुभ-कार्य में देवाराधना के लिए चौके पर बैठी और न मैंने गोदी में बालक ही खेलाया। सचमुच मेरा जीवन व्यर्थ है !

अन्तिम कड़ी में सुन्दरी की हार्दिक इच्छा की कैसी सुन्दर अभिव्यक्ति है !

बालम के बिना सूनी सेज तथा बालक के बिना सूनी गोद का मनोरम वर्णन कितने अच्छे शब्दों में किया गया है इन सोहरों में। एक सुन्दरी कह रही है—

एक सौ अमवा लगवलीं सवा सौ जामुन हो।
अहो रामा तबहुँ न बगिआ सोहावन यक रे कोइलि बिनु ॥१॥
नइहर में पाँच भइया त सात भतीजा बाड़े हो।
अहो रामा तबहुँ न नइहर सोहावन यक रे मयरिया बिनु ॥२॥
एक कोरा लिहलों मैं भइया दूसरे कोरा भतीजवा हो।
अहो रामा न तबहुँ गोदिया सोहावन अपना बालक बिनु ॥३॥
पलँग पर सेजिया डसवलों त फूल छितरइलों हो।
अहो रामा तबहूँ न सेजिया सोहावन एक बलम बिनु ॥४॥

मैंने एक दो नहीं बल्कि पूरे सौ आम के पेड़ और जामुन के सवा सौ पेड़ लगाए हैं, परन्तु यह बगीचा केवल एक कोयल के बिना सुहावना नहीं लगता ॥१॥

मेरे मायके में भाई पाँच है और भतीजे सात हैं, परन्तु तो भी स्नेहमयी माता के बिना मायके में कभी अच्छा नहीं लगता ॥ २ ॥

एक कोरे में मैंने अपना भाई ले रखा है और दूसरे कोरे (क्रोड़) में मैंने अपना भतीजा ले लिया है, परन्तु अपने बालक् के बिना मेरी गोदी सुहावनी नहीं लगती ॥ ३ ॥

पलँग के ऊपर मैंने सेज (बिस्तरा) बिछा दिया है, और उसके ऊपर फूल बिखेर दिये हैं, परन्तु तौभी केवल एक प्रियतम के बिना फूलों से सजी सेज सोहावनी नहीं लगती ॥ ४ ॥

इस गीत के भाव सुन्दर हैं ही, परन्तु 'मयरिया' शब्द के भीतर कितनी ममता भरी हुई है—वह ममता जो न तो 'माता' में विद्यमान है और न 'जननी' में। 'माई' शब्द में मोहकता जरूर है, परन्तु वह 'मयरिया' शब्द में वर्तमान कोमलता तथा मार्मिकता तक पहुँच नहीं सकता। 'सहृदया एव प्रमाणम्'।

भारतीय घरों में सन्तानहीन नारियों का जीवन कितना दुःखमय बन जाता है! उनके शरीर में कितना ही अधिक सौन्दर्य का साज हो, वे भले ही भूतल की अप्सराएँ हों, परन्तु पुत्र के बिना सब निरर्थक हैं। नारी की सार्थकता मातृत्व में है और उसी सुख से वंचित होने के कारण यदि वे अपना जीवन भारभूत समझती हों, तो अचम्भे की कौन सी बात है? एक बन्ध्या नारी अपनी रामकहानी कितने दर्दनाक शब्दों में सुना रही है—

पनवा अइसन हम पातरी कसइली अइसन ढुरहूर[1] हो।
ये ललना फुलवा अइसन सुकुवार[2], चनन अइसन गमकीले हो।
इ तीन फल जहू पइतों अँगनवा में लगइतों हू रे।
ये ललना राम मोर बइठे पूजनरीया हम लोहीं लोहिं चढाइबी रे॥
एक दिन ऐ रामजी उहें रहलों जाही दिन बीयाह भइलें हो।
नीहूरी नीहूरी चरन छुयल चीटूकी सेनुरा लावेल हो॥

---

[1]गोल और चिकनी। [2]सुकुमार।

एक दिन ए राम जी उहे रहलों जाही दिन गवन कइली हो।
रामजी तोसक तकिया लगल नजरीया ना उतारीले हो ॥
जइसन बन में के कोइलरी बन ही बन कुहूकेले हो।
राम हो ओइसे जीयरा कुहूके हमार त एक रे बलक[1] बिनु रे ॥
जइसन बोरसी के आगीआ[2] धीरे धीरे तलफे ले हो।
राम हो ओइसे जीयरा तलफे हमार त एक रे बलक बिनु रे ॥

मैं पान सी पतली और सुपारी के समान गोल और चिकनी हूँ। फूल की भाँति मैं सुकुमार हूँ और चन्दन के समान मैं गमकती (सुगन्ध दे रही) हूँ। यदि सुन्दर फूलों को पाती, तो आँगना में लगाती। प्रियतम के पूजावसर पर मैं इन्हें चुन चुनकर उनके सामने रखती। एक दिन वह था जब मेरी शादी हुई, झुक-झुककर मैंने गुरुजनों के चरण छुए और चिटुकी भर कर सेन्दुर लगाया। एक दिन वह था जब गवना आने पर मैं तोशक लगाती थी और नजर नहीं उतारती थी, परन्तु आज ? हाँ, आज वे मेरे मधुर दिन अतीत की स्मृति बन गए। 'ते हिं नो दिवसा गताः'। अब तो बन में कोयल के समान, बालक के बिना मेरा दिल कूक उठता है, और जिस तरह बोरसी (अँगीठी) की आग धीरे-धीरे सुलगती है, उसी तरह मेरा जियरा बालक के बिना रात दिन ताप से सुलगता रहता है। क्या करूँ ? कौन दवा है इस महान् रोग की ?

यह गीत साहित्यिक सौन्दर्य से भरपूर है। पहले छन्द में दी गई उपमाएँ कितनी रुचिर हैं ! भोजपुरी के ज़ानकारों से 'हूरहुर' शब्द के भीतर जो कवित्व है उसे बतलाने की जरूरत नहीं। यह शब्द गोल-चिकनी चीज के लिए प्रयुक्त होता है—वह चीज जो नयनाभिराम होने के अतिरिक्त छूने में भी सुखद हो। कोयल की कूक साहित्य में नितान्त प्रसिद्ध है, परन्तु बोरसी (अँगीठी) की आग सुलगने की उपमा काव्य-संसार में एक दम नई है। बोरसी में घास-पात और भूसा भरा रहता है, जो झटपट तो दहकता नहीं, परन्तु दहकने पर उसकी आँच इतनी कड़ी होती है कि सही नहीं जा सकती। इसी भाव की अभिव्यक्ति

---

[1]बालक (पुत्र)। [2]अग्नि।

इस उपमा से की गई है। संस्कृत में इस आग को 'कुकूलाग्नि' कहते हैं। सीता के वियोग में राम का शरीर कुकूलाग्नि में जलता सा प्रतीत हो रहा है। मदनाग्नि की उपमा कुकूलाग्नि से दी गई है।

अयं क्वच कुकूलाग्निकर्कशो मदनानलः ॥

इस गीत में पुत्र की प्राप्ति के निमित्त कोई सुभग सुन्दरी उपदेशों की राह चलने के वास्ते उद्यत है —

गाया त गइलों गजाधर अवरु वेनीमाधव रे।
ये ललना अतना तीरीथी हम कइलों सन्तती नाहीं पाई रे।
सासु ससुर नाहीं मानेलु ननदो ना दुलारेलु हो।
ये ललना भसुरा अलोत कइ ना चललु, बझीनी हो गईलु हो।
सासु ससुर हम मानबी ननदो दुलारबी हो।
ये ललना भसुर अलोत कइ हम चलबों सन्तती हम पाइबी हो।
गँगवा के तीरवा कदम गाछ अवरु चनन गाछ हो।
ये ललना ताही तर ठाढ़ नारायन बालका उरेहे ले हो।

भूषण तथा वस्त्र से सुसज्जित होकर वर जब विवाह के लिए प्रस्थान करता है, तब वह अवसर कितना मनोरम होता है! वर की माता अपनी सहेलियों के साथ उसे परीछने के लिए जाती है और वर के सिर के चारों ओर लोढ़ा घुमा कर संभावनीय बाधाओं के विनाश के लिए प्रार्थना करती है। उसी शुभ अवसर का वर्णन इस गीत में बड़े सुचारु ढंग से किया गया है—

सुनु देवरनिया रे सुनु रे छोटनिया; परिछीना लेहु मोरे राम रे ललनवा।
जैसे गाया गजाधर झलकेले; ओइसन झलके मोरे राम रे ललनवा ॥
जैसे काशी में शिव जी झलकेले; ओइसन झलके मोरे राम रे ललनवा।
बाबू दुवरवा झलके मोर अँगनवा; परिछीना लेहु मोरे राम रे ललनवा ॥
जैसे भादों के बिजुरी चमकेले; ओइसन चमके मोरे राम रे ललनवा।
जैसे गांगा के लहरि चमकेले; ओइसन चमके मोरे राम रे ललनवा ॥
जैसे अजोधा के लाल झलकेले; ओइसन झलके मोरे राम रे ललनवा ॥

पुत्र की माता अपनी देवरानी तथा 'छोटानी' से कहती है कि व्याह में जानेवाले मेरे पुत्र को तुम लोग क्यों नहीं परीछ लेती ? जिस प्रकार गया में विष्णु, काशी में शिव, भादों के महीने में बिजली तथा गंगा की लहर चमकती है, उसी प्रकार मेरा पुत्र भी सुशोभित हो रहा है। वह कहती है कि जिस प्रकार अयोध्या में श्री रामचन्द्रजी सुशोभित हैं, उसी प्रकार विवाह में सजधजकर जानेवाला मेरा लड़का भी सुन्दर लगता है।

ऊपर के गीत में माता का पुत्र-प्रेम कितना स्वाभाविक तथा सहज है! इस गीत के प्रत्येक पद से शृङ्गार रस झलक रहा है।

बेटी का विवाह पिता के लिए किसी ग्रहण से कम नहीं होता। सूर्य तथा चन्द्रमा के समान विवाह-काल में भी पिता के ऊपर एक बड़ा गरहन लगता है। कन्या राशि पर स्थित होने वाला जामाता दशम ग्रह माना ही जाता है। नवग्रह की शांति साधारण चीजों से की जा सकती है, परन्तु-जामाता रूपी ग्रह की शान्ति एक कठिन, बहु-साधन-साध्य व्यापार है। दुर्भर जकारों में जामाता जी भी तो एक हैं! इस वैवाहिक ग्रहण का चित्रण कितने चुभते शब्दों में इस गीत में किया गया है! भाव की कल्पना जितनी श्लाघनीय है, शब्दों की योजना उतनी युक्तियुक्त है।

कवन गरहनवा बाबा साँझ ही लागे हो
कवन गरहनवा भिनुसार ए।
कवन गरहनवा बाबा मँड़वनी लागेला
कबदोनी उगरह होइ ए॥ ॥
चान गरहनवा बाबा साँझह लागेला
सुरुज गरहनवा भिनुसार ए।
धीयवा गरहनवा बाबा मँड़वनी लागेला
कबदोनी उगरह होइ ए॥२॥
हामारा ही बाबा का सोने थरीयवा हो
छुवत झानाझनी होइ ए।

उहे थरीया बाबा दामादे के दीहीतो हो
तब रउवा उगरह होइ ए ॥३॥

हामारा ही भइया का लीली बछेड़वा हो
सोनवे मढ़ावल चारो पाँव ए।
उहे बछेड़वा बावा दामादे के दीहीतो हो
तब रउवे उगरह होइ ए ॥४॥

दही वेचने के लिए कोई ग्वालिन सिर पर मुकुट, गले में मोती की माला तथा पीताम्बर धारण किये चली जा रही है। रास्ते में कन्हैया मिल गए और उनका रास्ता रोकने लगे। ग्वालिनें दूध, दही उन्हें देने के लिए तैयार हैं। परन्तु कन्हैया काम-केलि माँगते हैं और उनको धर्म-च्युत करने को तैयार हैं। तब ग्वालिनें आपस में सलाह करती हैं कि कन्हैया की माँ के पास सब मिल कर चलो और यह उलाहना दिया जाय कि तुम्हारा लड़का हमारा रास्ता रोकता है, तुम उसे मना क्यों नहीं करतीं। ग्वालिनों के उलाहना देने पर उनकी माँ कहती है कि तुम लोग अपनी माँग का सिन्दूर मिटा दो, आँखों में काजल लगाना छोड़ दो तथा दाँतों में मिस्सी (काला पाउडर) मत लगाओ। इस पर परिहास-प्रिय ग्वालिनें उत्तर देती हैं कि हम लोग अपने दाँतों में मिस्सी लगावेंगी, आँखों में काजल करेंगी और माँग में खूब सिन्दूर लगावेंगी। इस प्रकार बन-ठनकर हम लोग कन्हैया को ललचावेंगी।

दही बेचे चलली गोवालीनी, सीर पर मुकुट लीहले हो।
आरे गले गजमुकुता के हार, त ओढ़ेली पीताम्बर हो ॥
एक बने गइलों दोसर बने, अवरु तीसर बने हो।
आरे बीचवा कन्हइया बटवारावा, डगरी हमरो रोकेला हो ॥
दही दूध दीहीले त नाही लेले, डगरिया हमरो रोकेले हो।
आरे माँगे ले कन्हइआ जी, के रतिया धरम हमरो छोड़ावेले हो ॥
मीलहुँ सखीया सलेहरी, मीली जुली जासो अंगनवा चलहु हो।
ये मइया बरजी ना आपन कन्हइआ, डगरिया हमरो रोकेले हो ॥

दही दूध दीहीले त नाही लेले, डगरिया हमरो रोकेले हो।
ये मइया माँगेले कन्हइआ जी, के रतिया धरम हमरो छोड़ावेले हो॥
मेटी घालु सीर के सेनुरवा, नयन भरी काजर हो।
ये बहुआ मेटी घाल दँतवा के मसीया, कन्हइआ तोहरो नाहीं आइहे हो॥
घनी के वइठइवों दाँत मिसिआ, नयन भरी काजर हो।
ये मइआ डाटी फारी करवों इँगुरवा, कन्हइआ के ललचाइव हो॥

(ख) हास्य रस

इन गीतों में स्थान-स्थान पर हास्य रस का भी पुट पाया जाता है। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि इन गीतों का हास्य ग्रामीण होते हुए भी ग्राम्य नहीं है। विवाह के अवसर पर ससुराल में वर के साथ जो परिहास का उल्लेख किया गया है वह कितना मीठा है, कितना विशुद्ध है, यह बात इन गीतों के पाठकों से छिपी हुई नहीं है। कहीं-कहीं इन गीतों का व्यङ्ग इतना चुभता चुटीला तथा अनूठा है कि पढ़नेवाले को अचरज होता है।

सुन्दर चित्रों के अंकन करने में चित्रकार जितने सिद्धहस्त दीख पड़ते हैं उतने वे कुरूप, भद्दे चित्रों के चित्रण में नहीं। कुरूपता का चित्रण भी एक विशेष कला है। अनमेल, अनगढ़ अवयवों को एक साथ जुटा देने से ही कोई चित्र कला की दृष्टि से प्रशंसनीय नहीं हो सकता। आदर्श सती स्त्रियों के चित्रण से साहित्य भरा पड़ा है परन्तु कुलटा स्त्रियों का कलापूर्ण चित्र बहुत कम मिलता है। इस दृष्टि से कर्कशा स्त्री का यह चित्रण कितना हास्यरसानुकूल है।

ऐ पुरुष! तेरा भाग्य धन्य है जो तुझे ऐसी कर्कशा स्त्री मिली है। सात घड़ी तक वह दिन में रोती है, बाद में झाड़ू उठा कर झुक झुककर आँगन बुहारती है और घर भर के सब लोगों को गाली देती जाती है। टूटे घर के ऊपर कौवा रो रहा है, उसी समय घर में तीन अतिथि चले आए। तब वह स्त्री कहती है कि तुम लोग बैठो, मैं उपले इकट्ठी करके ला रही हूँ। उसने हाँड़ी में भर करके पानी डाल दिया और उसमें केवल तीन ही चावल डाले।

कठौता भर माड़ निकाला और उस माड़ को अतिथियों से पीने के लिए कहने लगी। उन लोगों के लिए उसने सात सेर की सात रोटियाँ तैयार कीं, परन्तु अपने लिये नव सेर का एक ही लिट्ट लगाया। फिर गाली देती हुई कहने लगी कि तुम दुष्टों ने सातों रोटियाँ खा डाली, परन्तु कुलश्रेष्ठा मैंने केवल एक ही खाई। वह दरवाजे पर बैठकर तेल लगाती है, माँग में सिन्दूर लगाती है। अपना आँचर पसार कर सूर्य से यही प्रार्थना करती है कि मैं विधवा कब हो जाऊँगी।

धनि धनि रे पुरुष तोरि भागि, करकसा नारि मिली।
सात घरी दिन रोय के जागी, लिहिन बढ़निया उठाय।
निहुरे निहुरे अँगना बटोरे, घर भर को गरिआय॥
करकसा नारि मिली॥ १॥

बखरी पर से कौवा रोवे, पहुना अइलें तीन।
आव पाहुन घरमाँ बैठ, कंडा लाऊँ बीन।
करकसा नारि मिली॥ २॥

हँड़ियाँ भर के अदहन दीहली, चाउर मेरवली तीन।
कठवत भरि के माँड़ पसवली, पिय हिलोर हिलोर॥
करकसा नारि मिली॥ ३॥

सात सेर के सात पकवली, नव सेर का एक।
तू दहिजरऊ सातो खइल:, हम कुलवन्ती एक॥
करकसा नारि मिली॥ ४॥

डेहरी बैठे तेल लगावै, सेंदुर भरावै माँगि।
आँचर पसारि कै सूरज मनावै होइहौं कब मैं राँड़ि।
करकसा नारि मिली॥ ५॥

(ग) करुण-रस

भोजपुरी गीतों में करुण-रस की मात्रा अत्यधिक दीख पड़ती है। यह करुण रस अनेक अवसरों पर विभिन्न परिस्थितियों में प्रवाहित होता हुआ

दीख पड़ता है। इस रस की अभिव्यक्ति इन गीतों में तीन अवसरों पर विशेष रूप से होती है—बिदाई, वियोग और वैधव्य। इन तीनों अवसरों पर सुखमय जीवन का अवसान हो जाता है, तथा दुःख का नया अध्याय प्रारम्भ होता है। जीवन के वसन्त में अचानक पतझड़ शुरू हो जाता है। ये तीनों अवसर मनुष्य के कोमल हृदय पर गहरी चोट करनेवाले होते हैं। बिदाई के अवसर पर लड़की का माता-पिता से वियोग होता है, वियोग में पति से बिछोह होता है और वैधव्य में अपने प्रियतम से सदा के लिए आत्यन्तिक विच्छेद हो जाता है। यही कारण है कि इन गीतों में करुण-रस की मात्रा उत्तरोत्तर बढ़ती ही चली जाती है। जिस प्रकार भवभूति की करुण कविता सुनकर वज्र का हृदय फट जाता है और पत्थर भी पसीज जाता है, उसी प्रकार इन करुण रस से ओतप्रोत गीतों को पढ़कर पत्थर के समान कठोर पुरुष का भी कलेजा आँसुओं के रूप में पसीज-पसीजकर बाहर निकल पड़ता है।

"आँसुन के मग जल बह्यो हियो पसीज पसीज"

बेटी की बिदाई—कन्या की बिदाई का समय कितना करुणोत्पादक है, इसे शब्दों में बतलाने की जरूरत नहीं होती। पितृगृह में स्वतन्त्रतापूर्वक जीवन बितानेवाली, दुलार से पाली गई कन्या एक अनजान, अपरिचित घर में जाती है; पिता के घर के दुलार की याद उसके हृदय को मसोसने लगती है। और उसकी मानसिक वेदना आँसुओं की झड़ी के रूप में बहती दीख पड़ती है ऐसे अवसर पर बड़े-बड़े धीरों की भी धीरता का बाँध टूट जाता है, साधारण लोग किस गिनती में हैं। कालिदास ने शकुन्तला की बिदाई के अवसर पर उद्विग्न-चेता महर्षि कण्व के मुख से जिस भावोद्गार को अभिव्यक्त किया है, वह साहित्य-वेत्ताओं से अपरिचित नहीं है। इस प्रसङ्ग का मार्मिक चित्रण इन गीतों में उपलब्ध होता है।

आठ काठ की बनी डाँड़ी या पालकी पर चढ़कर बधू पति-गृह जारही है। इस पर उसका सगा भाई उसे पालकी से उतर जाने को कहता है। वह उसे अपने ही घर रखने की बात कहता है, परन्तु बहिन बोल उठती है कि

ऐ मेरे भाई, मेरी डाँडी छोड़ दे, मुझे जाने दे। जानते हो मेरा बोझा कितना है। तुम सात लौंड़ियों का भार मज़े में सह सकते हैं; उन्हें देखकर तुम खिला-पिला सकते हो, परन्तु मेरा भार तुम सह नहीं सकते—

छोड़ु छोड़ु भइआ डँड़ियावा घरे जाये रे देउ
सातो लउंड़ियाँ के भारावा, ए गो हमारो नाहीं।

कैसी दीनता है इस कन्या की !

× × × ×

बिदाई के समय माता पुत्री को समझा रही है कि घबड़ाना मत, मैं तेरे भाई को ख़बर लेने के लिए जरूर भेजूँगी। परन्तु जेठे भाई के भेजने में कन्या को विश्वास नहीं होता। वह कहने लगती है कि तुम बासी भात खाने को देते समय भी क्रुद्ध हो जाया करती थी और फलफूल (केन) खरीदने के समय भी मुझे लुलुआ देती थी, लो अब मैं चली। अब मेरे बासी भात को रखे रहना और फल खरीदने के पैसे से धेनु गाय खरीद कर स्वयं दूध पीना—

हमारा ही बसिया के आमा धरिह वार-बार।
हमारा ही केनवा के आमा कीनीह धेनु गाय॥

बेटी के ये व्यंग्य वचन बिल्कुल सच्चे थे। उसका वर्ताव सचमुच ऐसा ही था। इन वचनों से माता की आँखें खुल जाती हैं और कहती है कि उसकी छाती पत्थर की है। भला होता, यदि उसकी छाती फट जाती—

चले के त चललु हो बेटी दीहलु समुझाई।
आरे पथल के छतिया हो बेटी बीहरि बलु जाई॥

परन्तु प्यारी माता का हृदय पुत्री के प्रति दयारहित हो नहीं सकता। 'कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति'। दृश्य बदलता है। पुत्री की सवारी बनबीहड़ को पार करती दूर निकल जाती है। वह पालकी ओहार (ढकने वाली चादर) तनिक हटाकर क्या देखती है कि उसका भाई उसके पीछे-पीछे आ रहा है। माता सच्ची निकली। भाई को देख बेटी का हृदय माता के

लिए बेचैन हो उठता है और वह अपने भाई को लौटा देती है। माता अटारी पर खड़ी है। पुत्र को लौटा देख झट झिड़कने लगती है कि मेरे रतन को तू कहाँ रख आया? मेरी बेटी को किस बनबीहड़ में छोड़ आया? भाई 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' की दुहाई देकर माता को समझाता है।

इस गीत में माता के कोमल हृदय तथा अकृत्रिम स्नेह की अभिव्यक्ति कितने दर्दनाक शब्दों में की गई है!

कन्या की बिदाई के समय माता-पिता के रोने का पारावार नहीं है। पिता के रोने के कारण गंगा में बाढ़ आई है। माता के रोने के कारण उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया है, भाई के रोने से उसके पैर की धोती भींग रही है, परन्तु भावज के नेत्र में आँसू का बूँद भी नहीं है—

बाबा के रोवले गंगा बढ़ियली
आमा के रोवले अनोर।
भइया के रोवले चरन धोती भींजे
भउजी नयनवा न लोर॥

कन्या के लौट आने की सब कामना करते हैं, परन्तु उस कामना में प्रेम के विकास के अनुसार तनिक भिन्नता भी है। परिवार के लोगों की मानसिक वृत्ति परीक्षा-योग्य है। माता कहती है कि बेटी, तू रोज उठकर आया कर, पिता कहते हैं छ मास पर आना; भाई कहता है कि कल ही प्रयोजन है—उत्सव है, और भावज कहती है दूर चली जा। जान पड़ता है कि भावज की मनोवृत्ति का आश्रय लेकर ही निरुक्तकार ने 'दुहिता' की व्युत्पत्ति 'दूरे हिता' (दूर रहने पर हित करनेवाली या दूर पर स्थापित की गई) की है। गीत के शब्दों में—

आमा कहेली बेटी निति उठि आव,
बाबा कहेलें छव मास।
भइया कहेलें बहिना काल्हे परोजन
भउजी कहेली दुर जाव॥

भावज के रुष्ट होने का कारण कभी-कभी कहा गया कटुवचन है। इसे वह मानती है। कारण पूछने पर वह कहती है कि न तो तुमने मेरे तेल-नून छेंका, न तो कोठी में पेहान लगा दिया; वचन ही मेरा वैर उत्पन्न करने का कारण है—

नाहीं तुहुँ ननदी नून तेल छेकलू
नाहीं कोठी लवलू पेहान।
नाहीं तुहुँ ननदी रसोइआ झाँकी अइलू
बतिये वैरिन भइल तोहार॥

बेटी को ससुराल ले जाने के लिए उसका श्वसुर बारात सजाकर आया है। हाथी-घोड़े द्वार पर उगने वाले चन्दन पेड़ में बाँध दिये गए हैं। वे चन्दन के पेड़-को तोड़-मरोड़ रहे हैं। पिता से यह दृश्य देखा नहीं जाता, वह क्रुद्ध होकर बरातियों को झिड़की सुनाता है। इस पर उसकी पुत्री घर से बाहर निकल कर पिता को समझाने लगती है:—

सहु बाबा सहु रे बावा आज की रतीया हो।
बाड़ा हो पाराते हो बाबा, जाइबी बड़ी दूर॥
दुवरा राउर होइहें ए बावा रन रे वन।
आँगन राउर होइहें ए बाबा भदउआ निसु राती॥

हे बाबा, आज की रात भर इस क्लेश को सह लीजिए। कल बहुत तड़के मुझे बड़ी दूर जाना होगा। हमारे चले जाने पर आपका द्वार जंगल की तरह हो जायगा और आपका आँगन भादों की काली अँधियारी निशा हो जायगा। कितना दर्द भरा हुआ है कन्या के इस कथन में! उसकी बात सोलहो आने सच्ची निकली। दूसरे दिन उस कुटुम्ब की दशा कैसी बदल जाती है। गीत के मनोरम शब्दों को ही पढ़ लीजिए। कितनी वेदना भरी है इन छोटे-छोटे वाक्यों में—

दुवरा भुलीए भूली बाबा जे रोवेले
कतहीं न देखों हो बेटी नुपुरवा हो तोहार॥

आँगाना भुलीए भूली आमा जे रोवेले
कतहीं न देखों हो बेटी, रसोइआ झाझाकाल ॥
रसोइआ भुलीए भूली भउजी जे रोवेली
कतहीं ना देखों हे बेटी, रसोइआ झाझाकाल ॥

दरवाजे पर पुत्री की बिदाई से व्याकुल होकर पिता रो रहा है कि बेटी कहीं भी तुम्हारा नूपुर (पायजेब) मैं नहीं देख रहा हूँ, आँगन में बैठी हुई माता रो रही है और रसोईघर में बैठी भावज रो रही है कि कहीं भी बेटी दिखलाई नहीं पड़ती। उसके बिना रसोईघर भयानक और छूँछा लगता है।

इस गीत के करुण भाव को सुनकर कौन ऐसा सहृदय होगा जिसका दिल बिदाई के समय की चोट की याद से विचलित न हो जायगा और जिसकी आँखें आँसुओं से भींग न जावेंगी।

बिदाई के इन भोजपुरी गीतों में जो भाव दिखलाये गए हैं उनके समान ही भाव अन्य भाषाओं के लोक-गीतों में भी प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। मानव-हृदय सर्वत्र एक समान है, चाहे हम भोजपुरी गीतों को पढ़ें चाहे गुजराती गीतों को। मिलन और बिछुड़ना, संयोग और वियोग मानव-जीवन के चिरसंगी हैं। वियोग से संयोग पुष्ट होता है, बिछुड़ने पर मिलन की माधुरी का अनुमान लगाया जा सकता है। वियोग का तीता घूँट पीकर ही सांसारिक जीवन मीठा होता है। यही कारण है कि लोक-गीतों में इस विषय का रसमय वर्णन विशेष मात्रा में उपलब्ध होता है।

पंजाब के एक लोक-गीत में कन्या अपने पिता से बिदाई के समय कह रही है—

साँडा चिडियां दा चम्बा वे, बाबल असीं उड़ जाना।
साडी लम्बी उड़ारी वे, बाबल के हडे देश जाना ॥
तेरा चौका भाण्डा वे, बाबल तेरा कौन करे ?
तेरा महल दाँ बिच बिच वे, बावल मेरी माँ रोवें ॥

गीत का आशय है कि हे पिता जी, मैं तो एक चिड़िया हूँ, मुझे तो एक दिन उड़ जाना होगा। मेरी उड़ान बड़ी लम्बी है। मुझे किसी अनजान देश में

उड़कर जाना होगा। हे पिता, मेरे विना तेरा चौका-बर्तन कौन करेगा ! तुम्हारे महल के बीच में मेरी अम्मा रो रही है।

ठीक इसी प्रकार एक गुजराती बेन अपनी दशा का वर्णन कर रही है—

अमे रे लीलुडा वननी चर कलडी
उड़ी जाशुं परदेश जो।
आज रे दादा जा ना देश माँ
काले जाशुं परदेश जो ॥

—मेघाणी : लोक-साहित्य, पृष्ठ १८३

मैं तो एक हरे-भरे जंगल की चिड़िया हूँ। उड़कर परदेश चली जाऊँगी। आज दादाजी के देश में हूँ, कल परदेश चली जाऊँगी।

काश्मीर की एक कुलाङ्गना पति के परदेश जाने पर किन शब्दों में अपनी विरह-व्यथा का बयान कर रही है—

यार चलूस तय कति छाँडन, आर आसनय व्यसियय।
यारस रुसतूय वाग फुलमय, कुसम्य छाव्यम करमाह ॥

अर्थात् मेरा प्रेमी चला गया है, उसे मैं कहाँ खोजूँ ? हे सखि ! उसे मुझे छोड़ते तनिक भी दया नहीं आई। यदि समय पाकर मेरे यौवन रूपी उपवन में वसन्त आवे, तो उसका स्वाद कौन लेगा ?

क्या यावुन यीयना हीरिथ।
मानंदि तीर जन गुम नीरिथ ॥

हाय ! क्या वह यौवन फिर आवेगा जो तीर के मानिन्द गुम हो गया है—निकल कर चला गया है।

एक दूसरी विरहिणी इस प्रकार ईश्वर से प्रार्थना कर रही है—

यार गोमय पाम्पोर वते
कुंग पाश व रुटनाल मते।
सुछम तते चछुस यते
बार सायबो बोजतम जार ॥

आशय है कि मेरा यार पाम्पुर (कश्मीर का एक मशहूर स्थान) की ओर

चला गया है; केशर के फूलों ने उसे गले लगा लिया। वह वहाँ और मैं यहाँ। ओ खुदा! मेरी बिनती सुन लो (कुंग = केसर; पोश = पुष्प, फूल)।

पंजाब की कन्या कितने पते की बात सुना रही है—

दिल दरिया समुन्दरों डूँघा
कौन दिलां दीयाँ जाणे ?
बिच्चे चप्पू बिच्चे बेड़ी
बिच्चे वंग महाणे ॥

दिल एक दरिया है, समुन्दर से कहीं अधिक गहरा। दिल की बातें कौन जान सकता है, इसके बीच क्या चप्पू, क्या किश्ती, क्या मल्लाह (सभी डूब जाते हैं)।

वियोग—इन गीतों में प्रिय-वियोग का वर्णन बड़े ही सरस शब्दों में किया गया है। प्रिय के परदेश चले जाने पर पत्नी के लिए सारा संसार सूना लगता है, घर काटने को दौड़ता है। प्रिय-वियोग के समय समस्त प्रकृति में एक अनोखी विषमता का साम्राज्य उठ खड़ा होता है। एक प्रोषितपतिका अपनी दयनीय दशा दर्शाती हुई कह रही है कि अरे निर्मोही लोभी, तुम्हारे बिना देखे कितने लोग रो रहे हैं—घर में तुम्हारी घरनी रोती है, बाहर हरिनी रोती है, तालाब में चकवा चकई रो रहे हैं। बिछोह करते समय तुझे तनिक दया नहीं आई। गीत के शब्दों में—

घारावा रोवे घरिनो ए लोभिया, बाहारवा राम हरिनिया।
दाहावा रोवे चाका चकइया, बिछोहवा कइले निरवामोहिया ॥

एक दूसरी प्रोषितपतिका के मनोभाव की बानगी देखिए। वह कह रही है कि ठंढी पुरवैया चल रही थी। नींद में अलसाई पड़ी थी। उसी वक्त वह मेरा प्रियतम मुझे छोड़कर चला गया। वह नाना प्रकार से उसकी सेवा करना चाहती है। कचहरी जाते समय वह अपने प्यारे के पैर में बबूर का काँटा बनकर चुभना चाहती है; कभी कोयल बन मीठा शब्द सुनाना चाहती है; कभी फुलवाड़ी में फूल बनकर अपने प्यारे के वास्ते गमकना चाहती है; जल में मछली बनकर प्यारे के पैर से लिपटना चाहती है; पति के देश में जाकर पानी बरसने के लिए बादल से प्रार्थना करती है।

गरज यह है कि विरह-व्यथा से सताई गई विरहिणी अपनी व्यथा को भूलने की विशेष चेष्टा करती है, परन्तु उसे सफलता नहीं मिलती।

एक दूसरी सुन्दरी अपने प्यारे से बिछोह के दिनों को बिताने की युक्ति पूछ रही है। दिल में दर्द पैदा करनेवाले इस गीत को पढ़िए और स्वयं गुनगुनाकर इसका रसास्वाद लीजिए—

जुगुति[1] बताये जाँव
कवन विधि रहबों[2] राम ॥ टेक ॥
जो तुहु साम[3] बहुत दिन बितिहें,
अपनी सुरतिया[4] मोरे बहियाँ पर लिखाये जाव ॥ १ ॥
जुगुति बताये०
जो तुहु साम बहुत दिन बितिहें,
बिरना[5] बोलाइ मोको नइहर[6] पहुँचाये जाव ॥ २ ॥
जुगुति बताये०
जो तुहु साम बहुत दिन बितिहें,
बहियाँ पकरि मोके गंगा भसिआये[7] जाव ॥ ३ ॥
जुगुति बताये जाव
कवन बिधि रहबों राम ॥

किसी स्त्री का पति विदेश जाने के लिए प्रस्तुत है। उसकी प्रेमी स्त्री उससे कहती है कि आपके वियोग में मैं कैसे रहूँगी इसकी युक्ति मुझे बतलाते जाइए।

ऐ मेरे प्राणप्रिय! यदि तुम विदेश में बहुत दिनों तक रहोगे तो कृपा करके अपना चित्र मेरी बाहों पर चित्रित कर दो, जिसे मैं वियोग के दिनों में सदा देखती हुई शान्ति धारण करूँगी ॥१॥

ऐ मेरे प्राणप्रिय! यदि तुम विदेश में बहुत दिन बिताओगे तो कृपाकर मेरे भाई को बुलाकर मुझे अपने मायके पहुँचवा दो (जिससे मैं तुम्हारे वियोग को काट सकूँ) ॥२॥

---

[1]युक्ति, उपाय। [2]रहूँगी। [3]श्याम, प्रिय पति। [4]मूर्ति (सूरत)। [5]भाई (वीर)। [6]मायका। [7]गिरा देना।

ऐ मेरे प्राणप्रिय ! यदि तुम विदेश में बहुत दिनों तक रहोगे तो मेरी बाँह पकड़ मुझे गंगाजी में गिरा दो (जिससे मैं मरकर तुम्हारे वियोग के दुःसह दुःख को सहने से वंचित हो जाऊँगी) ॥३॥

इस गीत के प्रत्येक पद से करुण-रस चुआ पड़ता है। यह गीत क्या है करुण-रस का कलश है। जितनी करुणा इन कतिपय पंक्तियों में भरी पड़ी है इतनी संभवतः समस्त हिन्दी-साहित्य में भी नहीं मिलेगी। वियोग की आशंका से उत्पन्न दुःख का इतना सरस, सजीव, अकृत्रिम तथा हृदय-द्रावक वर्णन अन्यत्र उपलब्ध नहीं। हिन्दी के कतिपय कवियों ने पति के परदेश जाने के समय उनकी स्त्रियों की आँखों में आँसू तो जरूर दिखलाए हैं, परन्तु इस गीत में तो स्त्री अपने को गंगा में डुबो देने की प्रार्थना कर रही है, जिससे न तो वह जीती रहेगी और न वियोग के कष्टों को सहन करेगी। हिन्दी के तोष आदि कवियों ने वियोगिनियों के आँसू से नदियों में बाढ़ आने की बात लिखी है। यह वर्णन अलंकार की दृष्टि से भले ही चमत्कारपूर्ण हो परन्तु श्रोताओं के हृदय पर यह कुछ भी चमत्कार पैदा नहीं करता। परन्तु इस गीत में वर्णित भाव अपनी अकृत्रिमता के कारण सहृदयों के दिल पर सहज ही में चोट करते हैं। 'बहियाँ पकरि मोके गंगा भसिआये जाव' आदि पदों में जो गहरी वेदना छिपी हुई है उसे अच्छी तरह से वे ही जान सकते हैं जो 'भसियाना' शब्द के देहाती अर्थ को जानते हैं। इस स्त्री को पति का वियोग सह्य नहीं है परन्तु गंगा में गिरकर मर जाना सह्य है। इस घनिष्ट तथा स्वाभाविक प्रेम की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी ही थोड़ी है।

इस गीत में पति के वियोग में उसके चित्र के स्मरण करने का वर्णन है। यह प्रथा बहुत प्राचीन मालूम पड़ती है। कालिदास ने अपने मेघदूत में यक्षपत्नी का अपने पति का चित्र बना कर मनोविनोद करने का वर्णन किया है। इस गीत में करुण-रस की मात्रा इतनी कूट-कूटकर भरी हुई है जिसका वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। मैं तो महाकवि भवभूति की अनेक करुण रसमयी कविताएँ इसी एक ही गीत पर निछावर करने के लिए तैयार हूँ। इस गीत की सरसता, मधुरता तथा करुण-रसता के विषय में मतिराम का

यह पद उपयुक्त जान पड़ता है। "ज्यों ज्यों निहारिये नेरे ह्वै नैनन, त्यों त्यों खरी निकरे सी निकाई।"

कोई विरहिणी स्त्री अपनी दुःखद दशा का वर्णन करते हुए कह रही है कि मेरी धानी रंग की चुनरी (साड़ी) इत्र के समान गमक रही है। मैं अपने यौवन को लिये हुए पति के समागम के लिए मायके में तरस रही हूँ। मैंने सोने की थाली में भोजन परोसा था. परन्तु उस भोजन को करनेवाला आज विदेश में पड़ा तरस रहा है। मैंने बड़े लोटे में पीने के लिए गंगाजल रक्खा था, तथा पति के खाने के लिए लवंग और इलायची लगाकर पान का बीड़ा तैयार किया था परन्तु उस पान को खानेवाला परदेस में विराज रहा है। उस प्रियतम के सोने के लिए मैंने कलियों को चुन-चुन करके सेज तैयार की थो परन्तु उस सेज को सुशोभित करनेवाला परदेस में है—

मोरी धानी चुनरिआ इतर गमके।
धनि वारी उमरिया नइहर तरसे॥
सोने की थारी में जेवना परोसलों।
मोर जेंवन वाला बिदेस तरसे॥
झझरे गेड़ुववा गङ्गाजल पानी।
मोर घूँटन वाला बिदेस तरसे॥
लवँग इलायची के बीड़ा लगवलीं।
मोर कूँचन वाला बिदेस तरसे॥
कलिआ चुनि चुनि सेजवा लगवलीं।
मोर सूतन वाला बिदेस तरसे॥

प्रिय के वियोग में तड़पनेवाली इस विरहिणी की दशा देखने ही योग्य है। प्रिय के वियोग में कामिनी की व्याकुलता कितनी अधिक है। वेचैनी को न सह सकने के कारण वह स्वयं प्रिय को खोजने के लिए निकल पड़ती है और बटोहियों से उसका पता पूछती चलती है। इस गीत में बड़ा ही लोच है, द्रुत लय है। इस झूमर का पूरा स्वाद झूम-झूमकर गाने वाली कलकण्ठ कामिनियों के कोरस में ही मिल सकता है। विरहिणी कह रही है कि—

ऐ भौंरा! तुम आज परदेश जाकर कितने दिनों में लौटेगे? मैं कितने दिनों तक तुम्हारे मार्ग की प्रतीक्षा करूँगी? जब पति बहुत दिनों तक परदेश से लौटकर नहीं आया, तब स्त्री दुःखी होकर कहती है कि पति के आने की अवधि के दिन गिनते-गिनते मेरी अँगुली घिस गई। उनके आने के दिन की प्रतीक्षा करते हुए मेरी आँखों से आँसू गिरते रहते हैं। मैं पति को ढूँढ़ने के लिए एक बन, दूसरे बन और तीसरे बन में गई। वहीं मुझे एक ग्वाला मिला। वह ग्वाले को संबोधित कर पूछती है कि ऐ भइया ग्वाला! क्या तुमने मेरे परदेसी भँवरे को कहीं देखा है? उसका पता भला बता तो सही।

आज के गइल भौंरा कहिया ले लौटब कतेक दिनवाँ।
जोहों तोरी बटिया, कतेक दिनवाँ ॥ १ ॥
गनत गनत मोरी अँगुरी भैल खियानी चितवते दिनवाँ।
नैनवाँ ढुरे लोरवा चितवते दिनवाँ ॥ २ ॥
एक बने गइलीं दूसरे बने गइलीं तीसरे बनवाँ।
मिल्यो गोरू चरवहवा तीसरे बनवाँ ॥ ३ ॥
गोरू चरवहवा तुहीं मोर भइआ कतहूँ देखल ना।
मोर भँवरवा परदेसिया कतहूँ देखल ना ॥ ४ ॥

इन गीतों से पशु-हृदय का चित्रण भी अछूता नहीं बचा है। पशुओं के मानसिक भावों का भी अंकन सहानुभूति से भरी कूची से किया गया है। पानी के लिए प्यासे प्रियतम हरिन के पकड़े जाने पर हरिनी का यह विलाप इतना करुणोत्पादक है कि श्रोताओं की आँखें आँसुओं से छलक उठती हैं। हरिनी का यह पति-प्रेम कितना आदर्श-पूर्ण है!

पानी के लिए प्यासा हिरन जमुना के घाट पर गया। मैंने खेत में चीन बोया था उसे वह चर गया। हरिनी पूछती है कि ऐ बटोही! तुम मेरे भाई हो, क्या तुमने इस रास्ते से हिरन को ले जाते हुए बहेलिया को देखा है? बटोही कहता है कि मैंने बहेलिया को हिरन के हाथ और पैर बाँधकर हाजीपुर के हाट की ओर जाते देखा है। हरिनी बहेलिये पर क्रुद्ध होती हुई कहती है

कि ऐ बहेलिये ! तेरे पाँव थक जायँ, तेरे हाथों में घुन लग जायँ। तूने किस कारण से मेरी सेज को सूनी कर दिया? तुम हिरन के चाम और मांस को भले ही बेंच देना, परन्तु उसकी हड्डियाँ मुझे दे देना। मैं उन्हीं हड्डियों को लेकर इसी जमुना के तीर पर सती हो जाऊँगी। हरिनी के विचार कितने उदात्त हैं। कामना कितनी विशुद्ध है—

पानी के पिआसल हरिनवा, जमुनवा घाटे रे जाय।
बोअलों मैं चीनवा हे रामा हरिनवा चरि रे जाय॥
बाट बटोहिया भइआ तूहुँ रे मोर भाय।
एहि राहे देखुआ हरिनवा, बहेलिया लेले रे जाय॥
देखुई मैं देखुई हे पातरि हाजीपुर के रे हाट।
हाथ गोड़ बन्हले बहेलिया, हटिया लेले रे जाय॥
पग तोरे थाके बहेलिया हथवा लागे रे घून।
कवनों कसूरवा बहेलिया मेरी सेजरिया कइलो रे सून॥
चाम माँसु बेचिहे वहेलिया हाड़वा दिहे रे मोर।
ओही हाड़ लेइ सती होइबों एहि जमुना के तीर॥
पानी के पिआसल हरिनवा॥

वैधव्य—इन गायनों में विषाद की रेखा जरूर खिँची हुई है, परन्तु अमिट रूप से नहीं। दिन ज्यों-ज्यों ढलते जाते हैं, रातें जितनी बीतती जाती हैं, विषाद की रेखा फीकी पड़ती जाती है, परन्तु बालविधवाओं की मनोवेदना का चित्रण किस प्रकार किया जा सकता है? इन बालविधवाओं में कितना भोलापन भरा हुआ है जो ब्याह जैसी अजनबी चीज़ को जानती ही नहीं; शादी जिनके वास्ते एक अजूबा है। इनकी दर्दनाक आहें किसके दिल को न दहला देंगी। बड़ी मार्मिक वेदना भरी पड़ी है इन विधवाओं के गीतों में। यहाँ नमूने के तौर पर एक ही गान नीचे दिया जाता है।

एक भोली-भाली बालविधवा अपने पिता से अपनी शादी के बारे में पूछ रही है कि आपने किस लिए मेरी शादी की? कब मेरा गवना किया? पिता कहता है कि तेरी शादी आनन्द भोगने के वास्ते की तथा मुहूर्त देखकर

तेरा गवना किया। इस पर बेटी कह रही है कि मेरा सिर सिन्दुर के बिना रो रहा है, आँखें काजर के बिना रो रही हैं, मेरी गोद पुत्र के बिना रो रही है और सेज कन्हैया बिना रो रही है—

बाबा सिर मोरा रोवेला सेनुर बिनु,
नयना कजरवा बिनु रे राम।
बाबा गोद मोरा रोवेला बालक बिनु
सेजिया कन्हइया बिनु रे राम॥

बेटी की आहभरी बातें सुनकर पिता उसे फुसलाना चाहता है, परन्तु वह बालिका फुसलाने में नहीं आती। बाप कहता है कि ऐ बेटी! हाजीपुर की हाट लगने दे, उस बाजार में मैं चलूँगा और तुम्हारे करम को बदल दूँगा। परन्तु बालिका होने पर भी कन्या होशियार है। वह तुरन्त बढ़िया उत्तर देती है कि काँसा पीतल ही बदला जा सकता है, परन्तु करम कैसे बदल जायगा? जैसा मैंने किया है उसका फल तो भोगना ही पड़ेगा। जैसा बोया जायगा वैसा ही काटा जायगा। कन्या का यह कथन कितने भोलापन से भरा है, साथ ही साथ कितना सच्चा है! भाग्य की प्रबलता और कर्म की दुर्निवारता की अभिव्यक्ति कितने अच्छे शब्दों में की गई है। गीत की दो चार कड़ियों को पढ़कर इस मार्मिक वेदना का अनुभव कीजिए—

बेटी लागे देहु हाजीपुर के हटिया करम तोरे बदली देबों ए राम।
बाबा काँसावा पीतर सब बदलबी, करम कइसे बदलबी ए राम।
बेटी सिर तोरे भरबों रे सेनुर लेइ, नयेना काजारवा लेइ ए राम।
बेटी गोद तोरे भरबों रे बालक लेइ, सेजिया कन्हइया लेइ ए राम॥

(घ) शान्त-रस

इन ग्रामगीतों में शान्तरस का भी बड़ा ही सुन्दर परिपाक दिखाई पड़ता है। देवी-देवताओं की स्तुति विषयक गीतों में जिस प्रकार भक्ति का उद्रेक दृष्टिगोचर होता है उसी प्रकार भोजपुरी भजनों में ऐहिक जीवन की निःसारता और पारलौकिक जीवन की महत्ता प्रतिपादित की गई है। स्त्रियों की

कामनाओं के केन्द्र दो ही हैं—माँग और कोख, अर्थात् पति और पुत्र। इनके कल्याण-साधन के लिए वे भिन्न-भिन्न देवी-देवताओं से मंगल की कामना किया करती हैं। इन देवताओं में एक प्रधान देवता षष्ठी माई (छठी माई) हैं, जिनकी पूजा कार्तिक शुक्ल की षष्ठी को बड़ी उमंग तथा उत्साह के साथ की जाती है। उस दिन उपवास में रहकर सायंकाल में सूर्य को अर्घ दिया जाता है तथा सप्तमी के प्रातःकाल बालसूर्य को अर्घ देने के बाद ही व्रत की समाप्ति समझी जाती है। तब तक वे एक बूँद जल भी ग्रहण नहीं करतीं अनेक मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए, परन्तु विशेषतः पुत्र की प्राप्ति के लिए, इस व्रत का आचरण विहित है। एक गीत के वर्णनानुसार बुढ़िया पोते की चाह से, तरुणी बेटा की इच्छा से तथा बालिका भाई-भतीजा पाने की अभिलाषा से इस व्रत को करती हैं।

एक बन्ध्या षष्ठी माता से पुत्र की प्राप्ति के लिए प्रार्थना कर रही है कि माता, मेरा जीवन निरर्थक सा प्रतीत होता है। सास दुतकारती है, ननद गालियों की बौछार करती है और अपना व्याहता पति डण्डों से उसकी खबर लेता है। बेचारी का दोष केवल यही है कि उसकी गोद पुत्र के बिना सूनी है। सूर्य भगवान् उसकी प्रार्थना सुनकर सफल बनाते हैं—

सासु मारे हुदुका ए दीनानाथ; ननदिया पारे गारी।
संगे लागल पुरुखवा ए दीनानाथ; देले उदबास॥
आरे सबके डलियवा ए दीनानाथ; लिहलीं उठाई।
आरे बाँझि के डलियवा ए दीननाथ; ठहरे तवाँई॥
आरे असों के कतिकवा ए बाझिनि; घरवा चलियो जाहु।
आरे अगिला कतिकवा ए बाझिनि; गजाधर पुतवा पाऊ॥

दूसरा दृश्य उस समय का है जब प्रातःकाल प्राची गगन में अरुण की तनिक-तनिक आभा छिटक रही है। रात के चेहरे पर से अन्धकार का काला परदा उठ गया है, परन्तु अभी सूर्य भगवान् का उदय नहीं हुआ है। भक्त नारी का हृदय बेचैन हो रहा है कि कब भगवान् का उदय होगा; कब वह सूर्य के सुवर्ण बिम्ब को देखकर अपने नेत्रों को सफल करेगी और अर्घ्य देकर

अपने व्रत की समाप्ति करेगी। सूर्योदय की प्रतीक्षा करते करते वह थक सी गई है। उस समय उसके मुँह से जो प्रार्थना निकलती है वह कितनी भक्ति-पूर्ण और भावपूर्ण है, इसे सहृदय पाठक गीत को पढ़कर स्वयं समझें—

आरे गोड़े खड़उँवा ए अदितमल; तिलका लिलार।
आरे हाथावा में सोबरन साटी; ए अदितमल अरघ दिआऊँ।
ए आमा के कोरा पइसि सुतेले अदितमल; भोरे हो गइल बिहान।
आरे हाली हाली उग ए अदितमल; अरघ दिआऊ॥
फलवा फूलवा ले ले मालिनि बिटिआ ठाढ़।
हाली हाली उग ए अदितमल; अरघ दिआऊ॥
धूँपवा जलवा रे लेके; बभनवा रे ठाढ़।
हाली हाली उग ए अदितमल; अरघ दिआऊ॥
गोड़वा दुखइले रे डाँड़वा पिरइले; कब से जे हम बानी ठाढ़।
हाली हाली उग ए अदितमल, अरघ दिआऊ।

भक्त-हृदय की व्याकुलता का कैसा सुन्दर चित्रण किया गया है!

शीतला माता के विषय में जो भोजपुरी गीत उपलब्ध होते हैं उनमें भावुक भक्त की प्रगाढ़ भक्ति का भलीभाँति परिचय मिलता है। इन गीतों में चेचक से पीड़ित बालक के लिये आरोग्य-प्रदान की प्रार्थना की गई है। माता बड़ी दयालु हैं, थोड़े से उपकार के लिए भक्त के मनोरथ की सद्यः पूर्ति कर देती है। वह नीम के पेड़ में हिंडोला लगाकर झूल रही है, इतने में उसे प्यास लगती है। रात का समय, गाँव है दूर। गाँव में आकर वे मालिन की लड़की को जगाती है और पीने के लिये पानी माँगती है। वह कहती है कि मेरी गोद में लड़का सो रहा है, मैं कैसे उठूँ? शीतला के आग्रह करने पर वह उठती है और पानी पिलाती है। तब शीतला माता प्रसन्न होकर उसकी अभिलाषा की पूर्ति कर देती हैं। वह इतनी दयालु हैं।

एक गीत में सेविका की प्रार्थना तथा नैराश्य का भाव इतने सुन्दर शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है कि पढ़ते ही बनता है। एक बाँझ स्त्री अपनी डाली लेकर माता के दरबार में उपस्थित होती है। सबकी पूजा की

डाली माता ले लेती हैं, परन्तु उस गरीबनी की डाली पड़ी रह जाती है। पूछने पर बन्ध्यापन के कारण डाली अशुद्ध बतलाई जाती है। इस पर वन्ध्या दुःखित होकर जल मरने के लिए जंगल में जाने को तैयार हो जाती है, और कहती है कि आपकी पूजा के लिए पानी भरते-भरते मेरे सिर को चाँद घिस गई है और देवघर (मन्दिर) लीपते-लीपते मेरे हाथ घिस गये हैं। तौभी ऐ माता! आपकी कृपा नहीं हुई—मेरे बाँझिन होने का कलंक नहीं छूटा। इस पर माता आश्वासन देती हैं कि तुम जलो मरो नहीं। मैं तुम्हें पुत्र देकर तुम्हारे कलंक को धो दूँगी। इस भक्तिभावपूर्ण गीत को पढ़कर पाठक स्वयं आनन्द लें —

सिकिया चिरि चि रि बिनलों; ए डलियवा हो।
आरे डलिया लिहले ठाढ़ भइलों; मइया दरबरिया हो।
सभ के डलियवा ए मइया; आरे लिहलु पराछि हो।
आरे हमरा अभागिन के डलियवा; काहें फिरि आइल हो।
आरे आरे बाँझी तिरियवा; आरे डलियवा तोर असुद्ध हो।
आरे तोहर बा असुद्धवा ए बाझिनि; डलियवा तोर असुद्ध हो॥
पईसबि ननन बनवा; आरे छेवड़ब चननवा हो।
आरे चिरि, साजि के जरबी; मइया अकलंक तोहरा होइहे हो॥
पनिया भरत ए मइया; चनिया मोर खिआइल हो।
आरे देवघर लिपत ए मइया; हाथवा खिआइल हो॥
आरे तबहुँ ना छुटेले ए मइया; बाझिनि केरि नइयाँ हो।
आरे बाँझी तिरियवा; जनि रोइ मर हो।
जनि पइस ननन बनवा, जनि पइस चननवा हो॥
आरे आपन बालकवा ए बाझिनि; तोहरा के देवों हो॥
आरे सुतल देवमुनि; उठली चिहाई हो।
आरे कवन चरित्र ए मइया; बाझिनि घरवा बालक हो॥
आरे का तुहु देवमुनि, उठलू चिहाई हो।
आरे सीतला का चरित्रे ए देवमुनि; बाझिन घरवा बालक हो॥

शीतला (चेचक) के होने से जब बालक का शरीर जलने लगता है, बेहद पीड़ा होती है, तब उसकी दयामयी जननी भक्ति भावना में झूमते-झूमते हुए शीतला माता से प्रार्थना करती है

पटुका पसारि भीखि माँगेली बालाकवा के माई;
हमरा के बालाकवा भीखि दीं।
मोरी दुलारी हो मइआ;
हमरा के बालाकवा भीखि दीं॥
आँचारा पसारि भीखि माँगेले बालाकवा के बावा;
हमरा के बालाकवा भीखि दीं।
मोरी मानावा राखनि मइया;
हमरा के बालाकवा भीखि दीं॥

मैं बालक की माता हूँ। मैं आँचर पसार कर भीख माँग रही हूँ, इस बालक को मुझे भीख दीजिए। ऐ मेरी दुलारी माँ! कृपा कीजिए, बालक को भीख दीजिए, अर्थात् इसके रोग को दूर कर दीजिए। बालक की दर्द भरी आहों से व्याकुल हो कर उसकी माँ जब इन गीतों को मस्ती में झूम-झूमकर गाती है, तो सुनने वालों के शरीर में रोमाञ्च हो जाता है और जान पड़ता है कि नीम की डाल पर झूलने वाली शीतला माँ, अपने आनन्दमय झूले से उतर कर, जल्दी-जल्दी बालक की सेज के पास आकर खड़ी हो जाती हैं और अपना वरद हस्त फैला कर उसे नीरोग होने का आशीर्वाद देती हैं।

भजन—भोजपुरी भजन बड़े मार्के के हैं। इनमें संसार की निःसारता, जीवन की अनित्यता, सुख-सम्पत्ति की क्षण-भंगुरता का सुन्दर प्रतिपादन मिलता है। वृद्धा स्त्रियाँ जब तीर्थ-यात्रा या गंगा-स्नान के लिए संघ बाँध कर जाती हैं तब वे इन भजनों को प्रायः गाया करती हैं। एक तो भजनों का कोमल भाव, दूसरे इन वृद्धाओं के कण्ठ से निकली भक्त-विह्वल ध्वनि, तीसरा प्रातःकाल का सुहावना समय—ये तीनों मिल कर इन भजनों को इतना रसमय बना देते हैं कि सुनने वाले का हृदय इस सांसारिक प्रपञ्च से दूर हट कर भगवद्भक्ति के सरोवर में गोता लगाने लगता है। नमूने के तौर पर इस भजन के भाव को

परखिए जो मनुष्य के हृदय में वैराग्य जगाने में सर्वथा कृतकार्य सा प्रतीत होता है—

का देखिके मन भइल दिवाना, का देखि के। टेक
मानुख देह देखि जनि भूल, एक दीन माटी होई जाना।
का देखि के०
आरे इ देहिया कागद की पुड़िया, बूँद परत भिहिलाना।
का देखि के०
इ देहिया के मलि मलि धोवलों; चोवा चनन चढ़ाई।
ओहि देहिया पर कागा भिनके; देखत लोग घिनाई॥
का देखिके मन भइल दिवाना, का देखि के।

(८) गीतों में रहस्यवाद

भोजपुरी गीतों में कहीं-कहीं रहस्यवाद की बड़ी सुन्दर झलक दिखाई पड़ती है। भक्ति-भाव से अपनापन को भूलकर जब भक्त अपने हृदय के भावों को प्रकट करता है तब जिस कविता का उद्गम होता है वह काव्यकला तथा दार्शनिक दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण होती है। रहस्यवाद में प्रयुक्त प्रतीक सांसारिक होते हैं परन्तु उनसे अभिव्यक्त भाव पारलौकिक होता है। इन गीतों में रहस्यवाद की छटा भी देखने को मिलती है।

इस गीत को लीजिए जिसमें गुरु का महत्त्व दिखलाया गया है। साधिका कह रही है कि मैं अपने ओसारे में बेखबर सो रही थी कि गुरुजी ने मुझे जगाया और गवने के नजदीक होने की सूचना मुझे दी। यह गवना सांसारिक गवना न होकर भगवान रूपी प्रियतम के पास जाने की सूचना है। जीव संसार के रमणीय विषयों में इतना लगा हुआ है कि उसे गन्तव्य स्थान भी भूल गया है। वह जानता नहीं कि यह जन्म केवल आगे बढ़ने के लिए एक सोपान मात्र है, टिककर आनन्द मनाने की जगह नहीं। ऐसी गाढ़ अज्ञान-निद्रा से गुरु के सिवाय और कौन जगा सकता है? गुरु के शरण में जाने से ही साधक का निस्तार है—

सुतल रहलों ओसरवा हो; गुरुजी दिहलें जगाई।
गवना के दिन नियरा गइलें हो; मन गइल घबराई॥
गुरुजी हो गुरुजी पुकारीलें हो; गुरुजी सरन तोहार।
रचे एक दीहिती गुरु हुकुमवा हो; धउरल करि अइतों दान॥
कोठिला भरल बाटे चउरा हो; गुरुजी कइ अइतो दान।
रचे एक दीहितीं हुकुमवा हो; गुरुजी कइ अइतों दान॥

एक दूसरे भजन में कोई गुरु संसार में दिन-रात मस्त रहनेवाले किसी सांसारिक पुरुष से पूछ रहा है कि तुम अपना तम्बू गिराकर कहाँ जाओगे? अपना ठिकाना तो बतलाओ। यहाँ आकर तुमने सांसारिक प्रपञ्च का खूब फैलाव तो कर दिया, परन्तु तुम्हें अपने गन्तव्य स्थान का कुछ पता है, जहाँ तुम्हें जाना होगा? तुमने बबूर का पेड़ क्यों लगाया, तुम्हें आम का पेड़ लगाना चाहिए था। हरि नाम का भजन करना चाहिए था। तब तो तुम्हें अमृत फल प्राप्त होता। क्या तुम नहीं जानते कि भगवद्भक्ति के बिना इस मर्त्यलोक में अमरत्व की प्राप्ति नहीं हो सकती? प्रेम ही जीवन का सार है। यह प्रेम न तो आम में बौरता है और न हाट में बिकता है। प्रेम के बिना मानव हृदय उसी प्रकार सूना है जिस प्रकार घनघोर अँधियारी रात। प्रेम नगर के हाट में हीरा और रत्न बिकता है। चतुर लोग तो सौदा करके अपना जीवन सफल बनाते हैं। परन्तु मूर्ख लोग घूम-घूमकर खड़े-खड़े पछताते हैं। मूल गीत इस प्रकार है—

तमुवाँ गिराइ कहाँ जइबो हो कहो आपन ठेकान।
काहे के लगवल बबुरिया हो लगवत तू आम।
अमिरित करत भोजनियाँ हो भजत हरिनाम॥१॥
प्रेम बाग नहीं बौरे हो प्रेम न हाट बिकाय।
बिना प्रेम कै मनुजवो हो जस अँधियरिया राति॥२॥
प्रेम नगर की हटिया हो हीरा रतन बिकाय।
चतुर चतुर सौदा करि गये हो मूरख ठाढ़ पछिताय॥३॥

इस भजन में तम्बू गिराने से सांसारिक जीवन की जो उपमा दी गई है वह कितनी मार्मिक और उपयुक्त है, इसे वे ही लोग भलीभाँति समझ सकते हैं

जिन्होंने भोजपूर की बारातों का दृश्य देखा है। इन बारातों में किसी सुनसान खेत या बागीचे में तम्बू तान देते हैं। उसके नीचे बैठकर रात भर गाना, बजाना और नाच हुआ करता है। आलीशान मजलिस जमती है, संगीत से शामियाना गूँज उठता है। एक रहता है विवाह की नयी उमंग और दूसरा बन्धु-बान्धवों और इष्ट-मित्रों के साथ मेल-मिलाप। ऐसा उत्सव रात भर मचता रहता है, परन्तु दूसरे ही दिन सवेरे दृश्य बदल जाता है, बारात की बिदाई हो जाती है, तम्बू गिरा दिया जाता है और वह स्थान फिर से निपट उजाड़ बन जाता है। इसी सांसारिक आकस्मिक परिवर्तन की उपमा तम्बू गिराने से दी गई है। पूरा भजन रहस्यवाद के गहरे रंग से रँगा हुआ है।

नीचे के भजन में नैहर से नाता तोड़कर पति के पास जाने का जो वर्णन दिया गया है वह भी रहस्यवाद की परम्परा के ही अन्तर्भुक्त है। यहाँ आत्मा की कल्पना स्त्री से की गई है और परमात्मा को पति माना है। यह संसार ही नैहर है और गुरु की कृपा से ईश्वरोन्मुख होने का ही नाम गवना है। गुरु की कृपा ही वह डोली है जिस पर चढ़कर यह जीव अपने प्रियतम के पास जाता है। इस कमनीय कल्पना को हिन्दी भाषा के कबीर, जायसी आदि रहस्यवादी कवियों ने खूब ही अपनाया है। इस गीत में रहस्यवाद की आभा फूट निकलती है —

मोरे नइहरवा से नातवा छोड़वले जाला पियवा।
काचें काचें बँसवा के डोलिया बनवले,
ताहि पर काया के सुतवले जाला पियवा।
चारि कहार मिलि डोलिया उठवले,
आगे आगे रहिया देखवले जाला पियवा।

(९) बिरहा की बहार

भोजपुरी गीतों में बिरहा अपना विशेष स्थान रखता है। उमंग भरे अहीरों के मुँह से जब बिरहा गाया जाता है तो श्रोताओं के हृदय में एक विचित्र उत्साह पैदा हो जाता है। अहीरों का तो यह जातीय गान ही है

जिसे वे अपने उत्सवों तथा पर्वों पर अवश्य ही गाते हैं। बिरहा से मिलता-जुलता अहीरों का एक दूसरा भी गाना है जिसे 'लोरकी' कहते हैं। इसमें एक आभीर वीर की पराक्रम-कथाओं का छन्दोबद्ध वर्णन रहता है। भोजपुर प्रान्त में 'लोरकी' गाने की बड़ी प्रथा है। परन्तु दुःख की बात यह है कि 'लोरकी' लिपि के कारागार में बद्ध नहीं हो सकती, क्योंकि इसके गाने वाले इतने उमंग से, इतने जोश से तथा इतने आवेश से इसे गाते हैं कि अनेक प्रयत्न करने पर भी हम उनके लिपिबद्ध करने में समर्थ नहीं हो सके। परन्तु बिरहा की दशा इससे भिन्न है। लोरकी की अपेक्षा लघुकाय होने के कारण बिरहा लिपि की कुण्डली में सिमट कर आ जाता है और नट के समान अपनी कलाबाज़ी दिखाने में समर्थ होता है।

हम कह आए हैं कि बिरहा एक छन्द है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में दो जगह यति होती है। प्रथम यति १६ अक्षर पर और दूसरी यति १० अक्षर पर। अन्त में दोहे के समान एक लघु और एक गुरु होता है। कहीं-कहीं प्रथम चरण में दो अक्षर बढ़ भी जाते हैं। इसके गाने की एक विशेषता यह है कि छन्द के चतुर्थ चरण का उपान्त्य दीर्घ स्वर प्लुत स्वर में उच्चारित किया जाता है। इसके वर्णनीय विषय अनेक हैं। नीति, शृङ्गार, वीर तथा ग्रामीण जीवन का बड़ा रमणीय वर्णन इन बिरहों में पाया जाता है। भाषा का सौन्दर्य, भाव का माधुर्य इनमें इतना पूर्ण है कि जान पड़ता है कि किसी ने कलेजा निकाल कर इन गानों में रख दिया हो।

ये बिरहे हृदय में उमंग आने पर अपठित मनुष्यों के मुँह से आप ही आप निकल पड़ते हैं। इनका निवास स्थान जन साधारण का उत्साह पूर्ण हृदय ही है। इन कवित्वपूर्ण बिरहों के उद्गम की कहानी किसी ने क्या ही अच्छे ढंग से कही है।

नाहीं बिरहा कर खेती भइया;
नाहीं बिरहा फरे डाढ़।
बिरहा बसेले हिरिदिया में ए रामा;
जब उमगेले तब गाव॥

बिरहा की न तो खेती है, न बिरहा फलों की तरह पेड़ों की शाखाओं पर फलता है। बिरहा तो मनुष्य के हृदय में बसता है। जब उमंग आवे तब इसे गाइए।

मातृभक्त सरवन के मर जाने पर उसकी स्नेहमयी माता का विलाप इस बिरहे में कितने सुन्दर शब्दों में व्यक्त किया गया है। कमनीय प्रकृति पर भी इस शोक-कलाप की मलिन छाया दीख पड़ती है—

तलवा झुरइले, कँवल कुम्हिलइले;
हँस रोवे बिरह वियोग।
रोवत वाड़ी सरवन के माता,
के काँवर ढोइहें मोर॥

ताल सूख गया है, कमल कुम्हला गया है, हंस रो रहा है, सरवन की माता रो रही है कि हाय अब काँवर कौन ढोवेगा, मुझ पंगुल को एक स्थान से दूसरे स्थान पर कौन ले जावेगा।

कुँवर कन्हाई के बाल चरित की भी बानगी देखिये—

बने बने गइया चरावेला कन्हइया,
घरे घरे जोरेला पिरीति।
अनका[1] मउगी[2] के सान[3] मारि अइले,
आखिर त जात अहीर॥

ये वन-वन में तो गायों को चराते फिरते हैं और घर-घर में प्रीति जोड़ते फिरते हैं। दूसरी स्त्री से इशारा करने में भी नहीं चूकते। आखिर तो अहीर की ही जाति ठहरी। कृष्ण की बाल-लीलाओं पर यह कितना चुभता परिहास है—

पिया पिया कहत, पियर भइली देहिया,
लोगवा कहेला पिंडरोग।
गँउवा के लोगवा मरमियों न जानेले
भइले गवना ना मोर॥

---

[1]दूसरे की। [2]स्त्री। [3]संस्कृत संज्ञा का अपभ्रंश, इशारा।

एक बिरहे में कोई पूर्वानुरागिणी स्त्री अपनी दयनीय दशा का रहस्य समझाती हुई कहती है कि 'पिया' 'पिया' रटते-रटते मेरी कोमल देह पीली पड़ गई है। पड़ोसी लोग कहते हैं कि मुझे पाण्डुरोग (पियरी) हो गया है लेकिन बेचारे गाँव के भोले-भाले लोग इसके मर्म को नहीं जानते। उन्हें क्या मालूम कि मेरा गौना अभी तक नहीं हुआ है। इस गीत में पूर्वानुराग जन्य दीनता तथा हृदय की द्रवता सहृदय रसिक के आस्वादन की वस्तु है।

स्वाधीनपतिका की व्यंग्यमयी वाणी का आस्वादन कीजिए—

रसवा के भेजलीं भँवरवा के संगिया,
रसवा ले अइले हा थोर।
अतना ही रसवा में केकरा के बटबों,
सगरी नगरी हित मोर॥

वह कहती है कि ऐ मित्र ! मैंने भँवरा को रस लाने के लिए भेजा। लेकिन वह थोड़ा ही रस लाया। मेरे पास रस इतना थोड़ा है कि मैं किसे किसे इस रस में से बाँटूँ क्योंकि गाँव के जितने रहनेवाले हैं वे सब हमारे मित्र हैं। भँवर (पति और भौंरा) और रस (प्रेम और मधु) का श्लेष सहृदय साहित्यिकों के मर्मस्थल को स्पर्श करता है। सुन्दरी का आशय यही है कि उसके पास प्रेम इतना कम है कि वह एक आदमी से अधिक को दे नहीं सकती, अर्थात् अपने पति के सिवाय अन्य पुरुष से प्रेम नहीं कर सकती। भावों की उदात्तता तथा शब्दों की कोमलता इस गीत में कितनी सुन्दर बन पड़ी है।

कामिनी के कमनीय कलेवर में उभरते हुए यौवन का चित्रण भी इन बिरहों में बड़ी मार्मिक रीति से किया गया है। कोई सखी अपनी अन्य सहेली से नायिका की उठती हुई जवानी को लक्षित करके कहती है—

अमवा के लागले टिकोरवा, रे सँगिया;
गूलरि फरेले हड़फोर।
गोरिया का उठलेहा छाती के जोबनवा;
पिया के खेलवना रे होई॥

आम में टिकोरा (छोटे फल) लग रहे हैं, गूलर का पेड़ फलों से लद गया है,

अर्थात् वसन्त का समय उपस्थित हो गया है। गोरी की छाती पर यौवन खिल रहा है जो आगे चल कर प्रियतम का खिलौना बन जावेगा। इस बिरहे में यौवन का आगमन कितनी मार्मिक रीति से वर्णन किया गया है।

एक अन्य बिरहे में साहित्य की कला बड़ी अनुपम है। इसमें युवती स्त्रियों को उपदेश देने वाली कोई रसिका भावमय शब्दों में अपना भाव प्रकट कर रही है। वह कहती है—

> पिसना के परिकल मुसरिया तुसरिया;
> दूधवा के परिकल बिलार।
> आपन आपन जोबनवा सभारिहे ए बिटियवा;
> रहरी में लागल बा हुड़ार॥

चूहा तथा उसके समान अन्य छोटे जीव आटा खाने के आदी हो गये हैं और बिल्ली दूध पीने की आदी हो गई है। ऐ युवती! तुम अपने यौवन की रक्षा करो, क्योंकि अरहर के खेत में हुँड़ार (भेड़िया) छिपा हुआ है। यहाँ हुँड़ार से अभिप्राय उन कामुक जनों से है जो स्त्रियों पर उचित घात देखकर छिपे-छिपे छापा मारा करते हैं, और अपने बल से उन्हें अभिभूत कर अपने चंगुल में फँसा लेते हैं। हुँड़ार जब आदमी के मांस को चख लेता है तो वह मनुष्य के मांस-भक्षण का आदी बन जाता है। इसी प्रकार इस गीत का कामुक परस्त्री उपभोग का अभ्यासी है। अतः उससे बचने में बड़ी सावधानी होनी चाहिए। रसिका की यह उक्ति बड़ी ही चुभती हुई है। हुँड़ार की कल्पना का स्वारस्य रसिक जन ही समझ सकते हैं।

बिरहा की बहार को समाप्त करने के पहले इन भोजपुरी बिरहों के नमूने पर लिखे गये कुछ साहित्यिक बिरहों की चाशनी हम अपने पाठकों को चखाना चाहते हैं। बाबू रामकृष्ण वर्मा (उपनाम 'बलबीर') रचित 'बिरहा नायिका भेद' इतना सरस, साहित्यिक और सुहावना है कि रसिकों के चित्त को अपनी ओर बरबस खींच लेता है। ये बिरहे इस बात के प्रमाण हैं कि प्रतिभाशाली कवि के हाथ में पड़ कर भोजपुरी भाषा भी ब्रज तथा अवधी की भाँति काव्य

की भाषा बन सकती है तथा अपनी कोमल-कान्त पदावली और रसमय भावों से सहृदयों का पर्याप्त मनोरंजन कर सकती है। कुछ बिरहों का रसास्वादन कीजिए—

अज्ञात यौवना

बईद हकीमवा बुलाओ कोई गुइयाँ;
कोई लेओ री खबरिया मोर।
खिरकी से खिरकी ज्यों फिरकी फिरत दुओ;
पिरकी उठल बड़े जोर॥

मध्या

लजिया की बतिया मैं कइसे कहों ए भउजी;
जे मोरे बूते कहलो ना जाय।
पर के फगुनवाँ की सिअली चोलियवा में;
असों न जोबनवाँ अमाय॥

रतिगुप्ता

भरली गगरिया उठवले जइसे गोइयाँ
तइसे बिछलल गोड़वा हमार।
जो पै बलबिरवा न बहियाँ धरत तो पै;
बहितीं जमुनवाँ के धार॥

बलदेव उपाध्याय

१. सोहर

सोहर उस गीत का नाम है जो पुत्र-जन्म के उत्सव पर गाया जाता है। इसे कहीं-कहीं 'सोहिलो' भी कहते हैं। किसी-किसी गीत में इसका नाम गाया भी जाता है। जैसे—

बाजेला अनंद बधाव, महल उठे 'सोहर' हो।

परन्तु इसका मुख्य नाम 'मंगल-गीत' है। कहीं-कहीं सोहर के स्थान में इसी शब्द का प्रयोग मिलता है। जैसे—

गावहु ए सखि गावहु, गाइ के सुनावहु हो।
सब सखि मिलि जुलि गावहु, आजु मंगल गीत हो ॥"

तुलसीदासजी ने भी रामचरित-मानस में राम के जन्म और विवाह के अवसर पर मंगल-गीत ही गवाया है। जैसे—

"गावहिं मङ्गल मंजुल बानी। सुनि कलरव कलकंठ लजानी ॥"

पुत्र का जन्म और विवाह दोनों ही मंगल के अवसर हैं इसीलिये इन गीतों का नाम 'मंगल-गीत' पड़ गया है।

जब किसी के घर पुत्र-रत्न पैदा होता है तब टोले-महल्ले की स्त्रियाँ उसके यहाँ एकत्र होती हैं और इसको गाती हैं। यह गीत बारह दिन तक गाया जाता है और जब बालक का "बरही" संस्कार समाप्त होता है तभी इन गीतों की भी समाप्ति होती है। महल्ले की स्त्रियाँ आकर कलकंठ से बड़े आनन्द तथा उछाह के साथ इन गीतों को गाती हैं और जिस पुरुष को लड़का पैदा हुआ है उसका नाम उस गीत में जोड़ कर गाती हैं जो बड़ा आनन्द दायक होता है। पुत्र-जन्म के अवसर पर जब घर के भीतर स्त्रियाँ सोहर गाती हैं और घर के बाहर दरवाजे पर पौरियाँ (एक प्रकार के देहाती अनपढ़ भाट) कोरस में "श्री रामचन्द्र जनम लिहलें, चइत रामनवमी" आदि गीत गाते हैं, तब सचमुच ही वह दृश्य बड़ा ही मन-भावन होता है। वह पुरुष अपने को

धन्य और सचमुच बड़भागी समझता है। पुत्री के पैदा होने पर सोहर नहीं गाया जाता। यद्यपि कन्या को लोग लक्ष्मी समझते हैं और स्त्री को 'गृहलक्ष्मी' के नाम से पुकारते हैं परन्तु आज हिन्दू-समाज की कुरीति के कारण, कन्या के विवाह में तिलक-दहेज की प्रथा के कारण जो कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं और परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं उनके कारण कन्या के जन्म से कोई भी प्रसन्न नहीं होता। इसलिये उनके जन्म के अवसर पर 'मंगल-गीत' भी नहीं गाये जाते।

सोहर प्रायः स्त्रियों के ही बनाये हुए हैं। स्त्रियाँ पिंगल के पचड़े में नहीं पड़तीं। इसी से इन गीतों में न तो तुक मिले हैं और न पदों की मात्राएँ ही समान हैं। स्त्रियाँ गाते समय छोटे-बड़े पदों को खींचतान कर बराबर कर लिया करती हैं। जैसे—

"कावाना नछत्रे केसवा खोललों, काहाँवा नहइलों नु रे।
ए झगड़ा त भावेला गोतिन संगे, गोदिया बालक लेले हो॥"

इस उपर्युक्त उद्धरण की दोनों पंक्तियों में जो एक ही गीत से ली गई हैं न तो मात्राएँ ही समान हैं और न तुक ही मिलता है परन्तु स्त्रियाँ गाते समय इन पंक्तियों को इस प्रकार खींचतान कर गाती हैं कि कहीं भी पद-भंग या रस-भंग नहीं जान पड़ता। परन्तु तुलसीदासजी ने "रामलला नहछू" में तुक भी मिलाया है और मात्राएँ भी प्रत्येक पद में बराबर रक्खी हैं। उन्होंने पिंगल के अनुसार शुद्ध करके सोहर छन्द लिखा है। जैसे—

बनि बनि आवति नारि जानि गृह मायन हो।
बिहँसत आउ लोहारिनि हाथ बरायन हो॥
अहिरिनि हाथ दहेंड़ि सगुन लेइ आवइ हो।
उनरत जोबन देखि नृपति मन भावइ हो॥
रूप सलोनि तँबोलिनि बीरा हाथहिं हो।
जाकी-ओर बिलोकहिं मन उन साथहिं हो॥
दरजिनि गोरे गात लिहे कर जोरा हो।
केसरि परम लगाइ सुगंधन बोरा हो॥

नैन बिसाल नउनियाँ भौं चमकावइ हो।
देइ गारी रनिवासहिं प्रमुदित गावइ हो॥

सोहर में शृङ्गार-रस की ही प्रधानता है परन्तु बीच-बीच में हास्य और करुण-रस की मात्रा कुछ कम नहीं है। स्त्रियों को करुण-रस प्रायः स्वभाव से ही प्यारा लगता है। उनका हृदय करुणा का उद्गम-स्थान है, जहाँ से करुण-रस की धाराएं सदा बहा करती हैं। सोहर जैसे जन्मोत्सव संबंधी गीत में भी उन्होंने कहीं कहीं पर ऐसा करुण-रस भर दिया है कि सुनते ही हृदय में करुणा की नदी उमड़ आती है और आँखों में आँसू छलक पड़ते हैं। इस प्रकार के अनेक उदाहरण आगे मिलेंगे।

भोजपुरी-सोहरों में करुण-रस की मात्रा विशेष रूप से पायी जाती है। जहाँ पुत्र-जन्म के उत्सव से स्त्री प्रसन्न और आनन्दित होती हैं वहाँ उस समय पति के घर पर न होने के कारण उसके वियोग से दुःख का भी अनुभव करती है। इस प्रकार इन गीतों में शृङ्गार और करुण का बड़ा ही सुन्दर संमिश्रण हुआ है। इन गीतों के विषय में पं० रामनरेशजी त्रिपाठी लिखते हैं कि "युक्त प्रान्त के पश्चिमी ज़िलों के सोहर में हमें वह रस नहीं मिला, जो पूर्वी जिलों के सोहर में है[1]।"

यहाँ हम कुछ चुने हुए सोहर अर्थ सहित देते हैं। पाठकों की सुविधा के लिये पाद-टिप्पणियों में कठिन शब्दों के अर्थ भी दे दिये गये हैं जिससे गीत का अर्थ समझने में आसानी हो।

सन्दर्भ—गर्भवती स्त्री का दोहद वर्णन

(१)

सावन की सवनइया[2] आँगन सेज डासी ले हो।
ए पिया फुलवा फुलेला करइलिया[3] गमक[4] मने भावेला हो॥ १॥
आरे पातरि पातरि सुनर मुख ढुरहुरि[5] हो।
कवन कवन फलवा मन भावे कहिना समुझावहु हो॥ २॥

---

[1]त्रिपाठी : कविता-कौमुदी, पाँचवाँ भाग, पृ० ४। [2]सावन की रात। [3]करैला। [4]गन्ध। [5]सुडौल।

भातावा त भावेला धानहि[१] केरा, दलिया रहरि[२] केरा हो।
ए प्राभु रेहुआ[३] त भावेला मछरिया, मासु तीतिले[४] केरा हो ॥ ३ ॥
आरे पातरि पातरि सुनर मुख ढुरहुरि हो।
कवन कवन फलवा भावेला कहि ना सुनावहु रे ॥ ४ ॥
बोलिया त ए प्राभु बोलीलें; बोलत लजाइलें हो।
ए प्राभु फलवा त भावेला नीबुआ, केरवा,[५] नरियर[६] भावे हो ॥ ५ ॥
आरे पातरि पातरि सुनर मुख ढुरहुरि हो।
सुनरी कवन कापाड़ा मन भावे कहिना सुनावहु रे ॥ ६ ॥
ए प्राभु सड़िया त भावे मलमलवा; लँहगा साटन केरा हो।
ए प्राभु चोलिया त भावेला कुसुम[७] केरा, अवरु ना भावेला हो ॥ ७ ॥
आरे पातरि पातरि सुनर मुख ढुरहुरि हो।
कवन संगति नीमन[८] लागेला, कहिना सुनावहु हो ॥ ८ ॥
ए प्राभु सांगावा त भावेला सासु सँगे अवरु ननद जी के हो।
ए प्राभु झगड़ा त भावेला गोतीनि[९] सँगे, गोदिया[१०] बालक लेइ हो ॥ ९ ॥

कोई स्त्री गर्भवती है। उसका पति उससे पूछ रहा है कि तुम्हें कौन सी वस्तु खाने तथा पहिनने में अच्छी लगती है। स्त्री उसका क्रमशः उत्तर दे रही है।

स्त्री पति से कह रही है कि सावन की रात में मैं आँगन में अपना पलंग डालकर विश्राम करने लगी। ऐ प्रियतम ! करैले का फूल फूल रहा है और उसकी सुगन्ध मेरे मन को बड़ी अच्छी लगती है ॥ १ ॥

इस पर पति ने कहा कि ऐ पतली, सुन्दरी तथा सुडौल मुखवाली स्त्री ! तुम्हें खाने के लिए कौन सा फल अच्छा लगता है यह मुझे समझाओ ॥ २ ॥

स्त्री ने उत्तर दिया कि मुझे चावल का भात, अरहर की दाल, रोहित मछली तथा तीतर का मांस अच्छा लगता है ॥ ३ ॥

---

[१]चावल। [२]अरहर। [३]रोहित मछली। [४]तीतर। [५]केला। [६]नारियल। [७]कुसुम्भी रंग। [८]अच्छा। [९]दायादिन। [१०]गोद।

पति ने फिर पूछा कि तुम्हें कौन सा फल अच्छा लगता है ? इसके उत्तर में स्त्री ने कहा कि मुझे कहते हुए लज्जा मालूम हो रही है। परन्तु मुझे नींबू, केला और नारियल का फल अच्छा लगता है ॥ ४ । ५ ॥

पति ने पूछा कि तुम्हें कौन सा कपड़ा अच्छा लगता है ? इसके उत्तर में स्त्री ने कहा कि मुझे मलमल की साड़ी, साटन का लँहगा और कुसुम्भी रंग की चोली अच्छी लगती है ॥ ६ । ७ ॥

पति ने पुनः पूछा कि ऐ सुन्दरी ! तुम्हें किसकी संगति अच्छी लगती है अर्थात् किसके संग रहना पसन्द आता है, इसके उत्तर में स्त्री ने कहा कि मुझे सास और ननद का संग अच्छा लगता है तथा अपनी गोदी में बालक को लेकर दायादिन से झगड़ा करना पसन्द आता है ॥ ८ । ९ ॥

इस गीत में गर्भवती स्त्री का वर्णन किया गया है। गर्भावस्था में स्त्री की जो इच्छा होती है उसे "दोहद" कहते हैं। इस 'दोहद' की पूर्ति करना हमारे शास्त्रकारों ने अत्यन्त आवश्यक बतलाया है। यह प्रथा अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही है।

सन्दर्भ—किसी स्त्री का पुष्प-चयन

(२)

ढुनुमुनु[1] ढुनुमुनु कवन देई[2], हाथ के डलिया[3] लेले हो।
ए जीव चलली फुलवरिया त फूलवा लोहेंली[4] हो ॥ १ ॥
फाँड[5] भरि लोहलों फुफड़[6] भरि, अवरु चँगेली[7] भरि हो।
ओहि फुलवरिया के लाल भँवरवा, आँचर धरि बिलमावेला हो ॥ २ ॥
ठुमुकी[8] के बोलली कवन देई, अपना सामी[9] जी से हो।
ए सामी जी फुलवरिया के लाल भँवरवा; आँचर धरि बिलमावेला[10] हो ॥ ३
एक हाथ लिहले तीर धेनुहिया[11]; ए जीव चलले ओहि फुलवरिया।
अपना बाबा के दोहइया[12]; भँवरवा जनि[13] मारहु हो ॥ ४ ॥

[1]धीरे-धीरे। [2]देवी; स्त्री। [3]डाली। [4]चुनती है। [5]आँचर; (अञ्चल)। [6]आँचल। [7]छबड़ी; दउरी। [8]रोककर देर, करता है। [9]रोती हुई। [10]स्वामी; पति। [11]धनुष। [12]शपथ। [13]मत; निषेध।

कोई स्त्री अपने हाथ में डाली लेकर फुलवारी में फूल चुनने के लिये चली ॥ १ ॥

उसने अपने आँचल में तथा दौरी (छबड़ी) में भर कर फूल चुन लिया। उस फुलवारी में विचरने वाले प्रेमी भौंरे ने (अथवा किसी रसिक पुरुष ने) उस स्त्री का आँचल पकड़ कर, उसे रोक कर घर जाने में देर कर दी ॥ २ ॥

स्त्री जब घर लौट कर आई तब उसने पति से कहा कि फुलवारी के एक प्रेमी भौंरे ने मेरा आँचल पकड़ कर विलम्ब कर दिया ॥ ३ ॥

इस पर क्रोधित होकर उस पति ने अपने हाथ में तीर और धनुष ले लिया और उस भौंरे को मारने के लिये और भी कितने आदमी चले। परन्तु उस दयालु स्त्री ने कहा कि तुम्हारे पिता की शपथ है; तुम इस भौंरे को मत मारो ॥ ४ ॥

सन्दर्भ—प्रियतम का अपनी स्त्री से रूठना

(३)

साझे[1] के रुसल[2] रे बलमुवा रे, आँगानवा ना सेज डासेला हो।
सात बदरिया[3] हमरी बहिन; मेघ मोरे भइया हवनी[4] हो ॥ १ ॥
ए मेघवा घुरुमी[5] रे घुरुमी तुहु बरीस न; पिया के डेरवाव नु हो।
साँझे के उमड़लि रे बदरिया; अधही[6] राति बरिसे ले हो ॥ २ ॥
ए ललना ! खोल धनि सोबरन[7] रे केवड़वा, दुवरवा[8] हम भीजिले हो ॥३॥
सिरवा सुतेली मोरि सासु, पायेतवा[9] मोरी ननदी हो।
ए प्राभु गोद पइसी सुतेला होरिलवा[10] ओसरवा[11] सेज डासहु हो ॥४॥

कोई पति अपनी स्त्री से रूठ करके सन्ध्या (रात्रि) के समय अपनी चारपाई को आंगन में न बिछा कर बाहर द्वार पर चला गया। आकाश में उमड़े हुए बादलों को देखकर स्त्री कहती है कि बादल मेरी बहिन है और मेघ मेरे भाई हैं (अतः इस विपत्ति में वे मेरी सहायता करेंगे) ॥ १ ॥

[1]सन्ध्या। [2]क्रोधित, रूठा हुआ। [3]बादल। [4]है। [5]गरजते हुए। [6]आधी रात। [7]सुन्दर। [8]द्वार पर। [9]पैर की ओर। [10]बेटा। [11]बरामदा।

स्त्री कहती है कि ऐ मेघ ! तुम खूब ज़ोर से गरजो तथा बरसो जिससे मेरा पति डर जाये। ऐ सन्ध्या काल से उमड़ने वाले बादल तुम आधी रात को बरसने लगो ॥२॥

इतने में वृष्टि होने लगी। रूठे हुए पति देवता द्वार पर से घर के दरवाजे पर आकर स्त्री से कहने लगे कि ऐ सुन्दरी किवाड़ खोलो; मैं द्वार पर वर्षा के कारण भीग रहा हूँ ॥३॥

इस पर स्त्री ने यह कोरा उत्तर दिया कि मेरे सिर के पास सास सोती हैं; पैर के पास ननद सोती हैं तथा मेरी गोदी में लड़का सोता है। अतएव बरामदे में जाकर सो जाओ। (यहाँ तुम्हारे लिये बिल्कुल भी गुञ्जाइश नहीं है) ॥४॥

सन्दर्भ—गर्भाधान-वर्णन

(४)

कावाना नछतरे[1] केसवा[2] खोललों; काहाँवा नहइलों नु रे।
कावाना नछतरे सेजिया डसलों; कन्हैया[3] फलवा पवलों नु रे ॥ १ ॥
रोहनी नछतरे केसवा खोललों, भरनी नहइलों नु रे।
आरे रोहनी नछतरे सेजिया डसलों; कन्हैया फल पवलों नु रे ॥२॥
तास[4] त भावेला ससुर जी के, ठनगन ननदी जी के हो।
ए झगड़ा त भावेला[5] गोतिन संगे; गोदिया बालक लेले हो ॥३॥

कोई स्त्री कहती है किस नक्षत्र में मैंने अपना बाल खोला था, किस नक्षत्र में स्नान किया था तथा किस नक्षत्र में मैंने सेज डसाया था अर्थात् सुरत-समागम किया था जिससे मुझे यह पुत्र पैदा हुआ है ॥१॥

फिर वह आप ही उत्तर देती है कि रोहनी नक्षत्र में मैंने बाल खोला था, भरनी में स्नान किया था तथा रोहनी नक्षत्र में समागम किया था जिससे मुझे यह पुत्र पैदा हुआ है ॥२॥

सास और ससुर का झिड़कना, ननद का ठनगन करना तथा दायादिन के साथ गोदी में बालक को लेकर झगड़ना अब मुझे अच्छा लगता है ॥३॥

---

[1]नक्षत्र। [2]बाल। [3]पुत्र; बेटा। [4]झिड़कना। [5]अच्छा लगता है।

सन्दर्भ—स्त्री के प्रसव-कष्ट का वर्णन

(५)

साभावा बइठल राजा दसरथ, चेरिया[1] अरज[2] करे ए।
राजा रउरा घरे घरनी बेयाकुल; रउरा[3] के चाहेले ए ॥ १ ॥
पासावा लड़वनी बेल[4]तर अवरु बबुर[5] तर ए।
राजा धवरि[6] पइसेले गाजा[7] ओबर कहना धनि कुसल ए ॥ २ ॥
कापारा[8] त हमरो टनकेला[9], ओदारा[10] चीलीकेला[11] ए।
राजा दुनिया भइले अनसुन[12], कवन कही कुसल ए ॥ ३ ॥
आताना बचन राजा सुनलनि, सुनही ना पवलनि ए!
राजा चलि गइले मोरंग देसवा, जहाँ बसे धगड़ीनि[13] ए ॥ ४ ॥
पूछेले अटइनि बटइनि[14] से, कुइयाँ[15] पनिहारिनि ए।
राजा पूछेले सहर के लोग से; काहा बसे धगड़ीनि ए ॥ ५ ॥
पूछेले अटइनि बटइनि कुइयाँ पनिहारिनि ए।
राजा पूछेला सहरवा के लोग, काहा रउरा जाइबी ए ॥ ६ ॥
उतर मुँहे उतराहुत[16], अवरु पछिमाहुत[17] ए।
ए राजा दुवारा चानानावा के गाछी[18], उहाँ बसे धगड़ीनि ए ॥ ७ ॥
के मोरा टट्टर[19] खोलेला, रतन पेबारेला ए।
ए राजा कवन सुहइया[20] केरा कन्त[21], अधही राति आवेला ॥ ८ ॥
हम रउरा टट्टर खोलीलें रतन पेबारीलें ए।
ए धगड़ीनि हम राजा दसरथ के पुत्र, अधही राति आइलें ए ॥ ९ ॥
किया रउरी माई बियाले[22] त बहिना आसापति[23] ए।
राजा किया घरे घरनी बेयाकुल[24], हमरा के चाहेले ए ॥ १० ॥

[1]दासी। [2]प्रार्थना। [3]आपको। [4]बिल्व वृक्ष। [5]वृक्ष विशेष। [6]दौड़ कर। [7]घर का कोना। [8]सिर। [9]दर्द करता है। [10]पेट। [11]दुःखता है। [12]शून्य। [13]दाई (धाय)। [14]रास्ते के लोग। [15]कुआँ। [16]उत्तर की ओर। [17]पश्चिम की ओर। [18]वृक्ष। [19]टाट (छप्पर)। [20]स्त्री। [21]पति। [22]बच्चा पैदा करना। [23]आशावती, गर्भवती। [24]व्याकुल।

ना मोरी माई बियाले त, बहिना आसापति ए।
ए धगड़ीनि मोरा घरे घरनी बेयाकुल, रउरा के चाहेले ए ॥ ११ ॥
आपाना के राजा हाथी करु अवरु जे घोड़ा करु ए।
ए राजा हमरा लाल ओहार[1] चढ़ी हम जाइबि[2] ए ॥ १२ ॥

सभा में बैठे हुए राजा दशरथ से दासी आकर प्रार्थना करती है कि आपके घर में आपकी स्त्री व्याकुल है तथा आपको चाहती है ॥ १ ॥

बेल तथा बबुर वृक्ष के नीचे पासा खेलते हुए राजा दशरथ उसे छोड़ कर, अपनी स्त्री के पास दौड़े और वहाँ जाकर कुशल समाचार पूछा ॥ २ ॥

स्त्री ने उत्तर दिया कि हमारा सिर दर्द कर रहा है तथा मेरे पेट में दर्द है। ए राजा मेरे लिये संसार शून्य सा हो रहा है। अब मैं अपना क्या कुशल कहूँ ॥ ३ ॥

स्त्री के इस वचन को राजा ने ठीक से अभी सुना भी नहीं था कि वह मोरंग देश को किसी धाय की खोज में निकल गये ॥ ४ ॥

वे रास्ते के बटोहियों से तथा कुँओं पर पानी भरने वाली पनिहारिनों से और शहर के लोगों से उस स्थान का पता पूछने लगे जहाँ वह धाय रहती थी ॥ ५ ॥

बटोहियों, पनिहारिनों तथा शहर के लोगों ने राजा से यह पूछा कि आप कहाँ जायेंगे? राजा के द्वारा उत्तर देने पर उन्होंने बतलाया कि यहाँ से उत्तर और पश्चिम की ओर उस धाय का घर है जहाँ पर चन्दन का वृक्ष लगा है ॥ ६ । ७ ॥

राजा धाय के घर में जाकर घुसने लगा। तब उसने कहा कि कौन मेरे टट्टर को खोल रहा है। ऐ राजा तुम किस स्त्री के पति हो जो आधी रात को मेरे घर में चले आ रहे हो ॥ ८ ॥

राजा ने अपने को छिपाते हुए कहा कि मैं राजा दशरथ का लड़का हूँ। मैं ही आधी रात को आकर तुम्हारे टट्टर को खोल रहा हूँ ॥ ९ ॥

---

[1]परदा। [2]जाऊँगी।

उस धाय ने कहा कि क्या तुम्हारी माँ को बच्चा पैदा होने वाला है या तुम्हारी बहिन गर्भवती है अथवा तुम्हारी स्त्री व्याकुल है और मुझे चाहती है ? ॥ १० ॥

राजा ने उत्तर दिया कि मेरी माँ को न तो बच्चा पैदा होने वाला है और न मेरी बहिन गर्भवती है। ऐ धाय ! मेरी स्त्री अत्यन्त व्याकुल है और वह तुमको बहुत चाहती है ॥ ११ ॥

धाय ने कहा कि ऐ राजा तुम अपने चलने के लिए हाथी और घोड़ा ठीक करो। परन्तु मेरे लिए पालकी का प्रबन्ध करो जिसमें लाल परदा लगा हुआ हो। मैं उसी में चढ़ कर तुम्हारे घर चलूँगी ॥ १२ ॥

सन्दर्भ—स्त्री की पुत्र-कामना का वर्णन

(६)

गंगा के ऊँच आरारवा[1], चढ़त डर लागेला[2] हो।
ताही चढ़ि कोसिला नहाली, मुकुती[3] बनावेली हो ॥ १ ॥
हँसि के जे बोलेली गंगाजी, सुन ए कोसिला रानी हो।
ए कोसिला कवन संकट तोहरा परले[4] मुकुती बनावेलु हो ॥ २ ॥
सोनवा ए गंगा जी ढेर बाटे, रूपवा[5] के पूछेला हो।
मोरा रे सनततिया[6] के साध[7], सनतति हम चाहिले[8] हो ॥ ३ ॥

गंगा का किनारा बहुत ऊँचा है। उस पर चढ़ने से डर मालूम होता है। कौशिल्या उसी किनारे पर चढ़कर अपनी मुक्ति बनाने के लिये नहाने चली ॥१॥

गंगाजी ने हँस कर कौशिल्या से कहा कि तुम पर कौन सी विपत्ति आ पड़ी है जिससे तुम अपनी मुक्ति बनाने के लिये स्नान कर रही हो ॥ २ ॥

कौशिल्या ने उत्तर दिया कि ऐ गंगाजी मुझे सोना की आवश्यकता नहीं है। चाँदी की तो चर्चा ही नहीं भला उसे कौन पूछता है। मुझे पुत्र की इच्छा है; वही मैं चाहती हूँ ॥ ३ ॥

---

[1]किनारा। [2]लगता है। [3]मुक्ति। [4]पड़ा है। [5]चाँदी। [6]सन्तति (पुत्र)। [7]इच्छा। [8]चाहती हूँ।

सन्दर्भ—सीता का बनवास, उनका विलाप तथा जंगल में पुत्र-जन्म ।

(७)

राम अवरु लछुमन भइया, आरे एकली[1] बहिनियाँ हइहों की ।
ए जीव राम जी बइठेले जेवनरवा[2], बहिन लइया[3] लावेरे की ॥ १ ॥
ए भइया! भऊजी के द ना[4] बन बासवा, जिनि रावना[5] उरेहेले[6] की ॥२॥
जिनि सीता भूखा के भोजन देली, आरे नांगा[7] के बहतरवा[8] हो की ।
से हो सीता गहुँवा[9] रे आसापति, कइसे बनवासबि हो की ॥ ३ ॥
मोरा पिछुवारावा कहरवाँ भइया, बेगे चलि आवहु हो की ।
भइया सीता जोगे डँडिया[10] रे फानाव[11]; सीता के बन पहुँचावहु हो की॥४
रोवेलि सीता देई अछन कइ, अवरु बीछन[12] कई हो की ।
ए जीव के मोरा आगावाँ से पाछावाँ, लटवा[13] खोली नु हो की ॥५॥
बन में से निकले बनसपति[14] आरे सीता समुझावेले रे की ।
ए सीता हम तोहरा आगावाँ से पाछावा, लटवा खोलबि हो की ॥ ६ ॥
कुसवा[15] ओढ़न कुस डासन[16], बनफल भोजन हो की ।
ए जीव कुसवे के हाजामा[17] रे बनवलों, लोचन[18] पहुँचावेला हो की ॥७
पहिल लोचन राजा दसरथ, तब कोसिला रानी हो ।
तीसरे लोचन लछुमन देवर, रमइया[19] जनि सुनसु हो ॥ ८ ॥
चारु चउखंड के पोखरवा, चुने[20] चुनवटल हो ।
ताहि चढ़ि राम करे दतुवनि, नउवा[21] लोचन लेले जाला नु हो ॥ ६ ॥
काहावा[22] के हव तुहु हजमा, काहा रे तुहु जाल नु हो ।
ए जीव केकरा भइले नन्दलाल; लोचन लेके जाल नु हो ॥ १० ॥

---

[1]अकेली । [2]भोजन । [3]मिथ्यारोप । [4]दे दो । [5]रावण । [6]चित्र बनाती है । [7]नंगा । [8]वस्त्र । [9]अधिक । [10]पालकी । [11]चढ़ाओ । [12]ज़ोर से रोना । [13]बाल । [14]बन देवता । [15]कुश । [16]बिछौना । [17]नाई । [18]सन्देश, । [19]राम । [20]चूना । [21]नाई । [22]कहाँ से ।

बन ही के हम इइ हाजामा; अजोध्या कहले जाइले हो।
ए जीव सीता के भइले नन्दलाल; लोचन लेके जाइले हो ॥११॥
पहिले लोचन राजा दसरथ; तब त कोसिला रानी हो।
ए जीव तीसरे लोचन लछुमन देवर, राम जनि सुनसु हो ॥१२॥
राजा दसरथ चढ़न के घोड़वा; कोसिला रानी आभरन[1] हो।
ए जीव लछुमन दुनो काने सोनवा; नउवा रहसि[2] घर जावहु हो ॥१३॥
चिठिया लिखेले राजा रामचन्द्र, देहु तुहु सीता के हाथ में हो।
ए जीव सब कुछ अवगुनवा सीता अब बकससु[3] हो ॥ १४ ॥
इहो सूल[4] रहिते ससुर के, अवरु भसुर जी के हो।
ए जीव इहो सूलवा सालता[5] रे करेजवा, अजोध्या कइसे जाइबि हो ॥१५॥

राम और लक्ष्मण दो भाई हैं और उनकी अकेली एक ही बहिन है। जब राम भोजन करने के लिये बैठते हैं तब बहिन सीता पर अनेक झूठी बातें कह कर मिथ्यारोप लगाती है ॥ १ ॥

बहिन ने कहा कि ऐ भाई ! भावज (सीता) को बनवास दे दो क्योंकि यह पर-पुरुष रावण का चित्र बना रही थी ॥ २ ॥

इस पर राम ने उत्तर दिया कि जो सीता भूखे को भोजन तथा नंगे को वस्त्र देती है; जो सीता गर्भवती है, उसे मैं बनवास कैसे दे सकता हूँ ॥ ३ ॥

परन्तु बहिन ने राम को सीता को बनवास दिलाने के लिये तैयार कर लिया और वह कहती है कि ऐ मेरे घर के पीछे रहने वाले कहार ! तुम लोग शीघ्र चले आओ और पालकी पर चढ़ा कर सीता को बन में पहुँचा आओ ॥४॥

यह समाचार सुन बेचारी सीता बड़े जोरों से करुण क्रन्दन करने लगी और कहने लगी कि अब कौन मेरे बालों को खोलेगा (और उनका प्रसाधन करेगा) ॥ ५ ॥

जब सीता बन में पहुँचीं तब बन-देवी बन में से निकल कर सीता को समझाते कहने लगी कि ऐ सीता ! मैं तुम्हारे बालों को खोलूँगी ॥ ६ ॥

---

[1]आभूषण। [2]आनन्द से। [3]क्षमा कर दो। [4]दुःख। [5]कष्ट देता है।

सीता ने कुश (घास विशेष) का ही ओढ़ना तथा कुश का ही बिछौना बनाया। बन के फलों को भोजन करने लगी। उसने कुश का ही एक नाई बनाया और उसे अपना सन्देश पहुँचाने के लिये अयोध्या भेजा ॥ ७ ॥

सीता ने उस सन्देश-वाहक से कहा कि इस सन्देश को पहिले राजा दशरथ सुनें, फिर रानी कौशिल्या सुनें, फिर लक्ष्मण। परन्तु राम को यह सन्देश बिल्कुल मत सुनाना ॥ ८ ॥

एक बहुत बड़े, चौड़े तालाब के किनारे के मकान के ऊपर जो चूने से पुता हुआ था—रामचन्द्रजी दतौन कर रहे थे। नाई उस समय सन्देश लिये हुए जा रहा था ॥ ९ ॥

रामचन्द्र ने उससे पूछा कि ऐ नाई! तुम कहाँ से आये हो और कहाँ जाओगे। किसको पुत्र हुआ है? जिसका सन्देश तुम लेकर जा रहे हो ॥ १० ॥

नाई ने उत्तर दिया कि मैं बन में से आ रहा हूँ और अयोध्या जा रहा हूँ। सीताजी को पुत्र हुआ है। वही सन्देश लेकर मैं अयोध्या को जा रहा हूँ ॥ ११ ॥

मैं इस सन्देश को पहिले राजा दशरथ को सुनाऊँगा, फिर रानी कौशिल्या को, फिर लक्ष्मण को। परन्तु राम को मैं यह सन्देश नहीं सुना सकता ॥ १२ ॥

जब नाई ने यह सन्देश राजा दशरथ को सुनाया तो प्रसन्न होकर उन्होंने चढ़ने के लिए नाई को एक घोड़ा दिया। रानी कौशिल्या ने आभूषण दिये तथा लक्ष्मण ने दोनों कानों का सोना अर्थात् कुण्डल दिया। नाई इन सब सामान को लेकर प्रसन्न होकर बन को चला गया ॥ १३ ॥

जब नाई बन को लौटने लगा तब रामचन्द्र ने उसको एक पत्र दिया और कहा कि इसे सीता के हाथों में दे देना तथा मेरी ओर से यह कहना कि सीता मेरे सब दोषों को क्षमा कर दे ॥ १४ ॥

नाई ने सीता से राम का सन्देश कहा तब सीता ने उत्तर दिया कि राम का दिया हुआ बनवास रूपी कष्ट मेरे हृदय को बेध रहा है। मैं भला अयोध्या कैसे लौट सकती हूँ ॥ १५ ॥

इस गीत में जिस घटना का वर्णन किया गया है वह ऐतिहासिक दृष्टि से

अत्यन्त अशुद्ध है। सीता का वनवास राम की बहिन (शान्ता) के कुचक्र के कारण नहीं हुआ था बल्कि एक धोबी के अपवाद के कारण हुआ था। सीता के द्वारा पुत्र-जन्म का सन्देश भेजना भी ऐतिहासिक तथ्य के विरुद्ध है। अतः यहाँ राम एवं सीता का अर्थ किसी साधारण व्यक्ति से समझना चाहिए; दशरथ के पुत्र और पुत्र-वधू से नहीं।

सन्दर्भ—पुत्र-जन्म के लिए स्त्री की प्रबल-कामना

(८)

तर बहे गंगा से जमुना उपर मधु पीपरि[1] हो।
की ए जीव ताहावाँ बसेलें[2] राजा ठाकुर पुतरी[3] उरेहेलें हो॥ १॥
मोरा पिछुवारावा पड़ित भइया वेगे चलि आवहु हो।
ए भइया का विधि लिखल लिलार सँतति नाहि पाइले हो॥ २॥
नइ पोथी खोलले पुरानी पोथी खोलले, करम बाँचि[4] दिहलनि हो।
ए रानि नाहि विधि लिखले लिलार[5] सँतति[6] नाहि मिलेला[7] हो॥३॥

कोई स्त्री पुत्र न होने के कारण से दुःखी है। वह कहती है कि नीचे गंगा बहती हैं और उसके पास ही यमुना बहती है। वहाँ एक मधुर पीपल का पेड़ है। वहीं मेरा पति रहता है तथा चित्र बनाया करता है॥ १॥

स्त्री ने कहा कि ऐ मेरे घर के पीछे रहने वाले पण्डित जी तुम शीघ्र चले आओ और देखो कि ब्रह्मा ने मेरे ललाट में सन्तति (पुत्र) का होना लिखा है या नहीं॥ २॥

पण्डित जी आये और नई तथा पुरानी पुस्तकों को खोल कर देखा। उस स्त्री की कर्म-रेखा को पढ़ा और कहा कि हे स्त्री ब्रह्मा ने तुम्हारे लिलार में पुत्र का योग नहीं लिखा है अतएव तुम्हें पुत्र पैदा नहीं हो सकता॥ ३॥

प्राचीन काल से ही पुत्र का पैदा होना बहुत बड़े सौभाग्य तथा उत्सव का अवसर समझा जाता है। हमारे षोड़श संस्कारों में 'पुंसवन' संस्कार एक बड़ा

---

[1]पीपल। [2]रहता है। [3]चित्र। [4]पढ़कर के। [5]ललाट। [6]सन्तति (पुत्र)। [7]मिलेगा।

संस्कार समझा जाता था। यह संस्कार इसलिये किया जाता था कि होने वाली सन्तान पुत्र ही हो, पुत्री नहीं। पुत्र का होना यहाँ तक आवश्यक समझा जाता था कि शास्त्रकारों ने विधान कर दिया कि "अपुत्रस्य गतिर्नास्ति"। यह भावना देहातों में अब भी दृढ़मूल है। अतएव पुत्रहीन स्त्रियों की चिन्ता का अनुमान सहज ही में किया जा सकता है। इस गीत की स्त्री पुत्राभाव से इसीलिये इतनी व्याकुल है।

सन्दर्भ—पुत्र-जन्म

(९)

घर घर फिरेले नउनिया[1] त अवरु बरीनिया[2] नु ए।
ए रानि आजु मोरा राम जनमिहें भरतजी के तीलक ए ॥ १ ॥
ओबरीनी[3] झगड़ेले धगड़िनिया, दुअरिया पर नाउनि ए।
ए रानि हम लेबों राम ओढ़निया[4], तबहिं नोह[5] टुँगबि[6] ए ॥ २ ॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरे घर घर में नाउनि (नाई की स्त्री) और बारी (कहार) की स्त्री घूम रही हैं। वे कहती हैं कि ऐ रानी आज मेरे इस घर में राम (पुत्र) पैदा होगा और भरत (दूसरे पुत्र) का तिलक होगा ॥ १ ॥

धाय (दाई) घर में अपना पुरस्कार लेने के लिये झगड़ा कर रही है और दरवाज़े पर नाई की स्त्री बैठी है। वह कहती है कि ऐ रानी मैं पुत्र जन्म के पुरस्कार स्वरूप ओढ़ने के लिये चादर लूँगी, तभी तुम्हारे नख को काटूँगी ॥ २ ॥

सन्दर्भ—पुत्र-जन्मोत्सव का विशद वर्णन

(१०)

बाजन बाजेला बनहि बीखे[7], अजोधा में तड़पेला[8] हो।
लालाना असीहि कोस हो अजोधा, सबद[9] कानावा परि जइहे हो ॥१॥

---

[1]नाई की स्त्री। [2]बारी की स्त्री। [3]घर में। [4]चादर। [5]नख। [6]काटूँगी। [7]मध्य में। [8]दुःखी होते हैं। [9]शब्द।

हकर[1] अजोधा के कँहारा[2] वेगहि चलि आवसु हो।
काहारा सीता जोगे डँड़िया फानाव, अजोधा पहुँचावहु हो ॥ २ ॥
हथिया ना देखों हथिसारावाँ[3], भइसि डील डावर[4] हो।
ललाना गोऊ ना देखो गोऊसालावा[5], अजोधा हमारा लुटि गइले हो ॥३॥
हथिया त देखों वभन[6] दान, भइसि भटन[7] दान हो।
ललना गइया[8] भइल साधु दान, गोविन[9] का जनम भइले हो ॥ ४ ॥
काकाना[10] ना देखिले लुलुहि[11] वीखे, दुलरी[12] गलही[13] वीखे हो।
ललना मोतिया ना देखो सिर माँग, अजोधा लुटि गइले हो ॥ ५ ॥
काकाना ननद दान कइली, दुलरी कइली सासु दान हो।
राम धन, धान लुटवले, उछाह[14] संतति भइले[15] हो ॥६॥

सीता को वाल्मिकि के आश्रम में पुत्र रत्न उत्पन्न हुए हैं। उसी समय का यह वर्णन है। सीता के पुत्र होने के कारण से बन में बाजा बज रहा है परन्तु अयोध्या के लोग उस उत्सव में सम्मिलित न हो सकने के कारण से दुःखी हो रहे हैं। सीता जी कहती हैं कि अयोध्या यहाँ से अस्सी कोस है। शायद ही वहाँ के लोगों के कान में यह आवाज़ पड़े ॥ १ ॥

कोई सखी कहती है कि अयोध्या से कहारों को शीघ्र ही बुलाओ। ऐ कहार ! सीता को पालकी में बैठा लो और शीघ्र अयोध्या पहुँचा दो ॥ २ ॥

जब सीता अयोध्या को लौट रही हैं तो वह कहती हैं कि हस्तिशाला में मैं हाथी नहीं देखती हूँ। गोशाला में गाय और भैंस को नहीं देख रही हूँ। मालूम होता है कि हमारी अयोध्या लुट गई हो ॥ ३ ॥

हाथी तो ब्राह्मन को, भैंस भाटों को तथा गाय साधुओं को दान में दे दी गई हैं क्योंकि मेरे पुत्र पैदा हुए हैं ॥ ४ ॥

घर की स्त्रियों के हाथ में न तो कंकण दिखाई पड़ता है और न गले में

---

[1]बुलाओ। [2]ढोने, वाले। [3]हस्तिशाला। [4]निवास स्थान। [5]गोशाला। [6]ब्राह्मण। [7]भाट (भट्ट)। [8]गाय। [9]पुत्र। [10]कंकण। [11]हाथ। [12]हार। [13]गला। [14]आनन्द। [15]हुआ है।

हार ही। सिर के मांग में पिरोये हुए मोती भी नहीं दीखते हैं। हमारी अयोध्या लुट गई है ॥ ५ ॥

हमारी ननद ने कंकण और सास ने हार दान कर दिया है। राम ने पुत्र-जन्म के आनन्द तथा उत्सव में अपना धन तथा धान्य सब गरीबों को दान देकर लुटा दिया है ॥ ६ ॥

इस गीत में पुत्र-जन्म के उत्सव के उछाह का बड़ा ही सुन्दर चित्र खींचा गया है। इस उत्सव में जिसे जो वस्तु प्यारी है उसे ही लुटा रहा है। पुत्र के पिता ने तो अपना धन, धान्य ही लुटा दिया। आजकल भी पुत्र-जन्म के अवसर पर अनेक दान-पुण्य तथा उत्सव मनाये जाते हैं। दिलीप को तो इस अवसर पर तीन को छोड़ चौथी कोई वस्तु भी "अदेय" नहीं थी।

"जनाय शुद्धान्तचराय शंसते, कुमार जन्मामृतसंमिताक्षरम्।
अदेयमासीत्त्रयमेव भूपतेः; शशिप्रभं छत्रमुभे च चामरे ॥"

सन्दर्भ—पुत्र-जन्म के पहिले स्वप्न-दर्शन विचार

(११)

सुतल रहलों रे अटरिया, सपन एक देखिले हो।
आरे हाइ रे सासु सपनवा के कारन बोचार, सपन एक देखिला हो ॥१
गइया के देखलों बछरुआ[1] संगे, बाभाना[2] जनेउवा[3] संगे हो।
कि हाइ रे सासु आँगाना में देखलों रे कलसवा[4], त अमवा घवद[5] फरे हो॥२
गइया त हवे लछिमिया[6], त बाभाना नारायन हो।
हाइ रे बहुआ कलसवा त तोरे एहवात[7], त अमवा सँतति हवे[8] रे ॥३

कोई बधू अपनी सास से कह रही है कि मैं अटारी पर सो रही थी। उसी समय मैंने एक सपना देखा। ऐ सास! मेरे सपने के फल का तुम विचार करो ॥१॥

मैंने गाय को अपने बच्चे के साथ, ब्राह्मण को जनेऊ के साथ देखा। मैंने आँगन में घड़े को रक्खा हुआ तथा आम को खूब फलते हुए देखा है ॥ २ ॥

सास ने सपने के फल का विचार करके कहा कि ऐ बहू! गाय लक्ष्मी है,

---

[1]बछड़ा। [2]ब्राह्मण। [3]यज्ञोपवीत। [4]कलश। [5]प्रचुर। [6]लक्ष्मी। [7]सौभाग्य। [8]है।

ब्राह्मण नारायण हैं, आँगन में रक्खा हुआ कलश तुम्हारा सौभाग्य है तथा आम पुत्र होने का लक्षण है ॥३॥

सन्दर्भ—पति के द्वारा छिपकर गर्भाधान करना

(१२)

माघ ही मास के चउथिया[1] बहुवा मोरी भूखेले हो।
ए ललना बहुवा चलेले असनान, त सासु नीरेखेले[2] हो ॥१॥
ए बहुवा कवना चेलिकवे[3] लोभइलु, गरभ रहि गइल रे।
पूत मोरा बसेला अजोध्या पतोहिया गाजा ओवरि रे ॥२॥
पूत रउरा बसेले अजोधा, पतोहिया गाजा ओवरि रे।
सासु भाँवारा[4] सरीखे ग्रासु अइले, गरभ रहि गइल रे। ॥३॥
मोरा पिछुवारावा पटहेरा[5] भइया, बेगे चलि आवहु रे।
भइया रेसम के जलिया[6] बीनि देहु, त भँवरा बाझाइबि[7] रे ॥४॥
घरी राति गइली पहर राति गइली, त भँवरा वझाइलेनि रे।
सासु चीन्हि[8] लेहु आपन बेटवना, कलंक जनि लावहु रे ॥५॥
ए बहुवा सापावा गोजरवा[9] लाँघी अइल बलइया[10] हमरा लागहु रे।
भल कइलु[11] ए बहुवा भल कइलु, बेटवा[12] बियइलु[13] नु रे ॥६॥

माघ के महीने में बधू ने करवा चौथ का व्रत किया था। अतएव वह उस दिन उपवास कर रही थी। जब वह स्नान करने के लिए चली तो सास ने उसे देखा ॥ १ ॥

कुछ दिनों के पश्चात् जब उस स्त्री को गर्भ रह गया तब सास ने उससे कहा कि तुम किस पर-पुरुष से फँस गयी हो, जिसके कारण तुम गर्भवती हो ? मेरा लड़का अयोध्या (परदेश) में रहता है ॥ २ ॥

इस पर बधू ने उत्तर दिया कि लड़का अयोध्या में रहता है और पतोहू

---

[1]चौथ। [2]देखती है। [3]परपुरुष। [4]भ्रमर। [5]गहना गूँथने वाला। [6]जाल। [7]फँसाऊँगी। [8]पहचानो। [9]कीड़ा। [10]निछावर। [11]अच्छा काम किया। [12]पुत्र। [13]पैदा किया।

घर में रहती है यह कथन ठीक है। परन्तु भ्रमर के समान छिपकर मेरा पति मेरे पास आया था। इसी कारण मुझे गर्भ रह गया है ॥ ३ ॥

बधू ने कहा कि ऐ मेरे घर के पीछे रहनेवाले पटहेरा (वह जाति जो गहना गूँथती है) भइया ! तुम जल्दी चले आओ। रेशम का एक जाल बुन कर मुझे दो। मैं एक भ्रमर (पति) को फँसाऊँगी ॥ ४ ॥

एक घड़ी रात गई; एक प्रहर रात बीत चली तब कहीं पति आया। स्त्री ने उसे अपनी बातों में फँसा लिया और सास से कहा कि अब तुम अपने बेटे को पहिचान लो तथा फिर मुझे कभी कलंक मत लगाओ ॥ ५ ॥

सास ने लज्जित होकर कहा कि मेरा लड़का रात्रि में साँप और गोजर को लाँघ कर आया होगा। मैं उसकी बलैया लेती हूँ। ऐ बधू ! तुमने अच्छा काम किया जिससे तुम्हें पुत्र पैदा हुआ ॥ ६ ॥

सन्दर्भ—स्त्री के प्रसव-कष्ट का वर्णन

(१२)

एके कोठरिया[1] में दूनो जना; दूनो जना केलि[2] करसू[3] रे।
आरे अंग अंग पीरवा[4] अँगइले[5]; केहु नाहि जागेला रे ॥१॥
आरे एक जागे छोटका देवरवा; जिन्हि बँसिया बजावेले रे।
आरे एक जागे चेरिया लउँड़िया, जिन्हि अँगना बहारेले[6] रे ॥२॥
ए चेरिया दुअरा[7] सुतेला सजइतवा[8]; बोलाई घरवा देहु नु रे।
ए सजइत रउरा धनि वेदने[9] बेयाकुल; रउरा के बोलावेलि रे ॥३॥
पासावा लड़वनी बेल तर अवरु बबुर तर रे।
ए सजइत धवरि[10] पइसेले गाजा ओवर, कहु ना धनि कुसल रे ॥४॥
ए सजइत हँसि हँसि बिरवा[11] लगावेले, मुसुकि[12] जनि बोलहु हो।
ए सजइत बुझि[13] जाहु आपन अवगुनवा; मुसुकि जनि बोलहु हो ॥५॥

---

[1]कमरा। [2]क्रीड़ा। आनन्द। [3]करते हैं। [4]व्यथा। [5]समा गया। [6]झाड़ती है। [7]द्वार। [8]पति। [9]वेदना। [10]दौड़ कर। [11]बीड़ा (पान का) [12]मुसकराना। [13]समझ जाओ।

ए सजइत मिलि जुलि बन्हली रे मोटरिया[१], खोलत बेरियाँ[२] अकसर[३] हो।
छनिया[४] त रहीत छवाइ[५] दिहतों, लोगवा[६] बटोरि[७] दिहतों हो ॥६॥
ए धनिया आजु त कुबति[८] तोहार, ऊपर परमेसर[९] हो ॥७॥

एक ही कमरे में दो आदमी—स्त्री और पुरुष हैं और दोनों भोग विलास कर रहे हैं। गर्भाधान के बाद जब लड़का होने का समय आया तब स्त्री के अंग-अंग में पीड़ा होने लगी। परन्तु कोई नहीं जगा ॥ १ ॥

केवल एक छोटा देवर जो बंशी बजाया करता था—जगा। फिर वह दासी जगी जो आँगन में झाड़ू लगाया करती थी ॥ २ ॥

स्त्री ने उस दासी से कहा कि ऐ दासी! मेरा पति बाहर द्वार पर सो रहा है, उसे जाकर बुला लाओ। दासी ने पति से कहा कि तुम्हारी स्त्री पीड़ा से व्याकुल है और तुम्हें घर में बुला रही है ॥ ३ ॥

पति यह समाचार सुनते ही दौड़कर के घर में घुस गया और स्त्री से पूछा कि तुम्हारी क्या हालत है ॥ ४ ॥

स्त्री ने उत्तर दिया कि ऐ पति! तुम हँस-हँस कर पान का बीड़ा लगा रहे हो। परन्तु तुम मुसकरा कर मत बोलो। तुमने जो करतूत किया है उसे समझ जाओ और मुसकरा कर मत बोलो ॥ ५ ॥

स्त्री ने फिर कहा कि हम दोनों ने मिल करके पुत्र-जन्म रूपी गठरी को बाँधा परन्तु इस गठरी को मुझे ही अकेले खोलना पड़ रहा है अर्थात् गर्भाधान के कारण हम दोनों आदमी हैं परन्तु प्रसव-पीड़ा मुझे अकेली ही सहनी पड़ रही है ॥ ६ ॥

पति ने उत्तर दिया कि ऐ स्त्री! यदि छप्पर को छवाना (मरम्मत करना) होता तो मैं अनेक आदमियों को इकट्ठा करके छवा देता। परन्तु इस कार्य में मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ? इस समय तो तुम्हारी सहन-शक्ति और परमेश्वर के भरोसे ही बेड़ा पार लग सकता है ॥ ७ ॥

---

[१]गठरी। [२]समय। [३]अकेला। [४]छप्पर। [५]मरम्मत कराना। [६]मनुष्य। [७]इकट्ठा करता। [८]शक्ति। [९]परमेश्वर।

इस गीत में पति के संभोग-समागम को "अवगुनवा" कहना कितना व्यञ्जना-पूर्ण है। इस से निकलने वाली ध्वनि को सहृदय ही समझ सकते हैं। जिस दुःख में हाथ बँटाने में पति असमर्थ है उस दुःख को उसे स्त्री को देने का क्या अधिकार है। यदि उसका यह कार्य 'अवगुण' नहीं तो और क्या कहा जाय ? इस गीत में एक दूसरी विशेषता है, पुत्र को स्त्री तथा पुरुष के द्वारा मिल-जुल कर बाँधी गई गठरी कहना। वास्तव में पुत्र, स्त्री-पुरुष के परस्पर प्रेम की ग्रन्थि रूप होता है। महाकवि भवभूति ने उत्तर-रामचरित (३ अंक, १७ श्लोक) में पुत्र को दम्पति की प्रेम-ग्रन्थि कहा है—

अन्तःकरण तत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेह संश्रयात्।
आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति कथ्यते॥

वास्तव में पुत्र स्त्री-पुरुष की प्रेम-मञ्जरी का फल है। भाव बहुत ही सुन्दर है।

सन्दर्भ—चौर्य-रति-वर्णन

(१४)

साँझ ही चोरवा[1] समइले, पलँग चढ़ि बइठले हो।
आरे हाइ रे मुसलनि[2] प्रेम धरोहर हरखि के बाहर भइले हो॥१॥
मुसलनि खाटी तर के पाटी, सिरहाना[3] पटडेहरि हो।
आरे हाइ रे सासु मुसलनि राउर[4] बेटा, हरखि के बाहर भइले हो॥२॥

कोई स्त्री कहती है कि ऐ सास ! तुम्हारा लड़का साँझ ही को हमारे घर में चोर की तरह घुस आया और मेरे पलँग पर आकर बैठ गया। वह आकर मेरे प्रेम रूपी धरोहर को चुरा ले गया और बाहर चला गया॥ १॥

चारपाई की पाटी तथा सिर की तकिया वह चुरा ले गया। ऐ सास—तुम्हारा बेटा आनन्द से बाहर चला गया॥ २॥

---

[1]चोर। [2]चुरा लिया। [3]सिर की ओर। [4]आपका।

सन्दर्भ—पुत्र-जन्म के बाद पति द्वारा स्त्री का उपचार

(१५)

कवन राम के ऊँची चउपरिया[१], मानिक[२] दीप जरेला[३] हो।
आरे कवन राम के इहे विरिज नारी[४], त पुत्र भले सोभेला हो ॥१॥
दुवरा से अइले कवन राम, अपना नारि से विनती करे हो।
बहुवा तुम्हे तिलरी[५] गाहोंई[६], पियहु मधु पीपरि हो ॥२॥
पीपरि के जार[७] हम ना सहवि, पीपरि हम ना पीयवि हो।
ससुर आँसू भरेला दुनो नयना, पीपरि हम ना पीयवि हो ॥३॥
दुवरा से अइले कवन राम, अड़पि[८] तड़पि बोलेला हो।
धनिया करवों में दोसर वियाह[९], पियहु मधु पीपरि हो ॥४॥
सवती[१०] के जार हम ना सहवि, पियवि हम पीपरि हो।
ए प्रभु पगरी के पेचवे छनइलो[११], पीयवि मधु पीपरि[१२]हो ॥५॥

किसी पुरुष की ऊँची चौपाल है। उसमें माणिक्य के समान उज्वल प्रकाशमान दीप जल रहा है। इसकी स्त्री को पुत्र हुआ है जो बहुत अच्छा लगता है ॥ १ ॥

द्वार पर से पति घर में आया और अपनी स्त्री से प्रार्थना करने लगा कि ऐ स्त्री! तुम मधु और पीपल खाओ (जिससे पेट का दर्द जाता रहे)। मैं तुम्हारे लिये गले का हार बनवा दूँगा ॥ २ ॥

तब स्त्री ने उत्तर दिया कि मैं पीपल खाने के कष्ट को स्वीकार नहीं कर सकती। ऐ ससुर! मेरी दोनों आँखों में आँसू भर रहे हैं, अतएव मैं मधु पीपल नहीं पी सकती हूँ ॥ ३ ॥

जब पति को पता चला कि उसकी स्त्री पीपल नहीं खा रही है तब वह द्वार पर से घर आया और गरज गरज कर अपनी स्त्री से कहने लगा कि यदि तुम मधु और पीपरि नहीं खाओगी तो मैं दूसरा विवाह कर लूँगा ॥ ४ ॥

[१]चौपाल। [२]माणिक्य। [३]जलता है। [४]स्त्री। [५]हार। [६]गढ़ा दूँगा। [७]कष्ट। [८]गरज करके। [९]विवाह। [१०]सपत्नी। [११]छाना गया। [१२]पीपल वृक्ष विशेष का फल।

तब स्त्री ने उत्तर दिया कि मैं सपत्नी के कष्ट को नहीं सहन कर सकती। ऐ पति! तुम अपनी पगड़ी के कपड़े में पीपल को छाव लो तो उसे मैं अवश्य पी लूँगी ॥ ५ ॥

सन्दर्भ—पुत्र-जन्म के कारण प्रसन्नता का एवं पुत्री-जन्म के भय का वर्णन

(१६)

माघ ही पूस के रहरिया[1] त झपर झपर[2] करे रे।
ए ललना ओइसन झपेरे[3] हमरा हरि जी, त बबुआ के जनम नु रे ॥१॥
जइसन कासी में सिव हवे, नरलोक पूजेला रे।
ओइसन पूजेले हमरो हरि जी, त बबुआ का जनम नु रे ॥२॥
साल ओढ़न साल डासन, मेवा फल भोजन रे।
ए ललना चनन के जरेला पँसगिया[4], निनरि[5] भल आवेला रे ॥३॥
जइसन दहे[6] में के पुरइनि[7] दहे बिचे काँपेले[8] रे।
ए ललना ओइसन काँपेले हमरो हरि जी, धिया[9] कारे जनम नु रे ॥४॥
कुस ओढ़न कुस डासन, बन फल भोजन रे।
ए ललना खुखुड़ी[10] के जरेला पँसगिया, निनरियो[11] ना आवेला रे ॥५॥

जिस प्रकार माघ और पौस के महीने में अरहर का पौधा लहलहाता है उसी प्रकार से हमारा पति पुत्र-जन्म के उत्सव में आनन्दित हो रहा है ॥ १ ॥

जिस प्रकार काशी के लोग शिव अर्थात् विश्वनाथजी की पूजा करते हैं उसी प्रकार से पुत्र-जन्म के अवसर पर मेरा पति मुझे पूजता अर्थात् आदर देता है ॥ २ ॥

स्त्री कहती है कि शाल अर्थात् दुशाला मुझे बिछाने को तथा दुशाला

---

[1]अरहर। [2]लहलहाती है। [3]आनन्दित होते हैं। [4]गर्भगृह या प्रसवगृह के द्वार पर जलने वाली लकड़ी। [5]नींद। [6]तालाब। [7]पुरैन का पत्ता, [8]काँपती है। [9]पुत्री। [10]नीच काष्ठ। [11]नींद।

ही ओढ़ने को मिलता है। भोजन के लिये मेवा फल मिलता है। मेरे पाँसग में चन्दन जलता है। अतएव नींद खूब आती है ॥ ३ ॥

जिस प्रकार से तालाब के बीच में स्थित पुरैन का पत्ता काँपता रहता है उसी प्रकार से मेरा पति पुत्री का जन्म होने से काँपता अर्थात् डरता है ॥४॥

दुर्भाग्य से यदि लकड़ी पैदा हो जाती है तो वह कुश ओढ़ने को देता है और कुश ही बिछाने को देता है। वन के फल भोजन करने को देता है। बुरी लकड़ी जलाने के लिये देता है जिससे मुझे नींद नहीं आती ॥ ५ ॥

यों तो लड़की का पैदा होना सर्वत्र बुरा माना जाता है परन्तु देहाती दुनिया में यह विशेष कर गर्हित समझा जाता है। देहातों में कहते हैं कि लड़की के पैदा होते ही तीन हाथ पृथ्वी नीचे दब जाती है। जिस स्त्री को लड़की पैदा होती है उसका आदर नहीं होता और उसको वस्त्र तथा भोजन भी बुरा दिया जाता है। उपर्युक्त गीत में इसी दशा का चित्रण किया गया है।

सन्दर्भ—वन्ध्या की मनोवेदना का वर्णन

(१७)

गया नहइलो गजाधर,[1] अवरु बेनी माधव रे।
ए ललना ! अतना तीरिथि[2] हम कइली,[3] बाझिनि रहि गइली नु रे ॥१॥
सासु ससुर नाहि मनलू, ननद ना दुलारेलु रे।
भसुर अलोत देइ ना चललू, बाझिनि होइ गइलू नु रे ॥ २ ॥
सासु ससुर अब मानबि, ननदो [4]दुलारबि नु रे।
ललना भसुरा अलोत[5] देइ चलबि, बाझिनि रहि गइली नु रे ॥ ३ ॥
नदिया का तीरे कदम गाछि अवरु चनन [6]गाछि रे।
ए ललना ताहि तर ठाढ़ रे नारायन, बालाका उरेहेले रे ॥ ४ ॥
आताना तीरिथि हम कइली, बाझिनि हम रहि गइली रे ॥ ५ ॥

कोई बाँझ (बन्ध्या) स्त्री पुत्र के अभाव के कारण दुःखी होकर स्वतः कह रही है कि पुत्र की प्राप्ति के लिये मैंने गया, गजाधर तथा बेनीमाधव

[1]और। [2]तीर्थ। [3]बन्ध्या। [4]प्यार करूँगी। [5]परदा। [6]वृक्ष।

(काशी) आदि अनेक तीर्थों में भ्रमण किया परन्तु फिर भी मैं बाँझ रह गई ॥ १ ॥

इसके उत्तर में किसी दैवी शक्ति ने कहा कि तुमने अपनी सास और ससुर का आदर नहीं किया, ननद को प्यार नहीं किया, भसुर से परदा नहीं किया। इसीलिये तुम बाँझ रह गयीं ॥ २ ॥

इस पर स्त्री ने कहा कि अब सास, ससुर का आदर करूँगी, ननद को प्यार करूँगी, भसुर से परदा करूँगी ॥ ३ ॥

उत्तर मिला कि नदी के तीर पर कदम्ब और चन्दन का वृक्ष है। वहाँ पर भगवान् बालक की सृष्टि करते हैं चली जाओ। स्त्री ने वहाँ जाकर भगवान् से प्रार्थना की कि मैंने इतना तीर्थ किया फिर भी बाँझ ही रह गई ॥ ४ ॥

सन्दर्भ—पुत्र-जन्मोत्सव के उछाह का वर्णन

(१८)

नन्द दुआरे कीरतन[1] होला. देस देस आनन्द ए।
देस देस के लोग जागे, धगड़िनि नाहिं जागेले ए ॥ १ ॥
उठु उठु धगड़िनी गरभी गुमानी, उठि के ढारहु पाँव ए।
नन्द जसोदा घरे कान्ह जनमले, तीनों लोक आनन्द ए ॥ २ ॥
उहवाँ से धगड़िनि दुअरा आइलि, बोल बोलले अभिमान ए।
लाल पाट के जाजिम माँगेले, खोरी खोरी डसाव[2] ए ॥ ३ ॥
उहवाँ धगड़िनि ओबरिनि अइली, बोल बोलेले अभिमान ए।
सोने के छुरी हम नार छीनबि,[3] रूपे की थारी नहवाऊ ए ॥ ४ ॥
गांगा जी से जल भरि माँगाइबि कान्ह के नहवाइबि ए।
ओबरिनि बइठलि कहत जसोदा, धगड़िनि अरज हमार ए ॥ ५ ॥
कवन बहतर[4] रउरा चाही से, हमें कही ना समुझाई ए।
पाट पीतम्बर हमरा के बाढ़हु जीयसु[5] बबुआ तोहार ए ॥ ६ ॥

---

[1]कीर्तन। [2]बिछाओ। [3]काटूँगी। [4]वस्त्र। [5]जीवें।

पियर बहतर हमरा के चाही, हमे आनि पहिराइ ए।
पहिरि ओढ़िय धगड़िनी अइली, उनका से अरज[1] हमार ॥ ७ ॥
अइसन असीस[2] दे ए धगड़िनि, जीयसु बबुआ हमार ए ॥ ८ ॥

नन्द के घर लड़का पैदा हुआ है अतएव कीर्तन हो रहा है और देश-देश में आनन्द मनाया जा रहा है। सब लोग जग गये हैं परन्तु धाय अभी तक नहीं जगी ॥ १ ॥

तब किसी ने धाय के घर जाकर उससे कहा कि ऐ घमंडी धाय! उठो तथा यहाँ से चलो। नन्द और यशोदा के घर पुत्र पैदा हुआ है अतः तीनों लोक में आनन्द फैला हुआ है ॥ २ ॥

तब धाय उठकर अपने घर से नन्द के द्वार पर गई और अभिमान से युक्त बोली बोलने लगी उसने कहा कि लाल रंग का जाजिम लाओ और उसे बिछाओ ॥१

उसके बाद धाय घर में आई और अभिमान पूर्वक कहा कि इस बच्चे का नार (नाल) काटने के लिये सोने की छुरी लाओ और नहाने के लिये चाँदी का थाल लाओ ॥ ४ ॥

गंगा जी का जल लाओ जिससे मैं इस बालक को नहलाऊँ। घर में बैठी हुई यशोदा ने कहा कि ए धाय! मेरी बिनती सुनो ॥ ५ ॥

तुम्हें कौन सा वस्त्र चाहिये इस बात को समझा कर कहो। धाय ने उत्तर दिया कि मुझे रेशमी कपड़ा मिलना चाहिये। तुम्हारा बच्चा चिरायु हो ॥ ६ ॥

धाय ने कहा मुझे पीला वस्त्र पहनाओ। जब धाय पीले वस्त्र को पहन कर आँगन में खड़ी हुई तब यशोदा ने उससे बिनती करते हुए कहा कि ऐ धाय! तुम ऐसा आशीर्वाद दो जिससे हमारा बच्चा बहुत दिन तक जीता रहे ॥७।८॥

इस गीत में पुत्र-जन्म के उत्सव का बड़ा ही सुन्दर वर्णन है। आनन्द के इस अवसर पर धाय का 'डिमाण्ड' बढ़ता ही चला जाता है। पुत्र-जन्म के समय पर इस प्रकार के उत्सव सर्वत्र देखे जाते हैं। अतः उपर्युक्त वर्णन बहुत ही स्वाभाविक मालूम पड़ता है।

---

[1] विनती। [2] आशीर्वाद।

सन्दर्भ—प्रसव-पीड़ा का वर्णन

(१६)

सोने का खरउवाँ राजा रामचन्द्र. आमा से अरज करे हो।
ए आमा जीरवा[1] अइसन धनी पातर, वेदने वेयाकुल बोलावेहि हो ॥१॥
जइतीं त बबुआ[2] जइतीं, त तोहरा बचनिया सुनि हो।
ए बबुआ तोरी धनी हाथवा के संकट[3], मुँहवा से फुहर[4] बोले हो ॥२॥
काँखहु ए धनी काँखहु, कोठिला के आन धइले हो।
ए धनिया रामजी के वान्हल मोटरिया[5], कले कले[6] खुलेला हो ॥ ३ ॥

सोने के खड़ाऊँ पर चढ़े हुए राजा रामचन्द्र अपनी माता से प्रार्थना करते हैं कि ऐ माता! जीरे के समान पतली मेरी स्त्री प्रसव-वेदना से व्याकुल है और आप को बुला रही है ॥ १ ॥

माता ने उत्तर दिया कि ऐ वेटा! तुम्हारे वचन को सुन कर मैं अवश्य जाती परन्तु तुम्हारी स्त्री बड़ी ही कंजूस है और मुँह से गन्दी बातें बकती है ॥२॥

तब रामचन्द्र ने अपनी स्त्री से कहा कि ऐ स्त्री किसी प्रकार से तुम कष्ट सह लो। ईश्वर के द्वारा बाँधी गई गठरी (पुत्र) धीरे-धीरे खुल रही है ॥३॥

सन्दर्भ—पुत्र-जन्मोत्सव में दान का वर्णन

(२०)

चारु खण्ड के हवेलिया[7], चुने चुनवटल रे।
ए जी ताहि चढ़ि सुते, राजा दसरथ, कोसिला रानि लाढ़[8]लावे रे ॥१॥
का हम देवों बभन जी के अवरु भटन जी के रे।
का हम देवों धगड़ीनि, कन्हैया जी के जनम नु रे ॥ २ ॥
सोनवा में देवों बभन जी अवरु रूपवा भटन जी के रे।
रानी पाँचों[9] टुक कपड़ा धगड़िनिया, कन्हैया के जनम नु रे ॥ ३ ॥

---

[1]जीरा। [2]जाती। [3]कंजूस। [4]गन्दी बातें। [5]पुत्र। [6]धीरे-धीरे। [7]घर। [8]नखरा। [9]पाँच कपड़ा (धोती, कुरता, गमछी, चादर और पगड़ी या सारी, जम्पर, ओढ़नी आदि)।

पहिरि ओढ़ि धगड़ीनि ठाढ़ भइली, अदित[1] मनावेली[2] हो।
अदीत बढ़सु कवन राम के सन्तति, जाँहा मोर आदर हो ॥ ४ ॥

चार खण्ड की बहुत बड़ी हवेली थी जिसमें सफेदी की गई थी। उसी मकान में राजा दशरथ सो रहे हैं और रानी कौशिल्या नखरा कर रही है ॥१॥

रानी ने राजा से कहा कि मेरे राम का जन्म हुआ है अतएव इस शुभावसर पर मैं ब्राह्मणों को, भाँटों को और धाय को क्या पुरस्कार दूँ ॥ २ ॥

राजा ने उत्तर दिया कि राम के जन्मोत्सव में मैं ब्राह्मणों को सोना, भाटों को चाँदी (रुपया) और धाय को पाँचों टूक (सारी, जम्पर, ओढ़नी आदि) कपड़ा दूँगा ॥ ३ ॥

धाय ने सारा कपड़ा पहन लिया और घर के आँगन में खड़ी होकर वह भगवान् सूर्य से प्रार्थना करने लगी कि भगवान्! दशरथ के सन्तति की वृद्धि हो जिससे मेरा इस घर में सदा आदर होता रहे ॥ ४ ॥

सन्दर्भ—स्त्री के दोहद का वर्णन; सासु की उक्ति वधू के प्रति

(२१)

मचिया बइठल तुहु ए सासु हो।
लागेला करइला में फूल, मने मने हुलसेला[3] हो ॥ १ ॥
मचिया बइठलि तुहु ए धनि नारि सुलछनी[4] हो।
ए धनि कवन कवन फल मन भावे, कही ना समुझावहु हो ॥ २ ॥
फालावा त भावेला आमावा के, अवरू इमिलिया के नु हो।
ए प्राभु सेव, बदाम, छोहाड़ा. त अवरू ना मन भावेला हो ॥ ३ ॥
मचिया बइठलि तुहु ए धनि नारि सुलछनि हो।
धनी कवन पहिरन मन भावेला, कही ना समुझावहु हो ॥ ४ ॥

---

[1]आदित्य (सूर्य)। [2]पूजती है। [3]प्रसन्न होती हूँ। [4]सुन्दर लक्षणवाली।

सरीया[1] त भावेला अतर कई, लाहँगा दरस कइ ए।
आभु चोलिया त भावेला कुसुम[2] कइ, अवरु ना मन भावेला हो ॥ ५ ॥

मचिया पर बैठी हुई ऐ सास ! करैला में फूल लग रहा है। अतः मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है ॥ १ ॥

पति कहता है कि ऐ सुलक्षणा स्त्री ! तुम्हें कौन सा फल अच्छा लगता है, इसे स्पष्ट कहो ॥ २ ॥

स्त्री ने कहा कि मुझे आम का फल, इमली, सेव, बादाम और छुहारा अच्छा लगता है और कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती ॥ ३ ॥

पति ने पूछा कि ऐ स्त्री तुम्हें कौन सा कपड़ा पहिनने के लिये अच्छा लगता है तब स्त्री ने जवाब दिया कि मुझे सारी, लहँगा और कुसुम्मी रंग की चोली अच्छी लगती है और कुछ नहीं ॥ ४ ॥

सन्दर्भ—सुखपूर्वक पुरुष का वर्णन

(२२)

सावन भदउवाँ के रतिया, देखत डर लागेला हो।
राजा खोल ना बजर केवार[3], हम ही रउरा सोइबि हो ॥१॥
घरी राति गइली, पहर राति बितली नु हो।
राजा छोड़िद ना हमरो आँचरवा; आँगानवा हम जाइबि हो ॥२॥
किया हमरो मइया जगावेले, बहिन हाँक[4] पारेले हो।
धनिया कवन जरूर[5] तोहरा लगले; आँगन तुहुँ जालु नु[6] हो ॥३॥
नाहिं राउर मइया जगावेली, बहिन हाँक पारेलिनि हो।
राजा बड़ा रे जरूर हमरा लगले, आँगन हम जाइबि हो ॥४॥
एक लात[7] देली चउकठ[8] पर, दोसर लात आँगाना में हो।
राजा बाजे लागल मंगल बधाव[9]; महल उठे सोहर हो ॥५॥

---

[1]साढ़ी। [2]कुसुम्भी रंग। [3]कपाट (दरवाजा)। [4]आवाज देना। [5]आवश्यकता। [6]जाती हो। [7]पैर। [8]चौखट। [9]वाद्य (बाजा)।

आँगाना त नाचेली ननदिया, दुवारा पर कसविनि[1] हो।
राजा त हो प्रभु कथक[2] नचावेले, बबुआ[3] जनम लिहले हो ॥६॥

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि सावन और भादों की अँधेरी रात को देख कर बड़ा डर मालूम होता है। ऐ पति ! कमरे के दरवाजे को खोलो; मैं तुम्हारे साथ ही सोऊँगी ॥१॥

स्त्री जब अपने पति के साथ एक घड़ी तथा एक पहर तक सो चुकी तब उसने कहा कि ऐ पति मेरा आँचर छोड़ दो क्योंकि मैं आँगन में जाना चाहती हूँ ॥२॥

पति ने पूछा कि क्या मेरी माता तुमको जगाने आयी हैं अथवा मेरी बहन तुमको बुला रही है। ऐ स्त्री ! तुम्हें कौन सी ऐसी आवश्यकता आ पड़ी है जिसके कारण से तुम बाहर जाना चाहती हो ॥३॥

पत्नी ने उत्तर दिया कि न तो आपकी माता मुझे जगाने आई हैं और न आपकी बहिन ही मुझे बुला रही है। ऐ पति ! मुझे बहुत बड़ी आवश्यकता है, इसीलिये मैं बाहर जाना चाहती हूँ ॥४॥

इतना कहकर पत्नी ने एक पैर चौखट पर और दूसरा पैर आँगन में दिया। बाहर आते ही उसे पुत्र पैदा हो गया जिससे मंगल वाद्य बजने लगा और महल में सोहर गाया जाने लगा ॥५॥

पुत्र-जन्म के उत्सव में आँगन में ननद नाचने लगी तथा द्वार पर वेश्या नाचने लगी और आनन्द में विभोर पति ने भाँड़ नचाना शुरू कर दिया ॥६॥

सन्दर्भ—पुत्र-जन्मोत्सव का वर्णन

(२३)

चारु चउखण्ड के पोखरवा[4], त चुने चुनवटल हो।
ए जी ताहि चढ़ि राम करे दतुवनि, सीता घरील[5] लेले हो ॥१॥
का ओहो राम का घरे रहले, का मधुवने[6] गइले हो।
ए जी दुअरा लगइते लखराँव[7], बहुरि[8] सीता देखसु हो ॥२॥

---

[1]वेश्या। [2]कत्थक (भाँड़)। [3]पुत्र। [4]तालाब। [5]घड़ा। [6]परदेश। [7]लक्षाराम (बग़ीचा)। [8]फिर।

का एहि सीता घरे रहले, का नइहरे[1] गइले हो।
ए जी कल में पुतवा बियइती[2], सुनति सुख सोहर हो ॥३॥
हकर[3] अजोधा के काहारा, बेगहि चलि आवसु हो।
भइया जलदी से डँड़िया फानाव, नइहर पहुँचाव नु हो ॥४॥
मचिया बइठलि तुहु आमा, पुरुष बिरह[4] बोलेले हो।
आमा काहे के धिया जनमलु, पुरुष बिरह बोलेले हो ॥५॥
काँच ही बाँसावा कटइह, बिनइह डागा[5] डाल नु हो।
ए बेटी ओहि में भरइह तिल चाउर, गोसइँया[6] परसन[7] होइहें हो ॥६॥
अदित मनवही ना पवलों, गोसइयाँ परसन भइले हो।
लालाना बाजे लागल अनघ[8] बधाव; महले उठे सोहर हो ॥७॥
आँगन बहरइति[9] चेरिया, त अवरु लउँड़िया नु हो।
बीरहा बोलना के दइना बोलाइ, सुनसु सुख सोहर हो ॥८॥
चटर[10] चटर राम अइले, आँगानवाँ में ठाढ़ भइलनि हो।
ए धनिया हमही हरलीं[11] रउरा जीतलीं[12], सुनिलें सुख सोहर हो ॥९॥
मोरा पिछुवारावा नोनिया[13] भइया, बेगे चलि आव नु हो।
भइया जलदी से लाव[14] लखराँव[15], बहुरि सीता देखसु[16] हो ॥१०॥

एक बहुत बड़ा तालाब है जो चूने से पुता हुआ है। उसके किनारे बैठ कर रामचन्द्र जी दातौन कर रहे हैं और सीता जी घड़े से पानी भर रही हैं ॥१॥

सीता जी कहती हैं कि राम के घर रहने अथवा परदेश में जाने से क्या? अर्थात् उनका घर रहना व्यर्थ है। यदि द्वार पर वे एक बगीचा लगाते तो मैं उसे आनन्द पूर्वक देखती ॥२॥

---

[1]मायका। [2]बच्चा पैदा करती। [3]पुकारो। [4]व्यंग्य वचन। [5]सूप या डाली। [6]पति। [7]प्रसन्न। [8]अत्यधिक। [9]झाड़ू देती हुई। [10]खड़ाऊ पर चट-चट शब्द करते हुए। [11]हार गया। [12]जीत गई। [13]मकान बनाने वाले कारीगर। [14]लगाओ। [15]लखाराम (बड़ा बगीचा)। [16]देख सके।

राम ने उत्तर दिया कि सीता के घर रहने अथवा मायके जाने से ही क्या ? यदि उसे पुत्र पैदा होता तो मैं सुखपूर्वक सोहर सुनता ॥३॥

इस पर क्रुद्ध होकर सीता ने अयोध्या के पालकी ढोने वाले कहारों को शीघ्र बुलाया और कहा कि मुझे पालकी पर बैठा कर मायके पहुँचा दो ॥४॥

मायके पहुँच कर सीता ने अपनी माता से कहा कि मचिया पर बैठने वाली ऐ माता ! मेरा पति मुझसे व्यंग्य वचन बोल रहा है। ऐ माता ! तुमने मुझे लड़की के रूप में क्यों पैदा किया ॥५॥

इस पर माता ने उत्तर दिया कि ऐ बेटी ! तुम कच्चे बाँस को कटवा कर उसका सूप अथवा छबड़ी (डाली) बनवाना और उसमें तिल और चावल भरवा देना। इससे तुम्हारा पति प्रसन्न हो जायेगा ॥६॥

स्त्री ने अभी सूर्य की पूजा भी नहीं की थी कि भगवान् प्रसन्न हो गये और इस स्त्री को पुत्र-रत्न पैदा हुआ। घर में बाजे बजने लगे और महल में सोहर गाया जाने लगा ॥७॥

स्त्री ने कहा कि ऐ आँगन में झाड़ू देने वाली दासी ! व्यंग्य वचन बोलने वाले मेरे पति को बुला लाओ, जिससे वह इस सुन्दर सोहर को सुनें ॥८॥

पति खड़ाऊँ पर चढ़ा हुआ चट-चट शब्द करता हुआ आँगन में खड़ा हो गया और स्त्री से बोला कि ऐ प्यारी ! तुम जीत गई और मैं हार गया ॥९॥

पति ने कहा कि ऐ मेरे घर के पीछे रहने वाले कारीगर (माली) ! तुम लोग शीघ्र आओ और शीघ्र एक बगीचा लगाओ जिससे सीता उसे देख कर प्रसन्न होवे ॥१०॥

सन्दर्भ—पुत्र के बिना स्त्री की मनोव्यथा का वर्णन

(२४)

पानावा अइसन हम पातर[१], कसइलि[२] अइसन ढुनमुनि[३] हो।
ए ललना फुलवा अइसन सुकुवारि[४], चनन अइसन गमकीले[५] हो ॥१॥

---

[१]पतली। [२]सुपारी। [३]सुन्दर। [४]सुकुमार। [५]सुगन्धित।

इ तीनु फूल जाहाँवा मिलते, आँगाना में लगइतों नु हो।
ए ललना हरि मोरा बइठे पूजनरिया[1] हम लोर्हि[2] चढ़इतों नु हो ॥२॥
एक दिन ए राम जी उहे रहले, जाहि दिन बियाह भइले हो।
ए राम जी निहुरि[3] निहुरि चरन छुवले, चिटुकि[4] सेनुरा लावेले हो ॥३
एक दिन ए राम जी उहे रहले; जाहि दिन गवना भइले हो।
ए राम जी आगा आगा घोड़ा दउरवले[5], त पाछा डाँड़ी आवेला हो ॥४॥
ए राम जी तोसक तकियवा लगवले, नजरियो[6] ना उतारेले हो।
जइसन वन में के कोइलरि[7], बने बने कुहुकेले[8] हो ॥५॥
ए राम ओइसन जियरा हमरा कुहुकेला, एक रे वालक विनु हो।
जइसन वोरसी[9] के आग हवे धीरे धीरे सुनुगेला[10] हो ॥६॥
ओइसे[11] जियरा हमरा सुनुगेला, एक रे वालक विनु हो ॥७॥

कोई स्त्री कहती है कि मैं पान की तरह पतली, सुपारी के समान सुन्दर, फूल के समान कोमल और चन्दन के समान सुगन्धित हूँ ॥ १ ॥

अगर सुन्दर और सुगन्धित फूल मुझे मिलते, तो मैं उन्हें लाकर आँगन में लगाती, और जब मेरा पति पूजा करने के लिये बैठता, तब मैं उन्हें चुन कर उसे देती ॥ २ ॥

एक दिन वह था जिस दिन मेरा विवाह हुआ और पति ने झुक-झुककर मेरा चरण-स्पर्श किया, तथा चुटकी से मेरी माँग में सिन्दूर लगाया ॥ ३ ॥

एक दिन वह था जिस दिन मेरा गवना हुआ। उस दिन पति आगे-आगे घोड़ा दौड़ा रहा था और मेरी पालकी पीछे-पीछे जा रही थी ॥ ४ ॥

एक दिन वह था जब पति मेरे लिये तोशक-तकिया पलंग पर बिछाया करता था, परन्तु आज समय के फेर से वह मेरी ओर दृष्टिपात भी नहीं करता ॥५॥

स्त्री कहती है कि जिस प्रकार वन की कोयल वन में कू-कू करती फिरती है उसी प्रकार मेरा हृदय एक पुत्र के बिना दुःखी हो रहा है ॥ ६ ॥

---

[1]पूजा के लिये। [2]चुनना। [3]झुककर। [4]चुटकी। [5]दौड़ाया। [6]दृष्टि (नज़र)। [7]कोकिल। [8]बोलती है। [9]अँगीठी। [10]जलती है। [11]उसी प्रकार से।

जिस प्रकार अँगीठी की आग धीरे-धीरे सुलगती है, उसी प्रकार हमारा हृदय एक बालक के बिना कष्ट पाता है, तथा धीरे-धीरे जलता रहता है ॥ ७ ॥

सन्दर्भ—वन्ध्या की मनोव्यथा का वर्णन

(२५)

बाव[1] बहेले पुरवइया, उतरही झकोरेले हो।
ए ललना रुकमीनि सुतेली ओसारवा[2], त गोदिया भतीज लेले हो ॥१॥
घर में से निकले भउजइया, आँगानावा में ठाढ़ भइली हो।
ए ललना झपटि के छोरेली भतीजवा, रुकमिनि मनवा दुखीत हो ॥२॥
घर में से निकलेलि आमा, रुकमिनि समुझावेलि हो।
ए रुकमिनि का ओहि आनाका[3] रे बालाकावा, तोर जनम अकारथ हो ॥३॥
का ओहि आमावा का खइले, अठिलिया[4] के चटले नु[5] हो।
ए रुकमिनि का ओहि अनका रे बालाकावा, तोर जनम अकारथ हो ॥४॥
लाल पियर[6] ना पहिरलीं, चउक[7] ना बइठलीं[8] हो।
ए ललना गोदिया[9] बालक ना खेलवलीं[10], मोरे जनम अकारथ हो ॥५॥

पुरवैया हवा बह रही है और उत्तर की हवा झकझोर रही है। ऐसे समय में रुक्मिणी नाम की कोई स्त्री अपने भतीजे को गोदी में लेकर बरामदे में सो रही थी ॥ १ ॥

घर में से भौजाई निकली और आँगन में आकर खड़ी हो गई। उसने झपट कर रुक्मिणी की गोद से अपने बालक को छीन लिया। इस कारण रुक्मिणी बहुत दुःखी हुई ॥ २ ॥

इसके बाद माता घर से निकली और अपनी पुत्री को दुःखी देखकर समझाते हुए कहा— ऐ रुक्मिणी तुम दूसरे के बालक के छीने जाने पर दुःखी क्यों होती हो? पुत्र न होने के कारण तुम्हारा जन्म अकारथ ही गया ॥ ३ ॥

---

[1]वायु। [2]बरामदा। [3]दूसरे का। [4]गुटली। [5]चाटना। [6]पीला। [7]चौका (पूजा वेदी)। [8]बैठी। [9]गोद में। [10]खेलाया।

माता ने कहा—दूसरे के आम खाने और गुठली चाटने से क्या लाभ ? ऐ रुक्मिणी ! दूसरे के बालक को लेकर सोने से क्या फायदा ? क्योंकि वह आनन्द क्षणभंगुर है ॥ ४ ॥

इस पर दुःखी होकर रुक्मिणी ने कहा—मैंने अपने जीवन में लाल तथा पीला कपड़ा कभी नहीं पहना और न कभी पति के साथ चौका (पूजा-वेदी) पर ही बैठी। मेरी गोदी में बालक न होने के कारण मेरा जन्म व्यर्थ ही गया, अर्थात् मेरा जीना असफल रहा ॥ ५ ॥

पुत्र के अभाव में स्त्री के हृदय में कितनी मानसिक वेदना उत्पन्न होती है इसका बड़ा ही मार्मिक चित्रण ऊपर के गीत में किया गया है। वास्तव में स्त्रियाँ पुत्र के बिना अपने जीवन को निरर्थक समझती हैं। उनके हार्दिक कष्ट का अनुमान करना कठिन है।

सन्दर्भ—गोपियों द्वारा कृष्ण की धृष्टता का यशोदा को उलाहना

(२६)

दही बेंचे चलली गोवालिनि[१], आरे सिर पर मटुक[२] लिहले हो।
आरे गले गज-मुकुता के हार, त ओढ़ेली पितम्बर[३] हो ॥ १ ॥
एक बने गइली दोसरे बने, अवरु तिसर बने हो।
आरे बीचवा कन्हइया बटवारावा[४], डहरिया[५] हमरो रोकेले हो ॥ २ ॥
दही, दूध दिहिले त ना ले ले, डहरिया हमरो रोकेले हो।
ए राम मांगेले कन्हैया जीव के रतिया[६], धरम छोड़ावेले हो ॥ ३ ॥
मीलहु सखिया सलेहरि[७], अवरु सनेहरि[८] हो।
ए सखि मिलि जुलि आँगन जसोदा, ओरहन[९] देबे जाइबि हो ॥ ४ ॥
ए मइया बरजि[१०] ना आपन रे बेटवना[११], डहरिया हमरो रोकेले हो।
दही, दूध, दिहिलो ना मानेले, डहरिया हमरो रोकेले हो ॥ ५ ॥

---

[१]ग्वालिनि। [२]घड़ा। [३]पीताम्बर। [४]बटमार (डाकू)। [५]मार्ग। [६]इन्द्रिय-सुख (भोग)। [७]सखी। [८]प्रेमी। [९]उलाहना। [१०]मनाकर दो। [११]लड़का।

मेटि घाल सिर के सेनुरवा[1], नयन भरि काजर हो।
ए बहुआ मेटि घाल दाँतावाँ के मिसिया[2], कन्हैया नाहि घेरिहें जी हो॥६॥
धनि के वइठइबों[3] दाँतें मिसिया, नयन भरि काजर हो।
ए मइया डाँटि[4] फोरि करबों रे ईंगुरवा[5], कन्हैया ललचाइबि हो॥ ७॥

कुछ ग्वालिनें सिर पर दही का मटका लेकर दही बेचने को चलीं। उन्होंने अपने गले में गज-मुक्ता का हार और शरीर में पीताम्बर वस्त्र पहन रक्खा था॥ १॥

वे अपना दही बेचने के लिये एक स्थान से दूसरे स्थान तथा तीसरे स्थान पर गईं। इतने में श्रीकृष्णजी रास्ते में मिल गये और उन्होंने उनका मार्ग बीच रास्ते में रोक लिया॥ २॥

वे कहती हैं कि श्रीकृष्ण को दूध तथा दही दिया गया, परन्तु उन्होंने अस्वीकार कर दिया। वे हम लोगों से इन्द्रिय-सुख माँग रहे थे और इस प्रकार हमारा धर्म छुड़ाना चाहते थे॥ ३॥

वे आपस में कहती हैं कि ऐ स्नेह करने वाली सखियो, हम लोग आपस में मिलकर अर्थात् इकट्ठी यशोदा के घर चलें और उनके पुत्र के कुकर्म के लिये उलाहना दे आवें॥ ४॥

उन्होंने जाकर यशोदा से कहा कि ऐ माता! आप अपने लड़के को मना कर दीजिये, क्योंकि वह बार-बार रास्ते में हम लोगों को छेड़ता है तथा दही, दूध देने पर भी नहीं मानता॥ ५॥

इस पर यशोदा ने उत्तर दिया कि तुम लोग अपने सिर का सिन्दूर और आँखों का काजल मिटा दो, अपने दाँत की मिस्सी (पाउडर) को नष्ट कर दो। तब कृष्ण तुम लोगों को नहीं छेड़ेंगे॥ ६॥

तब गोपियों ने उत्तर दिया कि हम लोग अपने दाँतों में अब अधिक मिस्सी लगावेंगी, आँखों में काजल लगायेंगी, माँग में खूब मोटा सिन्दूर लगावेंगी। इस प्रकार श्रीकृष्ण को हम लोग और भी ललचावेंगी॥ ७॥

---

[1]सिंदूर। [2]मिस्सी, (पाउडर)। [3]लगाऊँगी। [4]सींक से। [5]सिन्दूर।

श्रीकृष्ण के बाल्यकाल की नटखट प्रवृत्ति का यह बड़ा ही सुन्दर उदाहरण है। श्रीकृष्ण की 'दुष्टता' के कारण लोगों के उलाहनों के मारे यशोदा की नाकों में दम आ गया था। परन्तु वह नटखट कृष्ण को समझाने में असमर्थ थीं। सूरदास ने अपने पदों में श्रीकृष्ण की बाल-लीला का बहुत ही सुन्दर चित्रण किया है।

सन्दर्भ—राधाकृष्ण की प्रेम-लीला का वर्णन

(२७)

घर में से निकले राधा रनिया, अगनवाँ में ठाढ़ भइली।
ए ललना हँसि के पूछेलि जसोदा, काहे रे बहुआ[१] बेदिल हो[२] ॥ १ ॥
लाज सरम[३] केरि बतिया, कहल नाहिं जाला नु हो।
ए सासु पलँग रखल मोरी तिलरी[४], नाहि त आजु मिलेला हो ॥ २ ॥
नाहाई धोई अइले सीरि कृस्ना[५], आँगाना में ठाढ़ भइले हो।
ए ललना हँसिके पूछेलि जसोदा, काहे रे बबुआ बेदिल हो ॥ ३ ॥
लाज सरम केरि बतिया, कहल नाहि जाला नु हो।
ए आमा बनबीरिदा[६] केरि बँसुली[७], से हो चोरि भइल हो ॥ ४ ॥
जेकर लिहल बबुआ तिलरी, से हो तोहार बंसी लिहल[८] हो।
ए बबुआ देइ घाल बहू केरे तिलरिया, बँसुलिया हम दिया देबि हो ॥५॥
इ जनि जान सासु लाहे के तिलरिया, सहत[९] बाटे हो।
ए सासु सावा ही लाख केरे तिलरिया, रेसम में गुहावलि[१०] हो ॥६॥
इ जनि जान आमा बाँस के बँसुलिया, हामार हवे हो।
ए आमा आढ़ाइ ही लाख केरे बँसुलिया, त सोना में मढ़ावलि हो ॥७॥
एही बँसुलिया कारन मारबि अवरु गरिआइबि; घर में कुठेठि[११] लाइबि हो।
ए आमा नइहर के डीहवा[१२] रे देखाइबि, इहाँ से दुरु दुरु[१३] करबो हो ॥८॥
गोडवा[१४] में लवले चटकउवाँ पउवाँ, हाथावा सोबरनी साटी हो।

---

[१]बधू। [२]उदासीन। [३]शर्म। [४]हार। [५]श्रीकृष्ण। [६]वृन्दावन। [७]बाँसुरी [८]ले लिया। [९]सस्ता। [१०]गुँथवाया। [११]झगड़ा। [१२]उजाड़ स्थान। [१३]भगा देना, [१४]पैर।

ए ललना चलि भइलों सरहजी नगरिया, हम लाहारा[1] रे लगाइबि हो ॥९॥
ए सरहजी कवन अवगुन तुहुँ कइलू, ननद तुहें गरियावेले हो ॥१०॥
झंपा[2] में से कढ़ली साटन सारी अवरु पीतंबर हो।
ए ललना परते परते लवलि रे मोहरिया, ओरहनवा[3] देवे जाइबि हो ॥११
ए ननदी ! कवन अवगुन हम कइलीं, तुहु गरियावेलु[4] हो।
कवन जे सखी उजे कहुवे, कवन सखि सुनुवे नु हो ॥ १२ ॥
आरे कवन लबजि[5] लइया[6] लवलसि[7], भऊजी पतियालु[8] नु हो।
कवनो ना सखी उजे कहुवी, कवनो सखी ना सुनुवी हो ॥ १३ ॥
आरे सिरि कृस्ना लबज लइया लवले, त हम पतियालीं नु हो।
कारी बदन पर आताना[9] खोटाई, गोराइया पर कातानु[10] हो ॥ १४ ॥
ए ललना कारी बदन उनुकर[11] हउवे; लंका अगिया[12] लावेले हो ॥ १५ ॥

घर में से राधा रानी निकलीं और आँगन में आकर खड़ी हो गईं। यशोदाजी हँस कर उससे पूछती हैं कि ऐ बहू, तुम दुःखी तथा उदासीन क्यों हो ? ॥१॥

राधा ने उत्तर दिया कि यह लज्जा की बात है, अतः मुझसे कहा नहीं जाता। ऐ सास ! मैंने अपने पलंग पर हार रख दिया था, वह आज नहीं मिल रहा है ॥ २ ॥

श्रीकृष्णजी स्नान करके आँगन में आकर जब खड़े हुए, तब उनकी माता यशोदा ने उनसे पूछा कि ऐ पुत्र ! तुम आज उदासीन क्यों हो ? ॥३॥

श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया कि ऐ माता ! मुझे कहने में लज्जा लगती है। मेरी वृन्दावन की बाँसुरी आज चोरी चली गई है ॥ ४ ॥

यशोदा ने उत्तर दिया कि जिसका तुमने हार चुरा लिया है उसीने तुम्हारी वंशी भी चुरा ली है। ऐ पुत्र ! तुम बहू का हार दे दो तो मैं तुम्हारी मुरली भी दिला दूँगी ॥ ५ ॥

---

[1]झगड़ा। [2]बक्स। [3]उलाहना। [4]गाली देना। [5]झूठ बोलने वाली [6]मिथ्यारोप। [7]लगाया। [8]विश्वास करना। [9]दुष्टता। [10]कितना। [11]उनका। [12]आग।

बहू ने कहा कि ऐ सास ! तुम यह मत जानो कि हमारी माला (हार) सस्ती है। मेरा हार सवा लाख रुपये का है और रेशम में गूँथा गया है ॥६॥

श्रीकृष्ण ने कहा कि ऐ माता ! मेरी बाँसुरी भी बड़ी कीमती है। उसका दाम ढाई लाख है और सोने में मढ़ी हुई है ॥ ७ ॥

यदि बाँसुरी नहीं मिली तो मैं राधा को मारूँगा, गाली दूँगा और घर में झगड़ा पैदा कर दूँगा। मैं राधा को मायके पहुँचा कर दुःख दूँगा और यहाँ से खदेड़ दूँगा ॥ ८ ॥

श्रीकृष्ण ने खड़ाऊँ पैर में पहन लिया और हाथ में सोने की छड़ी ली। वे अपनी सरहज (साले की स्त्री) के गाँव झगड़ा लगाने के लिये चल पड़े ॥६॥

कृष्ण ने सरहज से कहा कि तुमने कौन सा अपराध किया है जिसके कारण तुम्हारी ननद (मेरी स्त्री) तुम्हें गाली देती है ॥ १० ॥

यह सुनकर सरहज बहुत क्रोधित हुई और उसने अपने बक्स में से साटन की साड़ी और पीताम्बर निकाला और उलाहना देने के लिये ननद के घर चल पड़ी ॥ ११ ॥

वहाँ ज़ाकर उसने अपनी ननद से पूछा कि हमने कौन सा अपराध किया है जिससे तुम मुझे गाली दे रही हो। इस पर ननद ने उत्तर दिया कि किस आदमी ने मुझे गाली देते सुना है और किसने तुमसे यह बात कही है ॥ १२ ॥

किस झूठे ने मेरे ऊपर यह मिथ्यारोप किया है। इस पर भावज ने उत्तर दिया कि सखी ने मुझसे यह बात नहीं कही है ॥ १३ ॥

झूठे श्रीकृष्ण ने ही यह मिथ्यारोप तुम्हारे ऊपर किया है। इसीलिये मैंने विश्वास भी कर लिया ॥ १४ ॥

श्रीकृष्ण का बदन जब काला है तब इतनी खोटाई (दुष्टता) भरी हुई है। यदि संयोग से इनका वर्ण गोरा होता तो न मालूम कितनी दुष्टता भरी होती। कृष्ण का काला बदन है इसीलिये वे अपने रूप के अनुसार काली करतूतों के द्वारा सर्वत्र आग लगाते फिरते हैं अर्थात् झगड़ा करा देते हैं ॥१५॥

सन्दर्भ—प्रिय-वियोग तथा गर्भवती स्त्री की आकृति का वर्णन

(२८)

बरिसहु ए देव बरिसहु, मोरा नाही मने भावेला हो।
एं देव मोर पिया नान्हें[1] केरे बिसनीयारे[2], अकेला काहा भीजेला[3] हो॥१॥
पहिरि कुसुम रंगे सरिया, चढ़लों अटरिया नु रे।
कि आरे मोरे ललना टपकि रहेला छाति बुनवा[4], मोरे निनियो ना आवेला रे॥ २॥
सुनवे त सुनवे रे ननदिया, आरे हमरी बचनिया नु हो।
कि आरे मोरे ननदो भइया केरे बोलइतु, उहे दरद मोरा जानेले हो॥३॥
सुनवे त सुनवे रे भउजी, हमरी रे बचनिया नु हो।
कि रे भउजी दीन दस आवे देहु आसाढ़वा, आपन भइया बोलाई[5] देवि हो॥ ४॥
ए ननदो कहीतु जहरवा[6] खाइके मरितींरे, सइयाँ बिना दुःखवा सहलो ना जाइ हो।
अइलनि भइया अँगनवा, दुवरिया ठाढ़ भइलनि हो॥ ५॥
आरे ललना धनिया के सुख पियरइले,[7] त अब बंस[8] [9]बाढ़ न हो।
आरे धनिया हमरा जो आमा के बोलइतु, त दुःख नाही अवहीत हो॥६॥
माई रउरी हईं कुटनहरी[10], बहिनिया पिसनहरि[11] हो।
आरे पियवा रउरा हईं खेत जोतवा[12], मैं काहि के बोलाइबि हो॥ ७॥
पतित के हउ तुहुँ धियवा, पतित के बहिनिया नु हो।
कि आरे धनिया पतित के तुहुँ नतिनिया[13], हम गोठहुल[14] घर देबों हो॥८॥
माई रउरी हइं पण्डिताइनि, बहिनिया चधुराइनि हो।
कि आरे पियवा रउरा हइं सिर साहब, हम बसहर[15] घर लेबों हो॥९॥

---

[1]बचपन से ही। [2]शौकीन। [3]भींग रहा है। [4]बूँद। [5]बुला दूँगी [6]ज़हर। [7]पीला हो गया। [8]वंश, [9]वृद्धि। [10]कुटिला (दुष्टा)। [11]आटा पीसने वाली। [12]खेत जोतनेवाला (कृषक)। [13]पौत्री। [14]उपले रखने का गन्दा घर। [15]अच्छा तथा सुन्दर घर।

कोई स्त्री कहती है कि हे देव! खूब बरसो। परन्तु यह बरसना मुझे अच्छा नहीं लगता है। मेरा पति लड़कपन से ही शौकीन है, अकेले वह कहाँ भींगता होगा ॥ १ ॥

वह स्त्री कुसुम्भी रंग की सारी को पहन करके पति का मार्ग देखने के लिये अटारी पर चढ़ गई। वह कहती है कि दुःख के मारे आँसू से मेरी छाती भींग रही है; मुझे निद्रा भी नहीं आती ॥ २ ॥

उस स्त्री ने अपनी ननद से कहा कि ऐ ननद! तुम अपने भाई को बुला दो, क्योंकि वह मेरा कष्ट जानता है ॥ ३ ॥

ननद ने उत्तर दिया कि ऐ भावज! सुनो। दस दिन में अब आषाढ़ का महीना आने वाला है। उस समय मैं अपने भाई को बुला दूँगी ॥ ४ ॥

इस पर भौजाई ने जवाब दिया कि ऐ ननद! कहो तो मैं ज़हर खाकर मर जाऊँ। क्योंकि बिना पति के मैं अपने कष्ट को सहने में असमर्थ हूँ ॥ ५ ॥

इतने ही में ननद का भाई (पति) परदेश से चला आया और आँगन के दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया। अपनी गर्भवती स्त्री का मुख देखकर वह सोचने लगा कि अब मेरे वंश की वृद्धि होगी ॥ ६ ॥

पति ने पूछा कि तुमने मेरी माता को क्यों नहीं बुला लिया, नहीं तो तुम्हें इतना कष्ट नहीं होता। इस पर स्त्री ने उत्तर दिया कि तुम्हारी माता दुष्ट है, बहन आटा पीसने वाली है, और तुम खेत जोतने वाले हो, अतः मैं किसको बुलाती ॥ ७ ॥

इस पर पति ने उत्तर दिया कि तुम पतित पुरुष की लड़की हो, पतित की बहन हो, और तुम पतित की पौत्री हो। तुम्हें मैं रहने के लिए गन्दा घर दूँगा ॥ ८ ॥

इस पर स्त्री ने उत्तर दिया कि आपकी माता पण्डितानी हैं, बहन चौधरानी है और आप बड़े साहब हैं। अतः अब मैं अच्छे घर में रहूँगी ॥९॥

उपर्युक्त गीत में पत्नी का पति-प्रेम तथा पुरुष की निष्ठुरता का बड़ा ही सुन्दर चित्रण है। स्त्री तो पुरुष के वियोग में मर रही है, परन्तु पति को जरा भी दया नहीं। स्त्री के द्वारा कुछ कटु शब्द कह दिये जाने पर उसे 'गन्दे' घर

में नजर बन्द कर देने की धमकी दी जाती है। इस प्रकार की घटनाएँ गाँवों में प्रायः रोज ही हुआ करती हैं। गृह-कलह तो देहातों में दैनिक घटना सी हो गई है। अतः उपर्युक्त चित्र अत्यन्त स्वाभाविक मालूम पड़ता है।

सन्दर्भ—स्त्री की प्रसव-पीड़ा का वर्णन

(२६)

पच पच[1] पानवा के बिरवा, लवँगिया के मुसुकरि[2] रे।
ए ललना देहुँगे ननदजी का हाथे, त बिरवा लगावसु रे॥१॥
सुपुली[3] खेलत तुहु ननद, मोर पियारी ननद रे।
ए ननदी आपन भइया देई ना बोलाई, मैं दरद बेयाकुल रे॥२॥
जुववा[4] खेलत तुहु भइया, अवरु वीरन[5] भइया हो।
ए भइया प्रानप्यारी भउजी हमार, दरद से बेयाकुल हो॥३॥
जुववा लड़वनी बेल तर अवरु बबुर तर हो।
ए ललना धवरि पइसेले गाजा ओबर, कहना धनि कुसल हो॥४॥
ड़ाँड़ मोर बथेला गाहागहि[6], कपार मोर टनकेला[7] हो।
ए प्राभु पृथ्वी मोरे सुझेला अलोपीत[8], अँगुरी में दम[9] बसे हो॥५॥
घरवा त रहिते बनाइ दिहती, कारीगरवा बोलाई दिहती हो।
इहे बिरिज[10] नारि मोटरिया, खोलेले नारायन हो॥६॥
जामहु[11] ए बाबू जामहु, मोहि जुड़वावहु हो।
ए बाबू बाप के होइहे छत्र[12] छाँह, बहिनियाँ के ओठगन[13] हो॥७॥
हम ना अइबों ए आमा, हम ना अइबों हो।
ए आमा मइलहि[14] लुगवा सुतइबु, आरेइया[15] कहि बोलइबु नु हो॥८॥
आवहु ए बबुआ आवहु मोहि जुड़वावहु हो।
साफहि लुगवा[16] सुताइबि[17] बबुआ कहि बोलाइबि हो॥९॥

[1]पाँच। [2]खोंस देना। [3]लड़कों का एक खेल विशेष। [4]जुआ। [5]भाई। [6]ज़ोर से। [7]दुःखता है। [8]शून्य, लुप्त। [9]प्राण। [10]व्रज नारि। [11]पैदा होओ। [12]अवलम्ब। [13]सहारा। [14]गन्दा। [15]'रे' कहना। [16]कपड़ा, [17]सुलाऊँगी।

पाँच पाँच पान का बीड़ा लगाया गया और उसमें लवंग खोंस दिया गया। भावज ने कहा कि ननद के हाथ में इस पान को दे दो ॥१॥

भावज ने फिर कहा कि ऐ सुपुली खेलने वाली मेरी प्यारी ननद! तुम अपने भाई को बुला दो, क्योंकि मैं दर्द से व्याकुल हूँ ॥२॥

तब लड़की ने अपने भाई के पास जाकर कहा कि ऐ जुआ खेलने वाले मेरे भाई! हमारी प्राणों से प्यारी भावज दर्द के मारे व्याकुल है ॥३॥

बबूर वृक्ष के नीचे जुआ खेलने वाले पति ने जब यह समाचार सुना तो वह दौड़ कर घर में घुस गया और अपनी स्त्री से कुशल समाचार पूछा ॥४॥

स्त्री ने उत्तर दिया कि मेरी कमर में दर्द है और मेरा सिर दुख रहा है। ऐ पति! मुझे सारी पृथ्वी शून्य सी दिखाई पड़ रही है, और मेरी जान केवल अँगुलियों में ही शेष रह गयी है ॥५॥

पति ने उत्तर दिया कि यदि घर बनवाना होता मैं कारीगरों को बुलाकर आज ही घर तैयार करा देता। इस गर्भ में स्थित प्रसव रूपी गठरी को भगवान् ही खोलेंगे ॥६॥

इस पर स्त्री ने कहा कि ऐ पुत्र! अब पैदा होओ, पैदा होओ और मुझे शान्ति प्रदान करो। ऐ लड़के! तुम्हारी उत्पत्ति से पिता को अवलम्ब मिलेगा और बहन को प्यारी योग्य वस्तु मिलेगी ॥७॥

तब गर्भ में स्थित बालक ने उत्तर दिया कि ऐ माता! मैं नहीं पैदा हूँगा, क्योंकि तुम मुझे गन्दे-गन्दे कपड़े पर सुलाओगी और हमेशा 'रे' कहकर पुकारोगी ॥८॥

इस पर माता ने उत्तर दिया कि ऐ पुत्र! आओ और मुझे सन्तुष्ट करो। तुम्हें साफ कपड़ों पर मैं सुलाऊँगी और 'बबुआ' कह कर पुकारा करूँगी ॥९॥

सन्दर्भ—वन्ध्या स्त्री की मनोव्यथा, उपचार तथा पुत्र-जन्म का वर्णन

(३०)

साभावा बइठलि राजा दसरथ सुन मोर साध[1]; संतति हम चाहिले हो।
भले बउरइलु[2] कोसिला रानि, आरे तुहे के बउरावल हो॥ १ ॥

---

[1]इच्छा। [2]पागल हो गई।

आरे जाहि लिखले विधाता, संतति नाहिं मीलेला हो।
मोरा पिछुवारावा बढ़इया भइया, वेगे चलि आवसु हो।। २।।
ए भइया जरि से ना काटहु ओखादावा[१], वेग से लावहु हो।
कहवाँ केरा लोहँवा[२] मंगवलों, कोसिला रानि खातिर[३] हो।
पुरुब के लोहँवा मंगवलों[४] पच्छिम के सिलिया[५] नु हो।। ३।।
आरे रगरि रगरि[६] जरिया पिसलों[७] कोसिला रानि पीयसु हो।
एक खोरा[८] पियली कोसिला रानि, एक खोरा सुमित्रा रानि हो।।४।।
आरे सिलि धोई पियली केकइया रानि, तीनु जानी गरभ से नु हो।
कोसिला के भइले राजा रामचन्द्र, सुमित्रा का लछुमन हो।
केकइया भरत भुवाल[९], तीनों घरे मंगल वाजेला हो।। ५।।
सेर जोखि[१०] सोनवा लुटवली, पसेरि जोखवा रूपवा[११] नु हो।
आरे सगरे अजोध्या लुटवले, कोसिला रानि के आभरन[१२] हो।। ६।।
कवरहिं[१३] वोलेली केकइया रानी, सुनु राजा दसरथ हो।
ए राजा जानि बूझि अवध लुटइह[१४] भरत कुछ चाहेले हो।। ७।।
बरहो वरिस के राम होइहें, त वन के सिधरिहें[१५] नु हो।
बनहि वनहिं फल खइहें, सादा फल पइहें नु हो।। ८।।
राम बने बन जइहें, बरिस[१६] चउदह[१७] रहिहें नु हो।
ए जी छुटले निरवंसिया[१८] के नांव राम घरे अइहें नु हो।। ९।।

सभा में बैठे हुए राजा दशरथ से कौशल्या ने कहा कि ऐ राजा! मेरी मनोकामना को सुनो। मैं एक पुत्र चाहती हूँ। राजा ने उत्तर दिया कि ऐ रानी! तुझे किसने पागल बना दिया है।। १।।

ब्रह्मा जब भाग्य में पुत्र लिखता है तभी सन्तान पैदा होती है, अन्यथा नहीं। ऐ मेरे घर के पास रहने वाले बढ़ई! तुम शीघ्र चले आओ।। २।।

---

[१]औषध (दवा)। [२]लोढ़ा। [३]लिये, [४]मँगाया। [५]सील। [६]रगड़ करके। [७]पीसा गया। [८]कटोरा। [९]राजा। [१०]तौल करके। [११]चाँदी। [१२]आभूषण। [१३]कोने में। [१४]लुटाना। [१५]जायेंगे। [१६]वर्ष। [१७]चौदह। [१८]बिना पुत्र के।

तुम औषधि को जड़ से काट करके लाओ। तब उसने पूछा कि ऐ राजा! कौशल्या रानी के लिए कहाँ से लोढ़ा लाऊँ? राजा ने कहा कि पूर्व देश से लोढ़ा लाओ और पश्चिम देश से सिलवट ॥ ३ ॥

उस औषधि को रगड़-रगड़ के पीसो और उसे कौशल्या पीवें। उस दवा को कटोरा भर कर कौशल्या और सुमित्राजी ने पी लिया। सिल को धोकर बचे हुए अंश को कैकेयी ने पी लिया। इस प्रकार तीनों को गर्भ रह गया ॥४

कौशल्या के रामचन्द्र, सुमित्रा के लक्ष्मण और कैकयी के गर्भ से भरत जी पैदा हुए। इस आनन्द के कारण तीनों रानियों के महल में मंगल के बाजे बजने लगे ॥ ५ ॥

कौशल्या ने तौलकर एक सेर सोना और एक पसेरी चाँदी लुटाया, और राजा दशरथ ने आनन्द में कौशल्या के सारे गहनों को गरीबों में बाँट दिया ॥६॥

महल के कोने में खड़ी हुई कैकेयी ने कहा कि ऐ राजा दशरथ! सुनो, तुम समझ-बूझ कर अयोध्या के खजाने को लुटाओ, क्योंकि भरत को भी इसमें से कुछ चाहिए ॥ ७ ॥

कैकेयी ने यह भी कहा कि जब राम बारह वर्ष के होंगे तब उन्हें वन जाना पड़ेगा। वहाँ वन-वन में घूम कर कन्द, मूल, फल खाना पड़ेगा ॥८॥

राजा दशरथ ने इस प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए कहा कि राम चौदह वर्ष के लिये वन को जावेंगे। राम के पैदा होने से मेरे निस्सन्तान होने का कलंक जाता रहा।

इस गीत में पुत्रहीन स्त्रियों की चिन्ता तथा मानसिक वेदना का अच्छा चित्रण है। वास्तव में स्त्रियाँ तब तक अपने जीवन को सफल नहीं समझतीं जब तक उन्हें पुत्र पैदा न हो जाय। पुत्र-रत्न पैदा होने पर जो आनन्दोत्सव मनाया जाता है उसका कितना सुन्दर वर्णन यहाँ किया गया है! धनहीन पुरुष भी ऐसे मौके पर बहुत खर्च करते हैं फिर राजा ने सोना लुटाया तो आश्चर्य ही क्या।

सन्दर्भ—प्रिय-वियोग का वर्णन

(३१)

सुनिले कन्हैया हमरो जोगी भइले, हमहुँ जोगिन होइ जाँव।
जनि केहु बोग्रहु कुसुमिया[१], जनि केहु बोग्रहु कपास।
हम ना रँगइवों लाली चुनरिया, पिया बिनु सयराँ[२] अन्हार ॥ १ ॥
पीपर के पतवा जइसे डोलेले, जइसे डोले जलके सेंवार[३]।
हम धनि[४] डोलिलें बलमु[५] बिनु, मोहि छाड़ि गइलें नन्दलाल ॥ २ ॥
आँगन मोरा लेखे[६] कुञ्जबन, घरवा में फेंकरे[७] सियार।
सेजिया पर लोटे काली नगिनिया, जेहि देखि जियरा डेराय ॥ ३ ॥
बिना रे सोना के कइसी अभरन[८], मोती बिना कइसी सिंगार।
बिना रे अमा के कइसी[९] नइहर, पिया बिनु कइसी ससुरार ॥ ४ ॥
रचि-रचि कोठवा रे उठवलों, रचि-रचि कटलों दुआर[१०]।
सखिअन संगे दुख भोगब, जबलें अइहें नन्दलाल ॥ ५ ॥

एक सखी दूसरे से कहती कि हे सखि! सुनो, अब कन्हैया! मेरे प्रियतम— योगी हो गए, मैं भी योगिनि हो जाऊँगी। अब कोई कुसुम्भ का फूल न लगावे और न कपास बोवे। अब मैं अपनी चुनरी लाल रँग से नहीं रँगूँगी। प्रियतम के बिना चारों तरफ अन्धकार है ॥ १ ॥

जिस प्रकार पीपल के वृक्ष के पत्ते हिलते हैं और जल में सेवार डोलता फिरता है उसी प्रकार मैं प्राणवल्लभ के बिना डाँवाडोल हो रही हूँ। क्योंकि नन्दलाल—मेरे प्रियतम—मुझको छोड़ कर चले गए ॥ २ ॥

अब आँगन मेरे लिए कुञ्जबन के सदृश है। घर में गीदड़ आवाज कर रहा है। बिस्तरे पर काली नागिनी लोट रही है जिसको देख कर मेरा हृदय भयभीत हो रहा है ॥ ३ ॥

---

[१]कुसुम्भ पुष्प। [२]चारों ओर। [३]शैवाल। [४]स्त्री। [५]प्रिय। [६]लिये। [७]आवाज़ करना। [८]आभरण। [९]कैसे। [१०]द्वार।

बिना सोना के आभूषण कैसा ? बिना मोती के शृङ्गार कैसा ? बिना माता के नैहर कैसा ? उसी प्रकार बिना प्रियतम के ससुराल कैसी ॥ ४ ॥

बना-बना कर घर बनाया और दरवाजा तैयार किया। जब तक नन्दलाल मेरे पति नहीं आवेंगे तब तक सखियों के साथ मैं दुख भोगूँगी ॥ ५ ॥

सन्दर्भ—पुत्रजन्मोत्सव का वर्णन

(३२)

सासु जे भेजेलि नउनिया,[1] त ननदि बरिनिया[2] हू रे।
ललना गोतिनि अपने प्रभु जाइ, गोतिनिया हमहीं पाइच[3] रे ॥ १ ॥
सासु जे आवेलि गवइत, ननदि बजवइत रे।
ललना गोतिनि आवेलि विसाधल,[4] गोतिनि के घर में सोहर रे ॥ २ ॥
सासु लुटावेलि रुपैया, त ननदि मोहरवा रे।
ललना गोतिनि लुटावेलि बनडरवा, गोतिनिया फेरिहें पाइच रे ॥ ३ ॥
सासु के डासलि खटियवा, ननदि के मचियवा हू रे।
ललना गोतिनि के पलंग रेसमिया, गोतिनिया फेरिहें पाइच रे ॥ ४ ॥
सासु के दिहलि चुनरिया, त ननदि पियरिया हू रे।
गोतिनि के लहरा पटोरवा,[5] गोतिनिया फेरिहें पाइच रे ॥ ५ ॥

सास ने नाऊ की स्त्री को भेजा, तो ननद ने बारी की स्त्री को भेजा। परन्तु दायाद की स्त्री स्वयं आई। हे प्रिय ! मुझे इन लोगों का कर्जा चुकाना होगा ॥ १ ॥

सास गाती हुई आ रही है। ननद बाजा बजाती हुई आ रही है। लेकिन गोतिनि [दायाद की स्त्री] क्रुद्ध हो कर आ रही है; क्योंकि गोतिनि के घर में सोहर गाया जा रहा है और इस शुभ काम से वह ईर्ष्या के मारे जल रही है ॥ २ ॥

इस उत्सव के अवसर पर सास रुपया लुटा रही हैं। ननद मोहर लुटा रही

---

[1]नाइन। [2]बारिन। [3]उधार। [4]क्रुद्ध। [5]कपड़ा।

हैं, परन्तु गोतिनि बनउर [कपास का बीज] लुटा रही है; यद्यपि उसे मेरा पाइच [ऋण] लौटा देना उचित था ॥ ३ ॥

बच्चे की माता ने सास के लिये खटिया बिछा दिया, और ननद के बैठने के लिये मचिया रख दिया। परन्तु अपनी गोतिनि के लिये रेशम का पलंग बिछा दिया, क्योंकि उसे अपना पाइच [ऋण] लौटाना था ॥ ४ ॥

उसने सास को चुनरी दिया; ननद को पियरी दिया परन्तु गोतिनि के लिये कामदार रेशम की साड़ी पहनने को दिया। इस प्रकार उसने अपने उपकार दिखलाने वाले के प्रति ही नहीं बल्कि अपकार करने वाले के प्रति भी अपने पाइच [ऋण] को लौटाकर, अपनी कृतज्ञता का प्रदर्शन किया ॥ ५ ॥

---

२. खेलवना के गीत

खेलवना के गीतों को भी सोहर के अन्तर्गत ही समझना चाहिए, क्योंकि सोहर की भाँति इन गीतों का विषय भी पुत्र-जन्म ही है। इन गीतों में कहीं पर पुत्र-जन्म के पहले की अवस्था—गर्भावस्था—का वर्णन है तो कहीं पर पुत्र-जन्म होने के बाद की अवस्था का। विषय की इसी समानता के कारण मैंने इन गीतों को सोहर के ही अन्तर्गत रखा है। यहाँ कुछ खेलवना के गीत दिये जाते हैं—

सन्दर्भ—स्त्री की प्रसव-पीड़ा के कारण पति का दुःखी होना

(३३)

महल में दियरा[1] बारि[2] अइलों, सइयाँ के जगाई अइलों रे।
प्रभु जी के अँगुरी ममोरि अइलों, अब की बेदनिया अँगवो[3] रे ॥१॥
उहवाँ से जे अइलों त मचिया बइठलों, आमा पूछे हो।
बबुआ ताहार मनवा उदास, काहे के मन बेदिल हो ॥२॥
उहवाँ से जे अइलों त, पासावा खेलत यार पूछसु हो।
यार काहे राउर मनवा उदास, काहे रे मन बेदिल[4] हो ॥३॥
पानावा अइसन धनिया पातरि[5] हई हो।
कुसुमवा अइसन सुन्दरि हई हो ॥४॥
यार जी उहे धनिया बेदने बेयाकुल[6]।
ओहि[7] कारन मनवा बेदिल भइल हो ॥५॥

कोई स्त्री गर्भवती है। वह गर्भ की वेदना से व्याकुल होकर महल में जाकर दीप जलाती है और अपने पति को जगाती है। जब वह अपना

[1]दीप। [2]जलाना। [3]सहन कर लो। [4]दुःखी। [5]पतली। [6]व्याकुल [7]उसी।

दुःख सुनाती है तब पति कहता है कि इस दुःख को किसी प्रकार सहन कर लो ॥ १ ॥

महल से उठ कर पति आया और मचिया पर बैठ गया। तब माता ने उससे पूछा कि बेटा! तुम आज क्यों दुःखी हो ॥ २ ॥

जुआ खेलते हुए उसके मित्र ने उससे पूछा कि तुम्हारा चित्त आज क्यों दुःखी है ॥ ३ ॥

इस पर पति ने उत्तर दिया कि मेरी स्त्री पान के समान पतली है और फूल के समान सुन्दर है ॥ ४ ॥

आज वही मेरी प्रिय स्त्री गर्भ की वेदना से व्याकुल है, इसी कारण से मेरा चित्त आज इतना दुःखी है ॥ ५ ॥

सन्दर्भ--ननद-भौजाई के कलह का वर्णन

(३४)

इयारि पियारी[१] मोरी ननदी; से हो चलि आवेलि हो।
ए ननदी बइठ ना बाबा चउपरिया[२]; मंगल एक गावहु हो ॥ १ ॥
गाइले ए भउजी गाइले; गाइ के सुनाइले हो।
ए भउजी हमरा का देबु[३] दान; हरसि घरवा जाइबि हो ॥ २ ॥
माँगहु ए ननदी माँगहु; माँगी के सुनावहु हो।
ननदी जो तोरा कुछु हिरदा[४] समाऊ; सेहोरे[५] कुछ माँगहु हो ॥ ३ ॥
माँगीले ए भउजी माँगीले; माँगि के सुनाइले हो।
भउजी बाबा के दीहल हारावा; से हो हम माँगिले हो ॥ ४ ॥
देबों मैं ए ननद देबों; नाक के नथियवा,[६] झूलनी संगे हो।
ननद एक मैं ना देबों आपन हार; हार हमरा बाबा के हो ॥ ५ ॥
रोवत जाले ननदिया[७] बिलखात भयनवा[८] नु हो।
हँसइत जावे ननदोइया;[९] भलहिं दर्प टूटल हो ॥ ६ ॥

---

[१]प्यारी। [२]चौपाल। [३]दोगी। [४]हृदय। [५]वह। [६]नथिया। [७]ननद। [८]भानजा। [९]ननद का पति।

आगा जाला भइया, त पाछे से भतीजवा नु हो।
उड़िये चढ़ल सीता जाली;[1] ननद के मनावन[2] हो ॥ ७ ॥
आँगन बहरइत चेरिया; त अवरु लउँड़िया[3] नु हो।
रानी आवतारि भउजी तोहार; तोहि के मनावन हो ॥ ८ ॥
ऊँच मन्दिर पुर पाटन, बेतवा[4] के छाजनि हो।
ए जी ताहि चढ़ि देखेली सहोद्रा; भऊजी चलि आवसु हो ॥ ९ ॥
चेरिया खोरि खोरि डास बिछौना, भउजी चलि आवसु हो।
भले कइलू ए ननद भले कइलू; भले लाजावावेलु हो ॥ १० ॥
भले कइलू ए भउजी भले कइलू; भले चलि अइलुनु[5] हो।
दरसन आपन देखवलु; हामार मन राखेलु[6] हो ॥ ११ ॥

मेरी प्यारी ननद अपनी ससुराल से चली आ रही है। तब भावज कहती है कि तुम इस चौपाल में बैठ जाओ और मेरे पुत्र-जन्म के उत्सव पर एक मंगल गीत गाओ ॥ १ ॥

ननद ने कहा—मैं गाना अवश्य गाऊँगी। परन्तु तुम यह बतलाओ कि तुम मुझे क्या दोगी जिसे लेकर मैं प्रसन्नतापूर्वक अपनी ससुराल जाऊँगी ॥२॥

भावज ने कहा—जो कुछ तुम्हारे हृदय में हो उसे माँगो। मैं जरूर दूँगी ॥३॥

ननद ने कहा—बाबा ने जो हार तुम्हें दिया है उसे तुम मुझे दे दो ॥४॥

भावज ने कहा—मैं तुम्हें नाक को नथिया और झूलनी एक साथ दूँगी, परन्तु हार मैं नहीं दे सकती, क्योंकि वह मेरे पिता का दिया हुआ है ॥ ५ ॥

यह सुनकर ननद रोती हुई अपनी ससुराल चली गई और उसका पति यह कहते हुए हँसता चला जा रहा था कि अच्छा हुआ कि इसका गर्व टूट गया ॥ ६ ॥

अपनी बहन को मनाने के लिये आगे भाई तथा पीछे उसका भतीजा चला और पालकी में उसकी भावज सीता देवी भी चलीं ॥ ७ ॥

---

[1]जाती है। [2]प्रसन्न करने के लिये। [3]दासी। [4]बेंत। [5]चली आई। [6]मन को सन्तुष्ट करती हो।

भावज को आते देख आँगन में झाड़ू देने वाली दासी और नौकरानी ने रानी से कहा कि आपकी भावज चली आ रही हैं ॥ ८ ॥

यह सुन कर अपने मकान की छत पर जाकर सहोदरा ने अपनी भावज को आते हुए देखा ॥ ९ ॥

ननद ने दासियों को आज्ञा दी कि नगर की प्रत्येक गली में बिछौना बिछा दो जिससे भावज आनन्द से चली आवें। भावज ने अपना स्वागत देख कहा कि ऐ ननद! तुमने आज मुझे खूब लज्जित किया ॥ १० ॥

तब ननद ने उत्तर दिया कि ऐ भावज! तुमने अच्छा किया कि तुमने मेरे विक्षुब्ध मन को सन्तुष्ट कर दिया ॥ ११ ॥

सन्दर्भ—सास तथा बधू में मनोमालिन्य का वर्णन।
बधू की उक्ति सास के प्रति

(३५)

सासु अइहें ना हामार; आरे का करिहें।
अबटन आपन आमा बोलइबों; हमें रँगीले के का केहु करिहें ॥ १ ॥
आरे ननद ना अइहें हमार का करिहें, हमें अइसन सुन्दरि के का केहु करिहें
आरे बबुआ खेलावन बहिना बोलइबों, हमार का करिहें ॥ २ ॥
आरे हलुवा बनावन आपन भउजी बोलइबों।
आरे गोतिनी ना अइहें; हामार का करिहें ॥ ३ ॥
हमें रँगीली के का केहु करिहें।
हमरा अइसन सुन्दरि के का केहु करिहें ॥ ४ ॥

कोई स्त्री अपने पति के साथ परदेस में है। उसे लड़का होने वाला है। तब वह कहती है कि यदि मेरी सास सहायता के लिये नहीं आवेंगी तो हमारा क्या करेंगी, बच्चे को उबटन लगाने के लिये मैं अपनी माता को बुला लूँगी ॥ १ ॥

यदि हमारी ननद भी नहीं आवेंगी तो मेरा क्या नुकसान होगा। मैं बच्चे को खेलाने के लिये अपनी बहन को बुला लूँगी ॥ २ ॥

मैं हलुवा बनाने के लिए अपनी भावज को बुला लूँगी। यदि मेरी "गोतिन" नहीं आवेंगी तो मेरा क्या नुकसान होगा ॥ ३ ॥

हमारी जैसी सुन्दर स्त्री का कोई क्या बुरा कर सकता है ॥ ४ ॥

सन्दर्भ—गायिका स्त्रियों की उक्ति पुत्रवती बधू के प्रति

(३६)

ओठे सुखाले कंठ सुखाले; मोरे बाला जियरा[1] ।
एक बीरा पनवों[2] ना दिहलु हो; मोरे बाला जियरा ॥ १ ॥
बइठे के चटइयो[3] ना दिहलु[4] हो; मोरे बाला जियरा ।
केहु के दुआरे का कहवि हो; मोरे बाला जियरा ॥ २ ॥
अब नाहि गावन आइबि[5] हो; मोरे बाला जियरा ।
बड़ा के खखनवा[6] के होरिला[7] हो; मोरे बाला जियरा ॥ ३ ॥

पुत्र पैदा होने पर स्त्रियाँ गाना गाती हैं। ऐसे ही अवसर पर गाने के लिये आई हुई स्त्रियाँ लड़के की माता से शिकायत करती हैं कि हमारा गला और कंठ सूख गया परन्तु तुमने एक भी बीड़ा पान खाने को नहीं दिया ॥ १ ॥

तुमने हम लोगों को बैठने के लिये चटाई भी नहीं दी। किसी के सामने हम लोग जाकर क्या कहेंगी ॥ २ ॥

तुम्हारा लड़का बड़ी लालसा के बाद पैदा हुआ है, परन्तु हमारा आदर न होने के कारण अब हम लोग गाना गाने के लिये नहीं आवेंगी ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—स्त्री की अत्यधिक प्रसव-पीड़ा का मार्मिक वर्णन

(३७)

बरहो बरिस पर अइले; आँगना में ठाढ़ भइले ए राम ।
घरवा अलोत[8] गरभ रहि गइले; कवनी बइरिनिया[9] सेज डासे हो राम॥१॥
कवनी बइरिनिया भइया भेजेले; हमारा के बेदन[10] ए राम ।
सासु बइरिनिया सेज डासेले; फूल छितरावे ए राम ॥ २ ॥

---

[1]हृदय। [2]पान। [3]चटाई। [4]दिया। [5]आऊँगी। [6]लालसा। [7]पुत्र,। [8]छिपकर। [9]बैरिन। [10]वेदना, दुःख।

ननदी बइरिनिया भइया भेजेले; हमरा के वेदन ए राम।
अब ना सइँया सँगे सूतवि; नयना मेराइवि[1] ए राम ॥ ३ ॥
अब ना मैं होरिला खेलाइवि; गरभ दुख सहवि ए राम ॥ ४ ॥
आधी राति गइली पहर[2] राति; होरिला जनमेले ए राम।
ए राम बाजेला अनद[3] बधाव[4]; महल उठे सोहर ए राम ॥ ५ ॥
अब हम सँइया सँगे सूतवि[5]; नयना मेराइवि ए राम।
अब हम होरिला खेलाइवि; गाना गवाइबि ए राम ॥ ६ ॥

स्त्री कह रही है कि मेरा पति परदेस से बारह वर्ष के बाद लौट कर आया और आँगन में खड़ा हो गया। जब वह रात को मेरे महल में चुपचाप आया, तब मैं उसके साथ सोयी और मेरे गर्भ रह गया ॥ १ ॥

जब गर्भ के बड़े होने पर उस स्त्री को वेदना होने लगी तब वह कहती है कि किस वैरिन ने मेरे पास पति को भेजा था जिसके कारण आज मुझे इतनी वेदना हो रही है ॥ २ ॥

मालूम होता है सास ने सेज बिछाकर फूल बिखेर दिये थे और मेरी ननद ने अपने भाई को मेरे पास भेजा था। अब मैं अपने पति के साथ नहीं सोऊँगी और उससे आँखें नहीं मिलाऊँगी ॥ ३ ॥

अब मैं गर्भ के दुःख को धारण नहीं कर सकती और पुत्र को नहीं खिलऊँगी। उसी दिन आधी रात को लड़का पैदा हो गया और इस खुशी में महल में मंगल बाजा बजने लगा तथा सोहर गाया जाने लगा ॥ ४ । ५ ॥

पुत्र-जन्म होने से प्रसन्न वह स्त्री कहती है कि अब मैं फिर अपने पति के साथ सोऊँगी और उससे आँखें मिलाऊँगी। अब मैं अपने पुत्र को खेलाऊँगी और गाना गवाऊँगी ॥ ६ ॥

इस गीत में युवती स्त्री के प्रथम गर्भ धारण के अवसर पर उसके हृदय में पैदा होने वाले भावों का बहुत ही सुन्दर वर्णन है जो अत्यन्त स्वाभाविक है।

---

[1]आँखें मिलाऊँगी, नज़र लड़ाऊँगी। [2]प्रहर रात्रि। [3]आनन्द। [4]मंगल गाना। [5]सोऊँगी।

सन्दर्भ—गर्भवती भावज का ननद के द्वारा सास आदि को ज्ञापन

(३८)

अब पूस फूले सरसउवा[१]; आरे बाबू हालना[२] ।
अब भउजी के मुँह पियरइले[३]; आरे बाबू हालना ॥ १ ॥
आरे भउजी रे बाड़ी गरभ से; आरे बाबू हालना ।
अब ननदी रे लुबुलुबिया[४]; आरे बाबू हालना ॥ २ ॥
अब जाई सासु से जनवली; आरे बाबू हालना ।
आरे सासु रे लुबुलुबिया; आरे बाबू हालना ॥ ३ ॥
अब जाई ससुर से जनवली[५]; आरे बाबू हालना ॥ ४ ॥
आरे गोतिनि रे लुबुलुबिया; आरे बाबू हालना ।
अब जाई भसुरे से जनवली; आरे बाबू हालना ॥ ५ ॥
आरे भसुरे रे लुबुलुबुइया; आरे बाबू हालना ।
अब जाई बढ़इया से जनवले; आरे बाबू हालना ॥ ६ ॥
आरे बढ़इया रे लुबुलुबिया; आरे बाबू हालना ।
अब उड़नखटोला[६] गढ़ि[७] दिहले; आरे बाबू हालना ॥ ७ ॥
अब ताहि पर सुतेला[८] होरिलवा; आरे बाबू हालना ॥ ८ ॥

इस गीत का अर्थ सरल है ।

सन्दर्भ—गर्भवती स्त्री का वर्णन

(३९)

पहिला महीना जब चढ़ल ए पिया; सासु के बोलिया न सुहाई ।
साँच ए धनी साँच; हमरो दुलारी धनी साँच ॥ १ ॥
दूसरो महीना जब चढ़ल ए पिया; ननदी के बोलिया ना सुहाई ।
तीसरो महीना जब चढ़ल ए पिया; गोतिनी के बोलिया न सुहाई ॥२॥

[१]सरसों । [२]हिलाऊँगी । [३]पीला हो गया । [४]क्षुद्र स्वभाव वाली ।—
[५]बताया । [६]पालना । [७]तैयार किया । बनाया । [८]सोता है ।

चउथा महीना जब चढ़ल ए पिया; राउर बोलिया ना सुहाई।
साँच ए धनी साँच, हमरो दुलारी धनी साँच ॥ ३ ॥

कोई स्त्री गर्भवती है। वह अपने पति से कह रही है कि जब गर्भ-धारण का पहिला महीना शुरू हुआ तब मुझे सास की बोली अच्छी नहीं लगती ॥ १ ॥

दूसरा महीना शुरू होने पर ननद की और तीसरा महीना शुरू होने पर "गोतिन" की बोली भी अच्छी नहीं लगती, (क्योंकि ये लोग काम करने को कहते हैं और गर्भ-धारण के कारण मैं काम करने में असमर्थ हूँ) ॥ २ ॥

ऐ पति! चौथा महीना चढ़ने पर तुम्हारी बोली भी अच्छी नहीं लगती। तब पति कहता है कि ऐ स्त्री! तुम ठीक कह रही हो। तुम्हारा कहना अक्षरशः सत्य है ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—भावज के पुत्र पैदा होने पर ननद का नेग माँगना

(४०)

जाहु तोरा ए भऊजी होरिला होइहे; तबे आइबि तोरा आँगनवा।
नथिया भी लेबों, झुलनी भी लेवों; लेवों हार अवरु जोसनवा[1] ॥ १ ॥
तबे भऊजी आइबि तोरा आँगनवा।
हलका भी लेबों, हँसुली भी लेवों; लेवों जड़ाऊ काँगानवा।
कंठा भी लेवों, टीका[2] भी लेवों, लेवों सब सोना के गाहानवा ॥ २ ॥
तबे भऊजी आइबि तोरे आँगनवा।

ननद अपनी भावज से कह रही है कि ए भावज! तुम्हें लड़का होने वाला है। अतः मैं जब तुमसे नथिया, झुलनी, हार, हलका, हँसुली, कँगना, कंठा, मँग-टीका और अन्य सोने के गहने लूँगी तभी मैं तुम्हारे आँगन अथवा घर में आऊँगी अन्यथा नहीं ॥ १ । २ ॥

---

[1]हाथ का एक गहना। [2] सिर का एक गहना।

३. जनेऊ के गीत

भोजपुरी समाज में जनेऊ तथा विवाह दो प्रधान संस्कार समझे जाते हैं। यद्यपि विवाह के समान जनेऊ के अवसर पर धूमधाम विशेष नहीं रहता, तो भी उच्च वर्ण के लोग (विशेष कर ब्राह्मण) बड़े उत्साह के साथ अपने बालकों का जनेऊ करते हैं। धनी तथा प्रतिष्ठित लोग इस संस्कार को सम्पादित करने के लिये किसी विद्वान् पुरुष को अथवा काशी के 'वेदुआ' (वैदिक) को बुलाते हैं और संस्कार के अन्त में उसे भूयसी दक्षिणा देकर अपने को कृत-कृत्य समझते हैं। यज्ञोपवीत संस्कार के अवसर पर वाह्याडम्बरों पर जितना ध्यान दिया जाता है उतना उसके मूल सिद्धान्तों पर नहीं।

यज्ञोपवीत संस्कार होने के एक दिन पहले बालक के अभ्यासार्थ उसे एक कच्चे सूत का धागा इसलिये पहिना देते हैं कि वह शौच के समय असली जनेऊ को कान पर चढ़ाना सीख जाय। हमारे यहाँ इस कच्चे सूत के धागे को 'गोबर जनेऊ' कहते हैं। दूसरे दिन 'वेदुआ' जी आते हैं और बालक का जनेऊ-संस्कार प्रारम्भ करते हैं। जनेऊ देने के पहले बालक का 'चूड़ाकर्म' संस्कार किया जाता है। इसके बाद स्त्रियाँ उसे स्नान कराती हैं। इस समय वे अपने कलकण्ठ से

'पाँच सखी आहो मीलिके,
हरदी चढ़ाव हमरा लाल के।
बारहो बाजन बजाइके,
हरदी चढ़ाव हमरा लाल के॥'

गाती जाती हैं और बड़े प्रेम से बालक के शरीर में हल्दी लगाकर उसे स्नान कराती हैं। स्नान कर लेने के बाद वैदिकजी उस बालक का यज्ञोपवीत संस्कार कराते हैं। यज्ञोपवीत धारण करने के पश्चात् वह बालक ब्रह्मचारी गुरुकुल में पढ़ने के लिये धन की भिक्षा करता है, जिसे 'भीख माँगना' कहते

हैं। वह अपनी माता, कुल की स्त्रियाँ तथा अन्य सम्बन्धियों के पास जाता है और भीख माँगता है। यह भीख तीन बार माँगी जाती है। पहली भीख आचार्य को दी जाती है, दूसरी पिता को तथा तीसरी माता को। उच्च तथा धनी घरानों में ब्रह्मचारी की इस भिक्षा में हजारों रुपये तक मिलते हैं जो बहुत प्रतिष्ठा-सूचक समझा जाता है। परन्तु भिक्षा के इन रुपयों में से बेचारे आचार्य को बहुत थोड़ा धन मिलता है। भिक्षा माँगने के पश्चात् ब्रह्मचारी (बालक) विद्या पढ़ने के लिये काशी या काश्मीर को चल पड़ता है, परन्तु अभी दो-चार कदम भी चलने नहीं पाता कि उसके घर वाले 'बबुआ लौटि आव' कहकर उसे वापस बुला लेते हैं और इस प्रकार ब्रह्मचर्याश्रम का सारा कार्य केवल कुछ मिनटों में ही समाप्त कर दिया जाता है। ब्रह्मचारी के काशी से पढ़कर लौटने के अभिनय के पश्चात् उसका समावर्तन संस्कार किया जाता है। उसके कौपीन, पादुका तथा मृगचर्म को हटाकर उसे नूतन वस्त्रों से सुशोभित किया जाता है, अनेक प्रकार के अंगराग और आभूषण लगाये जाते हैं। वैदिकजी तथा आचार्यजी उस स्नातक को सदुपदेश देते हैं। इस प्रकार यह जनेऊ का संस्कार समाप्त हो जाता है। प्राचीन काल में चूडाकर्म, यज्ञोपवीत, वेदारंभ तथा समावर्तन ये चार पृथक् पृथक् संस्कार थे और भिन्न-भिन्न समयों पर किये जाते थे, परन्तु आजकल ये चारों संस्कार केवल चौबीस घण्टों के अन्दर समाप्त कर दिये जाते हैं।

जनेऊ के जो गीत आगे लिखे गये हैं उनमें प्रायः इस संस्कार में किये जाने वाले विभिन्न कृत्यों का वर्णन पाया जाता है। कहीं पर ब्रह्मचारी किसी स्त्री को माता कहकर सम्बोधित करता हुआ भिक्षा देने की प्रार्थना करता है, तो कहीं वह काशी या काश्मीर जाने के लिये प्रस्तुत है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि प्राचीन काल में काशी और काश्मीर ही संस्कृत विद्या के प्रधान केन्द्र-स्थल थे जहाँ जाकर ब्रह्मचारी विद्याध्ययन करते थे। एक गीत में ब्रह्मचारी भिक्षा माँग रहा है तब गृहस्वामिनी उससे पूछती है कि—

"किया लेवे बरुवा रे धोती से पोथी; किया लेवे पीयर जनेव।
किया लेवे बरुवा रे सोबरन भिखिया; जाही घरे कान्हर जनेव॥"

यज्ञोपवीत के अवसर पर ब्रह्मचारी को पलाश का दण्ड, मूँज की कौपीन और मृगछाला धारण करना पड़ता है। इसका भी उल्लेख इन गीतों में कहीं-कहीं मिलता है। एक गीत में एक स्त्री कह रही है—

"ताही बने चलले कवन बाबा; काटेले परास डाँडा।
खोजेले मिरिग छाला; हमरा दुलरुवा के जनेव॥"

इस प्रकार इन जनेऊ के गीतों में कहीं पर यज्ञोपवीत में विहित विभिन्न कृत्यों का वर्णन है तो कहीं माता और पिता के आनन्द और उछाह का परिचय दिया गया है। कहीं पर काशी जाने के लिये भिक्षा की माँग है तो कहीं पलाश का दण्ड और मृगचर्म का धारण। आनन्द का अवसर होने के कारण इन गीतों में उतना करुण-रस नहीं पाया जाता जितना अन्य गीतों में। अब मैं पाठकों के रसास्वादन के लिये जनेऊ के कुछ गीत उपस्थित करता हूँ।

सन्दर्भ—बहन के काते हुए सूत से भाई के जनेऊ पहनने का वर्णन

(४१)

कवनी सुहइया सुत कातेली भल ओटेली।
पुरेले[1] कवन राम जनेऊ कवन बरुआ[2] पहिरसु॥ १॥
जानकी सुहइया सुत कातेली भल ओटेली।
पुरेले केसव राम जनेऊ बवन बरुआ पहिरसु॥ २॥
सितवन्ती सुहइया[3] सुत कातेली भल ओटेली,
पुरेले सुरुज राम जनेऊ उमा बरुआ पहिरसु॥ ३॥
अन्नपूर्णा सुहइया सुत कातेली भल ओटेली
पुरेले मंगला प्रसाद जनेऊ सुगन बरुआ पहिरसु॥ ४॥

---

[1]पूरना (गाँठ देकर तैयार करना)। [2]यज्ञोपवीत का अधिकारी बालक।
[3]लड़की।

कौन सी लड़की सूत कात रही है ? कौन ओट रही है ? कौन पुरुष जनेऊ को पूर कर तैयार कर रहा है, तथा कौन लड़का इस यज्ञोपवीत को पहिनेगा ॥ १ ॥

जानकी सूत कात रही है तथा ओट रही है। केशवप्रसाद जनेऊ को पूर रहे हैं और बबन जी उसको पहनेंगे ॥ २ ॥

सितवन्ती सूत कात रही है तथा ओट रही है। सूरजप्रसाद जनेऊ पूर रहे हैं तथा उमाशंकर उसको पहनेंगे ॥ ३ ॥

अन्नपूर्णा सूत कात रही है तथा ओट रही है। मंगलाप्रसाद उसको पूर रहे हैं तथा सुगनजी उसको पहनेंगे ॥ ४ ॥

प्राचीन काल में विलायत से बनकर आये हुए सूत के जनेऊ नहीं बना करते थे, बल्कि घर में ही सूत काता जाता था और उसी के यज्ञोपवीत बनाये जाते थे। उपर्युक्त गीत भारत के इसी प्राचीन कुटीर-शिल्प की सूचना दे रहे हैं। उस समय बहन सूत कातती थी और उसी सूत के बने जनेऊ को उसका भाई पहनता था।

संदर्भ—पुत्र के यज्ञोपवीत संस्कार के लिये पिता के द्वारा पलाश-दण्ड का लाना

(४२)

ए जाहि बने सिकियो ना डोलेला बघओ ना गरजेला रे,
ए ताहि बने चलले कवन बाबा, काटेले पारास डाँड़ा खोजेले मिरिग छाला रे ॥ १ ॥

ए हमरा दुलरुवा के जनेव हवे,
काटिले पारास डाँड़ा, खोजिले मिरिग छाला रे ॥ २ ॥

जिस बन में (हवा के अभाव में) एक पत्ता भी नहीं डोलता और बाघ भी नहीं गरजता है, उसी बन में पिता पलाश का दण्ड काटने के लिये और मृगछाला खोजने के लिये चल पड़ा ॥ १ ॥

वह कहता है कि हमारे पुत्र का जनेऊ होने वाला है, इसलिये मैं पलाश का दण्ड काट रहा हूँ तथा मृगछाला खोज रहा हूँ ॥ २ ॥

यज्ञोपवीत के अवसर पर ब्रह्मचारी को पलाश का दण्ड धारण करने के लिये तथा मृगछाला पहनने के लिये दिया जाता है। इसी रीति का संकेत उक्त गीत में है।

सन्दर्भ—भाई के यज्ञोपवीत के अवसर पर जल न बरसने के लिये देवता से प्रार्थना

(४३)

मोरा पिछुअरवा वा छाछरी पीपरि, अरु बा छाछरी पीपरि ;
ताहि तर ठाढ़ भइली कवनी देई, अदीत मनावेलि हो ॥ १ ॥
अरे देव गरजहु, जनि देव बरसहु, नेंवत हम जाइबि रे ;
अरे हामारा दुलरुवा के जनेव, नेवत हम जाइबि रे ॥ २ ॥

भाई के यज्ञोपवीत संस्कार के अवसर पर सम्मिलित होने को व्याकुल कोई बहन कहती है कि मेरे घर के पीछे पीपल का पेड़ है। उसके नीचे खड़ी होकर वह देवी सूर्य (यहाँ बादल) से प्रार्थना कर रही है ॥ १ ॥

हे देव ! तुम न तो गरजो और न बरसो, मैं न्योता में अपने मायके जाऊँगी। मेरे प्यारे भाई का जनेऊ होने वाला है, उस समय न्योता पर मैं अवश्य जाऊँगी ॥ २ ॥

इस गीत में बहन का प्रेम भाई के प्रति उमड़ा पड़ता है।

सन्दर्भ--बालक ब्रह्मचारी के द्वारा जनेऊ की विधि पूछना

(४४)

आरे बइठे कवन बाबा कवन जाँघा जोरी,
आरे तहवाँ कवन बरुआ रोदाना पसारे रे ॥ १ ॥
माई हमरो जनेउवा रे बाबा कवन विधि होइहे;
आरे पहिले परिहे मूँज के डाँड़ा, तब मिरिग छाला, तब परिहे बरुआ रतन जनेउवा रे ॥ २ ॥

पिता अपने पुत्र का यज्ञोपवीत संस्कार करने के लिये चौके पर जंघा समेट कर बैठा हुआ है। वहाँ पर उसका छोटा पुत्र आकर रोने लगा ॥ १ ॥

वह कहने लगा—"ए माता मेरा जनेऊ किस प्रकार से होगा ?" इस पर माता ने उत्तर दिया कि "पहिले तुम्हें मूँज का डण्डा (करधनी) पहनाया जावेगा, फिर मृगछाला पहनाया जावेगा और अन्त में जनेऊ दिया जायेगा ॥ २ ॥

सन्दर्भ—अधिक बाल बढ़ जाने के कारण बालक के द्वारा जनेऊ करने का आग्रह : पुत्र की उक्ति पिता के प्रति

(४५)

साभावा बइठल तुहु कवन बाबा रे,
बाबा लापरि[1] मोरि छेकेले लिलार[2] ॥ १ ॥
लपरिया जग मुड़नी रे; अगहन दीनवा;
कुदिन बरुवा रे बरुवा; आवे देहु जेठ, बइसाख[3] ॥ २ ॥
लपरिया जग मुड़नी रे, नव मन गेहुँवा पिसाइबी;
बरुवा रे बरुवा नेवतबि[4] बाभाना[5] पचास ॥ ३ ॥

पिता सभा में बैठा हुआ था। उस समय उसके पुत्र ने आकर उससे कहा कि पिता जी ! मेरे सिर के बाल बड़े होने के कारण ललाट पर चले आ रहे हैं ॥ १ ॥

पिता ने कहा कि इस समय अगहन का महीना है। जनेऊ के लिये समय ठीक नहीं है। जेठ या बैसाख का महीना आने दो ॥ २ ॥

उस समय नव मन गेहूँ पिसा करके और पचास ब्राह्मणों को निमन्त्रित करके मैं तुम्हारा जनेऊ करूँगा ॥ ३ ॥

---

[1]बाल। [2]ललाट। [3]बैसाख। [4]निमन्त्रण देना। [5]ब्राह्मण।

सन्दर्भ—ब्रह्मचारी के द्वारा भिक्षा-याचन। किसी स्त्री की उक्ति ब्रह्मचारी के प्रति

(४६)

कहवहीं[1] से उजे अइलेरे बरुवा, कइसन[2] बीरीति[3] तोहार,
केकर[4] सन्तति तू हव ए बरुवा, कवन देई अँगन भइली ठाढ़ ॥ १ ॥
किया लेवे बरुवा रे धोती से पोथी[5],
किया लेवे पियर जनेव ॥ २ ॥
किया लेवे बरुवा रे सोबरनी के भिखिया,
जाहि घर कान्हर जनेव ॥ ३ ॥

कोई ब्रह्मचारी भिक्षा माँगने के लिये किसी गृहस्थ के घर पर गया हुआ है। उस ब्रह्मचारी को देखकर गृहस्वामिनी आती है और उससे पूछती है कि ऐ ब्रह्मचारी तुम कहाँ से आ रहे हो? तुम्हारी वृत्ति (जीविका) क्या है तथा तुम किसके पुत्र हो? ॥ १ ॥

ऐ ब्रह्मचारी क्या तुम धोती लोगे? अथवा पढ़ने के लिये पुस्तक लोगे? अथवा पहिनने के लिये पीला जनेऊ लोगे? ॥ २ ॥

क्या तुम्हारे घर में यज्ञोपवीत हो रहा है अतएव भिक्षा माँगने के लिये आये हो? ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—ब्रह्मचारी के द्वारा भिक्षायाचन

(४७)

कासी जी से उजे अइलो रे बरुवा ठाढ़ भइले ॥१॥
कवन बाबा दुआर भीखि देहु भीखि देहु,
मायरी कवनी देई हम दूर देसी ही लोग ॥२॥
दीहल भीखियो ना लेला रे बरुवा,
माँगी घरे चलि जाई ॥३॥

---

[1]कहाँ। [2]कैसी। [3]वृत्ति (जीविका)। [4]किसके। [5]पुस्तक।

काशी जी से आये हुए दो ब्रह्मचारी खड़े हुए हैं और पूछ रहे हैं यह किस बाबा का घर है ॥१॥

ऐ इस गृह की स्वामिनी माता हम लोगों को भिक्षा दो। हम लोग बहुत दूर देश (काशी) के रहने वाले हैं। (परन्तु विलम्ब होने के कारण वे चले जाते हैं) ॥२॥

गृहस्वामिनी कहती है कि ये ब्रह्मचारी दी हुई भिक्षा भी नहीं लेते हैं और घर पर आकर, भिक्षा माँग कर चले जाते हैं ॥३॥

सन्दर्भ—ब्रह्मचारी के द्वारा भिक्षा-याचन

(४८)

चइतही[1] बरुवा तेजी भयो, बइसाखे[2] पहुँचेला रे;
जइबों में जइबों जाही घरे जाहाँ बाबा कवन बाबा रे ॥१॥
उनुकर धोती फिचबों[3], जीहि बाबा नवगुन[4] दीहें रे,
जइबों में जइबों जाही घरे, जाहाँ मायरी कवनी देई रे ॥२॥
भीखि देहु माता असीस देहु, हम त कासी के बाभन[5] रे,
एहि भीखिया[6] के कारने, हम त छोड़लों बानारस रे ॥३॥
ए जाहु हम जनती ए माई, कवन बरुवा अइहें रे;
बालू के खेत जोतइतों, मोतिया उपजइतों[7] रे ॥४॥
कंचन थार[8] भरइतों[9], मोतिया भीखि दीहितों[10] रे ॥५॥

कोई बालक अपने यज्ञोपवीत संस्कार के लिये बड़ा उतावला हो रहा है। वह कहता है कि चैत्र का महीना आ गया और बैसाख का महीना भी आ पहुँचा। मैं वहाँ जाऊँगा जहाँ मेरे गुरु जी रहते हैं। मैं उनकी धोती को निचोड़ूँगा। वे मेरा जनेऊ संस्कार अवश्य करा देंगे ॥१।२॥

मैं अपनी माता के पास जाऊँगा और कहूँगा कि ऐ माता भिक्षा दो और हमें आशीर्वाद दो। हम काशी के ब्राह्मण हैं और इसी भिक्षा के कारण हमने काशी छोड़ा है ॥३॥

---

[1]चैत्र। [2]बैसाख। [3]निचोड़ना। [4]जनेऊ। [5]ब्राह्मण। [6]भिक्षा। [7]पैदा करना। [8]थाली। [9]भर देतीं। [10]देतीं।

तब गृहस्वामिनी कोई माता कह रही है कि यदि मैं जानती कि कोई ब्रह्मचारी मेरे घर भिक्षा के लिये आने वाला है तब मैं बालू के खेत जोतवाती और उसमें मोती पैदा करती ॥४॥

सोने के थाल को भर कर मैं मोती की भिक्षा उसमें देती ॥५॥

सन्दर्भ—स्त्री की उक्ति पति के प्रति। पुत्र को जनेऊ देने की प्रार्थना

(४६)

नव दुअरिया[1] नव खम्भा गड़ावे रे;
ताही नीचे सुतेले कवन बाबा सुख नीन री ॥१॥
आहोरे पइसी जगावेली कवन देई,
सुनु पिया पंडित रे ॥२॥
बरहो बरिसवा[2] के लालाना[3],
बरुवा[4] देइ घालहु रे ॥३॥
आरे धनी छुलछनी बरुवा कुछु चाहेला रे,
अछत, चनन, मोतिया, गेठी बन्हन रे ॥४॥
लाछ टका लाछ[5] धोती मोतिया गेठी बन्हन[6] रे ॥५॥

पुत्र बारह वर्ष का हो गया है। अतः पत्नी पति से पुत्र को जनेऊ देने की प्रार्थना कर रही है। अर्थ स्पष्ट है।

सन्दर्भ—पुत्र के जनेऊ के लिये माता की तैयारी

(५०)

खोरियनि खोरियनि बढ़इया पुकारे रे,
केकरा दुलरुवा के जनेव रे; के लीहि पीढ़वा हमार रे ॥१॥
खोरियनि खोरियनि बाभाना पुकारे रे,
केकरा दुलरुवा के जनेव रे, के लीहि जनेउवा हमार रे ॥२॥
घर में से निकली मतारी, हामारा दुलरुवा के जनेव रे;
हम लेब पीढ़वा बढ़इया के, जनेउवा तोहार रे ॥३॥

---

[1]द्वार। [2]वर्ष। [3]लड़का। [4]जनेऊ। [5]बहुत (अधिक)। [6]ग्रन्थि बन्धन।

गली गली में बढ़ई पुकार रहा है कि किसके प्यारे लड़के का जनेऊ है ? कौन मेरा पीढ़ा लेगा ॥१॥

गली गली में ब्राह्मण घूम रहा है और कहता है कि किसके लड़के का जनेऊ है ? कौन मेरा बनाया जनेऊ लेगा ॥२॥

इन पुकारों को सुन कर पुत्र के प्यार में विभोर माता घर में से निकली और कहा कि मेरे लड़के का जनेऊ है। ऐ बढ़ई ! मैं तुम्हारा पीढ़ा और ब्राह्मण का जनेऊ लूँगी ॥३॥

सन्दर्भ—जनेऊ के समय फूआ के न आने से बालक की चिन्ता

(५१)

गाँगा यमुना परेला ओहार, त कवन फुआ ना अइली रे;
किया फुआ पहिरबि रातुल[1], किया रे दखीन[2] चीरा रे ॥१॥
कवन बहतर[3] रउवा पहिरवि, लपरी परीछवि रे;
पियर बहतर हम पहिरवि लपरी परीछवि[4] रे ॥२॥
नाहि रातुल पहिरबि नाहि रे दखीन चीरा रे ॥३॥

जिस बालक का यज्ञोपवीत होने वाला है वह लड़का कहता है कि बीच में गंगा और जमुना पड़ती हैं। अतः हमारी कौन सी फुआ अभी तक नहीं आई हैं ॥१॥

फुआ के मायके से चली आने पर लड़का पूछता है कि ऐ फुआ तुम चुनरी पहिनोगी या दक्षिण का कपड़ा ? कौनसा वस्त्र पहन कर तुम मुझे परछोगी ॥२॥

तब उसकी फुआ ने उत्तर दिया कि न तो मैं चुनरी पहिनूँगी और न दक्षिण का कपड़ा। मैं पीला वस्त्र पहिनूँगी और उसीसे तुम्हें परीछूँगी ॥३॥

यह गीत उस काल की याद दिलाता है जब आवागमन के साधन बहुत कम थे तथा नदी पार करना कठिन समझा जाता था।

---

[1]चुनरी। [2]दक्षिण। [3]वस्त्र (कपड़ा)। [4]परीछना।

(४) क—विवाह के गीत

अन्य समाजों के समान भोजपुरी समाज में भी विवाह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण संस्कार समझा जाता है। यह बड़ी धूमधाम से सम्पादित किया जाता है। धनी-मानी पुरुषों की तो बात ही क्या साधारण स्थिति के आदमी भी इस शुभावसर पर आवश्यकता से अधिक धन खर्च कर देते हैं और यदि पास में धन न रहा तो कर्ज़ लेकर भी खुले हाथ खर्च करते हैं। भोजपुरी समाज में एक कहावत प्रचलित है "खर्चा होय, सादी कि बादी" अर्थात् रुपया या तो विवाह में खर्च होता है अथवा झगड़े (मुकद्दमे) में। जहाँ के लोगों की यही प्रवृत्ति है वहाँ विवाह जैसे शुभ तथा उछाह भरे अवसर पर कितना धन खर्च किया जाता होगा, इसका सहज ही में अनुमान लगाया जा सकता है।

भोजपुरी समाज में विवाह—विशेषतया लड़कियों का विवाह—एक विषम समस्या बन गई है। इसका प्रधान कारण है तिलक तथा दहेज की कुत्सित प्रथा। लड़कियों का पैदा होना इसीलिये समाज में बुरा समझा जाता है क्योंकि उनके विवाह में पिता को बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है। जब लड़की आठ नव वर्ष की होती है तभी से पिता उसके लिये योग्य वर की खोज में निकलता है। वह स्थान-स्थान पर जाता है परन्तु तिलक की कुत्सित प्रथा के कारण वर का मुँह माँगा दाम न देने के कारण लड़की के विवाह में सफली-भूत नहीं होता। हमारे समाज में लड़के वाले के घर यदि कोई लड़की वाला विवाह के लिये आता है तब वह निर्लज्ज होकर उससे अपने लड़के के लिये मनमाँगा तिलक माँगता है। धनी, प्रतिष्ठित पुरुषों की तो बात ही क्या, साधारण लोग भी हज़ार रुपये के नीचे बातें नहीं करते हैं। इस लेखक ने स्वयं कितने लड़के वालों को यह कहते हुए सुना है कि "बिना हजार के बजार ना लागी" अर्थात् बिना हजार रुपया तिलक लिये मैं अपने लड़के का

विवाह नहीं करने का। इस प्रकार से छल-छद्म से लड़के वाले लड़की वालों से खूब रुपया ऐंठते हैं। अपनी कुलीनता, धन तथा प्रतिष्ठा का अतिरंजित वर्णन कर लड़के वाला कन्या के पिता को लुभा कर उसे अधिक से अधिक रुपया तिलक देने को विवश करता है अन्त में कई स्थानों से भग्नाश लड़की का पिता माँगे गये धन को लाचार होकर देने को प्रस्तुत होता है और तिलक का दिन निश्चित कर दिया जाता है। यह बात उल्लेखनीय है कि अपनी पुत्री के भावी पति के चुनाव में पुत्री का पिता पति की विद्या की ओर उतना ध्यान नहीं देता जितना उसकी कुलीनता और वैभव की ओर। इसीलिये तिलक का रेट बढ़ता चला जाता है। अस्तु, तिलक की तिथि निश्चित हो जाने पर लड़की का पिता अथवा भाई तिलक के लिये निश्चित रुपये को तथा वस्त्र और बर्तन लेकर अपने कुछ बन्धु-बान्धवों के साथ उक्त तिथि पर लड़के वाले के घर आता है। इस दिन वर पक्ष वालों के यहाँ बड़ा आनन्द मनाया जाता है। गाना बजाना भी होता है। गाँव भर के लोगों को भोज (दावत) दिया जाता है। रात्रि के समय जब स्त्रियाँ सुन्दर गीत गाती रहती हैं; लड़की का भाई वर के हाथ में पूर्व निश्चित रुपया, वस्त्र आदि देता है तथा वर के सिर में तिलक लगाता है। इस प्रथा को हमारे यहाँ 'तिलक चढ़ाना' कहते हैं। अन्त में कन्या पक्ष के लोगों को सुस्वादु भोजन करा कर यह उत्सव समाप्त किया जाता है।

जहाँ पर तिलक के लिये निश्चित धन कन्या-पक्ष वाले वर-पक्ष वाले को ठीक-ठीक चुका देते हैं वहाँ पर 'तिलक' का उत्सव सानन्द समाप्त हो जाता है परन्तु जहाँ तिलक का रुपया पूरा नहीं चुकाया गया वहाँ की हालत फिर न पूछिये। फिर तो रंग में भंग ही पड़ जाता है। वर का पिता या भाई क्रुद्ध होकर तिलक का सब सामान कन्या-पक्ष वालों को लौटाने लगता है, उन्हें अपमानित भी करता है। अन्त में जब उसे पूरा रुपया मिल जाता है तभी वह कन्या-पक्ष वालों का पिण्ड छोड़ता है। इस लेखक को भी कई ऐसे मौकों पर उपस्थित होने का दुर्भाग्य प्राप्त है जहाँ पर वर-पक्ष वालों ने कन्या-पक्ष वालों से उक्त प्रकार से रुपया लिया था।

तिलक का उत्सव समाप्त होने के बाद वर-पक्ष वाले बारात ले जाने की तैयारी में जी-जान से लग जाते हैं। अपने गाँव में, आसपास के अन्य गाँवों तथा संबंधियों के पास हजाम (नाई) बारात का नेवता (निमन्त्रण) ले जाता है तथा खूब सज-धज कर उस दिन आने के लिये कहता है। बारात में चलने के लिये अधिक से अधिक लोगों को न्योता दिया जाता है। यदि लड़की वाले का गाँव लड़के वाले के गाँव के पास ही हुआ तो फिर उसका हाल बेहाल ही समझिये। उसके बार-बार मना करने पर भी बारातियों की संख्या अवश्य दूनी और तिगुनी हो जाती है जिसका समुचित प्रबन्ध करना उसके लिये अत्यन्त कठिन हो जाता है।

भोजपुरी बारातों में हाथी का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। बारात की विशालता तथा सज-धज हाथियों की संख्या से ही मापी जाती है। बारात में जितने अधिक हाथी जायेंगे, उतनी ही बारात की अधिक प्रशंसा होगी और इसके विपरीत जिस बारात में हाथी नहीं गया उसकी मानों नाक ही कट गई। इसी लिये वर-पक्ष वाले बारात में अधिक से अधिक हाथी ले चलने के लिये प्रयत्नशील और परेशान रहते हैं। हाथी के साथ ही घुड़दौड़ के लिये घोड़ा ले चलना भी आवश्यक होता है। वर तथा समधी (वर का पिता) के चढ़ने के लिये पालकी या नालकी का प्रबन्ध होता है। इस प्रकार सारा प्रबन्ध ठीक हो जाने पर बारात चल पड़ती है। वर के घर से निकलने के पहिले परिवार तथा गाँव की स्त्रियाँ लोढ़ा लेकर जो पत्थर का बना होता है—वर के सिर पर घुमाती हैं तथा अपने कलकण्ठ से 'परीछि ना लेहु मोरे राम रे ललनवा' गाती जाती हैं। इसको 'परीछावन' कहते हैं। संभवतः यह वर की मंगलमय यात्रा के लिये किया जाता है।

अब भोजपुरी बारात का जरा दृश्य देखिये। बारात के आगे हाथियों की पंक्तियाँ चलती हैं जिस पर वर-पक्ष के प्रतिष्ठित लोग बैठते हैं। यदि किसी धनी पुरुष की बारात हुई तो इन हाथियों पर झूल भी पड़े रहते हैं जो अत्यन्त शोभा देते हैं। हाथियों के पीछे घुड़सवार चलते हैं जो अपने सिर पर मुरेठा (पगड़ी) बाँधे घोड़ों को 'कदम' चाल से बड़ी अदा के साथ जमाते ले

चलते हैं। घोड़ों के पीछे 'समधी' जी की पालकी तथा उनके पीछे 'वर' महोदय की 'नालकी' चलती है। वर की नालकी के साथ नाई (हजाम) चलता है जो समय-समय पर चँवर हिलाता जाता है। नालकी के पीछे साधारण बारातियों का समूह चलता है जो नये वस्त्रों से सुसज्जित होने के कारण बड़ा ही सुन्दर लगता है। बारात के बीच में कहीं बैण्ड बजता है तो कहीं रोशनचौकी। 'सींगा' वाले (शृङ्ग के आकार का एक विशेष बाजा) अपनी 'धूतू' 'धूतू' की मधुर आवाज से सारे वायु-मण्डल को गुञ्जित कर देते हैं। बारात के अन्त में भोजपुरी लठैत जवान चलते हैं जिनकी उपस्थिति बारात की रक्षा के लिये अत्यन्त आवश्यक समझी जाती है। इस प्रकार से बड़े सज-धज, ठाठ-बाट के साथ भोजपुरी बारात चलती है जिसकी शोभा अपूर्व होती है।

लड़की वाले के घर बारात पहुँचने पर उसके द्वार पर वर की पूजा होती है जिसे 'द्वार-पूजा' कहते हैं। यहाँ पण्डित लोग आपस में शास्त्रार्थ करते हैं। द्वार पूजा समाप्त होने के बाद लड़की वाले की ओर से बारातियों को भोजन का निमन्त्रण दिया जाता है जिसे 'आज्ञा माँगना' कहते हैं। यह निमन्त्रण केवल मुख से निवेदन करने से ही नहीं होता बल्कि इसके लिये रुपया भी देना पड़ता है। यदि रुपये की संख्या कुछ कम होती है तो समधी महोदय रुष्ट हो जाते हैं और भोजन का निमन्त्रण स्वीकार ही नहीं करते। कभी-कभी तो समधी की हठधर्मिता के कारण सारी बारात को रात भर अनशन व्रत ही करना पड़ता है। समधी की इसी कुटिलता तथा ज़िद्द के कारण भोजपुरी में एक क़हावत प्रचलित है कि "तीन टेढ़े टेढ़, समधी टेढ़, नालकी टेढ़, सींगा टेढ़" अर्थात् बारात की शोभा तीन चीज़ों के टेढ़ होने के कारण होती है। इनमें पहिला समधी टेढ़ा होना चाहिए, दूसरा नालकी का बाँस और तीसरा सींगा (बाजा)। भोजन-निमन्त्रण के पश्चात् वर का बड़ा भाई, भावी वधू को गहने तथा वस्त्र आदि देता है जिसे 'कन्या निरीक्षण' कहा जाता है। भोजपुरी में इसे 'गुरहत्थी' कहते हैं। 'गुरहत्थी' के बाद वर मण्डप में लाया जाता है और शास्त्रीय रीति से कन्या के साथ उसका विवाह सम्पादन प्रारम्भ होता है। विवाह के समय लड़की का पिता अपनी प्यारी पुत्री को गोद में बैठाता

है। वह वर के पैर को पूजता है और शास्त्रीय रीति से अपनी पुत्री को वर के लिये दानरूप में दे देता है। हमारे यहाँ इस प्रथा को 'कन्या-दान' कहते हैं। यह बड़ा ही महत्त्वपूर्ण कार्य समझा जाता है। जो पिता या भाई 'कन्या-दान' करता है वह अपनी पुत्री या बहिन के घर का अन्न ग्रहण तो दूर रहा वह उस गाँव का पानी तक भी नहीं पीता। 'कन्या-दान' के समय के गीत बड़े ही करुणाजनक होते हैं।

"दिनवा हरेलू ए बेटी भूख रे पिअसिया,
रतिया हरेलू सिर पगिया नु रे॥"

में कितनी हृदय-वेदना छिपी पड़ी है। विवाह के बाद वर एक घर में लाया जाता है जिसे 'कोहबर' कहते हैं। यहाँ गाँव की युवती तथा बूढ़ी स्त्रियाँ एकत्रित होकर वर से अनेक प्रकार का मज़ाक करती हैं जो बहुत ही संयत और शिष्ट होता है। इस प्रकार विवाह का कृत्य सम्पादित होता है।

भोजपुरी बारात में एक विशेष उल्लेखनीय वस्तु है—बारातियों का भोजन, क्योंकि इसमें त्रुटि का होना झगड़े का घर बन जाता है और बाद में निन्दा का कारण होता है। हमारे गाँवों में बारातियों के भोजन के लिये बड़ी मोटी तथा चौड़ी पूरियाँ तैयार की जाती हैं जो वजन में पाव भर (¼ सेर) से कम नहीं होतीं। ये खाने में स्वादिष्ट और मुलायम होती हैं। दूसरी उल्लेखनीय खाद्य वस्तु 'फुलवरा' है जो उड़द को पीसकर बनाया जाता है और आकार में हाकी के गेंद के समान बड़ा और गोला होता है। वर का विवाह जब समाप्त हो जाता है तब बारातियों को खाने के लिये बुलाया जाता है। इस समय का दृश्य भी कुछ कम मनोरंजक नहीं होता बारातियों में से कोई पत्तल माँगता है तो कोई पानी; कोई पूरियों के लिये आवाज देता है तो कोई शाक के लिये; कोई दही माँगता है तो कोई चीनी परोसने के लिये कहता है। भोजपुरी दावतों में दही परोसना भोजन-समाप्ति का सूचक है अतः दही और चीनी सब के अंत में दी जाती है। इस प्रकार बड़ी चहल, पहल के साथ बारातियों का भोजन समाप्त हो जाता है।

धनी लोग बारात को दूसरे दिन भी अपने घर रखते हैं, यह प्रतिष्ठा समझी जाती है। संभवतः इसीलिये इसे 'मर्याद रखना' कहते हैं। तीसरे दिन बारात की विदाई की जाती है जिसमें 'समधी' महोदय तथा अन्य परिवार वालों को धोती और रुपया दिया जाता है। अन्त में लड़की का पिता वर के चरणों में गिरकर अपनी त्रुटियों के लिये क्षमा माँगता है और बारात 'तम्बू गिरा' कर विदा हो जाती है। बारात के घर लौटने पर गाँव की स्त्रियाँ तथा वर की माता और बहिनें नये दूल्हे को "हँसत, खेलत मोरे बाबू गइले; मन बेदिल काहें अइले" गा-गा कर उसे परीछती हैं और उसे घर लाती हैं।

विवाह के गीतों में दो प्रकार के गीत पाये जाते हैं। एक तो कन्या के घर में गाये जाने वाले, दूसरे वर के घर में गाये जाने वाले। कन्या-पक्ष के गीत वर-पक्ष के गीतों से अधिक करुण और मधुर हैं। खास कर बेटी के विदा करने के समय के गीत तो पत्थर को भी पिघला देने वाले हैं। वर-पक्ष के गीत ज्यादातर शोभा-सजावट और धूम-धाम के होते हैं।

विवाह के गीतों में ऐसी प्रथा का वर्णन मिलता है जो आज-कल यूरोप में प्रचलित है। वह है, वर का कन्या के कुटुम्बियों से विवाह का प्रस्ताव करना। इस प्रकरण में विवाह-संबंधी कुछ ऐसे गाने दिये जायेंगे जिनमें वर कन्या के आँगन में जाकर बैठा है और आने का कारण पूछने पर कहता है कि इस घर में एक कुमारी कन्या है; मैं उससे विवाह करने आया हूँ। एक गीत में पति जाकर कहता है—

"पुरुब से अइले रे जोगी, पछिम कइले जाले।
कवन बाबा चौपरिया ए जोगी, बइसे आसन मारी॥
हम त बिआहन अइली ए बाबा, तोहार बिटिया कुवाँरी"॥

परन्तु आजकल की प्रथा तो यह है कि कन्या का पिता ही वर की खोज करता है और योग्य वर मिलने पर 'कन्यादान' करता है। वर के लिये कन्या के पिता की परेशानी का जैसा चित्र गीतों में खींचा गया है वैसा चित्र भव-भूति और कालिदास शायद ही खींचने में समर्थ हों। एक गीत में लड़की का पिता कहता है—

"पूरब खोजलों बेटी पच्छिम खोजलों;
अवरु ओड़िसा जगरनाथ ए ।
चारो भुवन बेटी तोही बर खोजलों;
कतही ना मिले सिरिराम ए ।।"

विवाह के गीतों में सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इनमें वर कन्या के मनोभावों का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया गया है। इन गीतों के वर और कन्या कहीं तो अल्प वयस्क हैं और कहीं युवक युवती। इस प्रकार से उनकी अवस्थाओं में भेद होने के कारण इनके मनोभावों में भी बहुत अन्तर है। कहीं पर कन्या पति के अल्प वयस्क मिल जाने पर दुःख प्रकट करती है; तो कहीं युवती होने के कारण अपने पिता को यह सम्मति देती है कि 'मेरे लिये इस प्रकार का वर खोजना' तथा कहीं अनमेल ब्याह के कारण दुःख करती है नीचे की गीत में किसी युवती स्त्री का अल्प-वयस्क पति होने के कारण— चित्र कितना हृदय-द्रावक है। वह अपना दुःख प्रकट करते हुए कहती है—

"बनवारी हो हमरा के लरिका भतार। टेक।
लरिका भतार लेके सूतली ओसरावा।
बनवारी हो, रहरी में बोलेला सियार ।। बनवारी० ।।
खोले के त चोली-बन्द खोलेले केवार।
बनवारी हो, जरि गइले एड़ी से कपार ।। बनवारी० ।।
सुते के त सिरवा सुतेला गोनतारि।
बनवारी हो, जरि गइले एड़ी से कपार ।। बनवारी० ।।
रहरी में सुनि के सियारा के बोलिया।
बनवारी हो, रोवे लगले लरिका भतार ।। बनवारी० ।।
आँगना से माई अइली, दुअरा से बहिना।
बनवारी हो, के मारल बबुआ हमार ।। बनवारी० ।।

इस प्रकार के सैकड़ों अनमेल विवाह आज देखने को मिलते हैं जिनका शीघ्र बन्द हो जाना ही अधिक श्रेयस्कर है। एक दूसरे गीत में एक लड़की अपने पिता से सुन्दर वर खोजने की प्रार्थना करती है।

"हमरा के खोजिह ए बावा चाँद सुरजवा"

कहीं-कहीं पर कन्या के छोटी होने का भी वर्णन मिलता है। लड़की की माता वर से प्रार्थना करती है कि हमारी लड़की छोटी है अतः इसे आराम से रखना।

"मोरी धिया लरिकी से वारी, वोलहि नाहि जाने।
तब हमहूँ कवला के फूल, दुनो प्रानी बिहँसवि हो॥"

सन्दर्भ—सास के द्वारा वर का परीछना। सास की उक्ति वर के प्रति

(५२)

जइसन[1] आषाढ़ रे मास के विजुली चमकेला हो।
ओइसन[2] कवन राम के दुलहा[3] के, दाँतावा झलकेला हो॥ १॥
जब रे कवन दुलहा नगर से वाहर भइले नु हो।
ससुरु कवन रे राम के हियरा जुड़इले[4] नु हो॥ २॥
परिछे बाहर ले भइली सासु हो मदागिनि, परिछत[5] वदन निहारेलि[6] हो।
जाहु हम जनिती कि अइसा रघुवंसी बाड़े, मिर्जापुर के लोहँवा वेसहितीं नु हो॥ ३॥
सोने रूपे सोहगइली में, धरितों वेसाहि नु हो।
किया तो के आहे ए बाबू, कुनेला[7] कुनेली नु हो॥ ४॥
किया तो के आहो ए बाबू, साँचावा में ढारलि नु हो।
नाहिं हम आहो ए सासु, कुनेला कुनेलिनि हो॥ ५॥
नाहि हमरो आहो ए सासु साँचावा के ढारलि नु हो॥ ६॥
जब हम रहलीं ए सासु, आमा के गरभ में नु हो।
चनन रगरी रे रगरी[8], आमा हमारी पियली नु हो॥ ७॥
जवन ओखदवा[9] ए बाबू, आमा रउरी पियली नु हो।
तवन ओखदवा ए बाबू, हमरा के बकसि[10] दीहि हो॥ ८॥

---

[1]जैसा। [2]ऐसा। [3]दूल्हा (वर)। [4]सन्तुष्ट हो गई। [5]वर के सिर पर घुमाना। [6]देखती है। [7]गढ़ा गया। [8]रगड़ करके। [9]औषध, दवा। [10]देदो।

पुरुब के चानावा[1] ए सासु, पछिम चलि जाई।
आमा के ओखदवा ए सासु, रउरा नाहि पाइबि[2] हो ॥ ६ ॥

कोई युवक अपने ससुराल गया हुआ है। उसको देखकर उसकी सास कहती है कि जैसे आषाढ़ के महीने में बिजली चमकती है उसी प्रकार से हमारे दामाद का दाँत झलकता है ॥ १ ॥

जब वह दूल्हा नगर से बाहर हुआ। तब उसे देखकर उसके ससुर जी का हृदय अत्यन्त सन्तुष्ट हो गया ॥ २ ॥

जब वह युवक अपनी ससुराल में पहुँचा तब सास उसे परीछने के लिये आई तथा परीछते समय उसका मुख देखती रही। उसने कहा कि यदि मैं जानती कि मेरा दामाद राम के समान सुन्दर है तो उसे परीछने के लिये मिर्जापूर से पत्थर का लोढ़ा मँगाती ॥ ३ ॥

अपने दामाद के सत्कार के लिये मैं सोना और चाँदी भी खरीद कर रखती। सास ने अपने दामाद की अलौकिक सुन्दरता पर मुग्ध होकर पूछा कि ऐ बेटा! तुम्हें किस दैवी शक्ति ने गढ़ा है अथवा तुम साँचे में ढाले गये हो ॥ ४ ॥

दामाद ने उत्तर दिया कि न तो मुझे किसी दैवी शक्ति ने गढ़ा है और न मैं साँचे में ही ढाला गया हूँ ॥ ५ । ६ ॥

दामाद ने कहा कि ऐ सास! जब मैं अपनी माता के गर्भ में था तब मेरी माता ने चन्दन को रगड़-रगड़ कर पिया था। इसी से मैं इतना सुन्दर पैदा हुआ ॥ ७ ॥

सास ने कहा कि जिस दवा को तुम्हारी माता ने खाया था। उसी दवा को मुझे भी देदो, जिससे मैं उसे अपनी लड़की को खिलाऊँ ॥ ८ ॥

दामाद ने उत्तर दिया कि यदि पूरब का चन्द्रमा पश्चिम में भी उदय होने लगे तो भी ऐ सास! तुम मेरी माता की दवा को नहीं प्राप्त कर सकतीं अर्थात् मैं तुम्हें उसे नहीं प्रदान कर सकता ॥ ९ ॥

---

[1] चन्द्रमा। [2] पावोगी।

सन्दर्भ—पुत्री के द्वारा सुन्दर वर खोजने के लिये पिता को निवेदन। पिता का उत्तर

(५३)

वर खोजु बर खोजु बर खोजु रे, वावा अब भइलों वियहन[1] जोग ए।
आरे हामारा के बाबा सुनर[2] वर खोजेले, हँसे जनि दुअरवा[3] के लोग ए।।१।।
पुरुब खोजलों बेटी पछिम रे खोजलों, अवरु ओड़इसा[4] जगन्नाथ[5] ए।
आरे तीनों भुवन तुहें वर खोजलों, कतही[6] ना मिले सिरिराम ए।।२।।
पुरुब खोजल बाबा पछिम रे खोजलों, अवरु ओड़इसा जगन्नाथ ए।
तीनों भुवन ए बाबा ! हमें वर खोजलों, कतही ना मिले सिरिराम ए।।३।।
आरे सात समुन्दर ए बाबा सरजू वहत है; खेलत बाड़े सरजू तीर ए।
चारु भइया ले सुनर ए बाबा ! खेलेले सरजू का तीर ए।। ४ ।।

कोई लड़की अपने पिता से कह रही है कि ऐ पिता ! मेरे लिये वर खोजो क्योंकि अब मैं विवाह करने योग्य हो गयी हूँ। ऐ पिता ! मेरे लिये सुन्दर वर खोजना जिससे कोई मेरी हँसी न उड़ाये।। १ ।।

पिता ने उत्तर दिया कि ऐ बेटी ! मैंने तुम्हारे लिये पूरब तथा पश्चिम और उड़ीसा में जगन्नाथ (पुरी) आदि अनेक स्थानों में वर खोजा। तीनों भुवन में मैंने वर ढूँढ़ा लेकिन श्रीराम मुझे नहीं मिले।। २ ।।

लड़की ने उत्तर दिया कि ऐ पिता जी आपने पूरब, पश्चिम उड़ीसा तथा जगन्नाथ आदि सब स्थानों में मेरे लिये वर खोजा परन्तु आपको कहीं भी श्रीराम नहीं मिले ?।। ३ ।।

लड़की ने कहा कि पिता जी ! एक बड़ी सरयू नदी अयोध्या में बहती है। वे उसी के तीर पर खेलते होंगे। श्रीराम अपने चारों भाइयों से अधिक सुन्दर हैं और वे सरयू के किनारे खेलते हुए मिलेंगे।। ४ ।।

---

[1]विवाह। [2]सुन्दर। [3]द्वार। [4]उड़ीसा। [5]जगन्नाथ (पुरी)। [6]कहीं भी।

सन्दर्भ—पति-पत्नी का मदन-लेख वर्णन

(५४)

वेरि वेरि तोहिं बरजों कवन दुलहा, बिरिदा बने जनि जाहु ए।
आरे बिरिदा बने देव बरिसि जइहें; भींजि जइहें चनन तोहार ए ॥१॥
आजन भीजेला बाजन[१] भींजेला; भींजेला घोड़ा के लाहास[२] ए।
आरे घोड़वा के ऊपर भींजेले कवन दुलहा; चनन भरेला लिलार[३] ए॥२॥
वेरि हि वेरि[४] तोहिं बरजों कवन सुहवा, बिरिदा वने जनि जाहु ए।
आरे विरिदा बने देव बरिसि जइहें, भींजि जइहें सजन तोहार ए ॥३॥
आजन भींजेला बाजन भींजेला, भींजेला बतीसो काहार ए।
आरे डँड़िया[५] के भीतर भींजेली कवन सुहवा, सेन्दुर भरेला लिलार ए।।४
चिठिया जे लिखि लिखि भेजेला दुलहवा, देहुँगे दुलहिन के हाथ ए।
आरे आपन ए दुलहिन सेन्दुरा सहेजिह[६], बूँद परत भीहिलाइ[७] ए ॥५॥
चिठिया जे लिखि लिखि भेजली दुलहिनिया, देहुगे दुलहा का हाथ ए।
आरे आपन ए दुलहा चनन सहेजिह, घाम[८] परत कुम्हीलाइ[९] ए ॥६॥

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि मैंने बार-बार अपने पति को मना किया कि तुम वृन्दावन मत जाओ, वहाँ पर पानी बरसेगा और तुम्हारा चन्दन भींग जायेगा ॥ १ ॥

तुम्हारा सामान भींग जायेगा। तुम्हारा घोड़ा और उस पर बैठे हुए तुम दोनों भींग जाओगे और सारे ललाट में चन्दन फैल जायेगा ॥ २ ॥

तब पति कह रहा है कि बार-बार मैंने अपनी स्त्री को मना किया कि तुम वृन्दावन अपने मायके मत जाओ। क्योंकि वहाँ पर पानी बरसने से सारा सामान भींग जायेगा ॥ ३ ॥

सारा सामान भींगेगा, पालकी में लगे हुए बत्तीस कहार भी भींग जायेंगे

---

[१]सामान। [२]काठी। [३]ललाट। [४]बार बार। [५]पालकी। [६]रक्षा करना।
[७]नष्ट हो जाता है। [८]धूप। [९]गल जाना।

तथा पालकी में बैठी हुई मेरी स्त्री भी भींग जायेगी तथा सारे ललाट में सिन्दूर फैल जायेगा ॥ ४ ॥

पति ने एक पत्र लिखकर अपनी स्त्री के पास भिजवाया जिसमें लिखा था कि ऐ स्त्री अपने सिन्दूर की रक्षा करना क्योंकि यह बूँद पड़ते ही नष्ट हो जाता है ॥ ५ ॥

इसके उत्तर में पत्नी ने भी अपने पति के पास यह पत्र लिखकर भेजा कि ऐ पति ! अपने चन्दन की तुम अवश्य रक्षा करना क्योंकि यह धूप पड़ते ही नष्ट हो जाता है ॥ ६ ॥

सन्दर्भ—पति की कठोरता तथा निर्दयता का वर्णन

(५५)

सवन भदउवाँ के नीसु अँधियरिया, विजुली चमकेले सारी रात ए ।
आरे सुतल कन्त हम कइसे जगावों, भइसी तुरावेले छानि[1] ए ॥१॥
बोलिया त ए प्राभु हम एक बोलिलें, जाहु बोलि सुनि मनवा लाइ ए ।
आरे भँइसी बेचि ए प्राभु चुरवा[2] गढ़इतीं; हम रउरा सोइतो निरभेद ए ॥२
बोलिया त धनि एक हम बोलिलें, जाहु बोलि सुनि मन लाइ ए ।
आरे तोहि के बेचिए धनि भँइसी लेअइवों, बछरू[3] चरइवों सारी राति ए ॥३
के तोहरा ए प्राभु कुटी ही पीसी, के तोहरा करी जेवनार[4] ए ।
आरे के तोहरा ए प्राभु दुधवा अँवटीहे[5] के तोहरा जोरन[6] लाइ ए ॥४॥
चेरी बेटी ए धनि कुटी ही पीसी, चेरी बेटी करी जेवनार ए ।
आरे बहिना हासार ए धनि दुधवा अँवटीहे; आमा मोरा जोरन लाइ ए ॥५

कोई स्त्री कह रही है कि सावन और भादों की निस्तब्ध अँधेरी रात्रि है और सारी रात बिजुली चमक रही है । मेरा पति सोया हुआ है । घर की भैंस ने अपनी रस्सी तोड़ दी है । ऐसे समय में पति देव को कैसे जगाऊँ ॥१॥

स्त्री ने कहा कि ऐ पति ! मैं एक बात कहना चाहती हूँ जिसे सुन आप

---

[1]रस्सी । [2]पाटी । [3]बछड़ा । [4]भोजन । [5]गर्म करना । [6]जामन ।

अपने हृदय में धारण करें। मैं भैंस को बेंचकर चारपाई की पाटी मरम्मत कराऊँगी जिससे मैं और तुम सुख पूर्वक सो सकें ॥ २ ॥

पति ने उत्तर दिया कि ऐ स्त्री मैं तुम्हीं को वेचकर एक भैंस खरीदूँगा और उसके बच्चे को सारी रात चराऊँगा ॥ ३ ॥

स्त्री ने जवाब दिया कि जब तुम मुझे बेंच दोगे तब घर में कौन कूटेगा और आटा पीसेगा। कौन तुम्हारी रसोई बनावेगा और दूध गर्म करके कौन उसमें जोरन डालेगा ॥ ४ ॥

पति ने कहा कि ऐ स्त्री! मेरी दासी की लड़की कूटेगी और पीसेगी। वही रसोई भी बनावेगी। मेरी बहिन दूध गर्म करेगी और मेरी माता जोरन लगायेगी (डालेगी) ॥ ५ ॥

इस गीत में पत्नी का आदर्श पति-प्रेम तथा इसके विपरीत पति की निष्ठुरता स्पष्ट झलक रही है। जहाँ स्त्री पति के साथ सुख-पूर्वक सोना चाहती है वहाँ निर्दयी पति उसे बेंच डालने की धमकी देता है। स्त्री के ऊपर पति का यह सार्वभौम अधिकार प्रचीन काल से चला आ रहा और आज भी वैसा ही बना है। कालिदास ने शकुन्तला में स्पष्ट ही लिखा है—

"उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोन्मुखी।"

सन्दर्भ—गाय को बगीचे में चराने के कारण मालिन के द्वारा कृष्ण का उपालम्भ

(५६)

आरे मालिनि लावेले दावाना मरुअवा, कान्ह चरावेला गाई ए।
आरे हाँकु[1] हाँकु कान्हर[2] आपनि गइया, चरी गइली मोरि फुलवारी ए ॥१॥
आरे आमुनी चरी गइली, जामुनी चरी गइली मोरि फुलवारी ए।
आरे कवन दुलरुवा[3] बर ठाढ़ी ओरमावे[4], चम्पा गइली कुम्हीलाइ ए ॥२॥

माली की स्त्री अपनी फुलवारी में पौधों को लगा रही है और कृष्ण जी उसके पास ही गाय चरा रहे हैं। मालिन कहती है ऐ कृष्ण तुम अपनी गायों

[1]खदेड़ो। [2]कृष्ण। [3]प्यारा। [4]खड़ा है।

को यहाँ से खदेड़ कर ले जाओ नहीं तो वह हमारी फुलवारी के पौधों को खा जायेगी ॥ १ ॥

मालिन कहती है कि गाय ने जासुन तथा अनेक अन्य पौधों को खा लिया है और मेरी फुलवारी को नष्ट कर दिया है। कृष्ण को देखकर वह कहती है कि यह कौन सा सुन्दर वर खड़ा है जिसके गले की चम्पा की माला सूख गई है ॥२॥

सन्दर्भ—दामाद का गवना कराने ससुराल जाना तथा सास के द्वारा निवेदन

(५७)

आपना ही सुहवा[1] लागि चललें कवन दुलहा; ना गुने[2] घाम[3] ना धूप ए।
घोड़वा त बान्धेला दुलहा कदम्ब जुड़ि; छड़ी दिहले ओंठघाइ[4] ए ॥ १ ॥
कालासा का ओटे[5] ओटे सासु विनती करे; बाबू से बिनती हमार ए।
बाड़ा रे तपसिये बबुआ आपन धियवा पोसीलें; धियवा धुमिल[6] जनि होइ ए ॥ २ ॥
बिटिया[7] खियइबों सासु आमुनि जामुनि, घरवा सुरहिया[8] के दूध ए।
अठवें ही सतवें सासु लुगवा[9] धोवाइबि, निति उठि अबटन[10] तेल ए॥३॥
आतान जतनवें ए सासु राउर धियवा पोसबि;
जब लगि प्राण हमार ए ॥ ४ ॥

कोई पुरुष गवना करने के लिये अपनी ससुराल को चल पड़ा। वह न तो धूप ही का ख़्याल करता है और न किसी अन्य कष्ट का। जब वह ससुराल पहुँचा तब उसने घोड़े को कदम्ब वृक्ष की शीतल छाया में बाँध दिया और अपनी छड़ी को वहीं रख दिया ॥ १ ॥

ससुराल में उसकी सास कलशे के परदे से विनती करती हुई उससे कह रही है कि ऐ बेटा! मैंने बड़े परिश्रम से अपनी पुत्री को पाला, पोसा है अतएव इसे इस प्रकार से रखना जिससे इसे कष्ट न हो ॥ २ ॥

---

[1]ख़ी। [2]नहीं गिनता है। [3]धूप। [4]रख देना। [5]छिपकर। [6]उदासीन। [7]पुत्री। [8]गाय। [9]कपड़ा। [10]उबटन।

तब उस दामाद ने उत्तर दिया ऐ सास जी ! मैं आपकी पुत्री को अनेक प्रकार के जामुन इत्यादि फल खिलाऊँगा और गाय का दूध पिलाऊँगा। सात या आठ दिन पर उसके कपड़ों को धुलाऊँगा और रोज ही उबटन और तेल लगाऊँगा ॥ ३ ॥

ऐ सास ! मैं जबतक जीता रहूँगा तबतक तुम्हारी लड़की को बड़े यत्न से पालूँ-पोसूँगा ॥ ४ ॥

सन्दर्भ—अल्प वयस्कपति वाली पुत्री का पिता से निवेदन

(५८)

लिलिही घोड़वा चेलिक[1] असवरवा, बाबा का भगती बहुत ए।
आरे रउरे भगतिया[2] ए बाबा[3] हमें नाहीं भावे[4] हमें बेटी दुःख बहुत ए॥१॥
आवहु बेटी हो जाँघे चढ़ि बइठ[5] दुःख सुख कह समुझाइ ए।
आरे कवन कवन दुःख तोहरा[6] ए बेटी, से दुःख कह समुझाइ ए॥२॥
दाल भात बाबा मोरा जे जेवनारवा[7], करुवहिं[8] तेल आसानान ए।
आरे लाहारा पटोरवा[9] मोरा पहीरानावा[10], घीव दूध आसानान ए॥३॥
ऊँच नीवास बेटी काँकरी बोइले, रन बन पसरेले डाढ़ी ए।
आरे ककरी[11] के बतिया[12] ए बेटी ! देखत सुहावन, ना जानौ मीठ ना तीत[13] ए॥ ४ ॥
आरे सोनवा जे रही तु ए बेटी ! फेरु[14] से तुरइती[15]; रूपवा तुरवलो ना जाइ ए।
आरे पूतवा[16] जो रहीतु ए बेटी ! फेरु से बियहितीं[17], तोहि के बियहिलो ना जाइ ए॥ ५ ॥
आरे छोटहि बड़ होइहें ए बेटी ! जो कुल रखबू[18] हमार ए॥ ६ ॥

---

[1]युवक। [2]भक्ति। [3]पिता जी। [4]अच्छा नहीं लगता। [5]बैठो। [6]तुम्हारा। [7]भोजन। [8]सरसों का तेल। [9]वस्त्र। [10]पहिनावा। [11]ककड़ी। [12]बच्चा (छोटा)। [13]तीखा। [14]पुनः। [15]बनाता। [16]पुत्र। [17]व्याह। [18]रक्खोगी।

किसी स्त्री का पति छोटा है तथा बड़ा ही निर्दयी है। इससे दुःखी होकर वह स्त्री अपने पिता से कहती है ऐ पिताजी ! तुम भक्ति बहुत करते हो परन्तु तुम्हारी यह भक्ति मुझे पसन्द नहीं आती क्योंकि मुझे बहुत कष्ट हो रहा है ॥ १ ॥

पिता ने प्रेम-पूर्वक कहा कि ऐ बेटी आओ और मेरे जंघे पर बैठ जाओ तथा तुम्हें जो-जो दुख हो उसे मुझे समझा करके कहो ॥ २ ॥

पुत्री ने उत्तर दिया ऐ पिता जी ! मुझे खाने तथा पहिनने का कष्ट नहीं है क्योंकि खाने को मुझे दाल और भात मिलता है तथा लगाने को सरसों का तेल प्रचुर मात्रा में है सुन्दर वस्त्र मैं सदा पहिनती हूँ और दूध तथा घी से स्नान करती हूँ। अर्थात् ये खाने के लिये काफी मिलते हैं ॥ ३ ॥

पिता ने उत्तर दिया कि ऐ बेटी ऊँचे स्थान पर ककड़ी का पौधा बोया जाता है, उसकी शाखायें चारों ओर फैलती हैं। जब उसमें छोटे-छोटे फल लगते हैं तब वे देखने में बड़े सुहावने मालूम पड़ते हैं परन्तु यह कोई नहीं जानता कि ये मीठे हैं या तीखे। उसी प्रकार से तुम्हारे पति के स्वभाव के विषय में ठीक-ठीक अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता था ॥ ४ ॥

ऐ बेटी यदि तुम सोना होती तो मैं उसे तुड़ाकर दूसरा गहना बनवा देता परन्तु रूप (वर्ण) में परिवर्तन कैसे किया जा सकता है। यदि तुम बेटा (पुत्र) होती तो तुम्हारा दूसरा ब्याह कर देता परन्तु तुम्हारा (बेटी होने के कारण) ब्याह कैसे करूँ ॥ ५ ॥

ऐ बेटी ! तुम्हारा छोटा पति धीरे-धीरे बड़ा हो जायेगा। तुम कुमार्ग में पैर न रखकर हमारे कुल की रक्षा करो ॥ ६ ॥

इस गीत में बाल-विवाह की बुराई की ओर संकेत किया गया है। कितनी ही स्त्रियाँ घर में खाने, पहिनने का सुख होने पर भी अपने पति की नादानी के कारण अनेक कष्ट भोगा करती हैं।

सन्दर्भ—पुत्री की विदाई के समय माता की व्याकुलता। पुत्री पैदा होने के कारण शोक-प्रकाश

(५६)

बासावा[1] के जरिया[2] सुनरी[3] एक रे जमली[4], सगरे अयोध्या में अँजोर रे
सुनरी धियवा चउकवा[5] चढ़ि रे बइठे, आमा कावारवा[6] धइले ठाढ़ रे ।।१
छाती चुरइली[7] बेटी नयन ढरे लोरवा;[8] अब सुनरी भइलू पराय[9] रे।
जाहु हम जनितो धियवा कोखी रे जनमिहे पिहितो[10] में मरिच झराइ २
मरिच के झाके झुके धियवा मरि रे जइहें छुटि जइते गरुवा[11] संताप रे।
डासलि[12] सेजिया उड़ासि बलु रे दिहिती, सामीजी से रहिती छपाई[13] रे३
बारल[14] दियरा[15] बुझाई बलु रे दिहिती, हरिजी से रहिती छपाई रे।
बुकलि[16] सोंठिया धुरा ही फाँकि लीहिती, सामी जी से रहिती छपाई रे।।४।।

किसी स्त्री को एक लड़की पैदा हुई जिससे सारी अयोध्या में उजेला हो गया जब विवाह का समय आया तब वह स्त्री चौका (वेदी) पर बैठी और उसकी माता कोने खड़ी थी ॥ १ ॥

माता कहती है कि ऐ बेटी प्रेम के कारण मेरी छाती में दूध भर रहा है तथा आँखों से आँसू गिर रहे हैं। ऐ बेटी अब तुम परायी हो गई। यदि मैं जानती कि मेरी कोख से लड़की पैदा होगी तो मैं मरिच खा लेती जिसके असर से मेरी यह लड़की मर जाती और मैं इसके विवाह के महान् झंझट से छुटकारा पा जाती ॥ २ । ३ ॥

मैं यदि जानती कि लड़की पैदा होगी तो पति के साथ सोने के लिये बिछाई गई चारपाई को भी उठाकर रख देती, जलाये हुए दीप को बुझा देती; पीसी हुई सोंठ खा लेती जिससे गर्भ पात हो जाता तथा अपने पति के साथ कभी भी संभोग नहीं करती ॥ ४ ॥

---

[1]बांस। [2]नजदीक। [3]बेटी। [4]पैदा हुई। [5]वेदी। [6]कोने में। [7]दूध भरी हुई। [8]आँसू। [9]दूसरे की। [10]पी लेती। [11]बड़ा। [12]बिछाई हुई। [13]जलाया हुआ। [14]दीप। [15]पीसा हुआ।

ऊपर के गीत में पुत्री पैदा होने के कष्ट का बड़ा ही सुन्दर तथा मार्मिक चित्रण किया गया है। माता गर्भपात कराने को तैयार है परन्तु लड़की पैदा करने के लिये उद्यत नहीं। पुत्री का विवाह करना आजकल हिमालय लाँघने के समान कठिन हो गया है। इसीलिये संस्कृत के एक कवि ने कहा है कि:—

"पुत्रीति जाता महती हिं चिन्ता, कस्मै प्रदेयेति महान् वितर्कः।
दत्वा सुखं प्राप्स्यसि वा न वेति, कन्या पितृत्वं खलु नाम कष्टम् ॥"

सन्दर्भ—लड़की वाले के यहाँ बारात का आना तथा पुत्री का पिता को जगाना

(६०)

कोठा ऊपर कोठरी रचि महला उठाओ,
ताहि पइसि[1] सुतेले कवन बाबा सुख नीनि[2] रे ॥ १ ॥
आओ धनि बेनिया[3] डोलाओ, पइसि जगावेली कवन बेटी;
बाबा नीन भल आयो, राजा दुआरे भइले ठाढ़ रे ॥ २ ॥
राउर नगर छेकइले[4], पहिन कवन बाबा रे धोतिया;
करु ना समधिया से मिनती[5], जिनि अपने से आयो रे ॥ ३ ॥
बाबु नयो भइया नयो हम कबही ना नयो;
बेटी हो कवन बेटी, कारने सीस आजु नवायो रे ॥ ४ ॥

कोठे के ऊपर अपने महल में एक पुरुष सुख की नींद सो रहा है और वह अपनी स्त्री से कहता है कि तुम पंखा झलो। इतने में आकर उसकी लड़की उसे जगाती है और कहती है कि ऐ पिताजी! आपको नींद कैसे आ रही है आपके द्वार पर बारात के आदमी खड़े हैं ॥ १।२ ॥

ऐ पिताजी! बाराती लोगों के द्वारा आपका घर चारों तरफ से घिर गया है। आप धोती पहिन कर अपने समधी (दूल्हा के पिता) से जाकर प्रार्थना करें कि वे लोग शान्त रहें। उपद्रव न करें ॥ ३ ॥

इसपर पिता ने उत्तर दिया कि मेरा पुत्र तो झुककर प्रार्थना कर सकता

[1]घुस करके। [2]नींद। [3]पंखा। [4]घेर लिया गया। [5]प्रार्थना।

है परन्तु मैंने आज तक किसी के सामने अपना सिर नहीं झुकाया। लेकिन ऐ बेटी! तेरे कारण से आज मुझे भी अपना सिर झुकाना पड़ेगा ॥ ४ ॥

जिन्होंने बारात चढ़ने के समय का देहाती दृश्य देखा है वे ही इस गीत में संकेतित लड़की की चिन्ता का अनुमान कर सकते हैं। देहाती बारात क्या है; हाथी, घोड़ों, ऊटों तथा बारातियों की चतुरंगिणी सेना है।

संदर्भ—माता के द्वारा पुत्र को स्त्री को लाने वृन्दावन जाने को मना करना

(६१)

नदिया के तीरे दुइ पेड़ बाटे, एक महुआ एक आम रे।
आरे नगर अजोध्या में दुइ वर सुनर, एक लछुमन एक राम रे ॥१॥
बेरि हि बेरि तोहि बरजों कवन दुलहा, बिरिदा बने जनि जाहु रे।
आरे बन बिरिदा बने बाघ बघिनिया, जाहि देसे सुहवा तोहार रे ॥२॥
दे ना आमा हो ढालि तरुवरिया, वन बिरिदा बने जाहु रे।
आरे बघवा के मारबि बघीनिया ए आमा, धनि लेबि डँड़िया चढ़ाइ रे ॥३॥

जिस प्रकार सरजू नदी के किनारे दो सुन्दर पेड़ हैं एक आम का और दूसरा महुए का। उसी प्रकार से सारी अयोध्या में दो सुन्दर वर हैं एक राम और दूसरे लक्ष्मण ॥ १ ॥

माता अपने पुत्र से कहती है कि ऐ बेटा! मैंने बार-बार तुम्हें मना किया कि वृन्दावन के घने जंगल में मत जाया करो। वहाँ बाघ और बाघिन रहते हैं और वहीं पर तुम्हारी ससुराल भी है ॥ २ ॥

वीर पुत्र ने उत्तर दिया कि माता तुम मुझे ढाल और तलवार दो। मैं वृन्दावन जाऊँगा और बाघ और बाघिन को मारकर अपनी स्त्री को पालकी पर बैठाकर लेता चला आऊँगा ॥ ३ ॥

संदर्भ—स्त्री को लाने के लिये पति का घोड़े पर चढ़कर ससुराल जाना

(६२)

हहर झहर[1] रे करे गांगा यमुना रे पनिया।
आरे चलन चलन करे दुलहा चढ़ि लिलि घोड़िया रे ॥१॥

[1] लहराना।

आरे हमरा बाबा जी का सँकरी रे गलिया।
आरे कइसे के दउरइबे[१], ए दुलहा अपनी लिलि घोड़िया रे ॥२॥
हमरा ही बाबा के सोने मुठी रे छुरिया।
आरे कटइबों खिरिकिया[२] ए सुहवा, दउरइबों लिलि घोड़िया रे ॥३॥
आरे बाबा हमरा सुनिहे ए दुलहा मनही[३] रे अननि हे[४]।
आरे भइया हमरा सुनिहे ए दुलहा, चोरइहे[५] लिलि घोड़िया रे ॥४॥

गंगा और यमुना का पानी बड़े ज़ोरों से लहरा रहा है। कोई दूल्हा अपनी 'लिलि' नामक घोड़ी पर चढ़कर उसे पार करना चाहता है ॥ १ ॥

उसकी स्त्री उससे कह रही है (संभवतः वह दूल्हा गवना कराने के लिये आया था) कि मेरे पिता जी का घर सँकरी गली में है अतः तुम अपनी घोड़ी उसमें कैसे दौड़ाओगे ॥ २ ॥

इसपर उस दूल्हे ने कहा कि मेरे पिता की एक सोने की मूँठ वाली छुरी है उसीसे मैं खिड़की बना लूँगा और अपनी घोड़ी को दौड़ाऊँगा ॥३॥

तब उसकी स्त्री ने कहा कि इस बात को सुनकर मेरे पिताजी तो प्रसन्न होंगे परन्तु मेरा भाई तुम्हारी इस उद्दण्डता के कारण घोड़ी चुरा लेगा ॥४॥

(सन्दर्भ—पत्नी का क्रुद्ध होकर मायके जाना तथा रास्ते में नीच मल्लाह की कुचेष्टा)

(६३)

मोरा पिछुअरवा लवँगवा के गछिया[६] लवँग चुवेले[७] सारी रात ए।
आरे लवँग कटाइ ए बाबा पलँग सलाइ[८] हम सामि[९] सोइतो निरभेद[१०] ए ॥१॥

---

[१]दौड़ाओगे। [२]खिड़की। [३]मन में। [४]प्रसन्न होंगे। [५]चुरा लेंगे। [६]वृक्ष।
[७]गिरता है। [८]बनाओ। [९]स्वामी (पति)। [१०]निःशंक।

ए ओरी[1] सुतेले कवन दुलहा, जवरे[2] कवनि सुहवा रानि ए।
आरे ओगसुल ओलरू[3] ससुर जी के धियवा, मोरा पीठी गरमी[4] बहुत ए ॥२॥
आताना बचन जब सुनली कवनि सुहवा, खाट छोड़ि भुइयाँ[5] लोटि[6] ए।
आरे आरे भइया मलहवा लगइते, हमरा के पार तनीक ए ॥३॥
भइया नइया लेई आव, मोहि के उतारि देहु पार ए ॥४॥
आरे बहिनी कवनि बहिनी लगबु[7] तू, बहिना हामार ए।
आजु की राति बहिना इहवें गँवाव, बिहने[8] उतारि देवों पार ए ॥५॥
दिनवाँ खिअइबों[9] बहिना चाल्हावा[10] मछरिया, रतिया सुरहिया गाइ के दूध ए।
आरे लेई सुतइबों ए बहिना जाँत के करियवा[11] जहाँ बहे सीतल बातास ए ॥६॥
आगि लगइबों चाल्हावा मछरिया, बजर परसु[12] तोरा दूध ए।
आरे टुनुकि[13] फुटहु तोरा जाँत के करीयवा, नउजी[14] उतारि देवो पार ए ७
कइ नइया आवेला अगर चननवा, कइ नइया आवे सिरि राम ए।
आरे कइ नइया आवेला पियवा पतरे, मोरा के मनावनि होइ ए ॥८॥

कोई लड़की अपने पिता से कह रही है कि मेरे घर के पीछे लवँग का वृक्ष है। सारी रात उस वृक्ष में से लवँग चूकर नीचे गिरता है। ऐ पिता जी! उस वृक्ष को कटवा कर मेरे लिये पलँग बनवा दीजिये जिससे मैं अपने पति के साथ निःशंक सो सकूँ ॥ १ ॥

उस पलँग पर एक ओर तो पति सो गया और दूसरी ओर पास ही में

---

[1]एक तरफ। [2]पास में। [3]अलग हटो। [4]पीठ में। [5]जमीन में। [6]सो गयी। [7]लगोगी। [8]कल प्रातःकाल। [9]खिलाऊँगा। [10]मछेली विशेष। [11]पास। [12]नष्ट हो जाय। [13]फूट जाय। [14]मत।

उसकी स्त्री सो गई। पति ने स्त्री से कहा कि ज़रा हट कर अलग सोओ क्योंकि मेरी पीठ में बहुत गर्मी हो रही है ॥ २ ॥

इस वचन को सुनते ही वह स्त्री गुस्से में आकर पलँग को छोड़कर जमीन पर लेट गई। तदनन्तर वह घर से भाग खड़ी हुई। रास्ते में नदी पड़ी तब उसने मल्लाह से कहा कि तुम अपनी नाव लाओ और मुझे पार उतार दो ॥ ३। ४ ॥

उस दुष्ट मल्लाह ने उत्तर दिया कि तू मेरी बहिन लगेगी। आज की रात तुम यहीं पर बिताओ। मैं तुम्हें सवेरे ही पार उतार दूँगा ॥५॥

मल्लाह ने उस सती स्त्री से कहा कि मैं दिन को तुम्हें मछली का मांस खिलाऊँगा और रात को गाय का दूध पीने को दूँगा। ऐ बहिन! मैं तुम्हें लेकर जाँत के पास सोऊँगा जहाँ पर ठण्डी हवा बहती रहती है ॥ ६ ॥

इस पर क्रुद्ध होकर उस सती ने उत्तर दिया कि मैं तुम्हारे मांस में आग लगा दूँगी। तुम्हारे दूध में बज्र पड़ जाय, तुम्हारा जाँत टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाय। मुझे पार मत उतारो ॥ ७ ॥

उस सती स्त्री ने एक नाव को आते देखकर अनुमान किया कि क्या इसमें अगरु चन्दन आ रहा है, अथवा श्रीराम हैं, अथवा मेरा दुबला पतला पति मुझे मनाने के लिये आ रहा है ॥ ८ ॥

इस गीत में तनिक सी बात पर स्त्री का क्रुद्ध होना वर्णित है। ऐसी घटनायें प्रायः सर्वदा हुआ करती हैं और कभी-कभी स्त्रियाँ क्रोध तथा अविवेक के कारण अपने प्राणों को भी खो बैठती हैं। ऐसी ही स्त्रियों के लिये कवि ने क्या ही सुन्दर उपदेश दिया है कि :—

"भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः"

देहातों में एक कहावत है कि "घटवार बटवार होते हैं।" यह उक्ति इस मल्लाह के ऊपर अच्छी तरह से घट रही है। ये मल्लाह धन ही नहीं लूटते बल्कि इज्जत भी लूट लेते हैं।

सन्दर्भ—बारात का कन्या के घर आना और लड़की के द्वारा बारातियों के भोजन की तैयारी का वर्णन

(६४)

आमावा महुइया सीतल जुड़[1] छहियाँ रे, बहि गइले सीतल बातास[2] रे।
ताही तर बाबा पलँग डसावेले, बावा सोवेले निरभेद रे ॥१॥
पइसी जगावेली बेटी हो कवन बेटी, भले बाबा सोइले निरभेद रे।
बाड़ा बाड़ा पंड़ित बाबा बीहन[3] आवेले, भोजन धुमिल[4] जनि होइ रे ॥२॥
भात जनि अउसिह[5] हो बाबा दाल जनि अउसिह, दहिया अमत[6] जनि होइ रे।
पाख[7] बरोवरि बेटी भात नीराइबि, दलिया चलइबों पवनार[8] ए ॥३॥
हथहर[9] के डोटी ए बेटी घीव ढरकाइबि[10], बारावा[11] के नेवता देबि ए।
बाड़ा बाड़ा पंडित बेटी बियहन आवेला, भोजन धूमिल नाहि होइ ए ॥४॥
जेवहि[12] बइठेले[13] समधी कवन समधि, कवन राम बेनवा[14] डोलावे ए।
जेवहि समधी सकुच[15] जनि मानी ही, आजु हम सरन[16] तोहार ए ॥५॥

आम और महुआ के वृक्षों की शीतल छाया है वहाँ पर शीतल हवा बह रही है। वहाँ पर पलँग डालकर लड़की का पिता निःशंक होकर सो गया ॥१॥

थोड़ी देर में उसकी लड़की ने आकर अपने पिता को जगाया और कहा कि आप भले रहे कि निश्चिंत होकर सो गये। आपके घर आने वाली बारात में बड़े-बड़े पण्डित आ रहे हैं अतएव उनके भोजन का प्रबन्ध खराब नहीं होना चाहिये ॥ २ ॥

ऐ पिताजी! भात और दाल छोटे बर्तन में बनकर खराब नहीं होनी चाहिये और दही खट्टा न हो। तब पिता ने उत्तर दिया कि ऐ बेटी मैं दीवाल

[1]शीतल। [2]हवा। [3]विवाह करने के लिये। [4]खराब। [5]खराब करना। [6]खट्टा। [7]दीवाल। [8]नाली (ज़्यादा)। [9]लोटा। [10]गिराऊँगा। [11]फुलवरा (बड़ा)। [12]भोजन। [13]बैठता है। [14]पंखा। [15]संकोच। [16]शरण।

के बराबर ऊँचा भात की ढेरी लगा दूँगा; दाल की नाली बहा दूँगा; घी लोटे से दाल में डालूँगा और बड़ा (फुलवरा) भी बनवाऊँगा। बड़े-बड़े पण्डित बारात में आ रहे हैं अतः भोजन में त्रुटि नहीं हो सकती ॥ ३ । ४ ॥

बारात के आने पर समधीजी भोजन के लिए बैठे तब लड़की के पिता ने प्रार्थना की कि समधीजी आज खाने में संकोच मत कीजिये। आज मैं आपकी शरण में हूँ ॥ ५ ॥

सन्दर्भ—वर खोजने में आलस्य करने के कारण पुत्री द्वारा पिता को उलाहना

(६५)

आरे बाबा के आँगाना रे झालरि बिरवा[१] झालरि बहेला बयारि[२] ए।
ताहि तर बाबा रे पलँग डसावेले, बाबा सोवेले निरभेद ए ॥१॥
आरे पइसि जगावेली बेटि हो कवन बेटि, भले बाबा सोवे निरभेद ए।
आरे जाहि घरे ए बाबा धियवा कुँवारी, से कइसे सोवे निरभेद ए ॥२॥
आरे आताना बचन जब सुनले कवन बाबा, उठेले पावेल छाहाराई ए।
आरे आताना बचन जब सुनही ना पावेले, चलि भइले सहर बजार ए ॥३॥
आरे फाँड़े[३] बान्हि लिहले बाबा ढेबुआ[४], कउड़िया[५] चलि भइले सहर[६] बजार ए।
सोनवा बेसाही[७] बाबा घरे चलि अइले, नयना ढरि गइले लोर[८] ए ॥४॥
आरे मोरा पिछुआरावा सोनार भइया हितवा, सोने के हरफ गढ़ि देहु ए।
आरे हाराफावा[९] में धियवा छिपाइबि, ले जइहे दुलहा दामाद ए ॥५॥
आरे आताना बचन जब सुनली कवन बेटी, उठली पयेर छाहाराइ ए।

---

[१]वृक्ष। [२]हवा। [३]कपड़े में। [४]पैसा। [५]कौड़ी। [६]शहर। [७]खरीदना। [८]आँसू। [९]साँचा।

आरे तोरबों[1] हाराफावा रे तोरबों दारापवा, तुरबों में खुटवा[2] पचास ए ॥६॥

आरे खुटवा तुराइ बाबा घरे चलि अइले, जइबों[3] दुलह[4] जी के साथ ए ॥७॥

पिता के आँगन में छायादार वृक्ष है। वहाँ पर ठंढी हवा बहती है। उसी के नीचे पलंग बिछाकर वह पिता निश्चिन्त सोता है ॥ १ ॥

वेटी ने जाकर पिता को जगाया और कहा कि जिसके घर में क्वाँरी बेटी पड़ी हुई है वह पिता निश्चिन्त कैसे सो सकता है ॥ २ ॥

इतना वचन सुनते ही वह पिता जग उठा और बाजार को चल पड़ा ॥३॥

उसने पैसा और कौड़ी अपने कपड़े में ले लिया और बाजार से सोना खरीद कर चला। उसकी आँखों से आँसू गिर रहे थे ॥ ४ ॥

मेरे घर के पीछे रहने वाले ऐ सोनार तुम एक सोने का हरफ (साँचा) गढ़ दो। जब मेरा दामाद मेरी पुत्री को लेने आयेगा तब मैं बेटी को इसी में छिपा लूँगा ॥ ५ ॥

इतना वचन सुनते ही वह लड़की उठी और कहने लगी कि मैं साँचे को तोड़ दूँगी और पचासों खूटों को भी उखाड़कर फेक दूँगी ॥ ६ ॥

खूँटे (बन्धन) को तोड़कर मैं अपने पति के साथ जाऊँगी और पिता के घर को छोड़ दूँगी ॥ ७ ॥

सन्दर्भ—पुत्र तथा माता का स्नेह-वर्णन

(६६)

बेइली बिरिछिया[5] तर कोइलरि[6] बोलेले, बाबू तू धूप गँवाऊँ[7] ए।
कइसे में धूप गँवाऊँ ए कोइलरि, सुहवा लगनिया समतूल[8] ए ॥१॥
रचे[9] एक हाथी बेलमाव[10] मोरे बाबा हो, घोड़ा बेलमाव जेठ भाइ ए।
रेसम डोरिया सजन बेलमाइबि, आमा के पइयाँ परि लेबि ए ॥२॥

---

[1]तोड़ दूँगी। [2]खूँटा। [3]जाऊँगी। [4]पति (दूलहा)। [5]वृक्ष। [6]कोयल। [7]बिताओ। [8]जल्दी। [9]थोड़ी देर के लिये। [10]रोक लो।

अइसन असीसिया[1] ए आमा हमरा के दीह, जाते ही होला वियाह ए।
दान दहेज ए बबुआ बरधी[2] लदइह, सुहवा लिह डड़िया चढ़ाइ ए॥३॥
जाहु तुहु जइब ए बबुआ सुहवा का देसवा, दुधवा के निखि[3] मोहि देहु ए।
दुधवा के निखिया ए आमा दिहलो[4] ना जाला, जनम के निखि मोहि से लेहु ए॥४॥
हम त होइवो ए आमा वाप के सेवइत[5], धनि होइहे[6] दासी[7] तोहार ए॥५॥

कोई दूल्हा अपना विवाह करने के लिये जा रहा है। एक वृक्ष पर बैठी हुई कोई कोयल उससे कह रही है कि ऐ बबुआ! तुम इस पेड़ की छाया के नीचे गर्मी बिताओ। लड़के ने उत्तर दिया कि मैं यहाँ समय कैसे बिता सकता हूँ मुझे विवाह करने जाने की जल्दी हो रही है॥ १॥

लड़के ने अपने पिता से कहा कि आप थोड़ी देर के लिये हाथी रोक लीजिये, भाईजी घोड़े को रोक ले। जिससे मैं अपनी माता को प्रणाम कर लूँ॥ २॥

पुत्र ने माता को प्रणाम करते हुए यह प्रार्थना कि ऐ माता! आप मुझे ऐसा आशीर्वाद दीजिये जिससे जाते ही विवाह सकुशल (बिना झगड़े बखेड़े के) हो जाय। माता ने उत्तर दिया "ऐ बेटा! जाओ; दान, दहेज को बैल के ऊपर लादकर लाना और बधू को पालकी में चढ़ाकर लाना"॥ ३॥

माता ने कहा कि ऐ बेटा तुम अपनी स्त्री के देश में जा रहे हो अतः तुम मेरे दूध पिलाने के निखं (मूल्य) को दो। सुशील पुत्र ने उत्तर दिया कि ऐ माता! दूध का मूल्य चुकाना असंभव है। हाँ पैदा करने का मूल्य मैं कुछ चुका सकता हूँ॥ ४॥

ऐ माता! मैं पिताजी का दास बनूँगा और मेरी स्त्री तुम्हारी सेविका बनेगी॥ ५॥

---

[1]आशीर्वाद। [2]बैल। [3]प्रत्युपकार (मूल्य)। [4]दिया नहीं जा सकता। [5]नौकर। [6]होगी। [7]नौकरानी।

यदि आजकल भी ऐसे ही सुशील और भक्त पुत्र और बधू मिल जायँ तो माता और पिता का जीवन सुखमय बन जाय। पुत्र ने अपनी माता से सकुशल, शीघ्र ही विवाह हो जाने का जो बरदान माँगा है उसका कारण यही है कि विवाह में प्रायः छोटी-छोटी बातों पर भी झगड़ा हो जाया करता है और कभी-कभी तो कपालक्रिया की भी नौबत आ पहुँचती है। अतः बारात से सकुशल लौट आना बड़े सौभाग्य की बात समझी जाती है। इसीलिये पुत्र अपनी माता से आशीर्वाद चाहता है।

सन्दर्भ—वर का योगी के वेश में विवाह करने जाना

(६७)

काहाँवाँ से अइले रे जोगिया, काहाँवाँ कइले जाले।
कवन बाबा चउपरिया[1] रे जोगिया, बइठे[2] आसन मारी ॥१॥
पुरुब से अइले रे जोगिया, पछिम कइले जाले।
कवन बाबा चउपरिया रे जोगिया, बइठे आसन मारी ॥२॥
का ओकर खइल ए बाबा, काई लिहल उधारी।
कावना कारानवा ए बाबा, छेकेला[3] नगर तोहारी ॥३॥
पानावा ओकर[4] खइनी[5] ए बेटी, फुलवा लिहलों उधारी।
तोहरे कारानवाँ ए बेटी ! छेकेला धरम दुआरी ॥४॥
पानावा ओकर फेरि द ए बाबा, फुलवा दीह छितराई[6]।
अपना ही धोतिया ए बाबा, करना धरम[7] बियाही ॥५॥

कोई पुरुष योगी का वेष बनाकर ब्याह करने के लिए गया है। कोई पूछता है कि यह योगी कहाँ से आया है और कहाँ जायेगा। किसकी चौपाल में यह आसन मारकर बैठा हुआ है॥ १ ॥

वह योगी उत्तर देता है कि मैं पूर्व देश से आया हूँ और पश्चिम जाऊँगा तथा असुक मनुष्य की चौपाल में बैठा हुआ हूँ॥ २ ॥

---

[1]चौपाल। [2]बैठता है। [3]रोकता है। [4]उसका। [5]खाया है। [6]बिखेर दो। [7]बिना धन खर्च किये ही विवाह कर देना।

तब लड़की अपने पिता से पूछती है ऐ पिताजी! आपने इसका क्या ख़ाया है और क्या उधार लिया है जिस कारण से यह आप के दरवाज़े को घेरे बैठा है ॥ ३ ॥

पिता ने उत्तर दिया कि मैंने इसका पान खाया है और फूल उधार लिया है (तिलक के समय)। तुम्हारे विवाह करने के लिए ही ऐ बेटी यह द्वार को घेरे हुए है ॥ ४ ॥

लड़की ने उत्तर दिया कि आप उसके पान को लौटा दें और फूल को बखेर दें और अपनी केवल धोती ही को दहेज में देकर मेरा धर्म-विवाह कर दीजिये ॥ ५ ॥

इस गीत में दहेज की प्रथा की ओर संकेत किया गया है।

सन्दर्भ—पति के द्वारा दहेज में सोने का कटोरा माँगना

(६८)

फूल लोहें चलली सीता अइसन सुनरी, हाथे डलिया मुख पान ए।
आरे आँचर धई बिलमावे[१] हो रघुबर, अब सीता भइलु हमार ए ॥१॥
छोड़-छोड़ रघुबर हमरी अँचरिया, सुनि पइहें बाबा हमार ए।
आरे बाबा जे सुनिहें बिचिल[२] होई जइहें; अब सीता भइलू पराय[३] ए ॥२॥
हँसि के जे बोलेले दुलहा कवन दुलहा, सुन सुहवा बचन हमार ए।
आरे तोहार बाबाजी का सोने का कटोरवा, उहे[४] दीहिते हमरा के दान ए ॥३
हरि जी से बोलेली सुहवा कवनि सुहवा, सुनु प्रभु बचन हमार ए।
आरे हमरा बाबाजी का सोने का कटोरवा पियेले[५] कवन भइया दूध ए ॥४॥
आरे दुधवा पियत ए बहिना, माँगे दुलहा बहिन हमार ए।
आरे जेकर बहिना पयेत[६] सोवे हमें संगे, से हो माँगे बहिना हमार ए ॥५॥

सीता जैसी सुन्दरी हाथ में डाली और मुँह में पान का बीड़ा लेकर फूल

---

[१]रोकता है। [२]विचलित हो जाना। [३]दूसरे की। [४]उसी को। [५]पीता है। [६]साथ।

चुनने के लिये बगीचे में चली। वहाँ राम ने सीता का आँचर पकड़ कर रोक लिया और कहा कि अब तुम हमारी हो गई ॥ १ ॥

सीता ने कहा कि ऐ राम! तुम मेरा आँचर छोड़ दो। नहीं तो पिता जी यदि इस घटना को सुन लेंगे तो वे विचलित हो जायेंगे और कहेंगे कि सीता परायी हो गई ॥ २ ॥

हँस कर राम ने सीता से कहा कि ऐ स्त्री! तुम मेरी बात सुनो। तुम्हारे पिताजी के पास सोने का कटोरा है, उसे मुझे दहेज़ में दिला दो ॥ ३ ॥

सीता ने पति से कहा कि आप मेरे वचन को ध्यान से सुनिये। हमारे पिताजी के सोने के कटोरे में मेरा भइया दूध पीता है (अतः आपको वह नहीं मिल सकता) ॥ ४ ॥

भाई कहता है कि दूध पीते समय दूल्हा मेरी बहिन को माँग रहा है। हँसी में वह कहता है कि जिसकी बहिन मेरे पास सोती है वह दूल्हा मेरी बहिन को विवाह करने के लिये माँग रहा है ॥ ५ ॥

दहेज में बहुमूल्य वस्तुओं को माँगने की प्रथा सी पड़ गई है। उसी प्रथा के अनुसार दूल्हा सोने का कटोरा माँग रहा है।

सन्दर्भ—वर का गवना कराने जाना तथा पुत्री की माता का पुत्री को प्रेम से रखने का उससे निवेदन

(६६)

काहाँवाँ से आवेला चाक चकई,[1] अवरु दूलह जी के भाई रे।
काहाँवाँ से आवेला दुलह पगीया,[2] माया मोह लागाई रे ॥१॥
पुरुब से आवेला चाक चकई, अवरु दुलह जी के भाई रे।
पछिम से आवेला दुलह पगीया, माया मोह लागाई रे ॥२॥
काहाँवाँ बइठइबों चाक चकई, अवरु दुलह जी के भाई रे।
काहाँवाँ बइठइबों[3] में दुलह पगीया, माया मोह लगाई रे ॥३॥

---

[1]घोड़ा। [2]पगड़ी। [3]बैठाऊँगी।

दुवरो बइठइबों में चाक चकई, अवरु दुलह जी के भाई रे।
आरे कोहबर[1] बइठइबों में दूलह राजा, माया मोह लगाई रे ॥४॥
काई खिअइबों चाक चकई, अवरु दुलह जी के भाई रे।
आरे काई खिअइबों में दुलह पगीया माया मोह लगाई रे ॥५॥
दाल भात खिअइबों में चाक चकई, अवरु दुलह जी के भाई रे।
पुड़िया खिअइबों में दूलह राजा, माया मोह लगाई रे ॥६॥
का ले समोधबि[2] चाक चकई, का ले दुलह जी के भाई रे।
का ले समोधबि दूलह राजा, माया मोह लगाई रे ॥७॥
घास लें समोधबि चाक चकई, धोतीये दुलह जी के भाई रे।
धिया ले समोधबि दुलह राजा, माया मोह लगाई रे ॥८॥
खुदियनि चुनियनि[3] धिया हम पोसली[4], काँचा[5] दूध पियाई रे।
से धिया ले गइले दुलह राजा, करेजवा[6] में अगिन[7] लगाई रे ॥९॥

दूल्हा अपने भाई तथा घोड़े आदि के साथ गवना कराने के लिये आया है। पुत्री के प्रश्न करने पर कि दूल्हा और उसका भाई कहाँ रहेगा तथा क्या खायेगा उसकी माता क्रमशः उसका उत्तर दे रही है। इसका अर्थ अत्यन्त सरल है।

सन्दर्भ—दामाद की उक्ति ससुर के प्रति

(७०)

काहाँवाँ के बाग में चानावा गोबिनवा, काहाँ बाग डसावत[8] बाड़ी रे सेजिया।
ससुरु हो ससुरु कवन राम ससुरु, रउरे महल में छुटल[9] बाटे छुड़िया ॥१॥
कथी[10] केरा छुड़िया[11] ए बाबू, कथी लागल रे मुठिया।
आरे बाबू कथीनी फुदेना[12] लगावल बाड़ी रे छुड़िया ॥२॥

[1]भीतरी घर। [2]सन्तुष्ट करूँगी। [3]अन्न का टूटा हुआ अंश। [4]पालन पोषण किया। [5]कच्चा। [6]कलेजा (हृदय)। [7]अग्नि (आग)। [8]बिछाया गया है। [9]भूल गया है। [10]किस चीज़ का। [11]चाकू। [12]कपड़े का गोल फूल।

सोने केरि छुड़िया ए ससुर, रूपे लागल रे मुठिया।
आरे ससुर रेसम लागल, फुदेना लगावल बाड़ो रे छुड़िया ॥३॥
लोहे केरी छुड़िया ए बाबू पीतर लागली रे मुठिया।
आरे चिरकुट[1] फुदेना लगावल बाड़ी रे छुड़िया ॥४॥

किसी बाग में चन्दन के वृक्ष के नीचे एक लड़की का पिता चारपाई डालकर पड़ा हुआ है। उसका दामाद जो विवाह करने के लिए आया हुआ था—उससे कहता है कि ऐ ससुरजी तुम्हारे महल में मेरा चाकू छूट गया है ॥१॥

ससुर ने पूछा कि तुम्हारा चाकू किस चीज़ का है और किस चीज़ की मुट्ठी लगी हुई है तथा उसमें किस चीज़ का फुदेना लगा हुआ है ॥२॥

दामाद ने उत्तर दिया कि मेरा चाकू सोने का है; चाँदी की उसमें मुट्ठी लगी हुई है और उसमें रेशम का फुदेना लगा है ॥३॥

ससुर ने कहा कि तुम झूठ बोलते हो। तुम्हारा चाकू लोहे का है, उसमें पीतल की मुट्ठी लगी है और उसमें गन्दे कपड़े का फुदेना है ॥४॥

सन्दर्भ—ससुराल में दामाद का क्रुद्ध होना

(७१)

सींकी[2] के धवरहरि, पाननि[3] छावल ऐ।
ताहि पइसि[4] सुतेले कवन दुलहा, मुखहु ना बोलेले रे ॥१॥
किया बाबू दान दहेज थोर बाटे, किया बाबू धोती छोट ए।
किया बाबू धियवा घिनावनि[5] बाटे, काहे रउरा रूसिले[6] ए ॥२॥
नाहीं सासु दान, दहेज थोर नाहीं; नाहीं सासु धोती छोट ए।
नाहीं सासु धियवा घिनावनि नाहीं, नाहीं हम रूसिले ए ॥३॥
असी हो कोसे चलि अइलों त बटिया धूमिल भइले ए।
से सुनि सासु अननेली, नगर पइसेली ए ॥४॥

---

[1]गन्दा, फटा कपड़ा। [2]सरकण्डा। [3]पत्ता। [4]प्रवेश करके। [5]घृणास्पद (कुरूप)। [6]रुष्ट।

नगर कुकुरिया[1] जनि भूकसु[2], पहरुवा[3] जनि ठनकहु[4] ए।
आजु हम नगर पईसबि, धनि परबोधबि[5] ए ॥५॥

सरकंडे से बने हुए, तथा पत्तों से छाये हुए मण्डप में बैठकर विवाह करने के लिए आया हुआ दूल्हा मुख से तनिक भी नहीं बोलता है ॥१॥

यह देखकर उसकी सास ने पूछा कि ऐ बच्चा! क्या तुम्हें दान-दहेज कम मिला है, क्या धोती छोटी मिली है अथवा क्या स्त्री कुरूपा मिली है जिससे रुष्ट हो ॥२॥

दामाद ने उत्तर दिया कि न तो मुझे दान-दहेज ही कम मिला है, न तो धोती ही छोटी है और न स्त्री ही कुरूपा मिली है। मैं इन कारणों से रुष्ट नहीं हूँ ॥ ३ ॥

मैं अस्सी कोस के लम्बे रास्ते को तय करता हुआ चला आ रहा हूँ। इसलिये थक गया हूँ। यह सुनकर सास बहुत ही प्रसन्न हुई ॥४॥

दामाद ने सास से कहा कि आज इस नगर में कुत्ता मत भूँकें (न बोलें) और न पहरा देने वाले चौकीदार ही आवाज़ करें। क्योंकि आज मैं आपके घर में अपनी स्त्री से मिलकर उसे सान्त्वना दूँगा ॥५॥

सन्दर्भ—पुत्री-जन्म के कारण पिता का शोक-प्रकाश

(७२)

जाहि दिन ए बेटी तोहरो जनमवा, सोनवा सकलपीले आजु ए।
आरे का तोहरा बाबा हो सोनवा सकलपेले[6]; बेटी के बदन मलीन ए
जाहि दिन ए बेटी तोहरो जनमवा; हमरे सीरे बेसहलु[7] गारि[8] ए।
आरे सीखे ना पवलों बाबा घर घरुवरिया[9] अवरु[10] रसोइया मन लाइ ए ॥२॥
आरे सीखे ना पवलों बाबा छप्पन पदारथ, रउरे सीरे बेसहीले गारि ए ॥३॥

---

[1]कुत्ता। [2]भौंकना। [3]पहरेदार। [4]आवाज़ करे। [5]सन्तोष दूँगा, प्रबोधन दूँगा। [6]संकल्प करना। [7]खरीदना। [8]भार। [9]घर का काम। [10]और।

लड़की का पिता अपनी पुत्री के विवाह के लिए तिलक चढ़ाने जा रहा है। वह कहता है कि ऐ पुत्री! तुम्हारे जन्म से कारण मैं आज यह सोना (धन) तिलक में दे रहा हूँ ॥१॥

पुत्री ने उत्तर दिया कि आपके धन देने से क्या लाभ? मेरा चित्त अत्यन्त उदास है। पिता ने कहा कि ऐ बेटी! जिस दिन से तुम पैदा हुई उसी दिन से मेरे सिर पर भार चढ़ गया ॥२॥

तब लड़की ने कहा कि ऐ पिता! अभी मेरा विवाह क्यों करते हो। मैंने अभी तक न तो घर का काम करना सीखा और न छप्पन पदार्थवाला भोजन बनाना ही सीखा ॥३॥

सन्दर्भ—बारात का कन्या-पक्ष वाले के घर पहुँचने का वर्णन

(७३)

जब बरियतिया[1] जनकपुर आवे, हे हे[2] घोड़े बरखा[3] लगी।
मालिनि गुहेले[4] चित्र मउरिया[5], सिर पर छत्र धरी ॥१॥
जब बरियतिया गयेण[6] भिरि आवे, सीता झड़ोखे[7] खरी।
इ होरे दुलह जनि अबकी हारसु, कइसे के व्याह होई ॥२॥
जब बरियतिया दुआरे भिरि आइल, सीता झड़ोखे खरी।
इ होरे दुलह जनि अब हारसु, कइसे के व्याह होई ॥३॥
जब बरियतिवा मड़उवा भीरि[8] आइल, सीता का नीर ढरी।
मिलि जुलि लोग सीता समुझावत, काहे सीता नीर ढरीं ॥४॥
मुरुख[9] पुरुख यदुनंदन[10] बाड़े, उनही से व्याह होई।
इ बात सीता मनवा में गुनेली[11], ए ही से नीर ढरी ॥५॥

सीता के विवाह के लिए जनकपुर में जब बारात आ रही थी उस समय बड़े ज़ोरों से वर्षा होने लगी। माली की स्त्री एक ऐसा सुन्दर मौर बना रही थी जिसके ऊपर छाते का रूप बना हुआ था ॥ १ ॥

---

[1]बारात। [2]बड़े जोर से। [3]वर्षा। [4]गूँथती है। [5]मौर। [6]गाँव। [7]खिड़की। [8]पास, नजदीक। [9]मूर्ख। [10]श्रीराम। [11]सोचती है।

जब बारात नगर के पास चली आई तब सीता झरोखे पर खड़ी हुई उसे देखकर मन में कह रही है कि यह वर भी कहीं धनुष तोड़ने में हार न जाय नहीं तो मेरा विवाह फिर कैसे होगा ॥ २ ॥

जब बारात दरवाजे पर चली आई तब भी सीता ने अपने मन में यही कहा ॥ ३ ॥

जब बारात मण्डप में चली आई तब सीता की आँखों से आँसू बहने लगा। सब लोग मिल-जुलकर सीता को समझाने लगे और पूछने लगे कि तुम क्यों रो रही हो ॥ ४ ॥

सीता ने उन लोगों से कहा कि मेरा पति मूर्ख है। आज उसीसे मेरा ब्याह होने वाला है। इसी बात को मन में सोचकर मैं रो रही हूँ ॥ ५ ॥

यह गीत ऐतिहासिक घटना के विरुद्ध है अतः सीता का यहाँ अर्थ साधारण स्त्री से लेना चाहिये जनक-नन्दिनी से नहीं। मूर्ख पति पाकर स्त्री को कितना दुख है यह इस गीत से स्पष्ट प्रकट हो रहा है।

सन्दर्भ—बारात का सज-धज कर कन्या के पिता के घर आना तथा उसकी नम्रता का वर्णन

(७४)

काहाँवाँ के हथिया सींगारलि[1] आवेले, काहाँवाँ के झीन[2] लाहास[3]।
काहाँवाँ के राजा बियहन[4] आवेले, माथे मुकुट, मुखे पान ॥१॥
गोरखपूर के हथिया सींगारलि आवेले, पटना के झीन लाहास।
कासी का राजा रे बियहन आवेले, माथे मुकुट, मुखे पान ॥२॥
तड़पि[5] के बोलेले समधी कवन समधी, सुनु समधी बचन हमार।
कहीती त ए समधी उधरी पधरबी,[6] नाहीं त बरोही[7] तर ठाढ़ ॥३॥

[1]शृङ्गार करके। [2]पतला। [3]फूल। [4]विवाह। [5]ज़ोर से। [6]उल्टा लौट जाऊँगा। [7]वृक्ष।

मिनती[1] करि बोलेले समधी, सुनु समधी बचन हमार।
कवन दुलहा के ऊँच छवाइबि,[2] ठाढ़े[3] ही हथिया समाई[4] ॥४॥

कहाँ से यह शृङ्गार की हुई (अर्थात् जिसके शरीर पर वेल बूटे निकाले गये हैं) हाथी आ रहा है और कहाँ से उसके ऊपर का सुन्दर तथा पतला झूल आ रहा है। कहाँ का राजा सिर पर मुकुट और मुख में पान खाते हुए विवाह करने के लिये चला आ रहा है ॥ १ ॥

तब कोई उत्तर देता हैं कि गोरखपूर का हाथी आ रहा है, पटना से उसका झूल आ रहा है और काशी का राजा विवाह करने के लिये चला आ रहा है ॥ २ ॥

वर पक्ष के समधी ने कन्या के पिता से बड़े जोरों से गरजकर कहा कि कहो तो हम लोग उलटे अपने घर को लौट जायँ अथवा किसी वृक्ष के नीचे खड़े रहें। (तुमने बारात के ठहरने का प्रबन्ध क्यों नहीं किया है ?) ॥ ३ ॥

इस पर लड़की के पिता ने प्रार्थना करते हुए कहा कि मैं अपने दामाद के लिये बहुत बड़ा मकान बनाऊँगा जिसमें हाथी भी खड़े-खड़े घुस जा सके ॥४॥

सन्दर्भ—ननद का ससुराल जाना तथा भावज से नेग माँगना

(७५)

कवन नगरिया चनन उपजेला, कवना नगरिया हथिया होरिसारे बिकाय।
अपना दरबरिया में से कवन बाबा ढुरेले, कवन रे दुलहा पगरिया माँगे रे दान ॥१॥
अपना रसोइया में कवन देवी ढुरेली, कवनी रे सुहवा काकानवा माँगे रे दान ॥२॥

किस नगर में चन्दन पैदा होता है और किस नगर में हाथी बिकते हैं। अपने घर में लड़की का पिता बैठा है और दूल्हा दहेज में दान माँग रहा है ॥१॥

भावज रसोई घर में बैठी हुई है और उसकी ननद उससे सोने का कंकण नेग के रूप में माँग रही है (क्योंकि अब वह ससुराल जाने वाली है) ॥२॥

---

[1] बिनती, प्रार्थना। [2] बनाऊँगा। [3] खड़े खड़े। [4] घुस जाय, प्रवेश कर जाय।

सन्दर्भ—वर का गवना कराने के लिये ससुराल जाना

(७६)

पीपर पात पुलुइयनि[1] डोले, नदियन बहेला सेवार ए।
गांगा आरारे[2] चढ़ि बोलेला दुलहवा; लेला रमइया जी के नांव ए ॥१॥
आरे कई धवरे[3] भेंटबि बाग वगइचा, कई धवरे भेंटबि ससुरारी।
आरे कई धवरे भेंटबि सुहवा पियारी, देखी नयेना जुड़ाई ॥ २ ॥
एक धवरे भेंटबि बाग बगइचा[4], दुई धवरे भेंटवि ससुरारी।
तीन धवरे भेंटबि सुहवा पियारी, जे देखि नयेना जुड़ाई ॥ ३ ॥
दुलहा दुलहिनि मिलि एक मति भइली; दुलहा पूछेला एक बात।
धीरे धीरे बोल ए प्राभु सुनेला, नइहर के लोग बात ॥ ४ ॥
आरे हम रउरा ए प्राभु कोहबर[5] चली, आमा के देवि चिन्हाई।
पीअर ओढ़न, पीयर डासन; पीयरे मोतिन के हार ॥ ५ ॥
आरे जेकरा हाथे सोने के लोहो, उहे प्राभु आमा हमार।
लोहोवा घुमावेली रोदना पसारेली. उहे प्राभु आमा हमार ॥ ६ ॥
लालहि ओढ़न लाल ही डासन, लाले मोतिन केरा हार।
जेकरा हाथे सोनही केरा कंकन, उहे प्राभु चाची हमार ॥ ७ ॥
हरियर ओढ़न हरियर डासन, हरियर मोतिन केरा हार।
जेकरा गोदी में बालक भल सोभेला, उहे प्राभु भऊजी हमार ॥८॥
सबुज[6] ओढ़न सबुज डासन, सबुजे मोतिन केरा हार।
आरे जेकरा लिलारे झमाझमि[7] बिनुली[8]; उहे प्राभु बहिना हमार ॥९॥

कोई दूल्हा विवाह करने के लिये अपनी ससुराल जा रहा है। रास्ते में नदी आ पड़ती है। उसी समय का यह वर्णन है।

पीपल के पत्ते शाखाओं पर डोल रहे हैं और नदी में सेवार भरा हुआ

---

[1]शाख के अन्त में। [2]ऊँचा किनारा। [3]दौड़। [4]बगीचा। [5]वह एकान्त घर जहाँ पति-पत्नी विवाह के बाद थोड़ी देर तक साथ रहते हैं। [6]आसमानी रंग। [7]सुन्दर। [8]बिन्दी।

है। गंगा के खड़े तथा ऊँचे किनारे पर चढ़कर दूल्हा अपने ससुर का नाम ले रहा है (जिससे कोई नाव वाला उसे उस पार उतार दे) ॥ १ ॥

वह सोचता है कि पार उतर कर मैं कितनी दौड़ में बगीचे, कितने दौड़ में ससुराल पहुँचूँगा और कितनी दौड़ में स्त्री से मिलकर अपनी आँखों को शान्ति प्रदान करूँगा ॥ २ ॥

फिर वह आप ही आप उत्तर देता है कि एक दौड़ में मैं बगीचे में, दूसरी में ससुराल पहुँचूँगा और तीसरी दौड़ में स्त्री से मिलकर अपनी आँखों को सन्तुष्ट करूँगा ॥ ३ ॥

जब वह ससुराल पहुँचा तब अपनी स्त्री से मिलकर शान्ति प्राप्तकर उसने एक प्रश्न पूछा। तब स्त्री ने उत्तर दिया कि तुम धीरे-धीरे बोलो नहीं तो मायके के लोग हम लोगों की सब बातें सुन लेंगे ॥ ४ ॥

स्त्री ने पति से कहा कि हम आप कोहवर में चलें। मैं अपनी माता का आप से परिचय करा दूँगी। वह पीला वस्त्र ओढ़ती है और पीला वस्त्र बिछाती है तथा पीले मोती का हार डाले है वही हमारी माता है ॥ ५ ॥

जिसके हाथ में सोने का लोढ़ा है, जो उस लोढ़े को घुमा रही है तथा रो रही है; वही हमारी माता है ॥ ६ ॥

जिसका लाल वस्त्र ही ओढ़ना है और लाल ही बिछौना है तथा जिसके हाथ में सोने का कंकण है वही हमारी चाची है ॥ ७ ॥

जिसका हरा वस्त्र ओढ़ना तथा हरा ही बिछौना है, जिसके गले में हरे मोती की माला है और जिसकी गोदी में सुन्दर बालक सुशोभित हो रहा है, वही हमारी भावज है ॥ ८ ॥

जिसका आसमानी रंग का कपड़ा ओढ़ना और बिछौना है और आसमानी रंग का हार गले में डाले हुए है। जिसके ललाट पर सुन्दर बेंदी सुशोभित हो रही है, वही हमारी बहिन है ॥ ९ ॥

लड़की ने अपनी माता का जो परिचय दिया है वह अत्यन्त चित्ताकर्षक और हृदक द्रावक है। दूल्हे को परीछने के लिये वह अपने हाथ में लोढ़ा लिये हुए है और पुत्री के भावी वियोग के डर से उसकी आँखों से आँसू गिर

रहे हैं। लड़की के ससुराल जाते समय माता को जो कष्ट होता है वह माता का हृदय ही जान सकता है अन्य कोई नहीं। विदाई के कई दिन पहले से ही आँसू की झड़ी लगाना उनका प्रधान कृत्य हो जाता है।

सन्दर्भ—वर का विवाह के लिये प्रस्थान एवं लड़की का रोदन

(७७)

चलेले कवन दुलहा बाजन बाजाइ रे; बन के चिरइया सब
डुगुरलि जाइ रे।
हम त कवन दुलहा बियहन जाई रे; कातु चिरइया सब डुगुरलि
जाइ रे॥ १॥
हम त कवन दुलहा बियहन जाई रे; हँसि हँसि कवन दुलहा
बिरवा लगाइ ए।
रोई रोई कवन सुहवा बिरवो ना लेई रे, केकरा दरपवे सुहवा
बिरवो ना लेइ ए॥ २॥
केकरा दरपवे सुहवा रोदना पसारे रे, बाबा के दरपवे सुहवा
बिरवो ना लेइ रे।
आमा के दरपवे सुहवा रोदना पसारे रे॥ ३॥

कोई दूल्हा अपना विवाह करने के लिये बाजे के साथ चल रहा है। उसके साथ बन की सारी चिड़ियाँ धीरे-धीरे चलती चली आ रही हैं। तब वह उन चिड़ियों से पूछता है कि मैं तो विवाह करने जा रहा हूँ परन्तु तुम लोग मेरे पीछे क्यों आ रही हो॥ १॥

वह दूल्हा हँस-हँस कर पान का बीड़ा लगाता है और खाता जाता है। परन्तु उसकी स्त्री रो रही है और पान का बीड़ा नहीं खाती है। तब वह पूछता है कि तुम किस कारण अर्थात् किस दुःख से पान नहीं खा रही हो तथा तुम किस कारण रो रही हो॥ २॥

इसके उत्तर में वह कहती हैं कि मैं अपने पिता के भावी वियोग के दुःख से पान नहीं खा रही हूँ और माता जी के वियोग के डर से इतना रो रही हूँ॥ ३॥

सन्दर्भ—बाल विवाह का वर्णन माता की उक्ति पुत्र के प्रति

(७८)

सुरहिया गाई के दुधवा रे दुधवा; अवरु मगहिया[1] ढोलि[2] पान ए।
हमारा कवन दुलहा बियहन चलेले; पान बिनु[3] ओठ सुखाई ए ॥१॥
ऊँच रे मन्दिल चढ़ि हेरेली[4] कवन देई, कवन गाँव नियरा[5] कि दूर ए।
हमरा कवन दुलहा बियहन चलेले; दूध बिनु ओठ सुखाई ए ॥२॥
सुरहिया गाई के दुधवा रे दुधवा, अवरु मगहिया ढोलि पान ए।
हमारा कवनी सुहवा सासुर[6] चलली; दूध बिनु ओठ सुखाई ए ॥३॥
ऊँच रे मन्दिल चढ़ि हेरेली कवन देई, कवन गाँव नियरा की दूर ए।
हमरा कवनी सुहवा सासुर चलली, पान बिनु ओठ सुखाई ए ॥४॥

पुत्र विवाह करने के लिये जा रहा है। माता कह रही है कि गाय का दूध तथा मगध देश का पान रक्खा है। हमारा लड़का विवाह करने जा रहा है। कहीं पान की कमी के कारण उसका ओठ न सूख जाय ॥ १ ॥

ऊँचे मकान पर चढ़कर उसकी माता देख रही है कि जिस गाँव में विवाह करने जाना है वह गाँव नज़दीक है या दूर है। कहीं दूध के बिना मेरे लड़के का ओठ ही न सूख जाय ॥ २ ॥

जब दूल्हा विवाह करके अपनी स्त्री को साथ लेकर घर लौटने लगा तब लड़की की माता ऊँचे मकान पर चढ़कर लड़की की ससुराल की ओर देखती है कि वह गाँव नजदीक है या दूर ॥ ३ ॥

वह कहती है कि मेरी लड़की ससुराल जा रही है। कहीं रास्ते में दूध और पान की कमी से उसका गला न सूख जाय ॥ ४ ॥

इस गीत से स्पष्ट पता चलता है कि प्राचीन काल में लड़के लड़कियों का विवाह बचपन में ही हो जाता था। क्योंकि यदि ऐसी बात न होती तो लड़की तथा लड़के की माता रास्ते में गला सूखने के डर से नहीं डरतीं। ऐसी स्थिति की कल्पना तो बालकों के विषय में ही की जा सकती है।

---

[1]मगध देश। [2]ढोली। [3]बिना। [4]देखती है। [5]नजदीक। [6]ससुराल।

सन्दर्भ—विवाह के लिये जाते हुए पति का पत्नी से अचानक भेंट

(७६)

सावन भदउवाँ के दह पोखरि,[1] पुरइनि हालरि[2] लेइ ए।
आरे कोठवा ऊपर दुलहा धोतिया पसारेले, परे दुलहिनी जी के दीठी ए ॥१॥
आरे केकर हउवे रे अल्हड़ बछेड़वा,[3] कवना मइया जी के पुत्र ए।
आरे केकरा सागरवा नहाल बर सुन्दर, केई बियाहन जाई ए ॥२॥
आरे बाबा हई रे अल्हड़ बछेड़वा, अपना मइया जी के पुत्र ए।
आरे ससुर सागरवा नहालीं बर कामिनि, तुही बियाहन जाई ए ॥३॥
आरे आताना बचन जब सुनली कवन सुहवा; धवरि पइसेली आमा गोद ए।
आरे जवन बर आमा बियहन आवेला, तवन बर पोखर नहाई ए ॥४॥
आरे आताना बचन जब सुनले कवन भइया, अँखियनि लिहले गड़ोरी[4] ए।
आरे बाबूजी के जँघिया[5] के जामल[6] बहिनियाँ, आपु बर खोजन जाइ ए ॥५॥

सावन और भादों के महीने का तालाब पानी से भरा हुआ है और उसमें पुरैन का पत्ता हिलोरे ले रहा है। विवाह करने के लिये आया हुआ दूल्हा अपनी धोती को वहीं फैलाये हुए है। नहाने के लिये गई हुई दूलहिन ने उस दूल्हे को वहाँ देखा ॥ १ ॥

उसने दूल्हे से पूछा कि तुम किसके अल्हड़ बच्चे हो तथा किस माता के पुत्र हो। किसके तालाब में नहा रहे हो तथा किसको ब्याहने के लिये आये हो ॥२॥

दूल्हे ने उत्तर दिया कि मैं अपने पिता का अल्हड़ पुत्र हूँ, अपनी माता का लड़का हूँ, अपने ससुरजी के तालाब में मैं नहा रहा हूँ और तुम्हें ब्याहने के लिये आया हूँ ॥ ३ ॥

---

[1]तालाब। [2]हिलोरे लेना। [3]पुत्र। [4]तानना। [5]जाँघ। [6]पैदा हुई।

इतना बचन सुनते ही वह लड़की दौड़कर घर गई और अपनी माता की गोद में बैठकर कहने लगी कि ऐ माता ! जो दूल्हा हमें ब्याहने के लिये आ रहा है वह तालाब में नहा रहा है ॥ ४ ॥

इतना वचन सुनते ही उस लड़की का भाई आँखें तानकर देखने लगा और कहने लगा कि ऐसे उद्दण्ड दूल्हे से मैं अपनी बहिन का विवाह नहीं कर सकता। अतएव मैं स्वयं दूसरा वर खोजने के लिये जा रहा हूँ ॥ ५ ॥

सन्दर्भ—पुत्री की विदाई का वर्णन पिता-पुत्री वार्तालाप

(८०)

साँझ के उगली अँजोरिया[1] ए बाबा, सुकवा उगेला भिनसार[2] ए।
आरे सुरुज किरिनि[3] हमरा लागे हो बाबा; गोरा बदन कुम्हिलाइ ए ॥१॥
कहतु त बेटी हो तमुआ[4] तनइतीं, कहतु त छत्र उरेही ए।
होत भिनुसाहर बाबा बोलेले चिचुहिया[5]; लगबों सुनर बर का साथ ए॥२
आरे दुधवा के निखियो ना दिहलू ए बेटी; लगलु सुनर बर का साथ ए।
काहे के दुधवा पियवल ए बाबा, काहे के कइल दुलार ए ॥३॥
जानते तु रहल बाबा धियवा परायी[6], लगली सुनर बर का साथ ए ॥४॥

कोई लड़की गवने के समय पिता के घर से अपनी ससुराल को जा रही है। वह अपने पिता से कहती है कि यह चाँदनी सन्ध्या के समय से ही छिटक रही है। शुक्र उदय हो रहा है अतः प्रातःकाल होने वाला है। सवेरे सूर्य की तेज़ किरणें जब हमारे ऊपर लगेंगी तब हमारा गोरा चेहरा मलिन हो जायेगा ॥१॥

तब पिता ने उत्तर दिया कि ऐ बेटी कहो तो मैं शामियाना तनवा दूँगा अथवा छाता लगा दूँगा जिससे तुम्हारे शरीर पर सूर्य की किरणें न पड़े। तब लड़की ने यह कोरा जवाब दिया कि सबेरा होते ही जब चिड़ियाँ बोलने लगेंगी तभी मैं अपने सुन्दर पति के साथ ससुराल चल दूँगी ॥२॥

[1]चाँदनी। [2]प्रातःकाल। [3]किरण। [4]शामियाना। [5]चिड़िया। [6]दूसरे की चीज़।

पिता ने कहा कि ऐ पुत्री ! तुम मेरे दूध पिलाने तथा लालन-पालन का बदला बिना चुकाये ही पति के साथ जाने के लिये तैयार हो गई। इस पर लड़की ने उत्तर दिया कि आपने हमें दूध क्यों पिलाया ॥३॥

आप तो जानते ही थे कि लड़की पराये घर की चीज़ है। अतः आज मैं पति के साथ अवश्य जाऊँगी ॥४॥

वास्तव में लड़की पराई वस्तु होती है। कालिदास ने भी कहा है कि "अर्थो हि कन्या परकीय एव।"

सन्दर्भ—पुत्री के विवाह की ग्रहण लगने से तुलना तथा दामाद को दहेज देना

(८१)

कवन गरहनवा[1] बाबा साझही[2] लागे हो; कवन गरहनवा भिनुसार[3] ए।
कवन गरहनवा बाबा मड़वनि[4] लागेला, कब दोनी उगरह[5] होई ए ॥१॥
चान गरहनवा बेटी साझ ही लागेला, सुरुज गरहनवा भिनुसार ए।
धियवा गरहनवा बेटी मडवनि लागेला, कब दोनी उगरह होई ए ॥२॥
हमरा ही बाबा के सोने के थरियवा[6] छुवत झानाझनि होई ए।
उहे थरिवा बाबा दामादे के दीहित; तब रउरा[7] उगरह होई ए ॥३॥
हमरा ही भइया का सुनर गइया हो, सोनवे मढ़ावल चारो खूर ए।
सुनर गइया दामादे के दीहित हो, तब राउर उगरह होई[8] हो ॥४॥

पुत्री अपने पिता से पूछ रही है कि कौन ग्रहण रात को लगता है, कौन दिन में तथा कौन मण्डप में लगता है तथा उसका उग्रह कब होता है ॥१॥

इस पर पिता ने उत्तर दिया कि चन्द्र-ग्रहण रात में, सूर्य-ग्रहण दिन में तथा पुत्री का ग्रहण विवाह-मण्डप में लगता है। मालूम नहीं कि इस पुत्री-ग्रहण से उग्रह कब होता है ॥२॥

---

[1]ग्रहण (आपत्ति)। [2]सन्ध्या (रात्रि)। [3]प्रातःकाल (दिन)। [4]विवाह-मण्डप। [5]उग्रह अर्थात् ग्रहण से छुटकारा पा जाना। [6]थाली। [7]आप का। [8]होगा।

लड़की ने कहा कि ऐ पिता जी! आपके पास सोने की एक थाली है जिसकी आवाज़ झनाझन होती है। यदि उस थाली को अपने दामाद को दे दें तो आपका पुत्री के ग्रहण से उद्धार हो जायगा ॥ ३ ॥

लड़की ने फिर कहा कि मेरे भाई के पास एक सुन्दर गाय है जिसके चारों पैर (खुर) सोने से मढ़े हुए हैं। वह गाय यदि आप दहेज में दे दें तो आपका उद्धार हो जायेगा ॥ ४ ॥

यहाँ पर यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि लड़की का विवाह प्रसन्नता का विषय न कहकर ग्रहण (पकड़ना, आपत्ति) कहा गया है तथा पिता इस ग्रहण से छूटने के लिये अत्यन्त व्याकुल है। पुत्री के विवाह में अधिक दान-दहेज देकर ही दामाद से पिण्ड छूटता है। प्राचीन कवियों ने इसी कारण दामाद की निन्दा करते हुए उसे दसवाँ ग्रह कहा है यथा:—

"कन्याराशि स्थितो नित्यं जामाता दशमो ग्रहः।"

सन्दर्भ—बारात का प्रस्थान तथा कन्या के पिता द्वारा सब का सत्कार

(८२)

अगीली नलकिया[१] रे दुलहा के बाबा, पछिला दुलह जी के चाचा जी।
बीचिली नलकिया रे दुलहा जी सोभेले. बावें[२] दहिने पाचों भाई जी ॥१॥
जब बरियतिया गयेण[३] भीरि[४] गइली, गयेणिनि धूम मचायो जी।
जब बरियतिया दुआरे भीरि गइली, चेरिया कलस ले ले ठाढ़[५] जी ॥२॥
जब बरियतिया मड़वा[६] भीरि अइली, मड़वनि धूम मचायो जी।
गद्दी, दरी अवरु गवडू गलइचा, जाजिम[७] झारि डसायो[८] जी ॥३॥
थारीनि थारि मसाला[९] उड़ायो, अवरु मगहिया पान जी।
जेवहि बइठेले समधी कवन समधी; कवन राम बेनिया डोलाई जी ॥४॥

[१]पालकी। [२]बाँया। [३]गाँव। [४]पास, नजदीक। [५]खड़ी। [६]मण्डप। [७]बिछौना। [८]बिछाया गया। [९]गरी, इलायची।

जेवहिं समधी संकोच मती मानी, आजु हम राउर गुलाम[1] जी।
रउरा के समधी हम कुछहु ना दिहली; दिहली चेरिया तुम्हार जी ॥५॥
अइसन बोली जनि बोली ए समधी, राउर बचन पियार[2] जी।
राउर बेटी रे हामार लछिमी[3], लाख रुपइया हम पाई जी ॥६॥

विवाह के लिये दूल्हे की बारात जा रही। अगली पालकी में लड़के का पिता बैठा है और पिछली में उसका चाचा। बीच वाली पालकी में स्वयं दूल्हा बैठा हुआ है और उसके बायें और दायें पाँचों भाई बैठे ॥१॥

जब बारात गाँव के नजदीक आ पहुँची तब वहाँ पर गाजे-बाजे के कारण धूम मच गई। जब बारात दरवाजे पर पहुँची तब वहाँ पर दासी कलश लिये हुए द्वारपूजा पर खड़ी थी ॥२॥

जब बारात विवाह-मण्डप में पहुँची तब वहाँ भी धूम मच गई। वहाँ पर बारातियों के बैठने के लिये दरी, जाजिम और गलैचा आदि बिछाया गया ॥३॥

थाली में गरी, सुपारी, इलायची तथा मगहिया पान दिया गया। इसके बाद समधी जी (लड़के के पिता) भोजन करने के लिये बैठे और लड़की का पिता पंखा झलने लगा ॥४॥

तब लड़की के पिता ने कहा कि समधी जी! आप खाने में संकोच मत करें। आज मैं आपका गुलाम हूँ। मैंने आपको कुछ भी धन दहेज में नहीं दिया। अपनी लड़की को आपकी चेरी के रूप में दे दिया है ॥५॥

इस पर समधी ने उत्तर दिया कि आप ऐसी बात मत कहिये। आपका वचन मुझे बहुत प्यारा लगता है। आपकी पुत्री मेरे लिए लक्ष्मी है। मैंने उस लक्ष्मी स्त्री के रूप में लाखों रुपया पा लिया ॥६॥

यहाँ पर लड़की के पिता की नम्रता दर्शनीय है। वह पंखा झलता है तथा अपने को गुलाम कहता है। देहातों में लड़की का पिता विवाह के समय सचमुच ही बड़ा नीच, क्षुद्र तथा हेय समझा जाता है।

---

[1]नौकर। [2]प्यारी, सुन्दर। [3]लक्ष्मी।

सन्दर्भ—युवती पुत्री के द्वारा युवक वर खोजने के लिये पिता से प्रार्थना तथा पिता की परेशानियों का वर्णन

(८३)

छोटी मोटी सीता कवरवनि[1] ढाढ़ी, बाबा से अरज हमार ए।
आरे हमारा के बाबा सुनर वर खोजिह, अब भइलों बियहन जोग ए॥१॥
पुरुब खोजल बेटी पछिम खोजलों, अवरु बनारस, प्रयाग ए।
चारो भुवन बेटी तोहि वर खोजलों, कतही ना मिले सिरी राम ए॥२॥
जाहु जाहु बाबा हो ओही अवधपुर, राजा दसरथ जी का द्वार ए।
राजा दसरथ जी का चारि सुनर बर, चारि हवे कन्या कुवाँरि ए॥३॥
चारुन में जिनि[2] साँवर बाड़े, उहे हवे[3] कन्त हमार ए।
हाथे गुरदेलिया[4] गले तुलसी के माला, खेलत सरजू का तीर ए॥४॥
आलर[5] बाँसवा कटइह हो बाबा, रचि रचि मड़वा[6] छवाव हो।
हमरो कन्त ना बाबा हो निहुरी,[7] बिंदुली,[8] सेनुर मँगाव हो॥५॥
लाली डँड़िया फानाव हमरो बाबा हो, भइली बिदइया के बेरि[9] हो।
तुलसीदास छुटेला मोर नइहर, सखि सब भेंट अँकवार[10] हो॥६॥

इसी भाव का एक दूसरा गीत अर्थ सहित पहिले लिखा जा चुका है अतः अर्थ सरल होने के कारण इस गीत का अर्थ लिखने की आवश्यकता नहीं जान पड़ती।

सन्दर्भ—बारात के आने, विवाह तथा बिदाई होने का वर्णन

(८४)

के[11] आवे हाथी, कवन आवे घोड़ा; के आवेला सुख पालकि ए।
केकरा ही मथवा मनिक[12] छत्र सोभेला; केई वियाहन जाई ए॥१॥

---

[1]कोना। [2]जो। [3]है। [4]धनुष। [5]बड़ा। [6]विवाह-मण्डप। [7]झुक करके। [8]बिन्दी (टिकुली)। [9]समय। [10]आलिङ्गन (गले लगना)। [11]कौन। [12]माणिक्य।

राम आवे हाथी, लछमन आवे घोड़ा; भरत आवेला सुख पालकि ए।
रामजी का माथावा[1] मानिक छत्र सोभेला; रामचन्द्र बियहन जाई ए॥२॥
भइले बियाह परेला सिर सेनुर[2]; रामचन्द्र कोहबर जाई ए।
जब राजा रामचन्द्र कोहबर चलेले; सरहजि छेकेले दुआरि ए॥३॥
हमार नेग[3] जोग दीहिं वर सुन्दर; तब रउरा कोहबर जाई ए।
तोहरा के देबों सरहजि दुनो काने तड़िवन; अवरु गजमुकुता के हार ए॥४
ए बाड़ा हो पाराते सरहजि डँड़िया फानावेली; बीचवा भेंटेले पासाराम[4] ए।
ए हमरी बियाहलि सीता के ले जाला; मारबि धेनुका चालाई ए॥५॥
डँड़िया उघारि जब सीता अरज करे; पासाराम अरज हमार ए।
बालक राम, धेनुख[5] बड़ भारी; टुटत बिलम[6] बड़ होई ए॥ ६॥
ए पहील बान गिरेला जमुना दहे; दूसर गिरेला कुरुखेत[7] ए।
ए तीसर बान गिरेला[8] जमुना दहे; टुटी, पराले[9] पासाराम ए॥७॥

कौन हाथी पर चढ़कर आ रहा है; कौन घोड़े पर है और कौन पालकी में बैठा है। किसके सिर पर माणिक्य से जड़ा छत्र सुशोभित है तथा कौन विवाह के लिये आ रहा है॥ १॥

रामचन्द्रजी हाथी पर, लक्ष्मण घोड़े पर तथा भरतजी पालकी पर चढ़े हुए चले आ रहे हैं। रामचन्द्रजी के सिर पर माणिक्य का छत्र सुशोभित हो रहा है तथा रामचन्द्र ही विवाह के लिये चले आ रहे हैं॥ २॥

राम के विवाह-मण्डप में आने पर विवाह कृत्य सम्पन्न हो गया; सिर में सिन्दूर पड़ गया। जब रामचन्द्रजी कोहबर में जाने लगे तब सरहज ने आकर उनको दरवाज़े पर ही रोक लिया॥ ३॥

सरहज ने कहा कि ऐ सुन्दर दूल्हा जब तुम हमारा नेग (उचित पुरस्कार) दे दोगे तभी तुम कोहबर में जा सकते हो। तब रामचन्द्र ने उत्तर दिया कि ऐ सरहज! मैं तुम्हारे दोनों कानों के लिये इयररिङ्ग दूँगा और गजमुक्ता की माला भी दूँगा॥ ४॥

---

[1] सिर। [2] सिन्दूर। [3] पुरस्कार। [4] परशुराम। [5] धनुष। [6] विलम्ब। [7] कुरुक्षेत्र। [8] गिरता है। [9] भग जाता है।

जब सवेरा हुआ तो सरहज ने सीता को पालकी में ससुराल जाने को बैठा दिया। जब सीता और राम चले तब रास्ते में परशुरामजी मिल गये। परशुराम ने कहा कि मेरी ब्याही हुई सीता को कौन लिये चला जा रहा है? मैं उसे धनुष चलाकर मारूँगा ॥ ५ ॥

पालकी में से निकलकर सीता ने परशुराम से प्रार्थना की कि राम अभी बालक हैं और धनुष बहुत भारी है। इसे तोड़ने में विलम्ब अवश्य होगा ॥६॥

परन्तु परशुराम ने झगड़ना शुरू कर दिया। उनका पहिला बाण यमुना के जल में गिरा; दूसरा कुरुक्षेत्र में और तीसरा फिर यमुना जल में। इतने में परशुराम का धनुष टूट गया और वे भाग गये ॥ ७ ॥

इस गीत में ऐतिहासिक सत्य का अभाव है। विवाह के पहिले ही राम ने शिव के धनुष को तोड़ दिया था। इसी कारण परशुराम से उनकी मुठभेड़ हुई थी। परन्तु इस गीत में झगड़े का दूसरा ही कारण बताया गया है जो अत्यन्त अशुद्ध है। परशुराम का हथियार फरसा था न कि धनुष जैसा कि इसमें लिखा है। अतः गीत में वर्णित परशुराम वाली घटना नितान्त कपोल कल्पित ही समझनी चाहिये ॥

सन्दर्भ—काला वर खोजने के कारण पुत्री की पिता से शिकायत

(८५)

बाबा न देखो बाग बगइचा[1], बाबा ना देखो फुलवारी ए।
काहा दल उतरी ए बेटी; बरियाति[2] टिकाइबि[3] फुलवारी ए ॥ १ ॥
रउरा चुकलीं ए बाबा हमरी बेरिया, हमरा करियवा[4] बर आवे हो।
साँवर साँवर जनि कहु बेटी; साँवर कृष्ण कन्हाई हो ॥ २ ॥
वदन मलिन देखि पूछेले बाबा; काहे बेटी मन मलीन हो।
बाराबा के मइया बड़ि फूहड़ि[5] बेटी; तिसिया के तेलवा लगावे हो ॥३॥

---

[1]बागीचा। [2]बारात। [3]ठहराऊँगा। [4]काला। [5]गन्दी।

तोहरा मइया बड़ि गिहिथिनि[1] बेटी; करुवा तेल अबटेले हो।
ए ही से बर भइले साँवर बेटी; तू भइलू धप[2] धप गोरी[3] हो ॥ ४ ॥

पिता कह रहा है कि मैंने न तो कोई बाग़, बगीचा देखा और कोई फुलवारी ही देखी। बारात कहाँ उतरेगी यह समझ में नहीं आता। फिर निश्चय करता है कि मैं बारात को फुलवारी में ही ठहराऊँगा ॥ १ ॥

वर को देखकर लड़की ने अपने पिता से कहा कि ऐ पिताजी! आपने मेरे विषय में बहुत बड़ी गलती की है। क्योंकि आपने मेरे लिये काला वर ढूँढ़ रक्खा है। इस पर पिता ने उत्तर दिया कि बेटी! काली चीज़ बुरी नहीं होती। कृष्ण भी काले ही हैं ॥ २ ॥

लड़की के चित्त को दुःखी देखकर पिता ने पूछा कि तुम्हारा चित्त दुःखी क्यों है? वर की माता बड़ी फूहड़ है। वह इसे तीसी का तेल लगाया करती थी ॥ ३ ॥

तुम्हारी माता चतुर और कार्य-कुशल हैं। वह तुम्हारी देह में सरसों का तेल लगाया करती थी। इसीलिये तुम इतनी सुन्दरी हो गई और तुम्हारा दूल्हा साँवला हो गया ॥ ४ ॥

कन्या सर्वदा सुन्दर वर से ही अपना विवाह करना चाहती है जो स्वाभाविक ही है। लिखा भी है कि—

'कन्या वरयते रूपम्'। अतः वर खोजते समय इस बात का सदा ध्यान रखना चाहिये ॥

सन्दर्भ—बारात का आना तथा वर के द्वारा सरहज को दहेज में माँगना

(८६)

नदिया के तीरे माली फुलवरिया; कान्ह चरावेला[4] गाई ए।
हाँकु हाँकु कान्ह तू अपनी रे गइया; चरी गइले मोरि फुलवारि ए ॥१॥

---

[1]चतुर तथा कार्य-कुशल। [2]स्वच्छ। [3]गौर शरीर वाली। [4]चराता है।

आमुनि चरि गइलि जामुनि चरि गइलि; चरी गइले केरा, अमरूध ए।
झड़ रे झरोखे चढ़ि सरहजि निरखेले[1]; कत कत[2] आवे बरियाति ए॥२॥
कवन कवन जन आवे बारात में; कन्त आवेला असवारि[3] ए।
माई हाथिनि घोड़नि नगर छेकइले; सरहजि लेबों डँड़िया चढ़ाइ ए ॥३॥
आताना वचन सरहजि सुनही ना पवली; चली भइली घरवा तयार ए।
माई रे अइसन दमाद लउड़[4] कतहीना देखो; सरहजि माँगेला दहेज ए॥

नदी के तीर पर एक माली की फुलवाड़ी है। वहाँ पर कृष्णजी अपने४ गायों को चरा रहे हैं। मालिनि ने उनसे कहा कि तुम अपनी गायों को हटा लो क्योंकि हमारा सारा बगीचा ये चर गईं ॥ १ ॥

ये गाय जामुन, केला तथा अमरूद के पौधे चर गईं। उसी समय सरहज ने खिड़की पर चढ़कर धीरे-धीरे आती हुई बारात को देखा ॥ २ ॥

वह बारात को देखकर कहती है कि न मालूम कौन-कौन से आदमी चले आ रहे हैं। दूल्हा पालकी पर चढ़ा हुआ है। वह अपनी सास से कहती है कि ऐ माता ! हाथी और घोड़ों के कारण सारा नगर घिर गया है ॥ ३ ॥

दूल्हा जब विवाह करने के लिये आया तब उसने उस सरहज को दहेज में माँगा और कहा कि इसे पालकी में चढ़ाकर अपने घर ले जाऊँगा। इतना बचन सुनते ही वह सरहज क्रोध में आकर अपने मायके चली गई और वहाँ जाकर अपनी माता से कहा कि मैंने ऐसा दुष्ट तथा बदमाश दामाद कहीं नहीं देखा जो सरहज को दहेज में माँगता हो ॥ ४ ॥

वास्तव में दामाद ऐसी ही ऊँटपटाँग चीज़ें माँगा करते हैं जो देने लायक न हो और जो दाता की शक्ति के बाहर हो। इस गीत में कुछ अतिशयोक्ति अवश्य है।

सन्दर्भ—पति-पत्नी का काम-कलह वर्णन

(८७)

आरे अपना बलमुजी के मरमो[5] ना जानिले;
हँसि हँसि पारेले गारी ए॥ १ ॥

---

[1]देखता है। [2]धीरे-धीरे। [3]पालकी। [4]दुष्ट, बदमाश। [5]मर्म।

धाउ तेहु नउवा[1] रे, धाउ तेहु बरिया; सरहजि पकड़ि लेआउ रे।
आवसु सरहजि पलँग चढ़ि बइठसु; ननदी चरित देखि जाहु रे ॥ २ ॥
अइली सरहजि हाथ के पन बाटावा[2]; भइली कवरहीं ठाढ़ ए।
आरे ए ननदोइया[3] मोरी ननदो दुलारी; मोरा कुछु कहलो ना जाई ए॥३॥
केकर छवावल बसहर घरवा; केई बिनावल पटिहाटि[4] ए।
आरे केकरा दरपवे पलँग चढ़ी बइठेल; ननदी हमारी भुइयाँ लोटि ए ॥४॥
ससुरु छवावल बसहर घरवा; सारावे बिनावल पटिहाटि ए।
सासु का दरपे पलँग चढ़ि बइठेलों; ननदी तुम्हारी भुइयाँ लोटिए ॥५॥
उठु उठु ननदी रे उठु रे दुलारी; उठि के आपन सेज जाहु ऐ।
आरे आपना छयल[5] संगे बिरवा लगाऊ; आजु सोहाग के राति ए ॥६॥
जाहु जाहु भउजी रे जाहु दुलारी; उठि के आपन सेज जाहु ए।
आरे आपन ललन[6] संगे काम सँवारहु[7]; आजु सोहाग के राति ए ॥७॥

कोई स्त्री अपने पति के साथ सोई हुई थी। परन्तु पति ने अधिक गर्मी होने के कारण साथ सोने में अप्रसन्नता प्रकट की। तब वह स्त्री क्रुद्ध होकर जमीन में लेट गई। अब वह कह रही है कि मैं अपने पति के मर्म को नहीं जानती हूँ। वे हँस-हँसकर गालियाँ दिया करते हैं ॥ १ ॥

स्त्री को जमीन पर पड़ी देख दूल्हा ने नाई तथा बारी से कहा कि तुम लोग दौड़कर जाओ और मेरी सरहज को बुला लाओ। वह आकर मेरे पलँग पर चढ़कर बैठे और अपनी ननद की हालत को देखे ॥ २ ॥

हाथ में पान का डब्बा लिये सरहज आ गई और कोने में खड़ी हो गई तथा उससे कहने लगी कि ऐ ननदोई मेरी ननद बहुत दुलारी है। परन्तु उसकी दशा आज कुछ कही नहीं जाती ॥ ३ ॥

सरहज ने दूल्हे से पूछा कि किसने यह छप्पर छवाया है, किसने यह पलँग

[1]नाई। [2]पनडब्बा। [3]ननद का पति। [4]पलंग। [5]पति। [6]प्रियतम। [7]भोग-विलास करो।

बनवाया है तथा किसके घमंड से तुम इस पलंग पर चढ़कर बैठे हो और मेरी ननद ज़मीन में पड़ी लोट रही है। ४ ॥

दूल्हे ने उत्तर दिया कि मेरे ससुरजी ने इस घर को छवाया है, मेरे साले ने इस पलँग को बनवाया है और मैं सासु की आज्ञा से पलँग पर बैठा हूँ॥५॥

इस पर भावज ने ननद से कहा कि ऐ ननद! उठो और अपनी सेज पर जाओ। अपने प्रियतम के साथ तुम पान का बीड़ा लगाओ क्योंकि आज सोहाग-रात है ॥ ६ ॥

यह सुनकर क्रोध में आकर ननद ने भावज से कहा कि तुम्हीं अपनी सेज पर चली जाओ तथा अपने पति के साथ भोग-विलास करो क्योंकि आज सोहाग रात है ॥ ७ ॥

सन्दर्भ—स्त्री के छोटी मिल जाने पर वर का दुःख प्रकाश करना

(८८)

साभावा बइठल राजा दशरथ; सुन राजा बचन हमार ए।
जियल[1] जन्मल राजा एकउ ना पूजेला[2], जिहि घरे रामकुँवार ए ॥१॥
एक छिन रोवलु ए रानी राम जनमले; एक बेरिया[3] राम बियाह ए।
केई तोहरा ए राम जोड़वा[4] सँवारी रे, के सजइहें बरियात ए ॥२॥
केई तोहरा राम कसतुरिया[5] सँवरिहें; हरखि के जइब बरियात ए।
भइया हो भरत भइया जोड़वा सँवरिहें; बाबा सहेजिहें बरियात ए ॥३॥
आमा हो कोसिला आमा तिलक सँवरिहें; हरखि चलबि बरियात ए ॥४॥
दखिन के चीरा पहिर नीकलु[6] कैकई; राम के परीछले आउ ए।
जेकर राम से परीछ ले आऊ; मोरा नाहीं परीछे के साध ए ॥५॥
दखिन के चीरा[7] पहिर निकलु कोसिला रानी; राम के परीछले आउ ए।
आपन राम में अपने परीछबि; मोरा बड़ परीछे के साध ए ॥६॥
जबरे कोसिला रानी लोहों घुमावेली; राम नयेन ढरे लोर ए।
किया बबुआ रामचन्द्र माई, बाप निरधन, किया दहेज पवल थोर[8] ए ॥७

[1]जीना। [2]सन्तुष्ट होना। [3]समय। [4]कपड़ा। [5]तिलक। [6]निकलो। [7]कपड़ा। [8]थोड़ा (कम)।

किया बबुआ रामचन्द्र सीता छोटी बाड़ी हो काहे नयनवा ढरे लोर हो।
नाहीं कोसिला आमा माई बाप निरधन, ना पवली थोर दहेज हो ॥
आमा कोसिला आमा सीता छोट बाड़ी; ए ही से नयन ढरे लोर हो ॥८॥

सभा में बैठे हुए राजा दशरथ से कौशिल्याजी कहती हैं कि तुम मेरी बात सुनो। जिसके घर में रामचन्द्र अभी तक कुँवारे हों उसका जीना और जन्म लेना व्यर्थ है ॥ १ ॥

राजा दशरथ ने उत्तर दिया कि राम के जन्म लेने के पहिले भी तुम पुत्र के अभाव में रोया करती थीं और अब विवाह के लिये रो रही हो। तुम्हारे राम के लिये कपड़ा कौन बनायेगा और बारात कौन सजायेगा। उनके सिर तिलक कौन लगायेगा जिससे प्रसन्न हो सब बारात चल सकें ॥ २ ॥

इस पर रामचन्द्र ने उत्तर दिया कि भाई भरत कपड़ा तैयार करेंगे; पिता जी बारात सजायेंगे; माता कौशिल्या तिलक लगायेंगी और सब लोग आनन्द से बारात में चलेंगे ॥ ३।४ ॥

जब राम विवाह करके लौटकर आये तब कौशिल्या ने कैकेयी से कहा कि दक्षिण देश का कपड़ा (धारीदार) पहिनकर तुम राम को परीछो। इस पर कैकई ने उत्तर दिया कि जिसके राम पुत्र हैं वही परीछे। मुझे परीछने की इच्छा नहीं है ॥ ५ ॥

तब राम को परीछने के लिये कौशिल्या निकलीं और कहा कि अपने राम को मैं आप ही परीछूँगी क्योंकि उन्हें परीछने की मुझे बड़ी इच्छा है ॥६॥

जब कौशिल्या राम को परीछते समय अपना लोढ़ा घुमाने लगीं तब राम की आँखों से आँसू गिरने लगा। यह देखकर कौशिल्या ने पूछा कि क्या लड़की के माता-पिता गरीब हैं अथवा तुम्हें दहेज कम मिला है? अथवा सीता छोटी हैं (किस कारण से तुम रो रहे हो) ॥ ७ ॥

राम ने उत्तर दिया कि ऐ माता! न तो लड़की के माता-पिता ही निर्धन हैं और न मुझे दहेज ही कम मिला है। ऐ माता! सीता की अवस्था बहुत थोड़ी है, इसीलिये मैं रो रहा हूँ। अन्य कोई कारण नहीं है ॥ ८ ॥

कौशिल्या की भाँति सभी माताओं को अपने पुत्र का विवाह देखने की

बड़ी इच्छा रहती है चाहे वह बच्चा छोटा ही क्यों न हो। पत्नी को बूढ़े पति के मिलने से वही कष्ट होता है जो पति को छोटी स्त्री मिलने से। इसीलिये राम सीता की छोटी अवस्था के कारण इतने दुःखी हैं।

सन्दर्भ—राम के द्वारा सीता की अग्नि-परीक्षा

(८६)

कवन आम पियर कवन आम हरियर, कवन आम सेनुरवा के जोति ए।
ई तीनु आमावा के के सीरिजल, कवन पापी लगन सोचाई ए ॥१॥
चौदहों बरिस पर अइले राजा रामचन्द्र, सीता बिचरवा हम लेबि ए।
जब रे सीता देई अगिनि हाथे लिहली[1] रे, अगिनि भइली जुड़[2] पानी ए॥२
इहो किरियवा सीता हम ना पतियाइबि,[3] अदित बिचरवा हम लेबि ए॥३॥
जब रे सीता देई अदीत[4] हाथे लिहली रे, अदित छपित[5] होई जाइ ए।
इहो किरियवा ए सीता हम ना पतियाइबि, सरप बिचरवा हम लेबि ए॥४॥
जब रे सीता देई सरप[6] हाथ लिहली रे, सरप बइठेले फेटा[7] मारि ए।
इहो किरियवा सीता हम ना पतियाइबि; गंगा बिचरवा[8] हम लेबि ए॥५॥
जब रे सीता देई गंगहि हाथ लिहली रे; गंगहि परि गइले रेत ए।
इहो किरियवा ए सीता हम ना पतियाइबि, तुलसी बिचरवा हम लेबि ए॥६॥
जब रे सीता देई तुलसी हाथे लिहली, तुलसी गइली सुखाई ए।
अइसन पुरुखवा[9] के मुँह नाहि देखबि, जिनि राम देले बनवास ए॥७॥
फटि जइती धरती अलोप[10] होई जइतीं रे, अब ना देखबि सनसार[11] ए॥८॥

कौन आम पीला है, कौन हरा है और कौन सिन्दूर के समान लाल है। इन तीनों आमों को किसने बनाया तथा किस लग्न में सृष्टि की। अर्थात् मनुष्य की त्रिगुणात्मिका प्रकृति को किसने बनाया ॥ १ ॥

राजा रामचन्द्र चौदह वर्ष के बाद वन से लौटकर आये तब उन्होंने यह

---

[1] लिया। [2] शान्त। [3] विश्वास करूँगा। [4] आदित्य—सूर्य। [5] अस्त हो जाना। [6] सर्प। [7] फना। [8] शपथ, साक्षी। [9] पुरुष। [10] नष्ट हो जाना। [11] संसार।

निश्चय किया कि दूसरे के घर रही हुई सीता की परीक्षा की जाय। अतः सीता ने अपनी शुद्धता दिखलाने के लिये जब अग्नि हाथ में लिया तब वह बिल्कुल ठंढी हो गई ॥ २ ॥

तब राम ने कहा कि मैं इस परीक्षा को सत्य नहीं मानता। सीता सूर्य के समक्ष साक्षी दे। तब सीता ने सूर्य को अपने हाथ में उठा लिया और वह हाथ में उठाते ही अस्त हो गया ॥ ३ ॥

राम ने कहा मैं इसको भी नहीं मानता। सीता सर्प की शपथ ले। इस पर सीता ने सर्प को अपने हाथ में ले लिया तब वह फना फैलाकर बैठ गया ॥ ४ ॥

राम ने कहा सीता गंगा की साक्षी दे। जब सीता ने गंगा को हाथ में लिया तब गंगा बिल्कुल सूख गई और रेत-रेत हो गया ॥ ५ ॥

राम ने कहा कि मैं इसे भी नहीं मानता। सीता अपने हाथ में तुलसीदल लें। परन्तु जब सीता ने तुलसी को अपने हाथ में लिया तब तुलसी जी बिल्कुल ही सूख गई ॥६॥

परन्तु फिर भी जब राम ने सीता को बनवास दे दिया तब सीता ने क्रुद्ध होकर कहा कि मैं ऐसे पुरुष का मुँह नहीं देखना चाहती जिसने मुझे बनवास दिया है ॥ ७ ॥

अब धरती फट जाती तो मैं उसी में विलीन हो जाती। अब मैं इस दुष्ट संसार को देखना नहीं चाहती ॥ ८ ॥

---

४. (ख) शिवजी के विवाह के गीत

भोजपुरी गीतों में शिव तथा पार्वती के विवाह संबंधी अनेक रोचक गीत मिलते हैं जिनमें शिव की विलक्षण आकृति, उनकी विचित्र बारात तथा अन्य हास्यजनक वस्तुओं का वर्णन पाया जाता है। कहीं-कहीं शिव जैसे भयंकर आकृति वाले वर के मिलने के कारण पार्वती के साथ समवेदना प्रकट की गई है। कहीं पर कठिन तपस्या करने पर भी शिव के वर रूप में प्राप्ति के कारण पार्वती के भाग्य की निन्दा की गई है। तुलसीदास ने रामायण में शिव की बारात का जैसा वर्णन किया है, उस वर्णन से इन गीतों का वर्णन बहुत कुछ मिलता-जुलता है।

सन्दर्भ—शिव की वीभत्साकृति को देखकर पार्वती की माता का अपनी पुत्री का विवाह करने से मना करना परन्तु शिव के सुन्दर रूप बनाने पर विवाह कर देना

(६०)

आरे बाजत आवेला ढोल दमामा; उड़इत आवेला नीसान[१]।
नचइत आवेले ईसर महादेव;बयल[२] पर असवार ॥ १ ॥
गउरा अइसन गयानी सयानी; तेकर बर बउराह[३]।
धिया[४] लेके उड़बी, धिया लेके बुड़बी; धिया लेके खिलबों पाताल ॥२॥
एइसन तपसिया के गउरा नाहीं देबों; बलु गउरा रहिहें कुँवार।
ए आगे परीछे गइली सासु मादागिनि, सरप छोड़ेले फुफकार ॥३॥
ए उहँवा से अइली मादागिनि ठोकली, बजर[५] केवार[६]।
आरे माड़ो[७] उखारेली, कलसा फोरेली, पुरहथ[८] देली छितराइ ॥४॥

---

[१]पताका। [२]बैल। [३]पागल। [४]लड़की। [५]वज्र (कठिन)। [६]केवाड़।
[७]मण्डप। [८]चौक पूरने का आटा।

अइसन तपसिया के गउरा में ना देवों, बलु गउरा रहिहें कुँवार।
ए सीव गउरा अइसन गेयानी, सेकर सामी[1] बउराह ॥५॥
आरे कलसा का ओटे ओटे गउरा[2] विनती करे, सुनु सीव अरज हमार।
तनियेका ए सीव जाटा उतारीं, नइहर[3] लोग पतियासु ॥६॥
आरे जाटा उतारि सीव भभुती[4] उतरलें, गांगा करेले असनान[5]।
आठो अंग सीव चनन चढ़वलें, मांह[6] मड़उवा भइलें ठाढ़।
आरे काहाँ बाड़ी सासु काहाँ बाड़ी सरहजि, अव रूप देखसु हमार ॥७॥
आरे माड़ो गड़ावेली कलस धरावेली, पुरहथ लिहली बटोर।
अइसन तपसिया के गउरा[7] हम देवों, करवों में गउरा से विआह ॥८॥

शिवजी की बारात आ रही है। उसमें ढोल तथा नगाड़े बज रहे हैं और पताके उड़ रहे हैं। शिवजी बैल पर चढ़कर उसे नचाते हुए चले आ रहे हैं ॥ १ ॥

बारात में आये हुए शिव को देखकर पार्वती की माता कहती हैं कि हमारी लड़की पार्वती ज्ञानी तथा चतुर है। लेकिन उसका पति (शिव) पागल है (क्योंकि सर्पों की माला लगाये तथा बैल पर चढ़े हुए चला आता है)। मैं अपनी पुत्री को लेकर उड़ जाऊँगी, डूब जाऊँगी या पाताल में लेकर चली जाऊँगी ॥ २ ॥

ऐसे तपस्वी के साथ मैं अपनी लड़की का ब्याह नहीं करूँगी, चाहे पार्वती क्वाँरी भले ही रह जाय। जब पार्वती की माता वर (शिव) को परीछने के लिये गई तब (शिव के गले में लगे हुए) साँप ने फुफुकार छोड़ा ॥ ३ ॥

वहाँ से आकर माता ने रुष्ट होकर बड़े जोरों से घर का दरवाज़ा बन्द कर दिया। उन्होंने ब्याह के मण्डप को उखाड़ दिया, कलशे को फोड़ दिया तथा चौका पूरने के लिये रक्खे गये आटे को बखेर दिया ॥ ४ ॥

---

[1]स्वामी (पति)। [2]पार्वती। [3]मायका। [4]विभूति (भस्म)। [5]स्नान। [6]मध्य। [7]पार्वती।

माता कहने लगी कि ऐसे साधू को अपनी लड़की पार्वती को मैं नहीं दूँगी चाहे वह कांरी भले ही रह जाय। पार्वती तो इतनी चतुर है और उसका पति इतना पागल है ॥ ५ ॥

तब घोड़े के पीछे छिपकर पार्वती ने प्रार्थना करते हुए यह कहा कि ऐ शिव! मेरी विनती सुन लो तथा थोड़ी देर के लिये अपनी जटा उतार दो जिससे तुम्हारे असली रूप पर मायके के लोग विश्वास कर सकें ॥ ६ ॥

पार्वती की इस प्रार्थना को सुनकर शिवजी ने अपनी जटा और विभूति (भस्म) को उतार दिया तथा गंगा में स्नान कर लिया। अपने आठों अंग में चन्दन चढ़ा दिया और विवाह-मण्डप के बीच में आकर खड़े हो गये। वे कहने लगे मेरी सासु और सरहज (साले की स्त्री) कहाँ हैं, अब आकर मेरे रूप को देखें ॥ ७ ॥

इस रूप को देखकर पार्वती की माता बहुत प्रसन्न हुई और वे मण्डप गड़ाने तथा कलश धरने लगीं तथा बिखरे हुए आटे को इकट्ठा कर लिया। अब ऐसे तपस्वी को मैं पार्वती को अवश्य दूँगी तथा पार्वती का विवाह उससे अवश्य करूँगी ॥ ८ ॥

इस गीत में अनमेल विवाह का जो मार्मिक चित्र खींचा गया है वह देखते ही बनता है। पार्वती की माता का अपनी पुत्री के प्रति कितना गाढ़ प्रेम है। वह मर जाने के लिये तैयार है परन्तु ऐसे अनमेल वर से पार्वती का विवाह करना नहीं चाहती। इस प्रकार के अनमेल ब्याह आजकल भी गाँवों में बहुत देखने में आते हैं जहाँ ७५ वर्ष के पोपले मुँह वाले बाबा दुधमुँही बच्चियों से विवाह करने के लिये वर बन कर जाते हैं।

सन्दर्भ—शिवजी के गवने का वर्णन पार्वती की उक्ति शिव के प्रति

(६१)

सीव जी हाथावा में सोने केरी छुरी।
हीरी फिरी खोजेले सीव गउरा की अटारी ॥ १ ॥

सुतली रहली गउरा देई उठेली चीहाई[1] ।
काहे रउरा अइलीं ए सीव नीसु[2] अन्हीयारी[3] ॥ २ ॥
आजु हम अइलीं ए गउरा बावाजी की चोरी ।
कालु हम अइवों ए गउरा सजन बटोरी ॥ ३ ॥
तोहरा के ले अइवों गउरा घुघुरा लगाई ।
हामारा के ले आइबी सीव पाट के पटोरी ॥ ४ ॥
बावा हमार निरधन ए सीव दहेजवो ना दीहें ।
बावा तोहार निरधन ए गउरा दहेजवो ना दीहें ॥ ५ ॥
हामारा ही आसा के गउरा जवाब जनी दीह ।
जो कुछ अरजीह ए भोला से लेखा जनि लीह ॥ ६ ॥

शिवजी विवाह करने के लिये आये हैं। संभवतः उनके कोहबर का यह वर्णन है। शिवजी के हाथ में सोने की छुरी थी। वे पार्वती के घर में बार-बार उसे ढूँढ़ रहे हैं ॥ १ ॥

पार्वती सो रही थी, वह आश्चर्यित होकर उठी और शिव को देखकर उसने कहा कि ऐ शिव ! आप अन्धेरी रात में यहाँ क्यों आये ॥ २ ॥

तब शिवजी ने उत्तर दिया "आज मैं अपने पिता से छिपकर आया हूँ परन्तु कल सब मित्रों को इकट्ठा करके आऊँगा" ॥ ३ ॥

"तुम्हारे लिये पैर में लगाने के लिये मैं घुंघुरू लाऊँगा" शिव ने कहा। तब पार्वती ने उत्तर दिया कि मेरे लिये सुन्दर कपड़े अथवा ताग-पाट लेते आना ॥ ४ ॥

"मेरे पिताजी निर्धन हैं, अतएव वे आपको कुछ दहेज नहीं दे सकते" पार्वती ने कहा ॥ ५ ॥

शिव ने कहा कि ऐ पार्वती मेरे घर आने पर तुम मेरी माता को जवाब मत देना। तब पार्वती ने कहा कि ऐ शिव ! तुम जो कुछ कमाना उसे मुझे दे देना और उसका हिसाब मत माँगना ॥ ६ ॥

---

[1]आश्चर्यित होकर। [2]रात्रि। [3]अन्धेरी।

सन्दर्भ—विवाह के अवसर पर पार्वती के घर शिव के परीछने तथा दहेज देने का वर्णन

(६२)

ऊँच मड़उवा[1] माहादेव बरधी[2] लदाई।
रचे एक नीहुरीं[3] महादेव परीछों में तोही ॥ १ ॥
गाई का गोबरे माहादेव आँगाना लिपाई।
गजमोती आहो माहादेव चऊका पुराई ॥ २ ॥
चउकनी बइठेले माहादेव गइले आलासाई।
अँगुठनी मारि गउरा देइ लिहली जागाई ॥ ३ ॥
अँगुठा के मरले माहादेव गइले कोहनाई[4]।
बहिंया लफाह गउरा देइ लिहली मनाई ॥ ४ ॥
बीयहीं की बेरिया[5] माहादेव कुछुवो ना पइबो।
गावना का बेरिया माहादेव सब कुछ पइबो ॥ ५ ॥
खाये के माहादेव थारी, अँचवे के झाड़ी[6]।
सुते के पँलगरी[7] माहादेव, ओढ़े के रजाई ॥ ६ ॥
सुनि ए सीव बाबा दीहें हाथी से घोड़ा।
भऊजी दीहें अँगूठी, भइया दीहें धेनु गाई[8] ॥ ७ ॥

ऊँचे मण्डप में शिवजी बैल पर चढ़कर विवाह करने के लिये आये हैं। उनकी भावी सास कहती हैं कि शिव! जरा झुक जाओ जिससे मैं तुम्हें परीछ सकूँ ॥ १ ॥

गाय के गोबर से आँगन लिपा गया है और गजमोती से चौक पूरा गया है ॥ २ ॥

जब शिवजी विवाह करने के लिये चौके पर बैठे तब उन्हें आलस्य आगया और सो गये। तब पार्वती ने उन्हें अपने अँगूठे से मार कर जगाया ॥ ३ ॥

---

[1]मण्डप। [2]बैल। [3]झुकना। [4]रुष्ट हो जाना। [5]समय। [6]बड़ा लोटा। [7]पलंग। [8]अच्छी गाय।

अँगूठे से मारे जाने के कारण शिवजी रुष्ट हो गये परन्तु पार्वती ने अपनी बाँह से पकड़कर उन्हें प्रसन्न कर लिया ॥ ४ ॥

पार्वती ने शिव से कहा कि ऐ शिव ! विवाह के समय आपको दहेज के रूप में कुछ नहीं मिलेगा परन्तु गवना के समय सब कुछ मिलेगा ॥ ५ ॥

खाने को थाली, हाथ धोने के लिये बड़ा लोटा, सोने के लिये पलँग और ओढ़ने के लिये रजाई (लिहाफ) मिलेगी ॥ ६ ॥

ऐ शिव ! मेरे पिताजी घोड़ा और हाथी देंगे, भावज एक अँगूठी देंगी और भाई एक अच्छी गाय देगा ॥ ७ ॥

सन्दर्भ—शिव की विचित्र बारात का वर्णन

(६३)

लेहुना बारी रे हाथे सोपारी, ए डाँड़े घुघुरवा बान्ही,
लेहु देखु आउरे बरिया कत दल आवेरे सिव बरियतिया[1] ॥ १ ॥
भूत बेताल आवे सिव बरियतिया,
आरे सीव रूप देखलो ना जाई ॥ २ ॥
परीछे बाहर भइली सासु मादागिनि,
सरप छोड़ले फुफुकार ॥ ३ ॥
लोहा पटकली अछत देली छितराई,
आरे कलसा के ओटे गउरा बिनती करे ॥ ४ ॥
सीवजी से अरज हमार
तनिक ए सिव ! भेख उतारु नइहर लोग पतिआई ॥ ५ ॥
उतरलें सीव जाटा उतरलें गाँगा, करेलें असनान[2] ;
आठो ही अंग सिव चनन चढ़वलें, माह मँडउवा भइले ठाँढ़ ॥६॥
काहाँ बाड़ी सासु काहाँ बाड़ी सरहजि[3] ,
रूप देखसु अब हमार ॥ ७ ॥

शिवजी की बारात आ रही है; उसकी अगवानी के लिये बारी (एक

---

[1]बारात । [2]स्नान । [3]साले की स्त्री ।

जाति) को भेजते हुए कोई कहता है कि ऐ बारी ! तुम अपने हाथ में सुपारी ले लो और अपने ड़ाँड़ में घुघुरू बाँध लो तथा जाकर के देखो कि शिव की बारात में कौन-कौन आदमी आ रहे हैं ॥ १ ॥

तब उसने आकर कहा कि शिव की बारात में भूत, बैताल सब आ रहे हैं। शिव का रूप (सर्प धारण के कारण) इतना भयंकर है कि देखा भी नहीं जाता ॥ २ ॥

जब पार्वती की माता शिव को परीछने के लिये गईं तब साँप फुफुकार छोड़ने लगे। इस पर उन्होंने लोढ़ा पटक दिया और अच्छत तितर-बितर कर दिया ॥ ३ । ४ ॥

तब कलसे के ओट से पार्वती यह प्रार्थना करने लगी ऐ शिव ! अपने इस रूप को हटाकर असली रूप दिखलाओ जिससे मायके के लोग विश्वास कर सकें ॥ ५ ॥

तब शिव ने अपनी जटा खोली, गंगा को उतारा और स्नान करके अपने आठों अंगों में चन्दन लगाकर मण्डप के बीच में आकर खड़े हो गये और कहने लगे ॥ ६ । ७ ॥

हमारी सास और सरहज कहाँ हैं। वे आवें और मेरे रूप को अब देखें ॥८॥

सन्दर्भ—विवाह के लिये आते हुए शिव की विचित्र आकृति का वर्णन

(६४)

फूल लोढ़ें[1] चलली गउरा ओही फुलवारी,
बासाहा[2] चढ़ल माहादेव लावेलें गोहारी[3] ॥१॥
फूल जनि लोढ़ गउरा हमरी फुलवारी,
लोढ़ल फुलवा ए गउरा देबों छितराई[4] ॥२॥
उँहवा से अइली गउरा बइठे मन मारी,
आमा पुछेली ए गउरा काहे मन मारी ॥३॥

---

[1]चुनना। [2]बैल। [3]आवाज़, पुकारना। [4]तितर बितर कर देना।

भउजी जो रहतीं आमा, कहतीं मन लाई,
लाज केरि बतिया आमा, कहल नाहि जाई ॥४॥
भउजी से कहबु ए गउरा,
हामारा से कहबु ए गउरा, हिरिदया लगाई ॥५॥
सूप अइसन दहीया[1] ए आमा, वरध अस आँखी,
उहे तपसिया ए आमा, हमे वेलमाई[2] ॥६॥
भँगिया पीसत ए आमा, जीयरा अकुलाई,
धतुरा के गोलिया ए आमा, हाथावा रे खिआई[3] ॥७॥
फोरी घाल ए गउरा, हाथ केरी चूरी,
मेटि घाल ए गउरा, सीर के सेनुरवा ॥
दीनवाँ गँवाव[4] ए गउरा हमरी राम रसोई ॥८॥
अइसन बोलिया ए आमा फेरु[5] जनि बोलिह,
उहे तपसिया ए आमा, जीयसु दुनिया की आई[6] ॥९॥

इसका अर्थ स्पष्ट है।

शिवजी के रूप का वर्णन को पढ़कर हास्य रस का आनन्द आता है। शायद हिन्दी के प्राचीन या अर्वाचीन किसी भी कवि को दाढ़ी की उपमा सूप से और आँख की उपमा बैल की आँख से न सूझी होगी। इसी लिये ग्राम्य गीतों में उपमा की अनोखी छटा पाई जाती है। इस गीत में पार्वती का पति-प्रेम और उनकी माता का पुत्री-प्रेम स्पष्ट रूप से झलक रहा है॥

सन्दर्भ—शिव का पूर्व दिशा में कमाने के लिये जाना और दूसरा विवाह कर लेना

(९५)

महादेव चलले हा पुरबि बनिजिया, बितेला महिनवा चारि रे।
मचिया बइसि गौरा जोहेली बटिया, कब अइहें तपसि हमार रे ॥१॥

---

[1] दाढ़ी। [2] विलम्ब। [3] घिस जाना। [4] बिताना। [5] फिर, पुनः। [6] आयु, उम्र।

बरह बरिस पर लौटे महादेवा, भइलें दुअरवा पर ठाढ़ रे।
सूतल बाड़ू के जागल गउरा देई, खोलहू बजर केवाड़ रे ॥२॥
पनिया पियहु तुँह बइस महादेवा, कह न नइहर कुसलात रे।
कूल्ह कुसल मोरे बाड़े हे गउरा देइ, कूसल नैहर तोहार रे।
एक कूसल मोरे नाहिं हे गउरा देइ, कइलों हाँ दूसर बियाह रे ॥३॥
कइलों बियाह सिव बड़ निक कइलीं, जे अङ्ग सुभाव बताव रे।
कइसन हथवा कइसन गोड़वा, कइसन सहज सुभाव रे ॥४॥
तोहर निअर बाड़े गोड़वन हथवन, ओइसन अङ्ग सुभाव रे।
ओठवा त बाड़े गउरा कतरल पनवा, केसियन भँवर लोभाई रे ॥५॥
किया गउरा आन्हर किया गउरा लङ्गर, किया गउरा कोखिया बेहून रे।
किया गउरा देइ सेवा के चुकली, काहे कइलीं दूसर बियाह रे ॥६॥
नाहिं गउरा आन्हर नाहिं गउरा लङ्गर, नाहिं गउरा कोखिया बेहून रे।
बिधि के लिखल गउरा आरे नाहिं मेटे रे, भावा कइल दूसर बियाह रे ॥७॥

इस गीत में शिवजी के दूसरे विवाह करने का प्रस्ताव उपस्थित किया गया है। यह प्रस्ताव संस्कृत-साहित्य में नितान्त अज्ञात है, परन्तु भोजपुर के गीतों में यह प्रस्ताव बहुतायत से पाया जाता है। शिवजी पूरब व्यापार करने के लिए जाते हैं और चार मास के बाद लौट आते हैं। पार्वती जब उनसे कोई नया समाचार पूछती हैं तो शिवजी द्वितीय विवाह का प्रस्ताव छेड़ते हैं। पार्वती पूछती हैं कि मुझमें कौन दोष है? शिवजी भावी की प्रबलता बतलाकर चुप हो जाते हैं।

५. वैवाहिक-परिहास

दुलहा (वर) जब अपनी ससुराल जाता है तब दुलहिन की सहेलियाँ, ननद और भौजाई दुलहे से हँसी-मजाक किया करती हैं। यह नितान्त स्वाभाविक ही है। जैसे विवाह के गीतों में आनन्द का उल्लास रहता है और गवने के गीतों में करुणारस का प्रवाह बहता हुआ दिखलाई देता है उसी प्रकार इन गीतों में विशुद्ध हास्य का फौवारा फूटता हुआ दृष्टिगोचर होता है। इन गीतों के देहाती होने पर भी इनका हास्य ग्रामीण न होकर नागर है, भद्दा या भोंड़ा न होकर विशुद्ध और संयत है। रीतिकाल के कवियों की भाँति इन गीतों में अश्लीलता तथा उच्छृङ्खलता को कहीं स्थान नहीं दिया गया है। अनेक गीतों में हास्य की अभिव्यक्ति अभिधा के द्वारा न होकर व्यञ्जना के द्वारा की गई है। हँसी भी इतनी चुभती हुई है कि समझदार के दिल में गुदगुदी पैदा किये बिना नहीं रह सकती। उस सुन्दरी का परिहास नितान्त मार्मिक है जो बन-ठनकर रास्ते में नायक के मिलने पर अपने खर्चे खतम होने की तथा यौवन का विनिमय कर आवश्यक वस्तुओं के खरीदने की बात कहती है। नायक भी उसके उत्तर में कहता है कि आज का खर्चा मैं तुम्हें दे दूँगा परन्तु तुम्हें अपने यौवन में मुझे साझी रखना होगा।

"बाट में भेंटे रसिया कवन राम हो।
काहाँ रे जालु मोर रनिया॥
आजु के खरचिया ओराइल बाटे हो।
जोबन बेचें ओह गलिया॥
आजु के खरचिया हम चलाइबि हो।
जोबनवा में हम सझिया॥"
काहाँ रे जालु मोर रनिया।

यह परिहास कितना शुद्ध और संयत है। इसी प्रकार का परिहास इन गीतों में आगे मिलेगा।

सन्दर्भ—कृष्णजी का ससुराल जाना और लौटकर माता से ससुराल की प्रशंसा करना

(६६)

सोने के खाटी[1] आंगन ले डासी[2]; बहतर[3] धरि ना उतारि जी।
चरन पखारी[4] चरनोदक लीन्हा; अति बड़ भाग हमारी जी ॥१॥
जेवही[5] बइठेले कृष्ण कन्हइया; पारी सखिय सब गारी जी।
दाल, भात अवरु गोहूँ की रोटी; परवर की तरकारी जी ॥२॥
दीहिं सखिय सब हमरा के गारी[6]; हम लेवों पट्टुका[7] पसारी जी।
अइसन गारी के गारी न कहिये; इ गारी प्रेम पियारी जी ॥३॥
माई पियारी[8] पूछे बहिना दुलारी; कही ललन ससुरारी जी।
सारी[9] ले सरहजि अति ही पियारी; सासु गंगाजल पानी जी ॥४॥
नवही मासे कृष्ण एही कोखी[10] रखलीं; कबहूँ ना कइल बड़ाई जी।
एक ही दिन कृष्ण गइल ससुरारी; सासुके अतना बड़ाई जी ॥५॥
राम दोहइये[11] परमेसर कीरिये;[12] अब ना जाइबि ससुरारी जी।
जुग जुग बाढ़े[13] कृष्णा राउर ससुरारी; निति[14] तू जाहु ससुरारी जी ॥६॥

कृष्णजी अपनी ससुराल गये हैं उसी समय का यह वर्णन है। ससुराल जाने पर सोने का पलंग आँगन में बिछा दिया गया। तब सास ने कहा कि आप अपने कपड़े उतारकर रख दीजिए। आप अपने चरण धोइये जिससे मैं चरणोदक ले सकूँ। आज हमारा बड़ा भाग्य है ॥ १ ॥

जब कृष्णजी भोजन करने के लिये बैठे तब सखियों ने गाली देना

---

[1]चारपाई। [2]बिछाया। [3]वस्त्र। [4]धोओ। [5]भोजन करने के लिये। [6]गाली। [7]वस्त्र। [8]प्यारी। [9]साले की बहिन [10]गर्भ। [11]दुहाई। [12]शपथ। [13]वृद्धि को प्राप्त करे। [14]नित्य प्रति।

प्रारम्भ कर दिया। कृष्णजी को भोजन करने के लिये दाल, भात, रोटी और परवर की तरकारी दी गई थी ॥ २ ॥

कृष्ण ने उन सखियों से कहा कि आप लोग जितनी चाहें गालियाँ दीजिये। मैं कपड़े फैलाकर उन गालियों को स्वीकार कर लूँगा। ऐसी गाली को गाली नहीं समझना चाहिये क्योंकि यह प्रेम-पूर्ण गाली है ॥ ३ ॥

जब कृष्णजी ससुराल से लौटकर अपने घर गये तब प्यारी माता और बहिन ने उनसे पूछा कि अपनी ससुराल का समाचार सुनाओ। तब कृष्णजी ने उत्तर दिया कि सरहज (साले की स्त्री) अत्यन्त प्रिय बोलने वाली हैं और मेरी सास गंगाजल के समान शुद्ध और पवित्र हैं ॥ ४ ॥

सास की यह प्रशंसा सुनकर कृष्ण की माता को कुछ बुरा लगा और वे बोलीं कि ऐ बेटा! नव महीने तक हमने तुम्हें अपने गर्भ में रक्खा लेकिन तुमने कभी मेरी प्रशंसा नहीं की। परन्तु तुम केवल एक दिन के लिये ससुराल गये और सास की इतनी प्रशंसा करने लगे ॥ ५ ॥

तब कृष्णजी ने कहा कि मैं राम की दुहाई देता हूँ और परमेश्वर की शपथ खाता हूँ कि अब मैं ससुराल नहीं जाऊँगा। तब कृष्ण की माँ ने कहा कि तुम्हारी ससुराल सदा बढ़ती रहे और तुम नित्य प्रति ससुराल जाया करो ॥६॥

कृष्ण की माता का सास की बड़ाई सुनकर क्रुद्ध होना स्वाभाविक ही है। कृष्ण की मातृभक्ति प्रशंसनीय है क्योंकि माता को क्रुद्ध समझकर वे ससुराल न जाने की प्रतिज्ञा कर लेते हैं।

सन्दर्भ—किसी कुलटा का कामी पुरुष से प्रेम

(६७)

अतरस लहँगा सबुज[1] रंग साड़ी; चोलिया दरद किनारी।

पाइ अलबेला ना ॥ १ ॥

चोलिया पेन्हेली कुलटा[2] कवन देई; बटिया[3] चलेली अकेली ॥ २ ॥

हाइ अल०

[1]नीला। [2]दुष्टा स्त्री। [3]रास्ता।

हम त जे जाइ रसिया[1] रउरी महल में; राउर मन कइसे डोले हाई ॥३॥
हाइ अल०

हमरा महल कुलटा अच्छा अच्छा गुण्डा; मारि लीहें एक के सवाई[2] ॥४
हाइ अलबेलाना।

अतरस का लहँगा है, नील रंग की साड़ी है और चोली में सुन्दर किनारा लगा हुआ है। उन कपड़ों को पहिनकर कोई कुलटा स्त्री अकेली मार्ग में जाने लगी ॥ १ । २ ॥

किसी के पूछने पर कि तुम कहाँ जाओगी, उसने कहा कि मैं तुम्हारे महल में जाऊँगी। तब उसने कहा कि हमारे महल में अनेक गुण्डे रहते हैं; वे तुम्हें बहुत तंग करेंगे ॥ ३ । ४ ॥

सन्दर्भ—मार्ग में जाने वाली स्त्री पर किसी लम्पट पुरुष की कुदृष्टि

(९८)

काँच ही बाँस के बसुलिया[3] हो; काटाव पर के तीन चोलिया।
चोलिया पेन्हेली कवनी[4] देई हो; चमक चलली ओह[5] गलिया ॥ १ ॥
आहो काटाव पर तीन चोलिया।

बाट में भेटें रसिया[6] कवन राम हो; काहाँ रे जालु मोरि रनिया।
आजु के खरचिया ओराइल[7] बाटे हो; जोबन[8] वेचें ओह गलिया ॥२॥
काहाँ रे जालु०

आजु के खरचिया[9] हम चलाइबि हो, जोबनवा में हम सझिया[10] ॥३॥
काहाँ रे जालु मोर रनिया ॥

कोई स्त्री कच्चे बाँस की बाँसुरी लेकर और ऐसी चोली पहिनकर जिस पर फूल कढ़े हुए थे किसी गली में चमकती हुई चली ॥ १ ॥

जब वह रास्ते में जा रही थी तब कोई लम्पट आदमी उसे मिला और कहने लगा कि ऐ मेरी रानी! तुम कहाँ जा रही हो ? उस स्त्री ने उत्तर दिया

---

[1]प्रेमी। [2]सवा गुना। [3]बाँसुरी। [4]कौन। [5]उस। [6]लम्पट। [7]समाप्त। [8]स्तन, जवानी। [9]खर्चा। [10]साझी, हिस्सेदार।

कि आज मेरे घर में खर्चा घट गया है अतः मैं इस गली में अपनी जवानी बेचने आई हूँ ।। २ ।।

तब उस लम्पट पुरुष ने कहा कि आज का खर्चा मैं तुम्हें दे दूँगा परन्तु अपनी जवानी में तुम मुझे साझी बनाओ अर्थात् अपनी जवानी तुम मुझे उपभोग करने दो ।। ३ ।।

(९९)

कथि के उ जे रे[1] पिजरा रे; कथि[2] के लागल डोरी ।
कोयल धीरे धीरे बोल; तूती[3] धीरे धीरे बोल ।। १ ।।
सोने के उ जे पिजरवा रे; रेसम लागल डोरी ।। २ ।।
ओहि पिजरा कुलटा कवन देई; पिजरा करता चबोल[4] ।
ले चेलु कुलटा के जमुना पार हो; गँहकी[5] होई सो बोल ।। ३ ।।
तूती धीरे धीरे बोल ।।

किस वस्तु का यह पींजड़ा बना हुआ है और किस चीज़ की इसमें डोर लगी हुई है । ऐ कोयल और तूती तुम लोग धीरे-धीरे बोलो ।। १ ।।

सोने का यह पींजड़ा है और इसमें रेशम की डोर लगी हुई है । इस पींजड़े में एक कुलटा (दुष्टा) स्त्री है जो लोगों से मज़ाक किया करती है । कोई लम्पट पुरुष कहता है कि इस स्त्री को बेचने को जमुना पार चला जाय । यदि इसका कोई ग्राहक हो तो बोले ।। २ । ३ ।।

सन्दर्भ—लम्पट पुरुष के द्वारा किसी कुलटा का गर्भाधान

(१००)

निहुरली[6] आँगन बहारेली कवन देई, भुइया[7] सोहरि[8] गइले केस ।
मोरे राजा हो; भुँइया लटकि गइले केस ।।१।।

---

[1]वह । [2]किस वस्तु का । [3]एक पक्षी विशेष । [4]मज़ाक । [5]ग्राहक । [6]झुक कर । [7]ज़मीन पर । [8]लटक गया ।

घोड़वा चढ़ल तुहु रसिया कवन राम; केसिया बटोरि[1] मोहि देहु ।
मोरे राजा हो; केसिया बटोरि मोहि देहु ॥२॥
छुटले आँचरवा कुलटा रहि गइले पेटवा[2];
ढीढ़वा[3] के कवन उपाय ॥३॥
हँसि हँसि चिठिया जे लिखेले कवन राम;
कुलटा तू जनि घबड़ाय ॥४॥
गड़ीये लदइबों सोंठि[4] रे पीपरिया[5];
कुपचे[6] लदइबों करुवा[7] तेल ॥५॥
कुलटा रे तोरा पेट के उपाय करबों[8];
करबों जतन अनमोल ॥६॥

कोई स्त्री झुककर आँगन में झाड़ू दे रही थी कि उसका बाल खुलकर ज़मीन पर गिरने लगा ॥ १ ॥

उसने घोड़े पर चढ़कर जाते हुए किसी लम्पट पुरुष से कहा कि तुम मेरे बिखरे हुए बालों को समेट दो ॥ २ ॥

जब वह पुरुष उस स्त्री के बाल समेट रहा था इतने ही में उसका आँचल खुल गया और उस पुरुष के कुकर्म के कारण उसे गर्भ रह गया। कुछ दिनों के बाद स्त्री ने उसे लिखा कि इसका क्या उपाय किया जायगा ॥ ३ ॥

उस पुरुष ने हँसते हुए उस स्त्री के पत्र में लिखा कि ऐ कुलटा स्त्री! तुम घबराओ नहीं ॥ ४ ॥

मैं सोंठ और पीपल (दवा) गाड़ी में लादकर तुम्हारे लिये भेज दूँगा। ऐ कुलटा! मैं तेरे गर्भ के लिये अनेक अमूल्य उपाय करूँगा ॥ ५ । ६ ॥

इस गीत में एक कुलटा स्त्री और दुश्चरित्र पुरुष के चरित्र का चित्रण किया गया है जो स्वाभाविक प्रतीत होता है।

---

[1]इकट्ठा करना। [2-3]गर्भ। [4]सोंठ। [5]पीपल (दवा)। [6]ज्यादा। [7]सरसों का तेल। [8]करूँगा ॥

सन्दर्भ—किसी कुलटा द्वारा कामुक पुरुष को सुरत-संभोग के लिये निमन्त्रण

(१०१)

झोप झोपारी[1] रे फरेला सोपारी; तर नरियरवा के बारी।
आहो लाल तर नरियरवा[2] के बारी ॥१॥
कंचन सेज डसावेली कवन देई; केहु ना आवेला केहु जाई।
धावल धूपल[3] अइले कवन राम; मोहर दे गइले साई[4] ॥२॥
आहो लाल मोहर दे गइले साई ॥
आधी राति जनि अइह मोरे राजा हो; नगर के लोग डेराई[5]।
ठीक दुपहरिया अइह मोरे राजा हो; हम रउरा करबि लराई[6] ॥३॥
राजा हो हम रउरा करबि लराई।
निचवा रजाई[7] रे उपरा दोलाई,[8] ताहि बीचे होखेला[9] लराई।
अहो लाल ताहि बीच होखेला लराई ॥४॥

सुपारी का वृक्ष फलों से लदा हुआ है। उसके पास ही नारियल का वृक्ष है। वहाँ पर किसी स्त्री ने सोने का पलंग बिछा रक्खा है। परन्तु वहाँ पर कोई आदमी आता या जाता नहीं है। इतने ही में कोई आदमी दौड़ता और हाँफता हुआ आया और उसे बयाना के रूप में एक मुहर दे गया ॥ १ । २ ॥

उस स्त्री ने उस पुरुष से कहा कि ऐ मेरे राजा तुम आधी रात को मेरे पास मत आना क्योंकि नगर के लोग इससे डर जायेंगे। तुम ठीक दोपहर के समय मेरे पास आना और तब हम दोनों लड़ाई लड़ेंगे अर्थात् सुरत संभोग करेंगे ॥ ३ ॥

हम लोगों के बिछाने के लिये नीचे तोसक होगा और ओढ़ने के लिये ऊपर दुलाई होगी। इसके बीच में हम दोनों आदमी लड़ाई लड़ेंगे अर्थात् भोग विलास करेंगे ॥ ४ ॥

---

[1]गुच्छा। [2]नारियल। [3]दौड़ते हुए। [4]बयाना। [5]डरेंगे। [6]लड़ाई। [7]तोसक। [8]दुलाई। [9]होता है।

इस गीत में संभोग शृङ्गार की बड़ी मार्मिक व्यंजना हुई। वर्णन कहीं अश्लीलता की सीमा तक नहीं पहुँचने पाया है। इसी भाव के अनेक दोहे विहारी सतसई में पाये जाते हैं जो कहीं-कहीं पर बहुत अश्लील हो गये हैं।

सन्दर्भ—पति-पत्नी का सुरत संभोग वर्णन

(१०२)

कंचन सेज डसावेले कवन राम; तकिया धरेले सिरहानी[1]।
धावल धूपल आवेली कवन बहू; ठाढ़ भईली गोनतारी[2] ॥१॥
का तू कवनि बहू ठाढ़ गोनतारी; ए जी घुसुकना[3] अब सिरहानी ॥२॥
ए जी चूमा[4] देत नकवेसर टूटेला; कुलटा के राम जी बचाई।
चोली खोलत बनवा[5] सब टूटेला; कुलटा के राम जी बचाई ॥३॥
लँहगा खोलत कमर टूटेला; कुलटा के राम जी बचाई ॥४॥

किसी पुरुष ने सोने का सेज बिछा रक्खा था और सिरहाने में तकिया रक्खा था। कोई स्त्री वहाँ आई और गोनतारी खड़ी हो गई ॥ १ ॥

तब पुरुष ने उससे पूछा कि तुम कौन हो और यहाँ क्यों खड़ी हो। तुम सिरहाने की ओर चली आओ ॥ २ ॥

पुरुष ने जब उस स्त्री का चुम्बन किया तब उसके नाक का बेसर टूट गया; चोली खोलते समय सारे बन्द टूट गये और सुरत संभोग के लिये लँहगा खोलते समय उसकी कमर पीड़ित होने लगी। तब उसने कहा कि ईश्वर ही इस स्त्री की रक्षा करें ॥ ३ । ४ ॥

सन्दर्भ—प्रिया के द्वारा प्रवासी पति को पत्र लिखना

(१०३)

अब काहाँवा के गइया चरन[6] आवे; काहाँवा के उमड़ल[7] साँड़।
अब चिठिया जे लिखली कवन देई; मोरे राजा दुबर[8] जनि होई ॥१॥

---

[1]चारपाई का सिर की ओर का हिस्सा। [2]चारपाई का पैर की ओर का हिस्सा। [3]धीरे से चलो। [4]चुम्बन। [5]बन्द। [6]चरने के लिये। [7]सामने आना। [8]दुबला।

अब चिठिया जे लिखली कवन देई; मोरे बबुआ दुवर जनि होई ॥२॥

कहाँ की गाय चरने के लिये आती है और कहाँ का साँड़ चला आ रहा है। × × × जब पति परदेश चला गया तब स्त्री ने उसे एक पत्र में लिखा कि ए राजा! तुम चिन्ता के कारण दुबले मत होना। माता ने भी लिख कर भेजा कि पुत्र तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करना ॥१।२॥

सन्दर्भ—वर के पिता का कन्या के भाई से मज़ाक करना

(१०४)

नदिया के तीरे कवन बाबू, बछरु[1] चरावे ना।
आपन मइया ए बबुआ हमरा के द ना[2] ॥ १ ॥
कुलटा के हमरो के द ना।
हामारी मइया ए पांडे जी, लरिका[3] से बारी।
ए पांडे जी लरिका से बारी ॥ २ ॥
खिअइवों मैं बनारस के लड़ुआ हो; हो जइहें सयान।
सुतइवों मैं आपन कोरवा[4] हो; हो जइहें सयान[5] ॥ ३ ॥
कुलटा हो, हो जइहें सयान ॥

लड़की का भाई तिलक चढ़ाने के लिये आया है। लड़के का पिता उससे मज़ाक करता हुआ कहता है कि तुम नदी के किनारे गाय चराया करते हो। ऐ बच्चे! तुम अपनी माँ को मुझे दे दो ॥ १ ॥

तब उस लड़के ने उस खूसट बूढ़े से कहा कि ए पाण्डेजी मेरी माता अभी बहुत छोटी है ॥ २ ॥

तब बूढ़े ने कहा कि मैं बनारस का लड्डू खिलाकर उसे जवान बना दूँगा और उसे मैं अपनी गोदी में सुलाऊँगा। इस प्रकार वह कुलटा स्त्री जवान हो जायेगी ॥ ३ ॥

विवाह में बूढ़े लोग भी प्रायः ऐसे मज़ाक किया करते हैं और उन्हें इसमें ज़रा भी लज्जा नहीं मालूम होती।

[1]बछड़ा। [2]दो। [3]कम उम्र की। [4]गोदी। [5]जवान।

सन्दर्भ—वर के पिता का पुत्र की ससुराल जाना और अपनी समधिन से व्यभिचार करना

(१०५)

जाहि वने अइसन सिकियो ना डोले रे; ताहि बने कवन उपाय ॥१॥
बेलाल बेनुली। टेक

कंचन सेज डासावेले कवन राम; एको कुलटवा नाहिं पास ॥२॥
धावल धूपल आवेली कवन देई; सेज पर परे अरराई ॥ ॥
बेलाल बेनुली।

आरे जब त बोलवनि रे कुलटा तब नाहिं अइलू, अपने अइलू बालाई।
जब तुहु देखलु हो साठि रूपइया; सेज पर परे आराराई[1] ॥ ३ ॥
बेलाल बेनुली।

खेत खरिहनिया[2] से अइले कवन राम; बाहर रहेले ललचाई।
इ का[3] कइनी समधीं, कवन समधी; इज्जति[4] लिहली[5] हमार ॥४॥
बेलाल बेनुली ॥

हम का समधी कवन समधी. अपने अइली आराराई ॥ ५ ॥
बेलाल बेनुली ॥

लड़के का पिता अपने पुत्र की ससुराल गया था। उसी समय का यह वर्णन है। जिस स्थान पर ज़रा भी हवा नहीं चलती वहाँ पर कौन सा उपाय है ॥१॥

समधी ने सोने का पलँग बिछाया परन्तु कोई स्त्री उसके पास नहीं आई। परन्तु थोड़ी देर में उसकी समधिन आई और उसकी सेज पर पड़ गई ॥ २ ॥

तब समधी ने उससे कहा कि जब मैंने बुलाया तब तू नहीं आई परन्तु जब मैंने रुपये का लालच दिखाया तब तुम चली आई ॥ ३ ॥

जब उस स्त्री का पति खेत और खलियान से लौटकर आया तब उसने समधी के कुकर्म को देखकर कहा कि आपने यह क्या किया ? आपने आज मेरी इज्ज़त मिट्टी में मिला दी ॥ ४ ॥

तब समधी ने उत्तर दिया कि मैं क्या करूँ ? तुम्हारी स्त्री स्वतः मेरे पास चली आई। इसमें मेरा कुछ भी दोष नहीं है ॥ ५ ॥

---

[1]दौड़ करके। [2]खलिहान। [3]यह क्या। [4]प्रतिष्ठा (इज्जत)। [5]लिया।

६. गवना के गीत

हमारे यहाँ गवना भी विवाह ही के समान बड़े धूम-धाम से किया जाता है। अनेक भाई-बन्धु वर के साथ गाजे-बाजे के साथ वधू के घर जाते हैं और उसकी बिदाई कराके घर लाते हैं। इधर वर-पक्ष के लोगों में आनन्द ही आनन्द छाया रहता है परन्तु कन्या-पक्ष के लोगों में विषाद के चिह्न दिखाई पड़ते हैं। कहीं लड़की का भाई रो रहा है तो कहीं उसके पिता की आँखों से आँसुओं की झड़ी लगी हुई है। पुत्री की माता का रोना तो पत्थर को भी पिघलाये देता है। जब पुत्री की विदाई का समय समीप आता है तब उस समय का दृश्य और भी हृदयद्रावक होता है। इधर वरपक्ष वाले वधू को घर से बाहर निकालने के लिये जल्दी मचाते हैं उधर माता लड़की को अपनी गोद में चिपटाये हुए रहती है उसे छोड़ती ही नहीं; मानो अब लड़की अपनी ससुराल से लौटकर आने की ही नहीं। सचमुच लड़की की बिदाई का दृश्य देहातों में एक विचित्र कारुणिक दृश्य होता है। ऐसे समय के गीतों के विषय का अनुमान सहज ही में किया जा सकता है।

इन गीतों में कहीं तो पुत्री की माता अपने जामाता से अपनी प्राण प्यारी पुत्री को आदर के साथ रखने तथा उससे प्रेम करने का उपदेश देती है तो कहीं भावी पुत्री-वियोग से जन्म-दुःख का अनुमान कर विलाप करती है। कहीं भाई अपनी बहिन की पालकी के पीछे-पीछे रोता जाता हुआ दिखाई पड़ता है तो कहीं बहिन अपने भाई, माता तथा पिता के वियोग-दुःख से दुःखी होकर रोती, कलपती, बिलखती चली जाती है। इस दृष्टि से विचार करने पर विवाह के गीत शृङ्गार-रस से ओतप्रोत दिखाई पड़ते हैं परन्तु गवने के गीतों में करुण-रस की ही प्रधानता है। सचमुच करुण-रस में निमग्न इन गीतों को पढ़कर "अपि ग्रावा रोदति; अपि दलति वज्रस्य हृदयम्" वाली भवभूति की उक्ति अक्षरशः सत्य प्रतीत होती है।

गवने का समय सचमुच ही बहुत हृदय-विदारक होता है। चिरकाल से लाली पाली गई प्रिय पुत्री का बिछोह किसे कष्टकर न होगा ? संयमी कण्व भी जब कृतकपुत्री शकुन्तला की विदाई के समय आत्म संयम न सँभाल सके तो इतर प्राणियों की कथा ही क्या—
आप कहते हैं कि—

"यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्ट मुत्कण्ठया,
कण्ठः स्तम्भितवाष्प वृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैकल्यं मम तावदीदृशमहो स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं न तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः" ॥

वास्तव में यह उपर्युक्त कथन नितान्त समीचीन है। मैंने ऐसे कितने गम्भीर-चेता पुरुषों को ऐसे अवसर पर फूट-फूट कर रोते देखा है जिनके मुख पर कभी विषाद की रेखा भी नहीं झलकती। अतः ऐसे अवसर पर गाये जाने वाले गीतों में करुण-रस की धारा का प्रवाहित होना स्वाभाविक है। लड़की विदाई के समय माता और पिता का रुदन अत्यन्त करुणाजनक होता है।

इन गीतों में बहिन तथा भाई का अद्वैत प्रेम दिखलाया गया है। भाई का बहिन के घर जाना और उसका कुशल समाचार पूछना अत्यन्त मर्मस्पर्शी है। इस प्रकार इन गीतों में स्वाभाविक प्रेम तथा करुण-रस की अटूट धारा निरन्तर बहती हुई दिखाई पड़ती है। अब यहाँ पर गवने के कुछ चुने हुए गीत पाठकों के मनोरंजनार्थ दिये जाते हैं।

संदर्भ—लड़की के गवना के बाद ससुराल जाते समय माता की उक्ति अपने पुत्र के प्रति

(१०६)

सुन सुन लोकनी[1] सुनहु जेठ भाई।
कहिह समधीनी आगे अरज[2] हमारी ॥ १ ॥

---

[1]नौकरानी। [2]प्रार्थना।

लाते[1] जनि मरीहें पाराते[2] जनि गारी।
आ काँच ही नीनीये[3] जनि जगइहें मोरि दुलारी॥ २॥
सुन सुन लोकनी सुनहु जेठ भाई।
कहीह समधीनी आगे दरप हमारी॥ ३॥
लाते हम मरबों पाराते देबों गारी।
काँच ही नीनीये हम जगइबों पूत बहुआरी॥ ४॥
बायें जइहें लोकनी दहीनें जेठ भाई।
रामजी के बहियाँ सीरहाना[4] धइले जाई॥ ५॥

गवने के समय अपनी पुत्री को उसके ससुराल विदा करते समय उसकी माता अपने जेठे पुत्र और नौकरानी से कह रही है कि ऐ नौकरानी और (पुत्री के) जेठे भाई! सुनो; तुम लोग जाकर समधी की स्त्री से मेरी यह प्रार्थना कह देना॥ १॥

वे मेरी पुत्री को पैर से न मारेंगी और प्रातःकाल उसे गाली न देंगी तथा सोई हुई मेरी प्यारी पुत्री को कच्ची नींद में न जगायेंगी॥ २॥

नौकरानी तथा जेठे भाई ने अपनी माता की प्रार्थना को जाकर समधिनि से कह सुनाया। इसे सुनकर वह गर्व से कहती है कि तुम लोग सुनो और मेरी समधिनि के पास यह मेरी गर्वोक्ति कह सुनाना॥ ३॥

मैं पैर से ठोकर मारूँगी और प्रातःकाल ही उसे गाली दूँगी और अपनी पतोहू (पुत्रवधू) को कच्ची नींद में ही जगाऊँगी॥ ४॥

बायें तो नौकरानी जायेगी और दहिने जेठा भाई जायेगा परन्तु मेरे पुत्र की बाहें पतोहू के सिर की ओर रहेंगी॥ ५॥

इस गीत में लड़की की माता का प्रेम अपनी पुत्री के लिये उमड़ा जाता है। वह उसके सुख के लिये कैसी बेचैन है। सास की गर्वोक्ति कितनी कठोर है। अपनी इसी क्रूरता के कारण सास आजकल घृणा की दृष्टि से देखी जाने लगी हैं। इसमें दोष उनका नहीं तो और किसका है?

---

[1]पैर। [2]प्रातःकाल। [3]नींद। [4]सिर की ओर।

सन्दर्भ—ससुर की उक्ति दामाद के प्रति

(१०७)

आरे साभावा[1] बइठल रे ससुर करें मनुहारी[2]।
मोरे प्रान हरी दीन दस रहे देहु धियवा[3] हमारी ॥१॥
मोरे प्रान हरी जाहु तोहरा ए ससुर धियवा पियारी।
मोरे प्रान हरी आ काहे के पउवाँ पखरल हमार ॥२॥
मोरे प्रान हरी पासावा[4] खेलत रे सारावा[5] करे मनुहारी।
मोरे प्रान हरी दीन दस रहे देहु वहिना हमारी ॥३॥
मोरे प्रान हरी जाहु तोरा ए सारावा वहिना दुलारी।
मोरे प्रान हरी काहे के चनन[6] चढ़वल हमार ॥४॥
मोरे प्रान हरी मचीया[7] वइठल सासु करे मनुहारी।
मोरे प्रान हरी दीन दस रहे देहु धियवा हमारी ॥५॥
मोरे प्रान हरी जाहु तोरा ए सासु धियवा पियारी।
मोरे प्रान हरी काहे के लोहवा[8] घुमवलु हमार ॥६॥

दामाद अपनी स्त्री को लेने के लिये ससुराल आया है तब उसके ससुर उससे यह प्रार्थना करते हैं कि ऐ प्रिय जामाता! मेरी लड़की दस दिन मेरे यहाँ और रहने दो ॥ १ ॥

तब दामाद ने उत्तर दिया कि ऐ ससुर यदि तुमको अपनी पुत्री प्यारी है तब तुमने मेरा पाँव क्यों धोया अर्थात् ब्याह क्यों किया ? ॥ २ ॥

पाशे खेलते हुए साले ने भी यही प्रार्थना की कि मेरी बहिन को दस दिन के लिये रहने दो ॥ ३ ॥

तब दामाद ने कहा कि यदि तुमको अपनी बहन प्यारी है तो तुमने मुझे चन्दन क्यों लगाया ॥ ४ ॥

मचिया पर बैठी हुई सास ने भी यही प्रार्थना की ॥ ५ ॥

---

[1]सभा में। [2]प्रार्थना। [3]पुत्री। [4]पाशा (जुआ)। [5]श्यालक (बहिन का भाई)। [6]चन्दन। [7]छोटी चारपाई (खटोली)। [8]पत्थर का लोढ़ा।

फिर भी दामाद ने यही उत्तर दिया कि ऐ सास यदि तुमको अपनी लड़की प्यारी है तो तुमने ब्याह में मेरे ऊपर लोढ़ा क्यों घुमाया अर्थात् अपनी लड़की से मेरा ब्याह क्यों किया ॥ ६ ॥

देहातों में लड़कियों की विदाई के लिये ऐसे दृश्य रोज ही देखने में आते हैं। इस लेखक को तो इसका बहुत ही बुरा व्यक्तिगत अनुभव है।

सन्दर्भ—गवना करा के आये हुए पति की उक्ति स्त्री के प्रति

(१०८)

काहे तोरा आहो ए सुहवा[1] ओठवा सुखइले हो।
काहे तोरा आहो ए सुहवा नयनवा ढरे हो लोर[2] ॥१॥
नइहर[3] मोरा आहो ए प्राभु ! दुरि रे बसे।
केहु ना आवेला केहु जाई ॥२॥
बान्हहु आहो ए सुहवा, सकर[4] लडुइयारे।
हमहीं कवन रे दुलरुआ[5] जाइबि बड़ी दूर ॥३॥
कवना सरीखे ए सुहवा मइया रे तोर।
कवना सरीखे ए सुहवा भऊजी रे तोहार ॥४॥
कवना सरीखे ए सुहवा चेरिया रे तोर।
कवना सरीखे ए सुहवा नइहर रे तोहार ॥५॥
सोने के ककनवा[6] ए प्राभु मइया रे मोर।
सोने के ककनवा ए प्राभु भऊजी रे हामार ॥६॥
सोने के ककनवा ए प्राभु चेरिया रे मोर।
ओही सरीखे ए प्राभु नइहर रे हमार ॥७॥

गवना कराके पति स्त्री को घर लाया है। स्त्री के मायके से बहुत दिनों से कोई आदमी नहीं आया है। इस कारण वह रो रही है। तब पति उससे पूछता है कि ऐ स्त्री ! तेरा होंठ क्यों सूख गया है और तेरी आँखों से आँसू क्यों गिर रहे हैं ? ॥ १ ॥

---

[1]स्त्री। [2]आँसू। [3]मायके। [4]चीनी। [5]प्यारा। [6]कंकण।

स्त्री उत्तर देती है कि मेरा मायका यहाँ से बहुत दूर है वहाँ से न तो कोई आता है और न जाता है ॥ २ ॥

तब पति ने कहा कि ऐ स्त्री तुम चीनी के लड्डू बाँधो। मैं अपने घर का प्यारा तुम्हारे दूर भी मायके जाऊँगा ॥ ३ ॥

ऐ स्त्री यह बताओ कि तुम्हारी माता और भावज कैसी हैं (जिससे मैं उनको पहिचान सकूँ) ॥ ४ ॥

ऐ स्त्री तेरी नौकरानी कैसी है और तेरा मायका कैसा है ॥ ५ ॥

तब स्त्री ने उत्तर दिया कि मेरी माता और भावज सोने के कंकण पहने हुई हैं ॥ ६ ॥

और मेरी नौकरानी भी सोने का कंकण पहनती है। इसी प्रकार का मेरा मायका है ॥ ७ ॥

सन्दर्भ—ससुर की उक्ति दामाद के प्रति

(१०६)

साभावा बइठल ए ससूर पूछे एक बात।
आरे कइसे कइसे अइल ए दुलहा एहि देसवा की ओर ॥१॥
आरे हमरेहि देसावा ए ससुर साँवरो बहुत,
आरे गोरी लोभे अइलीं ए ससुर एहि देसवा की ओर ॥२॥
आरे पासावा खेलत रे सारावा पूछे एक बात।
आरे कइसे कइसे अइल ए दुलहा एहि देसवा की ओर ॥३॥
आरे हमरे हि देसावा ए सारावा सांवरो बहुत।
आरे गोरी लोभे अइलीं ए सारावा एहि देसवा की ओर ॥४॥

अर्थ बहुत ही स्पष्ट है।

दामाद की उक्ति से पता चलता है कि पहले समय में लड़का स्वयं अपनी भावी पत्नी खोजने के लिये जाया करता था तथा अपनी पसन्द के अनुसार ही विवाह करता था।

सन्दर्भ—गवना के बाद लड़की का ससुराल प्रथम बार जाना

(११०)

बावा के रोवले गंगा बढ़ी अइली।
आमा के रोवले अन्हार[1] ए आरे ॥१॥
भइया के रोवे चरन, धोती भीजे,
भऊजी नयनवों न लोर ॥२॥
किया तोहरी भऊजी नून[2] तेल छेकलीं।
किया कोठी लवलीं पेहान[3] ॥३॥
नाहीं तुहुँ ननदी नून तेल छेकलू।
नाहीं कोठी लवलू पेहान ॥४॥
नाहीं तुहुँ ननदी रसोंइया झाँकि अइलू।
बतिये[4] बैरनी भइल तोहार ॥५॥

लड़की के ससुराल जाते समय उसका पिता इतना रोया कि गंगा में बाढ़ आ गई और माता के रोने से अँधेरा छा गया ॥ १ ॥

भाई के रोने से पैर और धोती भींग गई परन्तु भावज की आँखों में आँसू भी नहीं दिखाई दिये ॥ २ ॥

तब लड़की ने भावज से पूछा कि ऐ भावज! क्या मैंने तेरा नमक तेल रोक रक्खा था और क्या अन्न का भण्डार बन्द कर दिया था अर्थात् तुम्हें खाने को नहीं देती थी ॥ ३ ॥

भावज ने उत्तर दिया कि ऐ ननद! न तो तुमने मेरा नमक तेल ही रोक रक्खा था और न अन्न का भण्डार ही बन्द किया था ॥ ४ ॥

और न तुमने मेरा रसोई घर ही कभी झाँककर देखा था। परन्तु तुम्हारे कठोर वचन ही मेरे बैरी हो गये ॥ ५ ॥

इस गीत में करुणारस की धारा बह रही है तथा पिता का पुत्री के प्रति अगाध प्रेम स्पष्ट झलकता है। ननद और भावज के शाश्वतिक विरोध की

---

[1] अन्धकार। [2] नमक। [3] पिधान (ढक्कन)। [4] बातें।

भी झलक दीख पड़ती है। रोने की अत्युक्ति हिन्दी कवियों को भी मात कर रही है।

सन्दर्भ—कन्या के विदा के समय का गीत

(१११)

आठहि काठ केरि डँड़ियां[1] नेतवे लागेला ओहार[2]।
फानावले कवन राम डँड़िया, बहु चढ़ी चलु रे हामार ॥१॥
छेकेले कवन भइया डँड़िया बहिना जाये ना देउ।
छोड़ु छोड़ु भइया डँड़ियावा घरे जाये रे देउ ॥२॥
सातो लउड़िया[3] के भारावा एगो हमरो नाहीं ॥३॥

आठ काठ की पालकी बनी हुई है जिस पर परदा लगा हुआ है। स्त्री का पति उसको उस पर चढ़ाता हुआ कहता है कि मेरे घर तुम चलो ॥ १ ॥

इस पर उस स्त्री का भाई पालकी को रोककर प्रेमवश कहता है कि ऐ बहिन! मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगा ॥ २ ॥

तब बहिन कहती है ऐ भाई पालकी छोड़ दो, मुझे ससुराल जाने दो। सात नौकरानी का भार तुम सह सकते हो परन्तु मेरा अकेला भार नहीं सह सकते ॥ ३ ॥

लड़कियों की दीनता का कैसा करुण दृश्य है।

सन्दर्भ—ससुराल से लौट आने पर माता की उक्ति पुत्री के प्रति

(११२)

आरे कथि[4] केरि ककही[5] कथीय केरा तेल।
आरे कथिका मचियवा हो बेटी झारेलु लामी[6] केस ॥१॥
आरे सोने केरी ककही नरियर केर तेल।
आरे सोने का मचियवा हो आमा झारीले लामी केस ॥२॥
आरे रोवेली माइरे धिया भीजेला रे पटुक[7]।
आरे चुप होखु चुप ए बाचावा चुप होखु रे ॥३॥

---

[1]पालकी। [2]परदा। [3]नौकरानी। [4]किस वस्तु की। [5]कंघो। [6]लम्बा।
[7]पट, कपड़ा।

आरे पाछा से पठइबों ए बाचावा सहोदर जेठ भाई ।
आरे तोहरी बतिया ए आमा मे ना पतिआइबि[1] ॥४॥
आरे बसिया[2] के बेरिया[3] हो आमा उठलु झाहाराई ।
आरे केनवा[4] के बेरिया हो आमा उठलु लुलुवाई[5] ॥५॥
आरे हामारा ही बसिया के आमा धरिह वार बार ।
आरे हामारा ही केनवा के आमा कीनिह[6] घेनुगाई ॥६॥
आरे चले के त चललु हो बेटी दीहलु समुझाई ।
आरे पथल के छतिया हो बेटी बीहरि[7] बलु जाई ॥७॥
आरे एक बने गइले रे डँड़िया दोसरे वन जाई ।
आरे डँड़िया उघारि रे देखे सहोदर जेठ भाई ॥८॥
आरे रोवति होइहें ए भइया मादागिनी हमरी माई ।
आरे फिरहु फिरहु ए भइया सहोदर जेठ भाई ॥९॥
आरे ऊँचे झड़ोखवा रे चढ़िके हेरेले[8] मतारी ।
आरे काहाँ छोड़ल काहाँ ए बबुआ बाचावा[9] रे हमारी ॥१०॥
आरे जेकर बाचावा ए आमा से हो लेई जाई ॥११॥

। माता पुत्री से पूछती है कि ऐ बेटी तू किस वस्तु की कंघी और कौन सा तेल लगाती हो ? तथा किस वस्तु की मचिया पर बैठकर अपने लम्बे बालों को सँवारती हो ॥१॥

तब लड़की ने उत्तर दिया कि मैं सोने की कंघी और नारियल के तेल का प्रयोग करती हूँ तथा सोने की मचिया पर बैठकर अपने बाल संवारती हूँ ॥२॥

प्रेम की अधिकता के कारण पुत्री रोने लगी जिससे उसका कपड़ा भींग गया । तब माता ने कहा कि ऐ बेटी तुम चुप हो जाओ ॥ ३ ॥

मैं तुम्हारे साथ ससुराल में तुम्हारे जेठे भाई को भेजूँगी। लड़की ने उत्तर दिया कि माँ लेकिन तेरी बातों पर मुझे विश्वास नहीं होता ॥ ४ ॥

---

[1]विश्वास करना । [2]बचा हुआ भोजन । [3]समय । [4]फल । [5]झिड़कना । [6]खरीदना । [7]फट जाना । [8]देखना । [9]बेटी ।

ऐ माँ बासी भोजन करते समय मुझ पर गुस्सा होती थी और कोई फल, फूल खरीदते समय झिड़कने लगती थी ॥ ५ ॥

ऐ माता मेरे बासी भोजन को तुम संचित कर रखना (जिससे तुम्हें धन संचय हो) तथा हमारे लिये दिये फल के पैसों से दूध वाली गाय खरीद लेना ॥६॥

तब माता ने उत्तर दिया कि ऐ बेटी तूने चलते समय मुझे अच्छा समझाया, मेरी पत्थर की छाती अब भी क्यों नहीं फट जाती ॥ ७ ॥

लड़की पालकी पर चढ़कर जब बहुत दूर निकल गई तब उसने परदे को हटाकर अपने सहोदर भाई को आते हुए देखा ॥ ८ ॥

तब लड़की ने अपने भाई से कहा कि ऐ भइया मेरी माता रोती होगी, तुम लौट जाओ और उसे समझाओ ॥ ९ ॥

माता ऊँची खिड़की पर चढ़कर पुत्र की बाट देख रही थी। लड़के को देख कर उसने कहा कि ऐ पुत्र ! तूने मेरी प्यारी बेटी को कहाँ छोड़ दिया ॥१०॥

इस पर लड़के ने उत्तर दिया कि ऐ माता जिसकी वह चीज़ थी वही उसको लिये जा रहा है ॥ १० ॥

माता और पुत्री के स्वाभाविक प्रेम का यह कितना सुन्दर प्रतिबिम्ब है। लड़की कठोर भले ही हो पर माता कुमाता नहीं हो सकती। विवाह के बाद वास्तव में लड़की दूसरे की चीज़ हो जाती है।

सन्दर्भ—गवना कराने के लिये आये हुए लोगों पर पिता का क्रोध तथा लड़की द्वारा पिता को शान्त रहने की प्रार्थना

(११३)

ओरिनी तर उपजेला चानानावा[1] छछन बीछनरे करे ॥
हथिया से घोड़वा लेइ उतरेलें कवन समधि।
हाथी घोड़ा नान्हे ए समधि चानानवा केरि गाछि ॥ १ ॥
अपना महलिया से निकलु कवन समधि।
काहें समधि रउनीलें[2] चानाना केरि गाछि ॥ २ ॥

[1]चन्दन। [2]रौंदना।

अपना महलिया से निकलि कवन सुहवा[1] ।
काहा बाबा बोलिलें झाड़ा झड़ी रे बोल ॥ ३ ॥
सहु बाबा सहु बाबा आजु केरि रतिया ।
बाड़ा हो पाराते[2] जाइबि बड़ी दूर ॥ ४ ॥
दुवरा राउर होइहें ए बाबा रन्न रे बन ।
आँगन राउर होइहें ए बाबा भदउवाँ निसुराती[3] ॥ ५ ॥
दुवरा भुलिये भूलि बाबा जे रोवेलें ।
कतहीं ना देखों हो बेटी नुपुरवा हो तोहार ॥ ६ ॥
आँगाना भुलिये भूलि आमाजी रोवेलीं ।
कतहीना देखों ए बेटी रसोइया झाझाकाल ॥ ७ ॥
रसोइया भुलिये भूलि भऊजी जे रोवेली ।
कतहीना देखों ए ननदी रसोइया झाझाकाल[4] ॥ ८ ॥

गवना कराने के लिये लड़की का ससुर हाथी घोड़े के साथ आया है। उसके हाथी घोड़े द्वार पर स्थित चन्दन के वृक्ष को रौंद रहे हैं ॥ १ ॥

इस पर लड़की का पिता कह रहा है कि समधीजी मेरे चन्दन के वृक्ष को आप क्यों रौंद रहे हैं ॥ २ ॥

तब उसकी लड़की घर से निकलकर कहती है कि ऐ पिताजी आप ऐसी कठोर तथा क्रोधपूर्ण बातें क्यों कह रहे हैं ॥ ३ ॥

केवल आज रात को आप सब कष्ट सह लीजिये मैं कल प्रातःकाल अपनी ससुराल बहुत दूर चली जाऊँगी ॥ ४ ॥

उस समय आपका द्वार वन की तरह निर्जन तथा भयानक हो जायेगा तथा आँगन भादों की रात्रि के समान डरावना लगेगा ॥ ५ ॥

दूसरे दिन पुत्री के विदा होते समय उसके पिता फूट-फूटकर रोने लगे और कहने लगे कि ऐ बेटी मैं अब तेरे नूपुर के शब्द कहाँ सुनूँगा ॥ ६ ॥

आँगन में यह कहकर माता रोने लगी कि ऐ बेटी तेरे बिना रसोईघर में अब मैं किसे देखूँगी ॥ ७ ॥

---

[1]बेटी। [2]प्रातःकाल। [3]निःशब्द रात्रि। [4]भयानक, डरावना।

रसोईघर में भावज भी यही कहकर रोने लगी कि ऐ ननद तेरे बिना रसोईघर सूना हो जायेगा ॥ ८ ॥

ननद और भावज में इस प्रकार का अकृत्रिम प्रेम आजकल नितान्त दुर्लभ है।

सन्दर्भ—पुत्री की विदाई का वर्णन

(११४)

बाव बहेला पुरवइया ए सजनो; करसिनि[1] सुनुगेला आगी।
चोलिया का कसेमसे सुतलों ओसरवा; दुवरा बिदेसी भइले ठाढ़ ॥१॥
खरचा के माँगत तड़पी जे उठेला; करबी कवन मैं उपाय ॥ २ ॥
केकरा ही रोवले रे गाँगा बढ़ि अइली; केकरा ही रोवले अनोर।
केकरा ही रोवले चरन धोती भीजे; केकरा नयनवाँ ना लोर ॥ ३ ॥
बाबा के रोवले गाँगा बढ़ि अइली; आमा के रोवले अनोर।
भइया के रोवले चरन धोती भीजे; भउजी नयनवाँ ना लोर ॥ ४ ॥
केहु कहेला बेटी निति उठि आव; केहु कहेला छव मास।
आरे केहु कहेला बहिना काल्हे परोजन; केहु कहेला दुर जाव ॥ ५ ॥
आमा कहेली बेटी निति उठि आव; बाबा कहेले छव मास।
आरे भइया कहेले बहिना काल्हे परोजन; भउजी कहेले दुर जाव ॥६॥
केहु जे देला राम लाहारा पटोरवा; केहु दीहे घेनु गाई।
केहु जे देला राम चढ़न के घोड़वा; केहु महुरवा के गाँठि ॥ ७ ॥
आमा जे देली राम लाहारा पटोरवा; बाबा दीहें धेनु गाई।
भइया जे देले राम चढ़न के घोड़वा; भउजी महुरवा के गाँठि ॥ ८ ॥
आमा के लाहारा रे टुटि फाटि जइहें; सुखी जइहें बाबा धेनु गाई।
भइया के घोड़वा रे नगर पइसिहें; भउजी के अपजस हाय ॥ ९ ॥
किया तोरे भउजी रे नून भाड़ लवनी; किया कोठी लवनी पेहान।
किया तोरे भउजी रसोइया झाँकि अइलीं; कथि में बैरिन तोर ॥ १० ॥

[1] करीष—सूखा गोबर।

नाहीं तुहुँ ननदी नून भाड़ लवलू; नाहीं कोठी लवलू पेहान।
आरे नाहीं तुहुँ ननदी रसोइया झाँकि अइलू; बतिया बैरिन भइली तोर ॥११

बहू अपने मायके में है। उसका पति उसे लिवा लाने के लिये गया है। उसी समय का यह वर्णन है। वधू अपनी किसी सखी से कह रही है कि—

ऐ सखी! पुरवैया हवा वह रही है और प्रेम की आग मेरे हृदय में सुलग रही है। अपनी चोली को ज़ोरो से कस करके मैं बरामदे में सोई थी, इतने में पति मुझे लेने के लिये द्वार पर आगया ॥ १ ॥

सखी पूछती है कि किसके रोने से गंगा में बाढ़ आगई, किसके रोने से अँधेरा हो गया, किसके रोने से धोती भींग गई और किसकी आँखों में आँसू भी नहीं आये ॥ २ । ३ ॥

तब वह स्त्री उत्तर देती है कि बाबा के रोने से गंगा में बाढ़ आगई; माताजी के रोने से अन्धेरा छागया; भाई के अधिक रोने से उनकी धोती भींग गई परन्तु भावज की आँखों में आँसू भी नहीं आये ॥ ४ ॥

कोई कहता है कि ऐ बेटी नित्यप्रति उठकर मायके चली आना; कोई कहता है कि छः मास के बाद आना। कोई कहता है कल ही उत्सव है तथा कोई कहता है कि तुम दूर चली जाओ ॥ ५ ॥

माता कहती है कि ऐ बेटी नित्य उठकर तुम मायके चली आना; पिताजी कहते हैं कि छः मास के बाद आना; भाई कहता है कि कल ही उत्सव है उसमें आना परन्तु भावज कहती है कि जाओ कभी मत आना ॥ ६ ॥

कोई मुझे कपड़ा देता है, कोई दूध देने वाली गाय देता है; कोई घोड़ा तथा कोई अफीम की गाँठ खाने देता है ॥ ७ ॥

माता मुझे पहिनने को कपड़ा देती है, पिताजी दूध पीने के लिये गाय देते हैं, भाई मेरे पति के चढ़ने के लिये घोड़ा देते हैं और भावज अफीम की गाँठ देती है ॥ ८ ॥

माताजी के द्वारा दिया गया कपड़ा फट जायेगा; पिताजी की दी हुई गाय दूध देना बन्द कर देगी परन्तु भाई का दिया हुआ घोड़ा नगर को सुशोभित करेगा। अफीम देने के कारण भावज को अपयश हाथ आवेगा ॥ ९ ॥

विदा होते समय ननद अपनी भावज से पूछती है कि ऐ भावज ! क्या मैं तुमसे नमक चुराकर रखती थी, क्या अन्न के भण्डार को मैं ढककर रखती थी जिससे तुम्हें भोजन न मिल सके अथवा क्या मैं तेरी रसोई झाँककर देखती थी ? किस कारण से तुम मुझसे बैर करती हो ॥ १० ॥

भावज उत्तर देती है कि ऐ ननद ! न तो तुमने नमक ही मुझसे चुराकर रक्खा, न अन्न-भण्डार को ही ढका और न रसोईघर में ही झाँकती थी। तुम्हारी कड़ी बातें ही सारे झगड़े की जड़ हो गईं ॥ ११ ॥

देहातों में ननद और भावज की अनबन प्रसिद्ध है। दोनों में शाश्वतिक विरोध है। इसी झगड़े की झाँकी इस गीत में मिलती है। पुत्री के लिये माता का स्वाभाविक प्रेम भी इस गीत में दर्शाया गया है। पुत्री के भाई तथा पिता का प्रेम भी प्रशंसनीय है।

७. जाँत के गीत

(जँतसार)

आटा पीसने की चक्की का नाम जाँत है। चक्की, चूल्हा और चरखा देहातों में घर-घर होते थे। चक्की में आटा पीस लिया, चूल्हे पर रोटियाँ पका लीं, इन कामों से अवकाश मिला तो चरखे पर कपड़ों के लिये सूत तैयार कर लिया। बस इन तीन चकारों की बदौलत देहात के लोग बहुत ही सुखी और स्वतन्त्र थे। स्त्रियाँ चक्की पीसती थीं। इससे उनका स्वास्थ्य ठीक रहता था और उनके बच्चे हृष्ट-पुष्ट होते थे। चक्की पीसते समय वे जो गीत गाती थीं, उनसे जीवन की धारा शुद्ध होती रहती थी, समय का सदुपयोग होता था, परिश्रम करने की आदत बनी रहती थी और पैसे की बचत भी होती थी।

हाथ की चक्की का काम अब देहातों में भी मशीन की चक्की ले रही है। स्त्रियों के हाथ कोमल होते जा रहे हैं। परिश्रम करने की आदत छूटती जा रही है। स्त्रियों का स्वास्थ्य शिथिल पड़ता जा रहा है। गेहूँ की पिसाई के पैसे ही अब नहीं देने पड़ते, बल्कि मशीन की चक्की की बदौलत अब गृहस्थों के घरों में डाक्टर भी घुसे चले आ रहे हैं और गृहस्थों पर उनकी फीस और दवा के दाम का भार भी बढ़ता चला जा रहा है।

मशीनें हमारे आटा पीसने के साथ ही साथ, जाँत के गीतों को भी पीसती चली जा रही हैं। इसे तो व्यक्तिगत हानि नहीं, बल्कि राष्ट्रीय हानि कहना चाहिये। क्योंकि गीत हमारे घरों में सच्चरित्रता के रक्षक, स्त्रियों के सदाचार के पोषक और शुद्धता के स्रोत थे। उनका नाश होना वैसा ही शोक-

जनक है, जैसा घोर बन में पगडंडी का छूट जाना या घोर अन्धकार में हाथ से दीपक का छिन जाना। वह दिन निकट ही है, जब चरखे के लिये आज जैसा देशव्यापी आन्दोलन चल रहा है, वैसा ही, बल्कि उससे भी प्रबल आन्दोलन चक्की की रक्षा के लिये करना पड़ेगा।

जाँत पीसने का समय रात का तीसरा पहर है। स्त्रियाँ शाम को ही पीसने के लिये अनाज रख लेती हैं, और पहर छः घड़ी रात रहे उठकर वे जाँत लेकर बैठ जाती हैं। जाँत के दो ओर आमने सामने बैठकर जब दो स्त्रियाँ पीसती हैं, तब पीसने में अधिक आसानी होती है। गाँवों में जाँत पीसने का सहयोग भी चलता रहता है। एक स्त्री दूसरी स्त्री का आटा पिसा आती है तो बदले में वह भी आकर पिसा जाती है। विवाह के अवसर पर तो सारे गाँव में दो या तीन पसेरी गेहूँ प्रत्येक घर के हिसाब से बाँट दिया जाता है। इस प्रकार सारे गाँव वाली स्त्रियों के सहयोग से कई मन आटा शीघ्र ही बड़ी आसानी से पिस जाता है। गरीब और कर्कशा स्त्रियों को इस प्रकार का सहयोग प्राप्त नहीं होता। क्योंकि गरीब स्त्रियों को गरीबी के कारण इतना अवकाश ही नहीं मिलता कि वे ठीक समय पर बदला चुका आवें और कर्कशा स्त्री से किसी की पटती ही नहीं।

जाँत के गीत आटा पीसने की थकावट को दूर करते रहते हैं। साथ ही पीसने वालियों के मन को प्रेम, करुणा और उदारता से भिगो कर कुटुम्बियों के असहनीय बर्ताव के कारण पैदा हुए विक्षोभ को निकालते भी रहते हैं। जाँत के गीतों के एक-एक शब्द स्त्री-सदाचार की नींव की एक-एक ईंट है।

जाड़ों की ठंडी और लम्बी रात के सन्नाटे में, उषाकाल के मंद-मंद समीर में, जाँत के गीत दूर से सुनने वालों को बड़े मधुर जान पड़ते हैं। देहात में किसी भी गाँव में निकल जाइये, रात के पिछले पहर में बहुत से घरों से जाँत की घुर-घुर ध्वनि और उस ध्वनि के साथ एक-एक कड़ी पर दम लेकर गाया हुआ जाँत का गीत सुनने को मिल जायेगा।

इन जाँत के गीतों में स्त्रियों की मानसिक भावनाओं का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया गया है। ऐसे ही कुछ गीत यहाँ दिये जाते हैं :—

सन्दर्भ—पति के रुष्ट होने के कारण स्त्री का घर से भागना, रास्ते में मल्लाह का बुरा प्रस्ताव

(११५)

मोरा पीछुवारावा[1] रे सीरिसिया[2] हहरे झहर[3] करे ए राम ।
सीरिसि पात हहरे झहरे त नीनियो[4] ना आवेला ए राम ॥१॥
मोरा पीछुवारावा बढ़इया भइया वेगे चली आवनु ए राम ।
जरी से ना काटहु रे सीरिसिया त हहरे झहर करे ए राम ॥२॥
मोरा पीछुवारावा पटहेरवा[5] भइया वेगे चली आवनु ए राम ।
लाले पाटे[6] बिनु पटीहटिया[7] त रेसम ओरिचनवा[8] ए राम ॥३॥
एक ओरिया[9] सुतेला बलमुआ[10] त एक ओरिया हम सुतली ए राम ।
बिरहा के मातल[11] रे बलमुआ त मुखहु ना बोलेला ए राम ॥४॥
बिरहा के मतली रे तिरियावा[12] त चलली जमुना में दहे ए राम ।
गोड़[13] तोरे लागों भइया केवट, नइया रे उतारि देहुपार ए राम ॥५॥
आजु की राति तीवई[14] रहि जाहु, बीहने[15] उतारि देबि पार ए राम ।
आताना बचन तीवई सुनली, ना सुनहीना पवली ए राम ॥६॥
उभुकी[16] चुभुकी तीवई पार भइली, केवटा हाथ मीसे[17] ए राम ॥७॥

कोई स्त्री कह रही है कि मेरे घर के पीछे सिरिस का वृक्ष है जो सदा हरहराता रहता है। उस सिरिस वृक्ष के पत्तों के हिलने-डोलने से मुझे नींद भी नहीं आती ॥ १ ॥

ऐ मेरे प्यारे भइया बढ़ई तुम शीघ्र आओ और तुम मेरे घर के पीछे स्थित सिरिस के वृक्ष को जड़मूल से काट डालो जिससे इसके पत्ते फिर हरहराने की आवाज़ न करें ॥ २ ॥

---

[1]मकान के पीछे। [2]सिरिस का वृक्ष। [3]हरहराता है। [4]नींद। [5]पटहेरा। [6]कपड़ा। [7]पलंग। [8]अधवाइन। [9]तरफ। [10]प्रियतम (पति)। [11]मतवाला। [12]स्त्री। [13]पैर। [14]स्त्री। [15]प्रातःकाल। [16]डूबती हुई। [17]मलना (पछताना)।

ऐ मेरे घर के पीछे रहने वाले पटहेरा भइया तुम शीघ्र आओ। तुम लाल सूत से मेरे पलँग को बुन दो और उसमें रेशम के ओरिचन लगा दो ॥३॥

उस पलंग पर एक ओर मेरा पति सोता है और दूसरी तरफ मैं सोती हूँ परन्तु क्रोध से मतवाला मेरा पति मुझ से मुख से बातें भी नहीं करता है ॥४॥

पति के मुख से न बोलने के कारण क्रोधित स्त्री मतवाली होकर यमुना में डूबने के लिए चल पड़ी और नदी के किनारे स्थित केवट से कहा कि 'ऐ भइया केवट! मैं तुम्हारे पैरों में सिर झुकाती हूँ, नाव से मुझे पार उतार दो ॥ ५ ॥

तब केवट ने कहा कि ऐ स्त्री! आज की रात तुम मेरे पास यहीं रह जाओ। मैं तुम्हें कल सवेरे पार उतार दूँगा ॥ ६ ॥

इतना सुनते ही वह स्त्री नदी में कूद पड़ी और डूबती-उतराती नदी के उस पार चली गयी। बेचारा मल्लाह हाथ मलता और पछताता ही रह गया ॥ ७ ॥

इस गीत में स्त्री की बहादुरी और स्वाभिमान-रक्षा दर्शनीय है। यदि आज भी भारत में ऐसी बहादुर स्त्रियाँ पैदा हों तो इसके बुरे दिन शीघ्र लौट आवेंगे।

सन्दर्भ—किसी कुलटा का बाजार-भ्रमण, कामुक से वार्तालाप

(११६)

तिसिया[1] के तेलवा के भगीवति[2], माथावा[3] रे बन्हवलों[4]।
आरे तेलवे कचोरवे[5] ए भगीवति, पटिया[6] रे बन्हवलों ॥१॥
आरे पहिरि पटोरवा[7] ए भगीवति, चललु रे बजरिया[8]।
आरे केकरीहि धियवा[9] ए भगीवति, केकरी रे बहिनिया ॥२॥
आरे केकरी कहलिया ए भगीवति, घूमेलू रे बजरिया।
आरे राजावा के धियवा ए लोभिया, राजावा के पतोहिया।
आरे राजावा कहलिया ए लोभिया, घुमेलों रे बजरिया ॥३॥

---

[1]अलसी। [2]स्त्री का नाम। [3]सिर। [4]बँधाया। [5]कटोरा। [6]वेणी। [7]कपड़ा। [8]बाजार। [9]पुत्री।

आरे कतने सिखाओ ए पियवा, कत देहु उकितिया[1] ।
आरे उकितिया ए पियवा, बान्हो सिर पगिया[2] ॥४॥

ऐ भगीवति ! तुमने अलसी का तेल अपने सिर में लगाकर अपना बाल बँधाया है तथा कटोरे में तेल भरकर अपनी वेणी सँवारा है ॥ १ ॥

ऐ भगीवति तुम कपड़ा पहनकर बाज़ार को चल पड़ी । तुम किसकी लड़की हो तथा किसकी बहन हो तथा किसके कहने से बाजार में घूम रही हो ॥२॥

तब उस स्त्री ने उत्तर दिया कि ऐ लोभी पुरुष ! मैं राजा की लड़की हूँ तथा राजा की बहन हूँ । ऐ लोभी ! मैं राजा के कहने से ही बाजार में घूमने के लिये आई हूँ ॥ ३ ॥

ऐ प्रिय ! कितना भी सिखाओ तथा उपाय बतलाओ परन्तु अपनी बुद्धि के द्वारा ही मनुष्य अपने सिर पर पगड़ी बाँधता है अर्थात् आदर को प्राप्त करता है ॥ ४ ॥

सन्दर्भ—बाल्यावस्था में विधवा हो जाने वाली कन्या का अपने माता, पिता से विवाह करने की प्रार्थना

(११७)

साभावा बइठल तुहुँ आरे बाबा हो बढ़इता ।
आरे हमहू मायेनवा कतेक दिन कुँवारी नु जी ॥ १ ॥
तोहरो बियहवा ए मायेना, आरे कइलों लरकइयाँ ।
आरे तोहरो बियहवा दइब हरि लिहलें रे जी ॥ २ ॥
मचिया बइठलि तुहुँ आमा हो बढ़इती ।
आरे हमहू मायेना कतेक दिन कुँवारी नु जी ॥ ३ ॥
तोहरो बियहवा ए मायेना, आरे कइलों लरिकइयाँ ।
आरे तोहरो बियहवा दइब हरि लिहलें रे जी ॥ ४ ॥
पासावा खेलत तुहुँ आरे भइया हो बढ़इता ।
आरे हमहू मायेनवा कतेक दिन कुँवारी नु जी ॥ ५ ॥

---

[1]युक्ति, उपाय । [2]पगड़ी ।

तोहरो बियहवा ए मायेना आरे कइलों लरिकइयाँ।
आरे तोहरो बियहवा दइब हरि लिहलें रे जी ॥ ६ ॥

सभा में बैठे हुए पिता से लड़की ने पूछा कि ऐ पिता जी! कबतक क्वारी रहूँगी? ॥ १ ॥

पिता ने उत्तर दिया कि ऐ पुत्री मैंने तुम्हारा विवाह कर दिया था परन्तु दैव ने तुम्हारा विवाह हर लिया अर्थात् तुम्हारा पति दुर्भाग्य से मर गया ॥२॥

मचिया पर बैठी हुई माता से भी उसने यही पूछा और माता ने भी यही उत्तर दिया जो पिता ने दिया था ॥ ३ । ४ ॥

पाशा खेलते हुए भाई से भी उस लड़की ने यही पूछा और उसने भी वही उत्तर दिया ॥ ५ । ६ ॥

यह गीत उस समय की याद दिलाता है जब दुधमुँही बच्चियों का ब्याह हो जाता था और उन्हें इसकी सुधि भी नहीं रहती थी। इसी कारण से बाल-विधवायें भी अधिक होती थीं।

सन्दर्भ—पुत्र के परदेश जाते समय माता का उससे परदेश जाने का कारण पूछना तथा कुशल-पत्र भेजने की प्रार्थना

(११८)

चीउरा[1] कूटू चीउरा कूटु सँवरो तिरियावा[2] रे।
आरे हम जइबों सँवरो मगहरे[3] देसवा रे ॥१॥
रोइ रोइ सँवरो रे चीउरा रे कूटेली।
आरे हँसि हँसि उमर[4] बान्हावेले[5] रे ॥२॥
कई महीना बबुआ तोहरो रे पायेतवा[6]।
कतेक दिन रहबो बबुआ मगहरे देसवा रे ॥३॥
छव महीना मातावा रहबों मगह देसवा।
बरीस मातावा रे जइबों मोरँग देसवा रे ॥४॥

---

[1] चिवरा (कूटा धान)। [2] स्त्री। [3] मगध। [4] पति। [5] बँधाया। [6] प्रस्थान।

काहे रे लागि[1] बबुआ जइबो मोरँग देसवा।
काहे रे लागि बबुआ मगहर देसवा रे ॥५॥
पान लागि मातावा रे जइबों मगह देसवा।
सुपारि[2] लागि मातावा जइबों मोरँग देसवा रे ॥६॥
कथिके[3] सरवते[4] बबुआ भँगबो[5] रे सुपरिया।
आरे कथि कँइची[6] बबुआ कटब पानावा रे ॥७॥
सोने के सरवते मातावा भँगबों रे सुपरिया।
आरे रूपे[7] के कँइची मातावा कतरबि पानावा रे ॥८॥
जाहु तुहु जाहु बबुआ मगह रे देसवा।
आपन कुसल सब भेजिह नु रे ॥९॥
मरले जनि मरहि बबुआ कटले जनि कटइह।
आरे मुदई[8] बबुआ करिह जरि छारवा[9] रे ॥१०॥

कोई पति परदेश जाने के लिये तैयार है वह अपनी स्त्री से कह रहा है कि ऐ स्त्री! तुम चिउरा कूटो। आज मैं मगह (मगध, विहार) देश को जाऊँगा ॥१

पति का परदेश गमन सुनकर उस स्त्री ने दुखी होकर तथा रो रो कर चिउरा कूटा और उसके पति ने हँस-हँस कर उसको गठरी में बाँधा ॥२॥

पुत्र को परदेश जाता देख माता ने पूछा कि ऐ बेटा! तेरा प्रस्थान कितने दिन का है? तुम मगध देश में कितने दिन रहोगे? ॥३॥

तब पुत्र ने उत्तर दिया कि ऐ माता मैं छः महीने मगध (विहार) देश में रहूँगा तथा एक बरस मोरँग देश में निवास करूँगा ॥४॥

फिर माता ने कहा ऐ पुत्र! तुम किस लिये मोरँग देश जा रहे हो तथा किस कारण मगध देश जाने की सोच रहे हो? ॥५॥

पुत्र ने उत्तर दिया ऐ माता मैं पान के लिये मगध देश जाना चाहता हूँ और सुपारी के लिये मोरँग देश ॥६॥

---

[1]किस लिए (किस कारण)। [2]सुपारी। [3]किसका। [4]सरवता (सुपारी काटने का औज़ार)। [5]काटना। [6]कैंची। [7]चाँदी। [8]शत्रु। [9]नष्ट कर देना।

माता ने कहा ऐ पुत्र ! किस चीज के सरौते से तुम सुपारी काटोगे और किस चीज की कैंची से पान काटकर सुधारोगे ॥७॥

पुत्र ने उत्तर दिया ऐ माता ! सोने के सरौते से मैं सुपारी काटूँगा और चाँदी की कैंची से मैं पान सुधारूँगा ॥८॥

तब माता ने कहा ऐ पुत्र ! तुम मगध देश जाओ परन्तु अपना समाचार शीघ्र भेजते रहना ॥ ६ ॥

ऐ पुत्र ! न तो तुम किसी के मारने से मरना और न काटने से कटना । तुम अपने शत्रुओं को जलाकर नष्ट कर देना ॥ १० ॥

सन्दर्भ—विरह से पीड़ित स्त्री का पति को सन्देश भेजना परन्तु दुष्ट पति का अशिष्ट उत्तर

(११६)

जाहु हम जानितों ए ननदो[1], आरे भइया तोरे जइहें बिदेसवा रे ।
गगरीनि[2] कनिकी[3] पिसइतों, आरे बान्हि देति सँगवा रे ॥ १ ॥
सुनहु बाट बटोहिया रे, परदेस पति पहुँचो जाई ।
हमरो सनेस लेले जइहे, कहिहे ते प्राभु समुझाई ॥ २ ॥
आरे तोरे धनि[4] अलप[5] रे बयसवा ।
कहिहे ते प्राभु समुझाई ॥ ३ ॥
बाट[6] बटोहिया[7] रे सारावा[8], मोरे तुहुँ लगवे रे सारावा ।
हमरो सनेस लिहले ते जइहे, कहिहे ते धनि समुझाई ॥ ४ ॥
आरे जाजीम झुलवा रे सीयइहे, रेसम चढ़इहे सानाजाप[9] ।
आरे ताहि बीचे जोवना[10] रे छिपइहें, कुलवा रखिहे हमार ॥ ५ ॥
नइया तोरे डूबो प्राभु बीचही रे धारावा, बरधी[11] हि लेइ जासु चोर ।
आरे तुहे प्राभो मारि डाले बीच बाटावारावा[12] तीरिया कइले बिछोह ॥६

[1]ननद । [2]गगरी, घड़ा । [3]आटा । [4]स्त्री । [5]अल्प, थोड़ा । [6]रास्ता । [7]पथिक । [8]श्याला । [9]तोई । [10]स्तन । [11]बैल । [12]बटमार, डाकू ।

नइया मोरे जइहें सँवरो तीरे तीरे, बरधी उतरि जइहें पार।
आरे तुहे धनिया बेचवों रे मोगलवा[1] करबों दोसरो बियाह ॥ ७ ॥

किसी स्त्री का पति परदेश चला गया है। वह दुःखी होकर अपनी ननद से कहती है कि ऐ ननद ! मैं जानती कि तुम्हारा भाई विदेश जायेगा तो मैं घड़े भरकर आटा पीसती और उनके साथ बाँध देती ॥ १ ॥

पति के वियोग से दुःखी होकर वह स्त्री राह में चलनेवाले बटोही से कह रही है कि ऐ बटोही ! मेरा पति परदेश चला गया है। तुम मेरा सन्देश लेजाओ और मेरे पति को समझा कर कहना कि ऐ परदेशी तेरी स्त्री छोटी अवस्था वाली है अतः तुम घर लौट जाओ ॥ २ । ३ ॥

बटोही के द्वारा अपनी स्त्री का समाचार सुन लेने पर, उस पति ने कहा कि ऐ बटोही ! तुम मेरे साले लगते हो अतः तुम मेरा सन्देश लेकर जाओ और मेरी स्त्री को समझा कर कहो कि "ऐ स्त्री तुम जाजिम का झूला (चोली) सिलाओ और उसमें रेशम की तोई लगाओ। उस चोली के बीच में अर्थात् भीतर अपने उभरे स्तन को छिपा करके रक्खो और इस प्रकार अपने सदाचरण से मेरे कुल की रक्षा करो अर्थात् अपना आचरण इतना शुद्ध रक्खो जिससे मेरे कुल में कलंक न लगने पावे ॥ ४ । ५ ॥

पति के इस सन्देश को सुनकर स्त्री बहुत क्रुध हुई और क्रोध के कारण उसने कहा कि ऐ पति ! लौटते समय तेरी नाव नदी के मध्यधार में डूब जाय और तेरे बैलों को चोर चुरा ले जायँ। तुमको बीच राह में डाकू मार डालें क्योंकि तुमने अपनी स्त्री को छोड़ दिया है ॥ ६ ॥

बटोही के द्वारा जब यह सन्देश पति के पास पहुँचा तब उसने कहा कि ऐ स्त्री मेरी नाव नदी के किनारे-किनारे जायेगी जिससे डूबने का डर न रहे;

---

[1] मुसलमान।

मेरे बैल सब कुशल पूर्वक पार उतर जायेंगे। तुमको मैं किसी मुग़ल (मुसलमान) के हाथ बेंच दूँगा और अपना दूसरा विवाह करूँगा ॥ ६ ॥

इस गीत में उस पापी पति का जो अपनी स्त्री को छोड़कर फिर कभी सुधि भी नहीं लेता —बड़ा सुन्दर चित्र खींचा गया है। यह निर्दयी पति स्वयं परदेश में बैठा हुआ अपनी स्त्री को सदाचरण से रहने की शिक्षा तो देता है परन्तु उसका कुशल-समाचार जानने का कष्ट नहीं उठाता। अन्त में वह अपनी धर्मपत्नी को किसी नीच मुसलमान के हाथों बेचकर अपना दूसरा विवाह कर लेने की धमकी देता है। आजकल हिन्दू समाज में स्त्रियों की जैसी दुर्दशा हो रही है उसी का यह वस्तुतः चित्रण है।

सन्दर्भ—किसी बाल-विधवा स्त्री का अपने पिता से दुःखों का निवेदन

(१२०)

बाबा काहे के लवल[1] बगइचा[2]; काहे के फुलवरिया लवल ए राम।
बाबा काहे के कइल मोर बियाहावा[3]; काहे के गवनवा ए राम ॥ १ ॥
बेटी आमावा चीखन[4] बगइचवा; लोढ़ें[5] के फुलवरिया।
बेटी भुमुते[6] के कइलों तोर बियाहावा; दोन सोचे गवन कइलों ए राम ॥२॥
बाबा सिर मोरा रोवेला रे सेनुर[7] बिनु; नयना कजरवा बिनु ए राम।
बाबा गोद मोरा रोवेला रे बालक बिनु; सेजिया कन्हैया[8] बिनु ए राम ॥३॥
बेटी लागे देहु हाजीपुर के हटिया[9]; करम[10] तोर बदलि देवों ए राम।
बाबा काँसावा पीतर सब बदली, करम कइसे बदली ए राम ॥४॥
बेटी सिर तोर भरबों रे सेनुर लेइ, नयना कजारवा लेइ ए राम।
बेटी गोद तोरे भरबों रे बालक लेइ, सेजिया[11] कन्हैया लेइ ए राम ५

कोई बाल-विधवा लड़की अपने पिता से कह रही है कि ऐ पिता तुमने

---

[1]लगाया। [2]बगीचा। [3]विवाह। [4]खाना। [5]चुनना। [6]भोग करना। [7]सिन्दूर। [8]पति। [9]बाजार। [10]भाग्य। [11]पलंग, सेज।

बगीचा किस लिये लगाया तथा फुलवारी किस लिये बनाया। तुमने मेरा विवाह और गवना किस लिये किया ॥ १ ॥

तब पिता ने उत्तर दिया कि ऐ बेटी ! मैंने बगीचा आम खाने के लिए लगाया था तथा फूल चुनने के लिये फुलवाड़ी बनाया था। ऐ बेटी ! आनन्द तथा भोग-विलास करने के लिये तुम्हारा विवाह और गवना किया था ॥ २ ॥

तब उस बाल-विधवा बेटी ने कहा कि ऐ पिता जी ! मेरा सिर सिन्दूर के बिना रोता है अर्थात् उदास लगता है (क्योंकि मैं विधवा होने के कारण सिन्दूर नहीं लगा सकती) और आँखें काजल के बिना अच्छी नहीं लगतीं। मेरी गोद बालक के बिना सूनी लगती है और मेरी सेज पति के बिना सूनी मालूम होती है (क्योंकि पति मर गया है) ॥ ३ ॥

इस पर पिता ने उत्तर दिया कि ऐ बेटी हाजीपूर (सोनपुर) का मेला लगने दो; उस मेले में मैं तुम्हारे भाग्य को बदल दूँगा। तब बेटी ने उत्तर दिया कि पीतल और काँसे के बर्तन तो बदले जा सकते हैं परन्तु भाग्य कैसे बदला जा सकता है ॥ ४ ॥

इस पर पिता ने उत्तर दिया कि ऐ बेटी ! मैं तेरा सिर मेले में से सिन्दूर खरीद कर भर दूँगा, आँखों में काजल लगा दूँगा। तुम्हारी गोद बालक से भर दूँगा और तुम्हारी सेज को पति से युक्त कर दूँगा (संभवतः पिता अपनी छोटी पुत्री को इस प्रकार से फुसला रहा है) ॥ ५ ॥

इस गीत से ज्ञात होता है कि पहिले समय में आजकल की भाँति अबोध बालिकाओं का भी विवाह हो जाता था जिन्हें यह भी नहीं मालूम होता था कि मेरा विवाह हुआ भी है या नहीं। उपर्युक्त गीत में एक ऐसी ही लड़की का वर्णन है। यदि ऐसी बात न होती तो वह अपने पिता से बालसुलभ ऐसे सीधे-सादे प्रश्न न करती। इसी गीत में हाजीपूर स्थान का उल्लेख है। यह स्थान बिहार प्रान्त में बी० एण्ड न० डब्लू० रेलवे के ऊपर सोनपूर जिला छपरा) के पास स्थित है। इसमें जिस मेले का उल्लेख है वह हाजीपूर में न लगकर वस्तुतः सोनपुर नामक स्थान में लगता है और यह भारत का सर्वश्रेष्ठ मेला 'हरिहर क्षेत्र का मेला' के नाम से प्रसिद्ध है।

सन्दर्भ—स्त्री का पति से अन्य मालिन स्त्री से प्रेम न करने का आग्रह

(१२१)

एह पार गंगा ए हरिजी, ओह पार जमुना।
ताहि बिच लवल ए हरिजी, तुलसी के गछिया[1] ॥१॥
हाथावा के लिहले ए हरिजी, लोटवा[2] के डोरिया[3]।
आरे काँखे जाँती[4] लिहल ए हरिजी, धरी[5] लागल धोतिया ॥२॥
तेकरा[6] पीछे लवल ए हरि जी, मालिनी के बिटिया[7] ॥३॥
लेहुना आहो ए मालिनि बिटिया, डाल भरि सोनवा।
छोड़ि देहु आहो ए मालिनि बिटिया, हरिजी के साँगावा[8] ॥४॥
आगी लगइबों ए सँवरो, डाल भरि सोनवा।
नाहीं हम छोड़बों ए सँवरो, हरिजी[9] के साँगवा ॥५॥

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि इस पार गंगा है और उस पार यमुना है। ऐ पति ! तुमने इन दोनों नदियों के बीच में अर्थात् संगम पर तुलसी का वृक्ष लगाया है ॥ १ ॥

ऐ पति ! तुमने हाथ में लोटा और डोरी ले लिया है और अपनी काँख में तुमने कन्नी लगी धोती दबा ली है ॥ २ ॥

और उसके पीछे तुमने मालिनि की बेटी को अपने साथ में ले लिया है (जो अत्यन्त अनुचित है) ॥ ३ ॥

वह स्त्री अब मालिनि की बेटी से प्रार्थना कर रही है कि ऐ लड़की डाल (दौरी) भरकर मुझ से सोना ले लो। परन्तु तुम मेरे पति का संग छोड़ दो ॥४॥

इस पर मालिनि की लड़की ने उत्तर दिया कि ऐ स्त्री ! तुम्हारे डाल भर सोने में आग लगा दूँगी अर्थात् मैं उसे अत्यन्त तुच्छ समझती हूँ। ऐ साँवली स्त्री ! मैं तुम्हारे पति का साथ कदापि नहीं छोड़ सकती ॥ ५ ॥

---

[1]गाँछी, वृक्ष। [2]लोटा। [3]डोरी [4]दबाना। [5]कन्नी, पाढ़। [6]उसके। [7]लड़की। [8]संग, साथ। [9]पति।

सन्दर्भ—ससुराल के कष्टों का स्त्री के द्वारा वर्णन

(१२२)

बेरी[1] ही बेरी तोही बरजों ए बाबा, आरे उतर[2] धिया[3] जनी लाउ।
उतर के लोग निरमोहिया[4] ए बाबा, उलटी पुलटी दुःख देई ॥१॥
रतिया पिसावे जब गेहुँआ ए बाबा, दिनवा कतावे झीन[5] सूत।
सुतली[6] सेजियवा उठावे ए बाबा, आरे आँगाना घरेल सब छूँछ[7] ॥२॥
साभावा बइठल तुहुँ ससुर हो बढ़इता, आरे सागर नियरा[8] की दूर।
मचिया बइठल तुहुँ सासु हो बढ़इती, दाहावा[9] बाटे नियरा की दूर ॥३
पासावा खेलत तुहुँ भसुर हो बढ़इता, आरे सागर नियरा की दूर।
भड़सल[10] पइसलि[11] तुहुँ गोतिनी[12] हो बढ़इती, दाहावा बाटे
नियरा की दूर ॥४॥
आरे जेठ बइसाख केरे तफली[13] रे भुभुरिया[14], धनिया जइहें कुम्हिलाई।
अँगने में कुइयाँ[15] खानाइ द ये बबुआ, रेसम के डोरिया लगाई ॥५॥
नोनिया[16] बोलाई के कोठावा[17] उठाइ द ए बबुआ।
नाही त जइहें[18] धनिया कुम्हिलाई ॥६॥

कोई दुःखिया लड़की जिसका विवाह उत्तर देश में (संभवतः गोरखपूर जिले में) हुआ है अपनी ससुराल गई हुई है। वहाँ पर जब उसे कष्ट होने लगा तब वह आप ही आप कह रही है कि "मैंने अपने पिताजी को बार-बार मना किया कि आप अपनी लड़की का विवाह उत्तर देश में न करें। क्योंकि उत्तर देश के लोग बड़े निर्दयी होते हैं और वे अनेक प्रकार से कष्ट देते हैं ॥ १ ॥

वे लोग रात को अपनी स्त्रियों से जव और गेहूँ पिसवाते हैं और दिन में

---

[1]बार बार। [2]उत्तर देश में। [3]लड़की। [4]निर्दयी। [5]पतला। [6]सोयी हुई। [7]खाली। [8]नज़दीक, पास। [9]बड़ा तालाब [10] भीतर घर में। [11]बैठी हुई। [12]दायादिनि। [13]अत्यन्त गर्म। [14]गर्म बालू। [15]कुँआ। [16]मिट्टी के घर बनाने वाले। [17]अटारी [18]जायेगी।

बहुत पतला सूत कतवाते हैं। ऐ पिता जी ! वे सेज पर सोती हुई भी बहू को जगा देते हैं चाहे आँगन और घर में कोई काम करने को भले ही न रहे ॥२॥

अपने दुःख से अत्यन्त व्यथित होकर वह लड़की अपनी आत्महत्या के लिये सोचती है और अपने ससुर से पूछती है कि ऐ इज्ज़तवाले ससुरजी यहाँ से समुद्र नज़दीक है या दूर। मचिया पर बैठी हुई ऐ सास तुम बतलाओ कि बड़ा तालाब यहाँ से नज़दीक है या दूर ? ॥ ३ ॥

ऐ पासा खेलनेवाले भसुर जी ! यहाँ से समुद्र नज़दीक है या दूर। ऐ घर में घुसी हुई दायादिनि ! यहाँ से बड़ा तालाब नज़दीक है या दूर ॥४॥

संभवतः अपनी पतोहू की करुण दशा देखकर निर्दयी सास को दया आ गई और उसने यह समझ कर कि शायद बहू नहाने जाना चाहती है अपने पुत्र से कहा कि जेठ बैसाख की कड़ी धूप की भुभुरी हो रही है। तुम्हारी स्त्री कुँभिला जायेगी। अतः ऐ बेटा घर में ही कुआँ खना दो तथा रेशम की डोरी लगा दो ॥५

नोनिया बुलाकर मकान बना दो जिसमें बहू सुख से रहे। नहीं तो वह गर्मी के मारे कुँभिला जायेगी ॥ ६ ॥

इस गीत में वर्णित वधू का दुःख पढ़कर पत्थर का भी कलेजा पसीज जायेगा। वधू ने जो उत्तर देश की निन्दा की है वह कुछ अंशों में बहुत ही ठीक है। चूँकि इन गीतों की रचना-स्थली बलिया, गाजीपुर तथा आरा आदि जिले हैं अतः यहाँ उत्तर देश से तात्पर्य गोरखपुर जिले से समझना चाहिये। वहाँ की स्त्रियाँ अभी भी पतला सूत नित्य कातती हैं यह इस अनुमान को और भी प्रमाणित करता है।

सन्दर्भ—सास के कष्ट देने के कारण वधू की अपने मायके पहुँचाने के लिये देवर से प्रार्थना

(१२३)

सासु का चोरिये[1] चोरिये भुजुना[2] भुजवलों[3] हो।
ननदिया बयेरिनी[4] घारावा लाहारा[5] लगवली हो ॥१॥
ननदिया ए बैरिनी।

[1]छिपकर। [2]परमल। [3]भुनाया। [4]शत्रु। [5]झगड़ा।

सासु मारे हुथुका[1]; ननदिया पारे[2] गारी हो।
ए चदरिया के अलोतवा[3] हो; देवरा हमरो ना ॥२॥
देवरा हमरो ना
चलना देवर हामारा नइहारावा[4] हो; अँचरा फारिकेना।
देवरा बेनिया[5] डोलइवों हो; अँचरा फारिके ना ॥३॥
घुमि फिरि अइब देवर, गोड़वा धोई लिहलों हो।
की साँझी रे बेरिया ना।
देवर जँतबों करुवा[6] तेलवा हो; की साँझी[7] रे बेरिया ना ॥४॥

कोई बधू सास के दुष्ट बर्ताव से दुःखी होकर कह रही है कि सास से चुराकर तथा छिपाकर चना भुनाया। परन्तु मेरी वैरी ननद ने इसे देख लिया और घर में झगड़ा लगा दिया ॥ १ ॥

इस झगड़े के कारण मेरी सास ने मुझे थप्पड़ तथा मुक्के से मारना शुरू किया और ननद गाली देने लगी। परन्तु चादर के परदे की आड़ में खड़े हुए मेरे देवर ने मुझे कुछ भी नहीं कहा ॥ २ ॥

सास की ताड़ना से दुःखी उस स्त्री ने अपने देवर से कहा कि ऐ देवर! मुझे अपने मायके पहुँचा दो। इस उपकार के लिये मैं अपना आँचर फाड़कर तुम्हारे लिये पंखा झलूँगी ॥ ३ ॥

ऐ मेरे प्यारे देवर! जब घूम-फिरकर आओगे तब मैं तुम्हारे पैरों को धोऊँगी और शाम के समय तुम्हारे पैरों में सरसों का तेल मलूँगी ॥ ४ ॥

इस गीत में सास की दुष्टता, ननद का वैरपन तथा भावज का अपने देवर के प्रति अलौकिक प्रेम दर्शनीय है। ऐसा प्रेम आजकल बहुत ही दुर्लभ है। पंखा के स्थान पर आँचर फाड़कर पंखा झलना इस प्रेम की मात्रा को और भी अधिक बढ़ा रहा है।

---

[1] घूँसा, थप्पड़। [2] देना। [3] परदे में। [4] मायका। [5] पंखा। [6] सरसों। [7] सन्ध्या।

सन्दर्भ—दुष्ट देवर की अपनी भावज से सुरत-सम्भोग की प्रार्थना

(१२४)

निहुरलि[1] निहुरलि भऊजी[2] अँगना बहरली[3] हो।
देवरावा हमरो ना मुँहवा निरेखेले[4] हो ॥ १ ॥
देवरा हमरो ना—
काहे[5] लागि भऊजी हो मुँहवा सुखइले; काहे रे लागि ना।
काहे लागि भऊजी ढरे[6] नयना लोरवा[7] हो; काहे रे लागि ना ॥२॥
काहे लागि भऊजी बारावा[8] बढ़वलू हो; काहे रे लागि ना ॥ ३ ॥
पान लागि देवर ओठवा झुरइले[9] हो; बलमुवा[10] लागि[11] ना।
देवर! नयना ढरे लोरावा हो; बलमुवा लागि ना ॥ ४ ॥
माथ लागि देवर बारावा बढ़वलों हो; बलमुवा लागि ना।
देवर! सचिले[12] जोबानावा हो; बलमुवा लागि ना ॥ ५ ॥
जबलग[13] भऊजी भइया हामार अइहें हो; कि तबलग[14] ना।
भऊजी जोर ना सनेहिया[15] हो; कि तबलग ना ॥ ६ ॥
अइसन[16] बोली[17] जनि बोलु देवरावा हो; काटाइरे देबों ना।
देवर! अलफी[18] तोरि बहियाँ हो; काटाइरे देबों ना ॥ ७ ॥

इस गीत में भावज और देवर के वार्तालाप का वर्णन है। देवर कहता है मेरी भावज ने कमर को झुका करके सारा आँगन बुहार डाला। परन्तु हमने उसका मुँह तक नहीं देखा ॥ १ ॥

ऐ भावज! तुम्हारा मुँह किस लिये सूख गया है तथा ऐ भावज! किस लिये तुम्हारी आँखों से आँसू बह रहा है ॥ २ ॥

ऐ भावज! तुमने किस लिये अपने बाल इतने लम्बे बढ़ा रक्खे हैं ॥ ३ ॥

---

[1]झुकी हुई। [2]भावज। [3]साफ किया, झाड़ दिया। [4]देखना। [5]किसलिये। [6]गिरता है। [7]आँसू। [8]बाल, केश। [9]सूख गया। [10]बालम, प्रियतम। [11]के लिये। [12]संचित करती हूँ। [13]जबतक। [14]तबतक। [15]स्नेह, प्रेम। [16]ऐसी। [17]बात। [18]कोमल, सुकुमार।

इस पर भावज ने उत्तर दिया कि ऐ देवर ! मेरा पति परदेश चला गया है अतः उसके वियोग में पान न खाने के कारण मेरा मुँह सूख गया है तथा उसी बालम (प्रिय) के विरह के हेतु आँखों से आँसू ढर रहे हैं ॥ ४ ॥

वियोग में अपने सिर के बालों का संस्कार न कर सकने के कारण मैंने उन्हें बढ़ा रक्खा है और अपने इन स्तनों को उसी प्रियतम के लिये सुरक्षित रख रही हूँ (जिससे आकर वह इनका उपभोग कर सके) ॥ ५ ॥

इस पर उस दुष्ट देवर ने उत्तर दिया कि ऐ भावज ! जबतक हमारे भइया घर पर नहीं आतें तबतक तुम मुझी से प्रेम जोड़ो अर्थात् मुझसे प्रेम करो ॥६॥

तब उस सती साध्वी भावज ने कहा कि ऐ देवर ! तुम ऐसी बुरी बात मत कहो । नहीं तो जब तुम्हारे भाई आयेंगे तब उनसे ये सारी बातें कहकर मैं तुम्हारे कोमल हाथों को कटवा लूँगी ॥ ७ ॥

इस गीत में किसी विरहिणी स्त्री का बड़ा ही रमणीय तथा हृदयस्पर्शी वर्णन किया गया है । विरहावस्था में वियोगिनी को दीन, मलीन तथा प्रसाधन-हीन वर्णन करना प्राचीन कवियों की परम्परा रही है । इसी परम्परा का पालन इस गीत में किया गया है । यह स्त्री पति-वियोग के कारण न तो पान खा रही है और न अपने बालों को ही सुसंस्कृत कर रही है । अतः उसके बाल बिखरे पड़े हैं । आँखों से आसुओं की झड़ी सदा लगी हुई है ।

सन्दर्भ—विरह-विधुरा नायिका का वियोग-वर्णन; पति का घर लौटना । स्त्री की उक्ति, दुष्ट पति का उत्तर

(१२५)

मोरा पिछुवारावा[1] रे घनी बँसवरिया[2] ।
ताहि चढ़ि कोइल री बोले रे बिरहिया[3] ॥ १ ॥
राम की ताहि रे चढ़ी ना ।
कोइलरी सबद[4] सुनि सँवरिया उठि बइठलि; राम बढनिया[5] लेइके ना ॥२

[1]मकान के पीछे । [2]बासों का झुण्ड । [3]विरहिणी । [4]शब्द । [5]झाड़ू ।

साँवरी आँगाना बहारि[1] के दुवारावा घुरवा[2] लवलों हो;
राम घरीलवा[3] लिहले ना ॥ ३ ॥
साँवरी पनिया के चलली; राम घरीलवा लिहले ना ॥ ४ ॥
घोड़वा चढल एक पातर सिपहिया; राम केकरि सुनरी[4] ना ।
उजे पनिया के चललू; राम केकरि[5] सुनरी ना ॥ ५ ॥
ससुर भसुरजी के पान पनिहारीनी; राम बलमुवाजी के ना ।
उजे पनिया के अइलों; राम बलमुवाजी के ना ॥६॥
बरहो बरीसवा[6] पर लवटल[7] बनीजारावा[8]; राम की बारावा[9]
तारावा[10] ना ।
मन के उछाहली[11] धनिया जेवना[12] बनवली; राम की बारावा
तारावा ना ॥ ७ ॥
हरी मोरे लीटिया[13] लगवले; राम की बारावा तारावा ना ।
मन के उछाहली धनिया गेडुआ[14] भरवली; राम की बारावा
तारावा ना ॥ ८ ॥
हरी[15] मोरे कुँइया खोनवले[16]; राम की बारावा तारावा ना ॥ ९ ॥
मन के उछाहली धनिया सेजिया[17] डसवली; राम की बारावा तारावा ना ।
हरी मोरे पुवरा[18] डसवले[19]; राम की बारावा तारावा ना ॥ १० ॥
जाहु हम जनितों जे पिया बाड़े अइसन[20]; राम की कइरे घलितों[21] ना ।
उजे[22] पतर[23] सिपहिया; राम की कइरे घलितों ना ॥ ११ ॥
जाहु हम जनितों जे धनिया बाड़ी अइसन; राम की कइरे घलितों ना ।
उजे पुरुब बँगलिनिया[24]; राम की कइरे[25] घलितों ना ॥ १२ ॥

---

[1]झाड़ू देकर । [2]कूड़ा करकट का ढेर । [3]घड़ा । [4]सुन्दरी स्त्री । [5]किसकी । [6]वर्ष । [7]लौटा । [8]बनजारा (व्यापारियों का झुण्ड) । [9]बटवृक्ष । [10]नीचे । [11]प्रसन्न । [12]भोजन । [13]मोटी तथा सूखी रोटी । [14]लोटा । [15]पति । [16]खनाया । [17]पलंग । [18]पुआल । [19]बिछाया । [20]ऐसी । [21]कर लेती । [22]उसी । [23]पतला । [24]बंगाली स्त्री । [25]कर लेता ।

किसी स्त्री का पति परदेश चला गया है। वह उसके वियोग में अत्यन्त दुःखी होकर कह रही है कि मेरे मकान के पीछे घने बाँसों का झुण्ड है। उस पर चढ़कर विरह-दुःख को बढ़ाने वाली कोयल बोलती है ॥ १ ॥

रात्रि के पिछले पहर में कोयल का शब्द सुनकर यह स्त्री उठ बैठी और हाथ में झाड़ू लेकर आँगन झाड़ने लगी। आँगन साफ कर उसने कूड़े को द्वार परके घूर के ऊपर फेंक दिया ॥ २ । ३ ॥

इसके बाद वह अपने हाथों में घड़ा लेकर पानी भरने चल पड़ी ॥४॥

जब वह पानी भरने जा रही थी उसी समय रास्ते में घोड़े पर चढ़ा हुआ एक पतला सिपाही मिला। उसने उस स्त्री से पूछा कि तुम किसकी सुन्दरी भार्या हो जो पानी भरने के लिये जा रही हो ॥ ५ ॥

तब स्त्री ने उत्तर दिया कि मैं अपने ससुर और भसुर (पति का बड़ा भाई) की पनिहारिन हूँ लेकिन अपने पति की पनिहारिन नहीं हूँ। इसी लिये मैं यहाँ पर पानी लेने के लिये आयी हूँ ॥ ६ ॥

इतने में स्त्री को मालूम हुआ कि उसका पति बनजारा के साथ परदेश से लौटकर चला आया है। वह कहती है कि बारह वर्ष के बाद पति बनजारा के साथ लौटकर आया है और वह इसी गाँव के वट वृक्ष के नीचे ठहरा हुआ है। इस शुभ समाचार से स्त्री को बड़ी प्रसन्नता होती है और वह उसी वट वृक्ष के नीचे जाकर अपने पति के लिये भोजन बनाने लगती है ॥७॥

परन्तु उस दुष्ट पति ने अपने लिये मोटी तथा सूखी रोटी बनानी शुरू कर दी। मन में प्रसन्न होकर स्त्री ने पति के लिये एक लोटा जल दिया। परन्तु विमनस्क पति ने उसी वट वृक्ष के नीचे कुँआ खनाना प्रारम्भ कर दिया ॥८।९॥

मन में प्रसन्न होकर स्त्री ने पति के सोने के लिये पलँग बिछाया परन्तु पति ने उसी वट वृक्ष के नीचे सोने के लिये पुआल बिछा लिया ॥ १० ॥

पति के इस दुष्ट, नीच कर्मों तथा उलटे व्यवहारों से दुःखी होकर वह स्त्री कहती है कि यदि मैं जानती कि मेरा पति इतना दुष्ट होगा तो मैं उस पतले सिपाही को ही अपना पति बना डालती ॥ ११ ॥

इस बात को सुनकर वह पति कहता है कि यदि मैं जानता कि मेरी स्त्री

ऐसी होगी अर्थात् दूसरा पति कर लेगी तो मैं भी पूरब देश में किसी बंगालिन स्त्री से विवाह कर लेता ॥ १२ ॥

आजकल भी देहातों में ऐसी सैकड़ों घटनायें देखने को मिलती हैं जिनमें पति अपनी सती स्त्री को भी छोड़कर पूरब में विशेषकर कलकत्ता और रंगून चला जाता है तथा वहीं पर किसी बंगालिन अथवा बर्मी स्त्री से फँस कर विवाह कर लेता है। फल स्वरूप उसकी स्त्री आजीवन विरह के आँसू बहाया करती है।

सन्दर्भ—ससुराल में कष्ट होने के कारण कन्या का मायके जाने का वर्णन

(१२६)

ए राम तालवा[1] में रोवेला रे चकइया[2]।
त वटिया[3] में दूबि[4] जामे ए राम ॥१॥
ए राम ससुरा में रोवेले विटुइया[5]।
त हमहु रे नइहरवा जइबों ए राम ॥२॥
ए राम मचिया बइठलि तुहुँ सासु जी।
सासु जी रे विरहिया[6] बोले ए राम ॥३॥
ए राम बिनु रे ही माई बाप के ससुरा से हो।
कइसे नइहर जाला ए राम ॥४॥
ए राम गंगा हई हमरी ही मइया।
त देहवा[7] रे वहिनियाँ हई ए राम ॥५॥
ए राम चान[8] सुरुज[9] दुनो भइया।
रघुनाथ[10] हमरो बाप[11] हवें[12] ए राम ॥६॥

कोई स्त्री ससुराल गई हुई है परन्तु उसे वहाँ पर कष्ट हो रहा है अतएव वह मायके लौटना चाहती है। अपने दुःख से दुःखी होकर वह कहती है

---

[1]तालाब। [2]चकवी। [3]रास्ता। [4]दूब। [5]लड़की। [6]दुःख देने वाली बातें। [7]सरयू नदी। [8]चन्द्रमा। [9]सूर्य। [10]भगवान्। [11]पिता। [12]है।

कि तालाब में पति-वियोग से चकई रो रही है जिससे रास्ते में दूब जम जाती है ॥ १ ॥

मैं ससुराल में बैठी रो हुई रहीं हूँ। मैं अपने मायके अवश्य जाऊँगी ॥२॥

मचिया पर बैठी हुई सास ने इस बात को सुन लिया और उसने अपनी पतोहू से इस प्रकार दुःख भरी तथा कड़वी बातें कहना प्रारंभ किया कि जिस लड़की का न पिता जीवित है और न माता, वह ससुराल से अपने मायके कैसे जा सकती है ॥ ३ । ४ ॥

इस कड़वी बात को सुनकर उस पतोहू ने उत्तर दिया कि गंगा नदी ही मेरी माता है और सरयू नदी मेरी बहिन है ॥ ५ ॥

चन्द्रमा और सूर्य ये मेरे दो भाई हैं और संसार का स्वामी भगवान ही मेरा पिता है।

सन्दर्भ—परदेस जाने वाले पति को रोकने के लिये स्त्री के द्वारा विविध बाधाओं के आने की प्रार्थना

(१२७)

बाव[1] बहेले पुरवइया, अलसी निनिया[2] अइली हो।
नीनी भइली बइरिनिया; पिया फिरि गइले हो ॥१॥
आवहु ए पियवा आवहु; मनवा मोरे राखहु।
भोरही होइहे बिहान; आरे हम पाछे पछितइबों ॥२॥
होइतो में बबुरा के काँटावा; पयेड़िया[3] नीचे रहितों।
हरी मोरे जइतें कचहरिया; चुभुकि साले गड़ितों ॥३॥
होइतों में बन के कोइलिया; बन ही बिरवे रहितों।
हरी मोरे जइतें बिदेसवा; सबद आरे सुनइतों ॥४॥
होइतों में फुलवरिया के फुलवा; फुलवरिया में रहितों।
हरी मोरे जइतें फुलवरिया; गमक[4] देत रहितों ॥५॥

---

[1]वायु। [2]नींद। [3]पैर। [4]सुगन्ध।

रहितों में जल के मछरिया; जलहि बिखे रहितों।
हरी मोरे जइतें आसानानावा[1]; चरन में लपटइतों ॥६॥
कारी बादरी डेरावन अवरु भाकासावन।
बरिसहु हरी का बिदेसवा, समुझि घरवाँ अइहें ॥७॥
हथिया के भीजेला असरिया; सुरहिया गाई के भाकर[2]।
भीजो बनजरवा के गोनिया[3]; समुझि घरवाँ अइहें ॥८॥
अर्थ स्पष्ट है।

सन्दर्भ—स्त्री का पति से परदेस जाने का कारण पूछना तथा चले जाने पर विलाप

(१२८)

मचिया बइठली ए सासु; सुनहु बचनीया।
राउर बेटा मोरँग चलले, कवना राम अवगुनिया[4] ॥१॥
भड़सल पइसली ए गोतिनी, सुनहु बचनिया।
राउर[5] देवरा मोरंग चलले; कवना राम अवगुनिया ॥२॥
सुपुली[6] खेलती ए ननदी; सुनहु बचनिया।
राउर भइया मोरंग चलले; कवना राम अवगुनिया ॥३॥
बेरी[7] की बेरी तोहि बरजों ए लोभिया; जनी जो तुहु मोरंगवा।
मोरंग पातर[8] पनिया; लगीहे रे करेजवा[9] ॥४॥
जाहु हम जनिती ए लोभिया; जइबे तुहु मोरंगवा।
घीची[10] बान्ही बन्हितो ए लोभिया; रेसम के डोरिया ॥५॥
रेसम के डोरिया ए लोभिया; टूटि फाटि राम जइहें।
बचन के बान्हल पियवा; कतहीना राम जइहें ॥६॥
घारावा रोवे घरनी ए लोभिया; बाहारवा राम हरिनिया[11]।
दाहावा रोवे चाका[12] चकइया बिछोहवा कइले निरवा[13] मोहिया ॥७॥

---

[1]स्नान। [2]गोशाला। [3]रस्सी या सामान। [4]अवगुण, दोष। [5]आपका। [6]छाज। [7]बार बार। [8]पतला। [9]कलेजा। [10]खींचकर। [11]हिरन। [12]चकवा। [13]निर्मोही, प्रेम तथा दयाहीन।

किसी स्त्री का पति परदेश जाना चाहता है। इस पर वह स्त्री अपनी सास से पूछती है कि "मचिया पर बैठी हुई ऐ सास मेरी बात को सुनो। मेरे किस अवगुण के कारण आपका लड़का मोरंग देश जारहा है" ॥ १ ॥

ऐ घर में बैठी हुई दायादिन मेरे किस अवगुण के कारण तुम्हारा देवर मोरंग देश जा रहा है ॥ २ ॥

ऐ सुपली से खेलनेवाली ननद मेरे वचन को सुनो। यह बताओ कि मेरे किस दोष के कारण तुम्हारा भाई परदेश जा रहा है ॥ ३ ॥

पति के परदेश चले जाने पर वह स्त्री आप ही आप कह रही है कि ऐ लोभी! तुम्हें बार-बार मना किया था कि तुम मोरंग देश को मत जाओ। मोरंग देश का पानी बहुत पतला लगता है और कलेजे में लग जाता है ॥४॥

ऐ लोभी! यदि मैं जानती कि मोरँग देश को बार-बार मना करने पर भी चले जाओगे तो मैं रेशम की डोरी से खींच कर, बाँध करके तुम्हें रखती ॥ ५ ॥

कुछ सोचकर फिर वह स्त्री कहती है कि रेशम की डोरी तो टूट जायेगी। मैं तुम्हें वचन की डोरी से बाँधकर रखती जिससे तुम कहीं नहीं जाते ॥ ६ ॥

ऐ लोभी! तुम्हारे वियोग के कारण घर में तुम्हारी स्त्री रो रही है; घर के बाहर पाली-पोसी हरिनें रो रही हैं; तालाब में चकवा और चकई रो रही है क्योंकि ऐ निर्मोही तुमने इन सबसे अपना विछोह कर लिया है ॥ ७ ॥

इस गीत में पति के वियोग से उत्पन्न विरह का जो वर्णन किया गया है वह अत्यन्त ही मर्मस्पर्शी है। इस वियोग के कारण उस पति की केवल प्राण-प्रिया स्त्री ही नहीं बल्कि पशु-पक्षी भी विलाप कर रहे हैं। देहाती ग्राम्य गीतों में इस प्रकार की कल्पना अत्यन्त चमत्कार कारिणी है महाकवि कालिदास ने 'अभिज्ञान शाकुन्तल' में शकुन्तला के पतिगृह जाने के समय उसके वियोग के कारण पशु-पक्षियों के द्वारा इसी प्रकार का विलाप कराया है। परन्तु इसमें इतनी विशेषता है कि यहाँ जड़ प्रकृति भी रो रही है। आप कहते हैं :—

"उद्गलितदर्भकवलामृग्यः, परित्यक्तनर्तना मयूराः।
अपसृतपाण्डुपत्रा, मुञ्चन्त्यश्रणीव लताः ॥"

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस गीत में विरही पत्नी के साथ ही प्रकृति तथा पशु पक्षी भी रो रहे हैं।

सन्दर्भ—परदेश स्थित पति को पत्नी का सन्देश भेजना, पुनः पति का उत्तर

(१२६)

पियवा चलेले परदेश मंदिल[1] मोरे चुइ[2] रही।
ऊधो हो तू सनेसिया[3]; सनेस[4] लेले जइह;
हरी जी से कहिह समुझाई; मंदिल मोरे चुइ रही ॥ १ ॥
ऊधो हो तू सनेसिया; सनेस लेले जइह।
धनिया से कहिह समुझाई; हम घरे नाहीं आइबि ॥ २ ॥
इहवें[5] भइल मंदिल छवइबों[6]; हम घरे नाहीं आइबि ॥ ३ ॥
ऊधो हो तू सनेसिया; सनेस लेले जइह।
हरी जी से कहिह समुझाई; नउजी[7] रउरा[8] आइबि ॥ ४ ॥
पाकल[9] फाराठा[10] कटाइबि; गाड़ी लदवाइबि।
रचि रचि मंदिल छवाइबि; नउजी रउरा आइबि ॥ ५ ॥
दस ही मासे मोहन जी होइहे; त गोदिया खेलाइबि।
आपना मोहन के धिरजा बँधाइबि; नउजी रउरा आइबि ॥ ६ ॥
चनन काठ कटाइबि; पीढ़ई[11]गाहाइबि[12]।
ताहि पर मोहन झुलाइबि; नउजी रउरा आइबि ॥ ७ ॥

किसी स्त्री का पति परदेश जा रहा है उस समय वह स्त्री कह रही है कि "मेरा पति परदेश चला और मेरा घर चू रहा है। ऐ सन्देश वाहक ऊधो जी! मेरा यह सन्देश तुम ले जाओ और मेरे पति से कहना कि तुम्हारी स्त्री का घर चू रहा है ॥ १ ॥

---

[1]घर। [2]चू रहा है। [3]सन्देश-वाहक। [4]सन्देश। [5]यहाँ से ही। [6]मरम्मत कराऊँगा। [7]मत (निषेध)। [8]आप। [9]पक्का। [10]बाँस। [11]पीढ़ा। [12]बनवाऊँगी।

ऊधो जी सन्देश ले गये और उस पति से जाकर सारा वृत्तान्त कहा। इस पर वह कहता है 'ऐ ऊधो ! तुम मेरे इस सन्देश को ले जाना और मेरी स्त्री से कह देना कि मैं घर कदापि नहीं आ सकता परन्तु मैं यहीं से उस चूते हुए घर की मरम्मत करा दूँगा ॥ २ । ३ ॥

इस पर उस स्त्री ने उत्तर दिया कि ऐ ऊधो ! तुम पति से मेरा यह सन्देश कह देना कि तुम मत आओ। हमें इसकी कोई चिन्ता नहीं है ॥ ४ ॥

मैं पके हुए बांस कटाऊँगी, उसको गाड़ी पर लदवाऊँगी और घर पर लाकर उससे अपना घर छवाऊँगी (मरम्मत कराऊँगी) ॥ ५ ॥

दस ही महीने के अन्दर जब मुझे पुत्र पैदा होगा तब मैं उसे गोदी में खेलाऊँगी तथा अपने पुत्र को लेकर हृदय में धैर्य धारण करूँगी। तुम भले ही मत आओ ॥ ६ ॥

मैं चन्दन की लकड़ी कटाऊँगी; उसका पीढ़ा बनाऊँगी और उसके ऊपर अपने लड़के को लेकर झुलाऊँगी। तुम भले ही मत आओ ॥ ७ ॥

यहाँ पर इस स्त्री की क्रिया-शीलता तथा सन्तोष का भाव देखने योग्य है। यदि भारत की नारियाँ ऐसी ही क्रिया शील बन जायँ तो उनका उद्धार होना अवश्यंभावी है।

सन्दर्भ—विरह-विधुरा स्त्री के वियोग का वर्णन

(१३०)

आमावा मोजरि[१] गइले; महुवा[२] टपकले निरवामोहिया।
निपटे भइले निरवामोहिया; रे लोभिया निरवामोहिया ॥ १ ॥
मोरा पिछुवारा रे भीमला[३]; मलहवा[४], निरवामोहिया।
एक ही चिठिया लिखि देहु; रे निरवामोहिया ॥ २ ॥
कथी[५] के करबो रे कारावा कागदवा[६]; निरवामोहिया।
कथी के करबो मसीहनवा[७]; निरवामोहिया ॥ ३ ॥

---

[१]मौल आने लगी। [२]एक वृक्ष। [३]नाम विशेष। [४]केवट। [५]किस चीज़ का। [६]कागज। [७]स्याही।

आँचर[1] फारि चीरि कारावा; रे कागादवा निरवामोहिया।
नयन कजरवा[2] मसीहनिया; करबो निरवामोहिया ॥ ४ ॥
ए लोभी कहिया घरवा तें अइबे; दूरि रे नोकरिया निरवामोहिया।
आस-पास लिखिहे रे सनेसवा[3]; निरवामोहिया।
बीचे ठहियाँ बरहो बियोगवा; निरवामोहिया ॥ ५ ॥
तोहारा बलमुवा[4] ना चीन्हलों[5], जनलों निरवामोहिया।
कइसे[6] कहबि समुझाई, निरवामोहिया ॥ ६ ॥
हमरा बलमुवा के बड़ि बड़ि अँखियाँ निरवामोहिया।
हाथे में धरेले गुरदेलिया[7]; निरवामोहिया ॥ ७ ॥
अस चले जस बाबू रे, जमीदरवा निरवामोहिया।
आधा ही चिठी[8] बचलनि; मानावा मुसुकाई निरवामोहिया ॥ ८ ॥
बाट[9] बटोहिया रे सारावा; मोर आरे लगबे तें सारावा।
हमरो सनेस लिहले जइहे; धनी से कहिहे समुझाई ॥
आरे दोसरो खसम[10] कइरे घालू; धनिया! निरवामोहिया ॥ ९ ॥
तोहरा ही धनिया के चिन्हलों, ना जनलों निरवामोहिया।
हामारा ही धनिया के लामी लामी; केसवा निरवामोहिया ॥ १० ॥
बटिया चलेले अंग लाई; निरवामोहिया ॥ ११ ॥
दोसरो खसम करो माई रे बहिनियाँ; निरवामोहिया।
तोरा अइसन[11] राखों देवढ़ीदार[12]; निरवामोहिया ॥ १२ ॥

किसी स्त्री का पति परदेश चला गया है। वह उसके वियोग में पीड़ित होकर कह रही है कि ऐ निर्मोही मेरे पति! आम में मौल (मञ्जरी) आने लगी। महुवे का वृक्ष अपना फल पृथ्वी पर गिराने लगा अर्थात् वसन्त ऋतु आ पहुँचा। परन्तु तुम इतने निर्दयी हो कि अभी तक नहीं आये ॥१॥

[1]आँचल। [2]काजल। [3]सन्देश। [4]प्रियतम। [5]पहिचानना। [6]कैसे। [7]धनुही (जिससे बन्दर आदि मारे जाते हैं)। [8]पत्र। [9]रास्ता। [10]पति। [11]तुम्हारे ऐसा। [12]पहरेदार।

मेरे मकान के पीछे रहने वाले ऐ भीमल नाम के केवट! तुम एक चिट्ठी मेरे पति के पास लिख दो ॥ २ ॥

इस पर वह केवट उत्तर देता है कि मैं किस चीज़ का कागज़ बनाऊँ तथा किस चीज़ की स्याही? तब स्त्री कहती है कि मेरा आँचर फाड़कर कागज़ बनेगा और मेरे काजल की स्याही होगी ॥ ३ । ४ ॥

स्त्री फिर कहती है कि ऐ केवट! तुम पत्र के कोने में यह लिखना कि "ऐ निर्मोही! तुम्हारी नौकरी बहुत दूर है। अतः यह बतलाओ कि तुम कब घर आओगे? और उस पत्र के बीच में मेरे विरह की कहानी लिखना" ॥५॥

इस पर वह केवट कहता कि ऐ स्त्री तुम्हारे पति को न तो मैं जानता हूँ और न पहिचानता ही हूँ। अतएव यह सब बातें मैं उनको समझा करके कैसे कहूँगा (क्योंकि मैं उन्हें बिल्कुल ही नहीं पहिचानता) ॥ ६ ॥

इस पर वह स्त्री अपने पति की हुलिया बतलाती हुई कहती है कि "हमारे पति की आँखें बड़ी-बड़ी हैं। और वह अपने हाथ में गुरदेलि (धनुही) धारण करता है ॥ ७ ॥

वह इस प्रकार से गम्भीर भाव-भंगी से चलता है मानो कोई धनी जमींदार चलता हो ॥ ८ ॥

केवट उस चिट्ठी को लेकर उस पति के पास पहुँचा और उस पत्र को उसे पढ़ने को दिया। पति पत्र को आधा ही पढ़कर मन में मुसकराया और कहा कि बाट (रास्ते) में जाने वाले पथिक! तुम मेरे साले लगोगे। अतएव हमारे इस सन्देश को लेते जाओ और मेरी स्त्री को समझा करके कह देना कि वह अपने लिये दूसरा पति कर ले या ढूँढ़ ले (क्योंकि मैं अब नहीं लौटूँगा) ॥ ९ ॥

इस पर पथिक ने कहा कि मैं तुम्हारी स्त्री को न तो जानता हूँ और न पहिचानता हूँ। तब पति ने उस बटोही से कहा कि मेरी स्त्री के बाल लम्बे-लम्बे हैं और वह रास्ते में अपने अङ्गों को समेट कर चलती है ॥ १० । ११ ॥

बटोही ने आकर उस स्त्री से पति का सन्देश सुना दिया। इस पर पतिव्रता तथा स्वाभिमानीनि वह स्त्री बहुत ही क्रुद्ध हुई और अपने पति को सम्बोधित

कर कहने लगी कि तुम्हारी माँ और बहिन दूसरा पति कर लें (पतिव्रता होने के कारण मैं नहीं कर सकती) । ऐ पति ! तेरे ऐसे आदमी को तो मैं अपने यहाँ ड्योढ़ीवान या पहरेदार रख सकती हूँ ।। १२ ।।

इस गीत में एक निर्दयी तथा निर्मोही पति का बड़ा ही सुन्दर ख़ाका खींचा गया है । वह दुष्ट पति परदेश जाकर अपनी विरह-विधुरा पति-परायणा स्त्री की तनिक भी सुधि नहीं लेता । इसके ठीक विपरीत पत्नी के सन्देश भेजने पर दूसरा खसम कर लेने के लिये उपदेश देता है । ऐसे नीच, पापी तथा दुष्ट पतियों की जितनी भी निन्दा की जाय थोड़ी है । परन्तु उसकी स्त्री भी स्वाभिमानीनि है । वह पति के सन्देश को सुन कर यदि गाली की वर्षा न करती तो स्वाभिमान में बट्टा अवश्य लगता । धन्य हैं ऐसी स्त्रियाँ ।

सन्दर्भ—विरह-विधुरा नायिका के विषम वियोग का वर्णन

(१३१)

ए राम जेहि बने सिकियो[1] ना डोलेला ।
बघवो ना गुरजेला[2] ए राम ।।१।।
ए राम ताहि बने हरी मोरे गइलें ।
त केहु ना सनेसिहा[3] नु ए राम ।।२।।
ए राम मचिया बइठलि तुहुँ आमा ।
त अवरु से आमा मोरी ए राम ।।३।।
ए राम विपतलि[4] धियवा[5] रे सँगेरू[6] ।
त विपते गवने अइलों ए राम ।।४।।
ए राम पासावा खेलत तुहुँ भइया ।
त अवरु से भइया मोरे ए राम ।।५।।
ए राम वीपतलि बहिना रे सँगेरू ।
त विपते गवने अइलों ए राम ।।६।।

---

[1]पत्ता । [2]दहाड़ता है । [3]सन्देश-वाहक । [4]विपत्ति से युक्त । [5]पुत्री । [6]रक्षा करो (पालो) ।

ए राम भड़सर[1] पइसलि[2] तुहुँ भऊजी[3]।
त अवरु से भऊजी मोरी ए राम ॥७॥

ए राम बीपतलि ननदी रे सँगेरू।
त विपते गवने अइलों ए राम ॥८॥

ए राम सम्पति रहिते त बँटितीं[4]।
विपति कइसे बाँटबि ए राम ॥९॥

त राम मीलहु सखिया रे सलेहरि।
अवरु सनेहरि[5] ए राम ॥१०॥

ए राम चलहु जमुना के तिरवा।
आसानानावा[6] करबों ए राम ॥११॥

ए राम बन में से नीकलु[7] रे बघिनिया।
त मोहि भछि[8] घालहु ए राम ॥१२॥

ए राम अतने में भाँवारा सरीखे प्रभु अइले।
त अब दिनवा लवटल[9] ए राम ॥१३॥

किसी स्त्री का पति परदेश चला गया है। उसके वियोग में दुःखी होकर वह स्त्री कह रही है कि मेरा पति उस बन में चला गया है जहाँ पर एक पत्ता भी नहीं हिलता और न सिंह ही दहाड़ मारता है ॥ १ ॥

उसी बन में मेरा पति गया है परन्तु उसके पास मेरा सन्देश ले जाने वाला कोई नहीं है ॥ २ ॥

वह स्त्री कहती है कि ऐ मचिया पर बैठी हुई मेरी माता ! तुम विपत्ति की मारी हुई अपनी लड़की की रक्षा करो। मैं अपनी विपत्ति के कारण गवना होने के बाद ही चली आई हूँ ॥ ३ । ४ ॥

ऐ पासा खेलते हुए मेरे भाई ! मैं विपत्ति की मारी हुई हूँ अतः ऐसी बहिन की रक्षा करो ॥ ५ । ६ ॥

---

[1]घर। [2]घुसी हुई। [3]भावज। [4]बाँट लेती। [5]स्नेह करने वाली। [6]स्नान। [7]निकलो (बाहर आओ)। [8]भक्षण कर डालो। [9]दिन बदल गये।

ऐ घर में घुसी हुई मेरी भावज ! मैं विपत्ति की मारी हुई तुम्हारी ननद हूँ। अतः ऐसी विपत्तिग्रस्त ननद की रक्षा करो ॥ ७ । ८ ॥

अपनी पुत्री की इस करुणा-जनक वाणी को सुन कर उसकी माता कहती है कि ऐ पुत्री ! यदि सम्पत्ति (धन) होती तो मैं बाँट सकती थी परन्तु विपत्ति कैसे बाँट सकती हूँ ॥ ६ ॥

इस पर दुःखी होकर संभवतः आत्महत्या की इच्छा से उस लड़की ने अपनी सखियो से कहा कि ऐ सखियो और मुझ से प्रेम करने वाली जमुना के किनारे मेरे साथ स्नान करने के लिये चलो ॥ १० । ११ ॥

स्नान करने के लिये जाते समय वह रास्ते में कह रही है कि बाघ ! जंगल में से निकलो और खा डालो (जिससे मैं पति के विरह-दुःख से मुक्त हो जाऊँ) ॥ १२ ॥

इतने में भँवरा के समान उस स्त्री का पति चला आया और उस विरही स्त्री के दिन लौट आये अर्थात् उसके अच्छे दिन लौट आये ॥ १३ ॥

इस गीत के प्रत्येक पद से करुणरस टपक रहा है । स्त्री का दुःख पाषाण-हृदय को भी पिघलाने में समर्थ है ।

सन्दर्भ—पत्नी का सन्देश पाकर पति का परदेश से आना परन्तु स्त्री की सुखी दशा देखकर पुनः लौट जाना

(१३२)

तुहु त जइब ए वएकल[1]; देस परदेसवा ए राम ।
हामारा के काहि सँउपी[2] जइब; एकेलवा ए राम ॥१॥
ससुरा में सँउपबि माई बापवा; राजावा नु ए राम ।
नइहर सहोदर जेठ भइया; पियरवा[3] नु ए राम ॥२॥

× × × ×
× × × ×

---

[1]पति । [2]सौंपना । [3]प्यारा ।

कत धनि लिखेली बियोगवा, एकेलवा ए राम ।
देहु ना राजावा रे हमरी, तुलबिया[1] ए राम ॥३॥
मोरी धनि अलप[2] बयसवा, एकेलवा ए राम ।
बरहो बरिस पर घरवा; एकेलवा ए राम ॥४॥
बर तर ढारे जीरवा गोनिया[3]; एकेलवा ए राम ।
उहवाँ से उठवले बएकल; सेज पर ढरले ए राम ॥५॥
कवन कवन दुःख तोरा; ए सँवरिया ए राम ।
से दुःख कह समुझाई; ए सँवरिया ए राम ॥६॥
ससुर मोरा हउरे[4] ईसर; माहादेव नु ए राम ।
सासु मोरी गंगा के गंगाजल; बाड़ी[5] नु ए राम ॥७॥
भसुर मोरे हउरे घिवही[6]; लड्डुइया[7] ए राम ।
गोतिनि[8] मोरि मुँहवा; नीहारे[9] ए राम ॥८॥
आताना[10] ही सुख तोरा बाड़े; ए सँवरिया ए राम ।
लगली नोकरिया काहे छोड़वलू, ए सँवरिया ए राम ॥९॥
टेढ़ी पगरिया जब बन्हलसि[11]; बएकलवा ए राम ।
उलटि के नयनवा नाहिं चितवेला[12]; बएकलवा ए राम ॥१०॥

किसी स्त्री का पति परदेश जाने के लिये उद्यत है। ऐसे समय में वह स्त्री अपने पति से पूछ रही है कि ऐ मेरे प्यारे पति! तुम तो परदेश चले जा रहे हो। यह तो बताओ कि मुझ अकेली को तुम किसके पास सौंप कर जाओगे ॥ १ ॥

इस पर पति ने उत्तर दिया कि मैं तुम्हारी ससुराल में अपने माँ, बाप के यहाँ तुम्हें सौंप जाऊँगा और तुम्हारे मायके में तुम्हारे प्यारे भाई के पास सौंप जाऊँगा ॥ २ ॥

---

[1]तलब, मासिक वेतन। [2]अल्प, थोड़ी। [3]डेरा डण्डा। [4]है। [5]है। [6]घी का बना हुआ। [7]लड्डू। [8]दायादिनि। [9]देखती है। [10]इतना। [11]बाँध लिया। [12]देखता है।

[पति के परदेश चले जाने पर वियोग-विधुरा उस स्त्री ने एक केवट से अपना सन्देश भेजा। उस सन्देश को पढ़कर पति मुसकराया और अपने नियोक्ता स्वामी से कहता है—]

हमारी स्त्री ने अपने वियोग का सन्देश भेजा है अतः ऐ राजा! (मेरे स्वामी) मेरा मासिक वेतन दे दो जिससे मैं अपने घर जा सकूँ ॥ ३ ॥

मेरी स्त्री की अल्पावस्था है और वह अकेली है। आज मैं बारह वर्ष के बाद घर लौट रहा हूँ ॥ ४ ॥

जब पति परदेश से लौटकर आ गया तब उसकी स्त्री कहती है कि मेरे पति ने वट वृक्ष के नीचे अपना डेरा डाला है। वहाँ से उठकर वह मेरी सेज पर आ गया ॥५

जब पति की स्त्री से मुलाकात हुई तब उससे पूछा कि ऐ साँवली! तुम्हें कौन कौन सा दुःख है उसे समझा कर स्पष्ट कहो ॥ ६ ॥

तब स्त्री ने उत्तर दिया कि मेरा ससुर ईश्वर तथा महादेव के समान पूजनीय है और मेरी सास गंगाजल के समान शुद्ध तथा पवित्र है ॥ ७ ॥

मेरा भसुर घी के लड्डू के समान मृदुभाषी है और मेरी दायादिनि सदा मेरा मुख देखा करती है ॥ ८ ॥

इस पर पति ने उत्तर दिया कि ऐ स्त्री जब तुम्हें इतना सुख था तब तूने मेरी लगी हुई नौकरी क्यों छुड़ा दिया ॥ ९ ॥

इतना कह कर पति परदेश चलने के लिए तैयार हो गया। उसने अपनी टेढ़ी पगड़ी बाँध ली और जब वह चलने लगा तब फिर उसने लौटकर भी नहीं देखा (और परदेश चला गया) ॥ १० ॥

सन्दर्भ—पति के परदेश जाने पर उसकी स्त्री से किसी कामुक का प्रेम-प्रस्ताव; परन्तु स्त्री द्वारा उसकी अस्वीकृति

(१३३)

पीयवा चलेला परदेस, सरब[1] सुख ले ले गयो।
छतिया पर बजर[2] केवाड़; ताला कुञ्जी भरि के गयो ॥१॥

---

[1]सर्व, सब। [2]वज्र।

तेल फुलेला न लगाइवि; लट[१] छुटकाइवि ।
हम ऐसी धनिया अभागिनि; अकेली छोड़ी गयो ॥२॥
गंगा यमुन बीच रेतवा[२]; तेकर[३] बीच बाग लगी ।
ताहि तर सुनरी भइली ठाढ़; नयन दुनो नीर ढरी ॥३॥
घोड़वा चड़ल एक चेलिक[४]; काहे सुनरी नीर ढरी ।
केकर[५] जोहेलु[६] बाट; नयन दुनो नीर ढरी ॥४॥
तोहरे अइसन पातर पियवा हो; परदेसे गयो ।
उनकेरे[७] जोहिले बाट; नयन दुनो नीर ढरी ॥५॥
लेहु ना सुनरी डाल भरि सोनवा; मोती माँग भरी ।
छोड़ि देहु अइसन बउराह[८]; लगहु मोरा साथे हरी ॥६॥
आगी लगइबों तोरा डाल भरि सोना; मोती जरि जाहु ।
लवटीहें[९] उहे[१०] बउराह, लुटइबों तोरी बरधी[११] धनी ॥७॥

मेरा पति परदेश चला गया और अपने साथ मेरा सब सुख लेता गया। वह अपनी छाती पर वज्र का किवाड़ लगा कर और उसमें ताला लगा कर गया है अर्थात् उसका हृदय वज्र के समान कठोर हो गया है ॥ १ ॥

मैं तेल तथा सुगन्धित द्रव्य अब अपने बालों में नहीं लगाऊँगी तथा जटा धारण करूँगी। मेरा पति मुझ जैसी अभागिनी स्त्री को अकेली छोड़कर परदेश चला गया ॥ २ ॥

गंगा और यमुना के बीच में रेती पर एक बगीचा लगा हुआ है। उसी बगीचे के नीचे वह स्त्री खड़ी है और उसकी दोनों आँखों से आँसुओं की झड़ी लगी हुई है ॥ ३ ॥

इतने ही में वहाँ एक नौजवान आदमी आया जो घोड़े पर चढ़ा हुआ था। उसने उस स्त्री से पूछा कि ऐ स्त्री तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों गिर रहे हैं। तुम किसका रास्ता यहाँ खड़ी हुई देख रही हो ॥ ४ ॥

---

[१]जटा। [२]बालू। [३]उसके। [४]युवा। [५]किसकी। [६]खोजती हो। [७]उनका। [८]पागल, कमअक्ल। [९]लौटेगा [१०]वही। [११]सामान, माल, असबाब।

तब उस स्त्री ने उत्तर दिया कि मेरा पति तुम्हारे ही समान पतले शरीर वाला है। वह परदेश चला गया है। मैं उन्हीं की बाट देख रही हूँ। इसीसे मेरी आँखों से आँसू गिर रहे हैं॥ ५॥

इस पर उस युवक ने कहा कि ऐ स्त्री! डाल (छबड़ी) भर कर मुझसे सोना ले लो और मोती से अपनी माँग भरा लो। उस पागल का साथ छोड़ कर मेरे साथ चलो॥ ६॥

तब क्रोध में आकर उस पतिव्रता स्त्री ने कहा कि मैं तेरे सोने में आग लगा दूँगी और मोती को जला दूँगी। यदि वह पागल मेरा पति लौट कर चला आये तो मैं तेरे सारे सामान को लुटवा लूँगी॥ ७॥

सन्दर्भ—पत्नी की छोटी बात से क्रुद्ध हो पति का विरक्त हो जाना; अतः सास एवं ननद के द्वारा बधू को दण्ड

(१३४)

चोलिया के कसे मसे, सुतलों आँगानवा हो राम।
पातर पियवा सुतेला[1] पीठिये लागिहो राम॥ १॥
आगे सुतु ओलरु[2] ससुर जी के धियवा हो राम।
बाबा के दीहल चोलिया पसेनवा[3] भीजे हो राम॥ २॥
आताना[4] वचन प्राभु सुनहीना पवले हो राम।
धनिया का बतिये सधुइया भइले हो राम॥ ३॥
अबटन[5] लाई लाई सासु के जगवलों हो राम।
राउर बेटा होई गइलें फकीरवा हो राम॥ ४॥
तेलवा लाई लाई गोतिनी जगवलों हो राम।
राउर देवर भइलें बउराहावा[6] हो राम॥ ५॥
चीऊँटी ही काटि काटि, ननदी जगवलों हो राम।
राउर भइया भइलें, फकीरवा हो राम॥ ६॥

---

[1]सोता है। [2]पास मिल कर। [3]पसीना। [4]इतना। [5]उबटन। [6]पागल।

सासु धरे अट्ठुका, बहिनियाँ धरे पट्ठुका हो राम।
हम धनी ठाढ़ी बानी, डुडुहिये हो राम ॥ ७ ॥
छोड़ु मइया अट्ठुका हो; छोड़ु बहिना पट्ठुका हो राम।
धनिया के बोलिये; सधुइया होइबों हो राम ।, ८ ॥
सासु मारे हुट्ठुका, ननदिया पारे गारी हो राम।
गोतिनी बिरह बोलिया, सहलो ना जाला हो राम ॥ ९ ॥

कोई स्त्री कह रही है कि मैं अपनी चोली को अच्छी तरह से कस कर, आँगन में सोई थी। मेरा पतला पति मेरी पीठ से लग कर सोया हुआ था ॥१॥

मेरे पति ने कहा कि "ऐ मेरे ससुर की लड़की (मेरी स्त्री) मेरे पास और सट करके सोओ।" जब मैंने ऐसा किया तब मैंने कहा कि मेरे पिता के द्वारा दी गई मेरी चोली पसीने से भींग रही है ॥ २ ॥

मेरे इतने वचन को मेरे पति ने ठीक तरह से सुना भी नहीं कि वे (ग़ुस्से में आकर) साधु होने चले ॥ ३ ॥

मैंने उबटन लगा-लगा कर अपनी सासु को जगाकर उनसे कहा कि तुम्हारा लड़का साधु होने जा रहा है ॥ ४ ॥

मैंने तेल लगा कर अपनी भावज को जगाया और उनसे कहा कि आपका देवर पागल हो गया है ॥ ५ ॥

मैंने अपनी ननद को चिकोटी काट कर जगाया और उनसे कहा कि आपका भाई फकीर बनने जा रहा है ॥ ६ ॥

इस बात को सुनकर मेरी सास ने अपने पुत्र का अंग (हाथ) पकड़ा और बहिन ने उसका कपड़ा पकड़ लिया। परन्तु मैं घर में खड़ी थी ॥ ७ ॥

तब मेरे पति ने अपनी माँ से कहा कि "ऐ माता तुम मेरा हाथ छोड़ दो तथा ऐ बहिन मेरा कपड़ा छोड़ दो। मैं अपनी स्त्री के कठोर वचन के कारण साधु हो जाऊँगा ॥ ८ ॥

मेरे पति के इस वचन को सुन कर मेरी सास ने मुझे थप्पड़ तथा मुक्का मारना शुरू किया और ननद गाली देने लगी। परन्तु सबसे अधिक भावज के विरह-द्वेष पूर्ण वचन असह्य थे क्योंकि वे सहे नहीं जाते थे ॥ ९ ॥

सन्दर्भ—वन्ध्या स्त्री की मनोवेदना, बन्ध्यत्व छूटने के उपाय का वर्णन

(१३५)

ऐ राम देसवा वाखानों[1] तिरहुतिया; त वेतवा[2] के छाजनि ऐ राम।
ऐ राम पियवा बांखानों आपन पियवा; जाँतावा रे वेसाही[3] देला ऐ राम ॥१
ऐ राम जाँतावा रे गाड़े गाजा[4] ओवरी; एकउना वयेरिया[5] बहे ए राम।
ऐ राम घर में से नीकलेले तीरीयावा; बिरिछि[6] तरे ठाढ़ भइली ऐ राम ॥२
ऐ राम घोड़वा चढ़ल लहुरा[7] देवर; काहे भउजी बेदिल[8] ऐ राम।
ऐ वबुआ राउर भइया वोलेलें रे विरहिया; त एकउरे बालक बिनु ऐ राम ॥३
भउजी काचही वँसवा[9] कटइह; वीनइह[10] डागाडालावा[11] ऐ राम।
ऐ भउजी ओहु में भरइह तीली चाउर; अदीत[12] मानाइ लेहु ऐ राम ॥४
ऐ राम ए वेरिया[13] अदीत रे मनवली त; बबुआ के आसावा नु ऐ राम।
ऐ राम दुइ वेरिया अदीत रे मनवली त; वबुआ अवतार लिहले ऐ राम ॥५
ऐ राम तीनि वेरिया अदीत रे मनवली त; भुइया[14] बालक रोवे ऐ राम।
ऐ राम जुगजुग[15] जीओ लहुरा देवर; जिन्हीं[16] हमें उपदेसवा देले
ऐ राम ॥ ६ ॥

कोई स्त्री कहती है कि तिरहुत (विहार) देश बड़ा ही अच्छा है। यहाँ वेंत की छाजन तैयार होती है। हमारा पति बहुत अच्छा है। उसने मेरे लिये जाँत खरीद दिया है ॥ १ ॥

मैंने अपना जाँत अँधेरे कमरे में गाड़ रक्खा है जहाँ पर जरा भी हवा नहीं आती।

इस स्त्री को लड़का नहीं हो रहा था अतः उसके पति ने कुछ इस पर बुरा

---

[1]प्रशंसा करती हूँ। [2]वेंत। [3]खरीदना। [4]घने अँधेरे में। [5]हवा। [6]वृक्ष। [7]छोटा। [8]व्याकुल, उदासीन। [9]बाँस। [10]तैयार करना। [11]दौरी या छबड़ी। [12]सूर्य। [13]वार। [14]ज़मीन। [15]युग (बहुत दिन)। [16]जिसने।

भला कहा। अतएव वह स्त्री घर में से निकल गई और वृक्ष के नीचे जाकर खड़ी हो गई ॥ २ ॥

रास्ते में घोड़े पर चढ़ा हुआ उस स्त्री का देवर मिल गया। उसने पूछा कि ऐ भावज तू उदासीन क्यों है। इस पर भावज ने उत्तर दिया कि ऐ देवर! तुम्हारा भाई मेरी गोदी में लड़का न होने के कारण बड़े कठोर वचन कहता है ॥ ३ ॥

इस पर देवर ने कहा कि ऐ भावज! कच्चा बाँस कटाना और उसकी एक दौरी बनाना; उसमें तिल और चावल भराना और सूर्य की प्रार्थना करना ॥ ४ ॥

एक बार मैंने सूर्य की प्रार्थना की, उन्हें मनाया तो लड़का होने की आशा हुई। दूसरी बार जब सूर्य की प्रार्थना की तो लड़का गर्भ में आया ॥ ५ ॥

तीसरी बार जब मैंने सूर्य की प्रार्थना की तो लड़का जमीन पर आकर रोने लगा अर्थात् लड़का पैदा हुआ। मेरा छोटा देवर चिरायु हो जिसने हमें ऐसा उपदेश दिया (जिससे मुझे पुत्र पैदा हुआ) ॥ ६ ॥

इस गीत में पुत्रहीन स्त्री की जो दुर्दशा होती है उसकी सुन्दर झाँकी मिलती है। आजकल भी देहातों में अनेक निर्दयी पुरुष अपनी सती-साध्वी स्त्री को पुत्र-हीन होने के कारण छोड़कर दूसरा विवाह कर लेते हैं।

सन्दर्भ—बहिन तथा भाई के आदर्श प्रेम का वर्णन

(१३६)

केकरे करनवे[1] ए गोपीचन्द, हाथ लेल तुमवा[2]।
केकरे करनवे हाथ सोटा[3] हो राम ॥१॥
तोहरे पर लिहलीं ए आमा, हाथ केर तुमवा।
कुकुरा[4] मरनवे हाथ सोटा हो राम ॥२॥
पुरुब तु जइह ए गोपीचन्द, पच्छिम जइह।
बहिनी नगरिया जनी जइह हो राम ॥३॥

---

[1]कारण। [2]तुमड़ी। [3]डंडा। [4]कुत्ता।

पुरुव तेजबों ए माता, पच्छिम तेजबों।
बहिनी नगरिया ना हम तेजबों हो राम ॥४॥
भरि दीन गोपीचन्द, माँगी चहि अइले।
साँझि बेरिया बहिना कावारवा[1] ठाढ़े हो राम ॥५॥
कुछु देर रुकि के, गोपीचन्द बोलले।
हमें कुछु भोजन कारावहु हो राम ॥६॥
आँगन बहरती[2] चेरिया लउड़िया[3]।
जोगीया के भीछा[4] देहि घालहु[5] हो राम ॥७॥
तोहारा ही हाथावा ए बहिनी, भीछा नाहि लेबों।
आरे जिन्ही रे बोलेली, तिन्ही आवसु[6] हो राम ॥८॥
तर[7] कइली सोनवा, ऊपर तिल चाउर[8]।
जोगिया[9] के भीछा देवे चलली हो राम ॥९॥
तोहार[10] भीछवा ए बहिना, तोहरा के बाढ़सु[11]।
हमें कुछु भोजन करावहु हो राम ॥१०॥
गुरू भइया कीरिये[12] गोबरधन कीरिये।
घारावा ना सीझली[13] रसोइया[14] हो राम ॥११॥
गुरू भइया हमही, गोबरधन हमही।
झूठी किरियवा बहिना खालू[15] हो राम ॥१२॥
गुरू भइया तुहु ही गोबरधन तुहुही।
पिता, माता के नइया[16] बातालावहु[17] हो राम ॥१३॥
पिता के नामवा ए बहिना, होरिल सिंह राजवा।
माता के नामवा; मायेनवा हो राम ॥१४॥

---

[1]घर के पास। [2]झाड़ देती हुई। [3]लौंडी, दासी। [4]भिक्षा। [5]दे दो। [6]आवें। [7]नीचे। [8]चावल। [9]योगी। [10]तुम्हारा। [11]वृद्धि को प्राप्त करे। [12]शपथ। [13]पकाना। [14]भोजन। [15]खाती हो। [16]नाम। [17]बताओ।

आताना वचन बहिना; सुनही ना पवली[1] ।
सोने के थरीयवा[2] गोड़वा[3] धोवली हो राम ॥१५॥
आरावा चऊरवा अवरु[4] रहरी[5] के दलिया[6] ।
आमृत[7] भोजन करवली[8] हो राम ॥ १६ ॥

कोई माता अपने पुत्र से कह रही है कि ऐ मेरे पुत्र! गोपीचन्द! किस कारण से तुमने अपने हाथ में तुमड़ी लिया है और किस कारण से अपने हाथ में डण्डा लिया है ॥ १ ॥

इस पर उस लड़के ने उत्तर दिया कि ऐ माता! मैंने तुम्हारे ही कारण हाथ में तुमड़ी (कमण्डलु) लिया है और कुत्ता मारने के लिये डण्डा लिया है ॥ २ ॥

इस पर माता ने उत्तर दिया कि बेटा गोपीचन्द! तुम पूरब जाना, पश्चिम जाना लेकिन अपनी बहिन के गाँव में मत जाना ॥ ३ ॥

गोपीचन्द ने उत्तर दिया कि मैं पूरब जाना छोड़ दूँगा, पश्चिम जाना छोड़ दूँगा परन्तु अपनी बहिन के गाँव जाना नहीं छोड़ सकता ॥ ४ ॥

गोपीचन्द अपनी बहिन के गाँव गया। दिन भर वह गाँव में भिक्षा माँगता रहा और शाम को अपनी बहिन के घर के पास जाकर खड़ा हो गया ॥ ५ ॥

कुछ देर ठहर कर गोपीचन्द ने कहा हमें कुछ भोजन करा दो ॥ ६ ॥

यह सुनकर गोपीचन्द की बहिन ने कहा कि ऐ आँगन में झाड़ू देने वाली दासी! इस योगी को भिक्षा दे दो ॥ ७ ॥

इस पर गोपीचन्द ने उत्तर दिया कि ऐ बहन! (दासी) तुम्हारे हाथ से मैं भिक्षा नहीं लूँगा। जो स्त्री बोल रही है वही मेरे पास आवे ॥ ८ ॥

तब गोपीचन्द की बहिन नीचे सोना छिपा कर तथा ऊपर तिल और चावल लेकर उस योगी को भिक्षा देने के लिए चली ॥ ९ ॥

---

[1]पाया। [2]थाल-बर्तन। [3]पैर। [4]और। [5]अरहर। [6]दाल। [7]अमृत (स्वादिष्ट तथा मीठा)। [8]कराया।

अपनी बहिन को पास आया देखकर गोपीचन्द ने कहा कि ऐ बहन ! हमें कुछ भोजन करा दो ॥ १० ॥

बहन ने कहा कि गुरु तथा गोबरधन भाई की शपथ खाती हूँ। आज हमारे घर में रसोई नहीं बनी है ॥ ११ ॥

गोपीचन्द ने उत्तर दिया कि गुरु तथा गोबरधन भाई मैं ही हूँ। ऐ बहन ! तुम झूठा शपथ क्यों खा रही हो ॥ १२ ॥

तब बहिन ने कहा कि यदि गुरु और गोबरधन भाई तुम्हीं हो तो अपने पिता और माता का नाम बतलाओ ॥ १३ ॥

गोपीचन्द ने कहा कि मेरे पिता का नाम राजा होरिलसिंह तथा माता का नाम मायना है ॥ १४ ॥

गोपीचन्द के इस वचन को सुनते ही बहन ने पहिचान लिया कि यह मेरा भाई है और शीघ्र ही सोने का थाल पैर धोने के लिए लाई तथा पैर धोया ॥ १५ ॥

अपने भाई को भोजन कराने के लिए बहन ने अरवा चावल का भात तथा अरहर की दाल पकाया तथा उसे बहुत ही स्वादिष्ट तथा मीठा भोजन कराया ॥ १६ ॥

इस गीत में बहिन और भाई के प्रेम का जो आदर्श चित्र खींचा गया है वह निःसन्देह अनुकरणीय है। इस गये गुजरे जमाने में भाई का बहन के प्रति इतना उत्कट प्रेम नितान्त दुर्लभ है। यहाँ पर भाई के प्रेम की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी थोड़ी है।

सन्दर्भ—परदेस में गये पति को लाने के लिये स्त्री का अपने भानजे को भेजना

(१३७)

छोटे छोटे तुलसी के बड़े बड़े पातावा[1]।
चलली रुकमीनि[2] निनिया[3] सोवन रे की ॥ १ ॥

---

[1]पत्ता। [2]रुक्मिणी। [3]नींद।

मलवनी अबटन[१] रुकुमीनी कचोरवा[२] ।
तेलवा मलत बुनवा[३] टपकेला[४] रे की ॥ २ ॥
नाहीं देखो आहो ऐ रुकुमीनी, नाहीं देखो बाराखा[५] ।
कावाना[६] सरग[७] से बुनवा, टपकेला रे की ॥ ३ ॥
अपने त जइब ऐ हरीजी ओहि रे दुवरिका[८] ।
हामारा के काहि[९] सँउपी[१०] जइब नु रे की ॥ ४ ॥
छाई छुपी[११] जाइवि ऐ रुकमीनी, आरे चउखंड[१२] हवेलिया[१३] ।
राखी जइबों भागीरथ भायेनवा[१४] नु रे की ॥ ५ ॥
ढहि ढुही[१५] जइहें ए हरी जी; चारुखण्ड हवेलिया ।
भागी जइहें भागीरथ; भायेनवा नु रे की ॥ ६ ॥
पीसहु आवहु ऐ मामी, आरे जीरवा[१६] रे सतुइया[१७] ।
हम जइबों मामा के, लियावनु[१८] रे की ॥ ७ ॥
एक बने गइलों ऐ मयने, दुसर[१९] बने गइलों ।
तीसर बने मामा धुँइयाँ[२०], लावेले रे की ॥ ८ ॥
छोड़हु आहो ऐ मामा; वन केरि धुँइयाँ ।
मामी रोवेले छतिया; फाटेला रे की ॥ ९ ॥
ऊँचे रे झड़ोखवा[२१] चढ़ि; मामी नीरेखेली[२२] ।
जस देखो मामा भयने[२३]; आवेलें रे की ॥ १० ॥
अइसन भयने के गोड़वा धोइके पीयबों ।
उड़सलि[२४] सेजिया भयने मोर डसावेले[२५] रे की ॥ ११ ॥

---

[१]उबटन । [२]कटोरा । [३]बूँद । [४]टपकता है, गिरता है । [५]वर्षा । [६]किस, कौन । [७]आकाश । [८]द्वारिका । [९]किसको । [१०]सौंप जाओगे । [११]मरम्मत करके । [१२]चौखूँटा, चौकोर । [१३]घर । [१४]भगिना । [१५]नष्ट हो जायेगा । [१६]पतला, महीन । [१७]सत्तू । [१८]लिवा लाने के लिये । [१९]दूसरा । [२०]धूनी । [२१]खिड़की । [२२]देखती है । [२३]भानजा । [२४]बिस्तर हटा हुआ । [२५]बिछाया ।

घर में लगाये हुए एक तुलसी वृत्त के बड़े बड़े पत्ते थे। रुक्मिणी देवी सोने के लिये घर में चली गई ॥१॥

रुक्मिणी कटोरा में भर कर अपने पति को उबटन लगाने लगी। जब वह पति की देह में तेल मल रही थी तब उसकी आँखों में से आँसू गिरने लगे। (क्योंकि पति परदेश जाने वाला था) ॥२॥

पत्नी के गिरते हुए आँसू को देख पति ने पूछा कि ऐ रुक्मिणी! इस समय वर्षा भी नहीं है फिर किस कारण से किस आकाश से ये बूँदे गिर रही हैं ॥ ३ ॥

तब स्त्री ने उत्तर दिया कि ऐ पति! तुम तो द्वारका (अथवा परदेश) चले जाओगे परन्तु मुझ को किसे सौंप जाओगे ॥ ४ ॥

पति ने कहा कि ऐ स्त्री! मैं तुम्हारी चौकोर हवेली की मरम्मत करके जाऊँगा जिससे बरसात में न चूवे और अपने भागीरथी नामक भानजे को तुम्हारे पास रख जाऊँगा ॥ ५ ॥

स्त्री ने कहा कि ऐ पति! मेरी हवेली गिर कर नष्ट हो जायेगी और भानजा भी भाग जायेगा ॥ ६ ॥

पति के परदेश चले जाने के कारण स्त्री की दुर्दशा देखकर भानजा ने मामी से कहा कि ऐ मामी! तुम पतला सत्तू पीसो। मैं उसे लेकर मामा को लिवा लेने के लिये जाऊँगा ॥ ७ ॥

वह भानजा एक बन में गया, दूसरे बन में गया, तीसरे बन में उसने अपने मामा को धूनी रमाते हुए देखा ॥ ८ ॥

तब उसने अपने मामा से प्रार्थना की कि ऐ मामा! तुम बन की इस धूनी को छोड़ दो। मेरी मामी इतनी रो रही है कि उसे सुन कर छाती फटी जाती है ॥ ९ ॥

संभवतः पति आता होगा यह सोचकर वह स्त्री ऊँची खिड़की पर चढ़ कर देखने लगी कि शायद मामा और भानजा साथ साथ आते हों ॥ १० ॥

पति को आता देख स्त्री ने कहा कि ऐसे भानजे का पैर धोकर पी लेना चाहिये क्योंकि इसने मेरी बिस्तर रहित खाट को उससे मुक्त कर दिया अर्थात् पति को लिवा कर मुझे भोग विलास करने का अवसर प्रदान किया ॥ ११ ॥

सन्दर्भ—एक सती स्त्री के आदर्श-चरित्र का वर्णन

(१३८)

पनवा छेवड़ि छेवड़ि भजिया बनौलों।
लौंगन दिहलों धुँअरवा हू रे जी ॥ १ ॥
सठिया कूटि कूटि भतवा रिन्हौलों।
उपरा मुँगौआ केरि दलिया हू रे जी ॥ २ ॥
मचिया बइठलि तुँहुँ सासु बढ़ैतिन।
भसुरू जेंवना कैसे टारब हू रे जी ॥ ३ ॥
आठों अङ्ग मोरि, हे बहुआ नेतेवँ ओहारिह।
लुलुआ सरिखहे, जेंवना टारिह हू रे जी ॥ ४ ॥
जेंवहिं बइठल भसुरू बढ़ैता।
हेठ ले उपरवा निहारेले हू रे जी ॥ ५ ॥
किअ तोर भसुरू जेंवना बिगारली।
किअ नुनआ लौली बिसभोरे हू रे जी ॥ ६ ॥
नाहिं मोर भवही जेंवना बिगारलू।
नाहिं नुनआ लौलू बिसभोरे हू रे जी ॥ ७ ॥
होत भिनुसरा भसुरू डगवा दिअवले।
छोट बड़ चलसु अहेर खेले हू रे जी ॥ ८ ॥
सभ केहू मारेला हरिना सावजवा।
भसुरू मारेले आपन भइया हू रे जी ॥ ९ ॥
मचिया बइठलि तुँहुँ सासु बढ़ैतिन।
हमरि टिकुलिया भुँइयाँ गिरेला हू रे जी ॥ १० ॥

अइसनि बोलि जनि बोलू बहुरिया ।
मोर बसती गइल बाड़े अहेरिया खेले हू रे जी ॥११॥
सभ कर घोरवा औरत दौरत ।
बसती के घोरवा बिसमाधल हू रे जी ॥ १२ ॥
सभ कर तरवरिया झलकत झलकत ।
बसती तरवरिया रकतें बूड़ल हू रे जी ॥ १३ ॥
घरी राति गइल पहर राति गइल ।
भसुरू केवड़िया भड़कावे हू रे जी ॥ १४ ॥
दुर तुँहुँ कुकुरा दुर रे बिलरिया ।
दुर रे सहर सभ लोगवा हू रे जी ॥ १५ ॥
नाहिं हम कुकुरा नाहिं रे बिलरिया ।
नाहिं रे सहर सभ लोगवा हू रे जी ॥ १६ ॥
हम हुँ तँ बसती सिङ्घ रजवा हू रे जी ।
मोर बसती जुझले लड़इया हू रे जी ॥ १७ ॥
कहवाँ मारले कहवाँ लड़वले ।
कौना बिरिछिया ओंठघवले हू रे जी ॥ १८ ॥
बनहीं मरले बनहीं लड़वले ।
चनन बिरिछिया ओंठघवले हू रे जी ॥ १९ ॥
तोहरा छोड़ि भसुरू अनकर ना होइबों ।
इचि एक लोथिया देखाव हू रे जी ॥ २० ॥
अगिया ले आव हू रे जी ॥ २१ ॥
जब लक भसुरू आगि आने गइले ।
फुफुनी से निकले अँगरवा हू रे जी ॥ २२ ॥
सँगहि भइली जरि छरवा हू रे जी ॥ २३ ॥

इस मनोहर गीत में बसतीसिंह की पत्नी का पवित्र चरित्र सुन्दर शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है। बसतीसिंह को शिकार के बहाने उसका जेठा भाई जंगल में ले जाता है और धोखा देकर उसे मार डालता है। घर लौटकर

उसकी पत्नी से विवाह करने का प्रस्ताव करता है। और उसे बसतीसिंह के युद्ध में मर जाने की खबर देता है। पति के शव को देखने के लिए व्याकुल पत्नी अपने जेठ से प्रार्थना करती है कि वह उसी की बन कर रहेगी परन्तु उसकी लाश पर एक बार नज़र डालने दे। जेठ उसे जंगल में ले जाकर खून से लथपथ शरीर दिखलाता है। उसे आग लाने के लिए भेजती है तबतक उसकी साड़ी से आग पैदा हो जाती है और वह वहीं पति के साथ सती बन जाती है। कितना आदर्श है इस क्षत्राणी का चरित्र !!!

---

८. छठी माता के गीत

हिन्दू-जीवन में त्यौहारों का बड़ा माहात्म्य है। ये त्यौहार हमारे धर्म के अंग हो गये हैं। हमारे यहाँ सामाजिक त्यौहारों की अपेक्षा धार्मिक त्यौहारों पर विशेष ज़ोर दिया गया है और इसका कारण है उनकी महत्ता। इसी कारण प्रत्येक हिन्दू के लिये इन त्यौहारों को मनाना अत्यन्त आवश्यक है। हमारे यहाँ त्यौहारों का जितना महत्त्व है; संभवतः उतना संसार के किसी भी देश में न होगा। कहीं-कहीं इन त्यौहारों की महत्ता प्रतिपादित करने के लिये इन्हें देवी या देवता का रूप प्रदान किया गया है। छठी का व्रत भी ऐसा ही त्यौहार है।

छठी का व्रत कार्तिक मास की शुक्लपक्ष की षष्ठी तिथि को किया जाता है। यह व्रत केवल स्त्रियों का ही है। इसे "षष्ठी-व्रत" कहते हैं। छठी शब्द इसी का अपभ्रंश रूप है। महत्त्व प्रदान करने के लिये इस व्रत को माता कहते हैं। इस प्रकार इसका "छठी माता" नाम पड़ गया है। इस व्रत में पंचमी और षष्ठी दोनों तिथियों में स्त्रियाँ उपवास रखती हैं और सप्तमी के प्रातःकाल सूर्य नारायण को अर्घ्य प्रदान कर भोजन ग्रहण करती हैं। इस तिथि को बड़ा पकवान पकाया जाता है और घर के सभी बाल-बच्चे उसे मिलकर खाते हैं।

देहातों में किसी नदी या तालाब के किनारे वे लड़के जिनकी मातायें और बहिनें यह व्रत रखती हैं मिट्टी का एक छोटा सा चबूतरा एक दिन पहिले जाकर बना देते हैं। जब वह चबूतरा सूख जाता है तब उसे गोबर-मिट्टी से लीप देते हैं। दूसरे दिन उनकी मातायें और बहिनें आकर इसी चबूतरे पर बैठती हैं और सूय नारायण को अर्घ देती हैं। बाल-काल में इस चबूतरे का बनाना बालकों के लिये बड़े ही आनन्द और मनोरंजन का विषय होता है। इस लेखक ने स्वयं बाल्यावस्था में कई बार इस काम को बड़े प्रेम से किया है।

जब षष्ठी का व्रत समाप्त हो जाता है तब सप्तमी को सवेरे सूर्य को अर्घ-प्रदान करने के लिये स्त्रियाँ किसी जलाशय या नदी के किनारे जाती हैं और उन्हीं चबूतरों पर बैठती हैं जिनको उनके पुत्रों ने बनाकर तैयार किया है। वे एक बड़ी दौरी या छबड़ी में सूर्य को अर्घ देने के लिये केला, नीबू, नारंगी ईख तथा अनेक प्रकार के पकवान साथ लेकर जाती हैं। उस घाट पर मालिन की स्त्री फूल, फल, तथा ग्वालिन की लड़की या स्त्री दूध लाती है जिसका उपयोग सूर्य-नारायण को अर्घ देने में किया जाता है। इन गीतों में मालिन तथा ग्वालिन की लड़की के फूल और दूध लाने का वर्णन अनेक बार पाया जाता है। इस प्रकार जब सामग्री इकट्ठी हो जाती है तब सूर्य-नारायण को अर्घ दिया जाता है।

इस व्रत में स्त्रियाँ पञ्चमी और षष्ठी इन दोनों दिनों को उपवास रखती हैं तथा सप्तमी को सवेरे सूर्य-नारायण को बड़ी तैयारी के साथ अर्घ देने को उद्यत रहती हैं। एक तो उन्हें उदर की ज्वाला परेशान करती है; दूसरे सवेरे का जाड़ा तंग करता है; तीसरे सूर्य के उदय होने की प्रतीक्षा में उन्हें खड़ा रहना पड़ता है। ऐसी स्थिति में सूर्योदय होने में विलम्ब होने के कारण उन्हें कितना कष्ट होता होगा इसका सहज ही में अनुमान किया जा सकता है। वे सूर्य के शीघ्र उदय न होने के कारण व्याकुल हो जाती हैं और उनसे बड़ी आतुरता से प्रार्थना करती हैं ऐ भगवान्! शीघ्र उदय लीजिये। छठी माता संबंधी गीतों में ऐसे अनेक गीत पाये जाते हैं, जिनमें शीघ्र उदय लेने के लिये सूर्य से प्रार्थना की गई है। स्त्रियाँ बड़ी आतुरता से प्रार्थना करती हैं कि ए भगवान्! उदय लेकर हमारे अर्घ को स्वीकार कीजिये। एक गीत में एक स्त्री सूर्य से प्रार्थना करती है कि—

"अहिरिनि बिटिया, दूधवा ले ले ठाढ़ी।
हाली देनी उग ए अदित मल, अरघ दिआउ"।

कहीं पर वह स्त्री यह प्रार्थना करती है कि ऐ भगवान्! खड़े खड़े मेरे पैर दुःखने लगे और कमर में पीड़ा होने लगी है। अतः कृपा कर अब तो शीघ्र उदय लीजिये।

"खड़े खड़े गोड़वा दु:खाइलि; ए अदितमल डाँड़वा पिराइल।
हाली देनी उग ए अदितमल; अरघ दिआउ" ॥

छठी माता का व्रत विशेष करके सन्तान-प्राप्ति की कामना से किया जाता है। जिन स्त्रियों को पुत्र नहीं होता वे इस व्रत को विशेष रूप से करती हैं। कितनी स्त्रियाँ सूर्य निकलने के कई घंटे पहिले से जल में खड़ी रहती हैं और सूर्य के निकलने पर अर्घ देती हैं। इस तपस्या के फल स्वरूप वे पुत्र-प्राप्ति की कामना रखती हैं। कई गीतों में इस कामना का वर्णन मिलता है जिनमें स्त्रियाँ छठी माता से पुत्र देने की प्रार्थना करती हैं। एक स्त्री कहती है—

"खोंइछा अछतवा गडुववा जुड़ पानी।
चलली कवनि देई अदित मनावे॥
थोरा नाहिं लेबों आदित बहुत ना माँगिले।
पाँच पुतर आदित, हमरा के दिहितीं॥"

इन गीतों में माता की पुत्र-लालसा का जितना सुन्दर वर्णन किया गया है; संभवतः उतना अन्यत्र उपलब्ध नहीं। पुत्र विहीन माता की व्याकुलता नीरस हृदय में भी करुणरस की धारा प्रवाहित करने लगती है। आगे कुछ चुने हुए छठी माता के गीत पाठकों के मनोरंजन के लिये प्रस्तुत किये जाते हैं—

सन्दर्भ—पुत्रहीन बधू का अपनी सास से पुत्र पैदा करने का उपाय पूछना

(१३६)

मोहि तोहि पुछिला[1] मायरि[2] हो; कवना तपे पवलु[3] गनपति सुत रे॥१॥
कातिक मासे कतिकी छठि कइलों; अगहन कइलों अतवार[4]।
बड़[5] ही जेठ के जवाब नाहि दिहलों, ओहि तपे पवली होसियार[6] ॥२॥

[1]पूछती हूँ। [2]माता। [3]पाया। [4]रविवार। [5]श्रेष्ठ। [6]चतुर।

कोई पुत्रवधू अपनी सास से यह पूछ रही है कि तुमने कौन सी तपस्या की है जिसके कारण तुम्हें गनपति (मेरा पति) जैसा पुत्र पैदा हुआ है ॥१॥

इस पर सास ने उत्तर दिया कि कार्तिक के महीने में मैंने छठी माता का व्रत किया था और अगहन के महीने में रविवार का व्रत किया था। मैंने कभी अपने श्रेष्ठ लोगों का उत्तर नहीं दिया। इसी कारण गनपति के समान चतुर पुत्र प्राप्त किया है ॥ २ ॥

सास का यह उपदेश पुत्रवधू के लिए कितना उचित तथा उपयोगी है।

सन्दर्भ—छठी माता के प्रसन्नार्थ उपहार ले जाने के लिये स्त्री की पति से प्रार्थना

(१४०)

काचहि[1] बाँस के बँहगिया, बँहगी[2] लचकति जाइ।
रउरा भाराहा[3] होइना कवनराम; बँहगी घाटे[4] पहुँचाई ॥१॥
बाट में पूछेला बटोहिया; इ बँहगी केकरा के जाई।
ते[5] त अन्हरा[6] हवे रे बटोहिया: इ बँहगी छठि मइया[7] के जाई॥२॥
हामारा जे बाड़ी छठिय मइया, इ दल[8] उनके के जाई ॥३॥

कच्चे बाँस की बँहगी लचकती हुई जा रही है। कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि तुम इस बँहगी को लेकर घाट पर पहुँचा आओ ॥ १ ॥

जब उस स्त्री का पति बँहगी पर बोझ लादकर घाट पर लिए जा रहा था तब किसी बटोही ने पूछा कि यह बँहगी कहाँ जायेगी। तब उसने उत्तर दिया कि ऐ बटोही! क्या तुम अन्धे हो। देखते नहीं कि छटी माता के घाट पर यह बँहगी जा रही है ॥ २ ॥

---

[1]कच्चा। [2]बँहगी (काँवर)। [3]बोझ ढोने वाला। [4]घाट पर। [5]तुम। [6]अन्धा। [7]छठी माता। [8]सामान।

हमारी जो छठी माता हैं उनके लिये ही यह सारा सामान जा रहा है ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—पुत्र तथा पति को कुशलपूर्वक रखने के लिये स्त्री का छठी माता को विविध उपहार देने की प्रार्थना

(१४१)

कलसुपवा[1] चढ़इबों छठिय मइया; छठी मइया के सुहाग।
खोरिया[2] रउरी बाहारों[3]; धन, सम्पत्ति हमरा के दीं ॥१॥
अमरुधवे[4] चढ़इबों छठिय मइया, छठि मइया के सोहाग।
खोरिया रउरी बहारबि; धन सम्पत्ति दी ॥२॥
खोरिया रउरी बहारवि, पुतवा[5] भीख[6] दीं ॥
मुरई[7] चढ़इबों[8] छठिय मइया; छठि मइया के सोहाग।
खोरिया रउरे बहारबि; भातार[9] भीख[10] दीं ॥३॥

कोई स्त्री कह रही है कि ऐ छठी माता ! मैं आपके प्रसन्नार्थ कल कलसुप चढ़ाऊँगी। मैं आपकी गली में झाड़ू दूँगी। कृपा कर आप मुझे धन और सम्पत्ति दीजिये ॥ १ ॥

ऐ छठी माता ! मैं आपको अमरूध भेंट करूँगी, आपकी गली में झाड़ू दूँगी। आप मुझे धन, सम्पत्ति और पुत्र भीख में दीजिये ॥ २ ॥

ऐ छठी माता ! मैं आपके प्रसन्नार्थे मूली चढ़ाऊँगी। आपकी गली में झाड़ू दूँगी। कृपया आप मेरे पति के स्वस्थ रहने की भिक्षा दीजिये ॥ ३ ॥

इस गीत में स्त्री का पुत्र और पति के स्वस्थ रहने की चिन्ता तथा उसके लिये देवी की प्रार्थना अत्यन्त मर्मस्पर्शी है।

---

[1]बाँस की छोटी टोकरी। [2]गली। [3]झाड़ू दूँगी। [4]अमरूद। [5]पुत्र। [6]भिक्षा। [7]मूली। [8]चढ़ाऊँगी। [9]भर्ता (पति)। [10]भिक्षा।

सन्दर्भ—छठी का व्रत रखने वाली स्त्री की सूर्य से अर्घ्य देने के लिये शीघ्र उदय लेने की प्रार्थना।

(१४२)

आरे गोड़े खरउवाँ[1] ए अदितमल[2]; तिलका लिलार।
आरे हाथावा में सोवरन साँटी[3] ए अदितमल; अरघ[4] दिआउ ॥१॥
ए आमा के कोरा[5] सुतेले अदितमल; भोरे हो गइल विहान[6]।
आरे हाली हाली[7] उग ए अदितमल; अरघ दिआउ ॥२॥
फालावा फूलवा लेले मालिनि; विटिया[8] ठाड़।
आरे हाली हाली उग ए अदितमल; अरघ दिआउ ॥३॥
दूधवा; घिउवा[9] लेले गवालिनि; विटिया ठाड़।
आरे हाली हाली उग ए अदितमल; अरघ दिआउ ॥४॥
धूपवा, जलवा रे लेके; वाभानवा[10] रे ठाड़।
आरे हाली हाली उग ए अदितमल; अरघ दिआउ ॥५॥
गोड़वा दुखइले रे डाँड़वा[11] पिरइले[12]; कब से जे बानि हम ठाढ़[13]।
आरे हाली हाली उग[14] ए अदितमल; अरघ दिआउ ॥६॥

कोई स्त्री छठी माता का व्रत करके अर्घ देने के समय कह रही है कि सूर्य तुम्हारे पैर में खड़ाऊँ है अर्थात् तुम अश्वरूपी खड़ाऊँ पर चढ़कर उदय लेते हो। तुम्हारे ललाट पर तिलक है। तुम्हारे हाथ में सोने का डण्डा है अर्थात् तुम्हारी किरणें सोने के समान सुनहली हैं। तुम उदय लो जिससे अर्घ दिया जा सकें ॥ १ ॥

ऐ सूर्य तुम रात्रि रूपी माता की गोद में सो जाते हो और सोते-सोते सवेरा कर देते हो। ऐ सूर्य! तुम जल्दी-जल्दी उदय लो जिससे हम लोग अर्घ दे सकें ॥ २ ॥

---

[1]खड़ाऊँ। [2]सूर्य। [3]डण्डा। [4]अर्घ। [5]गोदी। [6]सबेरा। [7]जल्दी। [8]लड़की। [9]घी। [10]ब्राह्मण। [11]कमर। [12]दुःख रहा है। [13]खड़ी। [14]उदय लो।

फूल और फल लेकर मालिन की लड़की तथा घी, दूध लेकर ग्वालिन की लड़की खड़ी हैं। ऐ सूर्य तुम जल्दी उदय लो जिससे हम अर्घ दें ॥३।४॥

धूप और जल लेकर ब्राह्मण अर्घ दिलाने के लिये खड़ा है। अतः जल्दी उदय लो ॥ ५ ॥

वह कहती है कि खड़े होने से मेरा पैर दुःखने लगा है तथा कमर दर्द कर रही है। मैं कब से खड़ी हूँ। ऐ सूर्य! जल्दी उगिये जिससे हम अर्घ दें ॥ ६ ॥

इस गीत में स्त्री सूर्य के उदय होने के लिये अत्यन्त चिन्तित है। उसकी यह चिन्ता अत्यन्त मर्मस्पर्शी है।

सन्दर्भ—पार्वती की सूर्य से पाँच पुत्र देने की प्रार्थना

(१४३)

खोंइछा[1] आछातावा[2] गेडुववा जुड़ हो पानी; चलली गउरा देई
अदित[3] मनाव।
आरे पलटहु पलटहु छठि परमेसरी[4]; आजु हम अदित मनाव ॥१॥
थोरा[5] नाहिं लेबों ए आदित; बहुत ना माँगिले।
पाँच पुतरवा[6] ए आदित; हमरा के दीहि ॥२॥
पलटहु पलटहु छठि परमेसरि ॥

कोई स्त्री कहती है कि गउरा देवी (पार्वती) अपने आँचल में चावल और ठण्डा पानी लेकर सूर्य को प्रसन्न करने को चलीं। वह छठी माता से प्रार्थना करती हैं कि माता आप प्रसन्न होइये आज मैं सूर्य को अर्घ दूँगी ॥१॥

फिर वह सूर्य से प्रार्थना करती है कि ऐ भगवान्! मैं आपसे न तो थोड़ा मागूँगी और न अधिक। आप मुझे अधिक नहीं पाँच पुत्र दे दीजिये। ऐ छठी माता! प्रसन्न होओ, प्रसन्न होओ ॥२॥

---

[1]आँचल। [2]अक्षत। [3]आदित्य (सूर्य)। [4]परमेश्वरी। [5]थोड़ा। [6]पुत्र।

सन्दर्भ—घाट को पवित्र न रखने के कारण भक्त के ऊपर छठी माता का क्रोध

(१४४)

कोपि कोपि[1] बोलेली छठिय मइया; सुन ए माहादेव।
मोरा घाटे दुबिया[2] उपरजि[3] गइले; मकड़ी बसेढ़[4] लेली ॥१॥
हँसि हँसि बोलेले माहादेव; सुन ए छठिय मइया।
हम राउर[5] दुबिया छिलाई[6] देबों; चनन छिरिकि[7] देबों ॥२॥

छठी माता क्रोध करके अपने महादेव नामक किसी भक्त से कह रही हैं कि ऐ महादेव! मेरे घाट पर घास निकल आई है और मकड़ी ने बसेरा (निवास) ले रक्खा है ॥१॥

इस पर उस भक्त ने उत्तर दिया कि ऐ छठी माता सुनिये। मैं आपके घाट पर निकली घास कटवा दूँगा और वहाँ पर चन्दन छिड़क कर पवित्र तथा सुन्दर बना दूँगा ॥२॥

सन्दर्भ—पूजा के लिये गई हुई किसी स्त्री को घाट पर जाने से घटवार का मना करना तथा उससे स्त्री की प्रार्थना

(१४५)

ए कवन देव पोखारा[8] खनावेले; घटिया[9] बान्हावेले रे।
ए कवन देवी छठी के बरत[10] कइली; कइसे जल जागाइबि रे ॥१॥
ए घाट मोरे छेके घटवरवा; दुअरा पियदवा[11] लोग रे।
ए कोरा[12] मोरा छेकेली[13] गनपति; कइसे जल जागाइबि[14] रे ॥२॥
ए रूपया त देहु घाटावरवा; भइया ढेबुआ[15] पियदवा लोग रे।
ए दही भात देहु गनपति पूता[16]; कइसे[17] जल जागाइबि रे ॥३॥

---

[1]क्रोध करके। [2]घास। [3]पैदा हो गई है। [4]निवास। [5]आपका। [6]काट देना। [7]छिड़क देना। [8]तालाब। [9]घाट। [10]व्रत। [11]प्यादा (सिपाही)। [12]गोदी। [13]रोकता है। [14]अर्घ दूँगी। [15]पैसा। [16]पुत्र। [17]कैसे।

कोई स्त्री कह रही है कि किसी आदमी ने तालाब बनवा करके उसके किनारे घाट बनवा दिया है। मैंने छठी माता का व्रत किया है। मैं कैसे सूर्य को अर्घ दूँगी ॥ १ ॥

मुझे दरवाजे पर पुलिस के सिपाही रोक रहे हैं और तालाब के घाट पर घाट का मालिक मुझे रोक रहा है। मेरी गोदी को मेरा पुत्र छोड़ता ही नहीं। तब मैं कैसे जल जगाऊँगा? अर्थात् कैसे अर्घ दूँगी ॥ २ ॥

वह स्त्री अपने पति से कह रही है कि घटवार को रुपया तथा सिपाही को कुछ पैसा दे दो, जिससे वे मुझे न रोकें। मेरे गनपति नामक पुत्र को दही-भात खाने को दो। नहीं तो मैं कैसे अर्घ दूँगी ॥ ३ ॥

इस गीत में स्त्री की सूर्य को अर्घ देने की चिन्ता कितनी प्रबल है। वह इसके लिये कितनी व्याकुल दीख पड़ती है।

सन्दर्भ—पार्वती का पुत्र-कामना से छठी माता का व्रत करना

(१४६)

भीजेले माहादेव के धोतिया; गउरा[1] देई के चूनरि[2] ए।
कोरा पइसी भीजेले गनपति पूता; अवरु[3] गनपति पूत ए ॥१॥
माहादेव चाँदानवा[4] तानेले; पठिया[5] धुरे[6] बान्हेले ए।
गउरा पुतवा[7] भीखि मांगेली; पसन्न[8] छठी मइया होख ए ॥२॥

महादेव अपनी स्त्री पार्वती के साथ छठी माता के घाट पर सूर्य को अर्घ दिलाने के लिये गये। परन्तु वहाँ अचानक वर्षा बरसने लगी। उस समय महादेव की धोती और पार्वती की साड़ी भींगने लगी तथा पार्वती की गोदी में बैठे हुए गणेशजी भी भींगने लगे ॥ १ ॥

उस समय महादेव वर्षा से बचने के लिये वितान तानने लगे। उन्होंने छठी माता को प्रसन्न करने के लिये एक छोटी गाय दान देने के लिये बाँध रक्खी थी। पार्वतीजी छठी माता को प्रसन्न कर एक और पुत्र माँगती है ॥२॥

[1]गौरी (पार्वती)। [2]साड़ी। [3]और। [4]वितान। [5]बछड़ी। [6]नज़दीक। [7]पुत्र। [8]प्रसन्न।

सन्दर्भ—पुत्रहीन स्त्री का छठी माता से पुत्र माँगना

(१४७)

मलहोरिन[1] बिटिया नीबू लेई आव; सरीफा[2] लेई आव।
आरे कब रे उगिहें अदितमल; अरघ दियाई[3] ॥१॥
ए छठी मइया करबि[4] राउर सेवा; करवि राउर सेवा।
हमरो के आजु ए छठी मइया; दिहिना[5] राउरा मेवा ॥२॥
बुढ़िया माँगे नाती[6]; तरुनिया माँगे बेटा।
बिटिया[7] जे माँगेले; भाई रे भतीजा ॥३॥

कोई स्त्री छठी का व्रत करके माली की लड़की से कह रही है कि तुम नीबू और शरीफा लाओ जिससे मैं सूर्य नारायण को अर्घदान दे सकूँ। सूर्य कब उगेंगे और कब अर्घ दिया जायेगा ॥ १ ॥

ऐ छठी माता मैं आपकी सेवा करूँगी। आज आप इसके फल स्वरूप मुझे मेवा खाने को दीजिये अर्थात् मुझे आशीर्वाद तथा वरदान दीजिये ॥२॥

बूढ़ी स्त्रियाँ अपने लिये पौत्र माँग रही हैं; युवती स्त्रियाँ पुत्र माँगती हैं तथा छोटी लड़कियाँ अपने लिये भाई और भतीजा माँगती हैं ॥३॥

छठी माता का व्रत किसी उद्देश्य को लक्ष्य करके किया जाता है। स्त्रियों के उद्देश्य प्रायः पुत्र तथा पौत्र की प्राप्ति हुआ करते हैं। स्त्री हृदय की इन्हीं अभिलाषाओं का वर्णन यहाँ किया गया है।

सन्दर्भ—पुत्र-प्राप्ति के लिये स्त्री की सूर्य से प्रार्थना

(१४८)

ए गोड़े[8] खरउवाँ ए दीनानाथ; हाथ में सोबरन के साँटी।
ए कान्हे जनेउवा[9] ए दीनानाथ; चनन बाटे लिलार ॥ १ ॥
ए सब तिरियवा ए दीनानाथ; छेकेली[10] दुआरी[11]।
ए सब डलियवा[12] ए दीनानाथ; लिहली उठाई ॥ २ ॥

---

[1]माली की स्त्री। [2]शरीफा। [3]दिया जायेगा। [4]करूँगी। [5]दो। [6]पौत्र [7]पुत्री। [8]पैर। [9]यज्ञोपवीत। [10]रोकती है। [11]द्वार। [12]डाली (छबड़ी)।

ए बाँझी[1] के डलियवा ए दीनानाथ; ठहरे ताँवाई[2] ॥ ३ ॥
ए छोड़ु छोड़ु छोड़ु ए बाँझिनि; छोड़ु रे दुआरी ।
ए कवना अवगुनवे ए बाँझिनि; छेकेलु दुआरी ॥ ४ ॥
ए सासु मोरे हुदुकाए[3] ए दीनानाथ; ननदिया पारे गारी[4] ।
ए सँगे लागल पुरुखवा[5] ए दीनानाथ; हमरा के डण्डा से मारी ॥५॥
ए असों[6] के कतिकवा ए तिरिया; घरवा चली जाई ।
ए अगीला[7] कतिकवा ए तिरिया; तोरा बेटा होई जाई ॥ ६ ॥

कोई स्त्री छठी-व्रत करके सूर्य नारायण को अर्घ देते समय उनसे प्रार्थना करती हुई कहती है कि सूर्य ! तुमने पैर में खड़ाऊँ पहिन रक्खा है और हाथ में सोने का डण्डा अर्थात् सुनहली किरणें हैं। तुम्हारे कन्धे में जनेऊ और ललाट में चन्दन है ॥ १ ॥

ऐ भगवान् ! आपके द्वार पर सब स्त्रियाँ प्रार्थना करने के लिये खड़ी हैं। हे देव ! आपने सब की डाली को उठा लिया अर्थात् सब की प्रार्थना स्वीकार कर ली ॥ २ ॥

लेकिन मुझ बन्ध्या की डाली वहीं पर पड़ी हुई है अर्थात् आपने उसे अभी तक स्वीकार नहीं किया ॥ ३ ॥

तब भगवान् सूर्य कहते हैं कि ऐ वन्ध्या स्त्री तुम मेरे दरवाजे को मत रोको, उसे छोड़ दो। किस अवगुण के कारण तुम मेरे द्वार पर खड़ी हो ॥४॥

तब वह स्त्री कहती है कि बन्ध्या होने के कारण सास मुझे बहुत झिड़कती है, ननद मुझे गाली देती है और मेरा पति इस कारण मुझे डण्डे से मारता है ॥ ५ ॥

भगवान् सूर्य ने उस स्त्री की प्रार्थना से प्रसन्न होकर कहा कि ऐ स्त्री तुम घर चली जाओ। इस साल के कार्तिक के बाद अगले कार्तिक में तुम्हें पुत्र रत्न पैदा होगा ॥ ६ ॥

---

[1]बन्ध्या। [2]अस्वीकृत। [3]झिड़कती है। [4]गाली। [5]पति। [6]इस साल। [7]अगला वर्ष।

देहातों में प्रायः बन्ध्या स्त्री को अनेक कष्ट दिये जाते हैं। पुत्र पैदा न करने के कारण उन्हें गालियाँ दी जाती हैं तथा पीटा जाता है। मनहूस तथा अभागिन कहना तो साधारण सी बात है। ऐसी ही एक बन्ध्या स्त्री का ऊपर वर्णन किया गया है जिसकी मानसिक वेदना का पता उसकी प्रार्थना से लगता है।

सन्दर्भ—सूर्य को अर्घ्य देने के लिये व्याकुल स्त्री की सूर्योदय में विलम्ब के कारण की कल्पना

(१४६)

गेहुँआ वेसहलों[1] में अवध नगरिया; उगींना[2] अदित मल लिहिना अरघिया[3]।
कवना अवगुनवा अदित नाहीं उगले; वसकोरिनि[4] जुठवा कलसुपवा दिहले[5] ॥ १ ॥
ओही[6] अवगुनवे[7] अदित नाहीं उगले ॥ २ ॥

कोई स्त्री कह रही है कि मैंने अवध नगरी में गेहूँ खरीदा है और उसका पकवान बनवाया है। ऐ सूर्य ! उदय लो और मेरे अर्घ को स्वीकार करो ॥१॥

जब सूर्य नारायण बहुत देर तक उदय नहीं लेते हैं तब वह स्त्री कहती है कि ऐ भगवान् ! आप किस कारण से आज उदय नहीं लेते हैं। ज्ञात होता है कि चमारिन ने जो बाँस का सूप बनाकर दिया था वह जूठा था। उसी कारण से आज सूर्य अभी तक नहीं निकले ॥२॥

---

[1]खरीदा। [2]उदय लो। [3]अर्घ। [4]चमार की स्त्री। [5]दिया। [6]उसी। [7]अवगुण (दोष) से।

९. शीतला माता के गीत

चेचक को शीतला देवी के नाम से पुकारते हैं। यह कहना कठिन है कि ऐसी भयंकर बीमारी को जिसमें शारीरिक गर्मी की विशेष प्रधानता रहती है शीतला क्यों कहते हैं। डा० तारापूर वाला ने लिखा है[1] कि मनुष्य की यह प्रवृत्ति होती है कि वह नीच तथा भयंकर वस्तु को किसी सुन्दर नाम से पुकारने का प्रयत्न करता है। जैसे रसोई बनाने वाले ब्राह्मणों को महाराज—बहुत बड़ा राजा कहते हैं। इसी प्रकार से इस भयंकर बिमारी को शीतला कहने लगे हों तो कुछ आश्चर्य नहीं। कुछ काल के अनन्तर इसी शीतला देवी को अधिक महत्त्व देने के लिये माता देवी के नाम से पुकारने लगे। सारी बीमारियों में संभवतः चेचक ही ऐसी बीमारी है जो देवी या देवता के रूप में पूजी जाती है। इसका कारण संभवतः इसकी भयंकरता ही है। शीतला देवी का वाहन गधा है जो उनकी भयंकरता तथा वीभत्सता को सूचित करने के लिये पर्याप्त है।

हमारे यहाँ जब किसी को शीतला की बीमारी होती है तो उसकी कुछ भी दवा नहीं की जाती। वह बेचारा आदमी माता देवी की दया पर छोड़ दिया जाता है। उसकी बीमारी के अच्छा होने के लिये माता देवी की प्रशंसा में गीत गाये जाते हैं और उनसे यह प्रार्थना की जाती है कि रोगी को नीरोग कर दें। रोगी के झाड़-फूँक के लिये मालिन आती है और वह नीम की डाली या टहनी से रोगी को झाड़ती है जिससे शीतला माता प्रसन्न होकर बीमार को नीरोग कर दें। मालिन माता देवी की प्रिय सेविका समझी

[1] एलिमेन्ट्स आव दि साइन्स आव लैंग्वेज।

जाती है और उसके द्वारा किया गया झाड़-फूँक नीरोग होने का साधन समझा जाता है। इसी कारण से इन गीतों में बार-बार मालिन का वर्णन मिलता है।

जब किसी पुरुष के ऊपर शीतला देवी का प्रकोप होता है तब उसके घर वालों को अनेक नियमों का पालन करना पड़ता है जैसे बालों का न कटाना, रोटी का न खाना, दाल में हल्दी न डालना, शाक-भाजी को न छौंकना, जूता न पहिनना, किसी को प्रणाम न करना तथा स्त्री-पुरुष का संग न सोना। कहते हैं कि इन नियमों का पालन करने से देवी प्रसन्न होती हैं और रोगी को आरोग्य प्रदान करती हैं। इसलिये उनकी प्रार्थना करना तथा इन उपर्युक्त नियमों का पालन करना नितान्त आवश्यक समझा जाता है।

यहाँ पर माता देवी के जो गीत दिये जा रहे हैं उनमें रोगी को नीरोग कर देने के लिये देवी से प्रार्थना की गई है। रोगी के घर वाले माता से प्रार्थना करते हैं कि ऐ माता! इसे आरोग्य की भिक्षा दीजिये। एक गीत में स्त्री अपने पुत्र की आरोग्य-कामना के लिये माता से प्रार्थना करती हुई कहती है—

"पटुका पसारि भीखि माँगेली बालकवा के माई।
हमरा के बालकवा भीखी दीं।
मोरी दुलारी हो मइया, हमरा के बालकवा भीखी दीं" ॥

अर्थात् कपड़ा—आँचल—फैला कर लड़के की माता यह प्रार्थना करती है कि ऐ माता! मेरे बालक को भिक्षा दीजिये। चूँकि चेचक का रोग बालकों को ही अधिक हुआ करता है अतः बालक की रक्षा के लिये की गई प्रार्थना ही अधिक मिलती है। कहीं-कहीं मालिन को झाड़-फूँक के लिये भी कहा गया है। इन गीतों में करुण-रस की मात्रा विशेष रूप से पायी जाती है। अपने प्यारे लाड़िले पुत्र को नीरोग कर देने की माता की प्रार्थना किस पाषाण-हृदय को नहीं पिघला देती? फिर माता देवी इन प्रार्थनाओं से प्रसन्न क्यों न हों?

नीचे कुछ माता देवी के गीत दिये जाते हैं:—

सन्दर्भ—भक्त[1] के द्वारा शीतला माता के वाहन के रंग को पूछना

(१५०)

कवने बरने[1] तोरा घोड़वा ए सीतलि[2] कवना बरने असवार[3] ।
बाँगालिनि देवी हो; लीहींना[4] पुजवा हमार ॥१॥
लाल बरने मोरा घोड़वा ए सेवका; सुरुज बरने असवार ।
भइया रंग रसियारे हाथ ले ले बँसिया; तीतील[5] ले ले जोड़ियाई[6] ॥२॥
बाँगालिनि देवी हो ।

कोई सेवक भगवती से पूछ रहा है कि ऐ शीतला माता तुम्हारा वाहन घोड़ा (गधा) किस रंग का है और उस पर चढ़ने वाला अश्वारोही किस रंग का है ? ऐ बंगालियों की पूजनीय देवी ! तुम मेरी पूजा को स्वीकार करो ॥१॥

इस पर भगवती माता ने उत्तर दिया कि मेरा घोड़ा लाल रंग का है और उस पर चढ़ने वाला सूर्य के समान चमकता हुआ है। तब सेवक कहता है कि मेरा भाई बड़ा प्रेमी है और वह आपको समर्पण करने के लिये एक तित्तिर लिये हुए है। ऐ बंगालिन देवी ! उसे स्वीकार करो ॥ २ ॥

शीतला माता की सवारी घोड़ा नहीं बल्कि गधा है। बुरा लगने के लिये सेवक ने शायद उसे घोड़ा कह दिया है। बंगाल सदा से शक्ति-पूजा का केन्द्र रहा है। आज भी बंगाल में काली या भगवती की उपासना प्रधान है। इसी लिये इस गीत में देवी को बंगालियों की देवी कहा गया है ॥

सन्दर्भ—शीतला (चेचक) के प्रचण्ड आक्रमण से पीड़ित बालक की रक्षा के लिये पिता की प्रार्थना देवी से

(१५१)

आँचारा पसार भीख माँगेला; बालाका के बाबा ।
आरे मइया हमरा के; बालाकवा भीख दीं ॥१॥

---

[1]वर्ण (रंग) । [2]शीतला माता । [3]घुड़सवार । [4]लो । [5]तित्तिर । [6]जोड़ा (दो) ।

मोर मनवा राखबि मइया; हमरा के बालकवा भीख दीं ॥२॥

अर्थ स्पष्ट है। भक्त माता देवी से पुत्र माँग रहा है।

सन्दर्भ—भक्त पुरुष का माता देवी के मन्दिर को स्वच्छ करना

(१५२)

होत भिनुसारावा[1] मुरुगवा;[2] बोलिया बोलवे हो की।
उठ ए देवी वहारीं;[3] राउर मन्दिर हो की ॥१॥
कथि के बढ़निया[4] ए मइया; कथि लागलि मुठियारे[5] की।
कावाना रे रूपे वाहारीं; वइठ मन्दिर हो की ॥२॥
सोने का बढ़निया रे सेवका; रूपे लागल मुठिया हो की ॥३॥

सवेरा होते ही मुर्गा अपनी बोली बोलने लगता है। तब भक्त, माता देवी की प्रार्थना करता हुआ कहता है कि ऐ देवी! उठो, मैं तुम्हारे मन्दिर को साफ करूँ ॥ १ ॥

ऐ माता! मैं किस चीज़ का झाड़ू बनाऊँ और किस वस्तु की मूँठ लगाऊँ ॥ २ ॥

देवी ने उत्तर दिया कि सोने का झाड़ू बनाओ, उसमें चाँदी की मूँठ लगाओ। तब मेरे मन्दिर को साफ करो ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—चेचक से पीड़ित पुत्र की रक्षा के लिये माता द्वारा शीतला देवी का आवाहन

(१५३)

केकरा आँगानवा ए मइया; दानावा मड़ुववा हो।
केकरा आँगानवा नीमी गाछि; जोगिया मइया बिलमलि[6] हो ॥१॥
बाट बटोहिया हो तुहु मोर भइया।
एहि बाटे देखलो सीतलि[7] मइया हो ॥२॥
मोरी मइया काहाँवा[8] बिलमेलि हो।
देखलों में देखलों हाजीपूर के हटिया[9] में हो ॥३॥

---

[1]सवेरा। [2]मुर्गा। [3]झाड़ूँ दूँ। [4]झाड़ू। [5]मूँठ। [6]विलम्ब करती हो। [7]शीतला। [8]कहाँ। [9]बाज़ार ॥

ऐ माता! किसके आँगन में मडुआ का अन्न भरा पड़ा है और किसके आँगन में नीम का वृक्ष है। ऐ माता! तुम मेरे यहाँ आने में क्यों विलम्ब कर रही हो॥ १॥

वह स्त्री किसी बटोही से कहती है कि तुम मेरे भाई हो। क्या तुमने शीतला माता को कहीं देखा है॥ २॥

इसके उत्तर में वह कहता है कि हाँ हमने हाजीपूर के बाजार में देखा है॥ ३॥

सन्दर्भ—वन्ध्या स्त्री की शीतला देवी से पुत्र देने की प्रार्थना

(१५४)

चारु ओरिया जल थल; बीचवा गम्हीरवा ए देवी हो।
ताहि बीच मंदिरवा तोहार, दुःखवा हर देवी हो॥१॥
ऊँच रे मंदिलवा के नीची रे दुवरिया हो;
मइया मोती जड़ल बा केवार॥२॥
सासु मारे हुदुका ननदिया पारे गारी हो मइया;
गोतिनी बँझीनिया धइली नांव॥३॥
मोर गोद भरनी मइया; गोतिनी बँझिनिया धइली नांव॥४॥

चारो ओर जल है और बीच में गहरा पानी है। ऐ दुःख को हरने वाली देवी! उसी के बीच में तुम्हारा मन्दिर है॥ १॥

ऐ माता! तुम्हारे ऊँच मन्दिर का दरवाजा बहुत नीचा है और उसमें मोती के दरवाजे जड़े हुए हैं॥ २॥

मेरी सासु मुझे झिड़कती है और ननद मुझे गाली देती है। मेरी दायादिन मुझे बन्ध्या कहकर पुकारती है॥ ३॥

ऐ मेरी गोदी को भरने वाली माता! मेरा नाम बन्ध्या पड़ गया है अतः मुझे पुत्र दो॥ ४॥

सन्दर्भ—शीतला के प्रसन्नार्थ भक्त स्त्री का विभिन्न पदार्थ उपहार में देना

(१५५)

लेई आउ संकर[1] लडुवा[2]; आरे लेइ आउ दुधवा हो।
आरे लेइ आउ लीली[3] बछेड़वा; जइवों मइया दुरिया[4] हो ॥१॥
काहाँ पइवों संकर लडुवा; काहाँ पइवों[5] हम दुधवा हो।
आरे काहाँ पइबों लीली बछेड़वा; जइबु मइया दुरिया हो ॥२॥
हलुवइया[6] घर के संकर लडुवा, आरे अहिरा[7] घर के दुधवा हो।
आरे छतिरी[8] घर के लिली बछेड़वा; जइहें मइया दुरिया हो ॥३॥
बान्हल बाड़े संकर लडुवा; आरे अँवटल[9] बाड़े दुधवा हो।
आरे लिहली[10] बाड़ी लिली बछेड़वा; जइबु मइया दुरिया हो ॥४॥

माता देवी अपनी भक्तिन से कह रही हैं कि मेरे लिए चीनी के लड्डू और दूध ले आओ तथा मेरे चढ़ने के लिये एक घोड़ी लाओ क्योंकि मुझे दूर जाना है ॥ १ ॥

तब भक्तिन कहती है कि ऐ माता ! मैं शक्कर का लड्डू और दूध कहाँ पाऊँगी तथा आपके चढ़ने के लिये घोड़ी कहाँ से लाऊँगी ॥ २ ॥

इस पर देवी जी उत्तर देती हैं कि हलुवाई के यहाँ से शक्कर के लड्डू लाओ, अहीर के यहाँ से दूध लाओ और क्षत्री के घर से घोड़ी लाओ ॥ ३ ॥

भक्तिन जाकर उक्त स्थानों से ये चीजें लाई। तब वह देवी से कहती है कि आपके लिये लड्डू बँधा हुआ तैयार रखा है, दूध गरम किया गया है और घोड़ी बँधी है। ये माता आप मजे में अब जा सकती हैं ॥ ४ ॥

---

[1]शक्कर। [2]लड्डू। [3]घोड़ी। [4]दूर। [5]पाऊँगी। [6]हलुवाई। [7]अहीर। [8]क्षत्री। [9]गर्म किया गया है। [10]लिया गया है।

सन्दर्भ—भक्त पुरुष का शीतला माता को अपने घर रखने के लिये उनसे प्रार्थना

(१५६)

घोड़वा के पाग[1] धइले; ठाढ़ भइले कवन राम ।
आरे मइया हमरा घर; लिहिना[2] बसेढ़[3] ॥१॥
केइ तोरा बालक घोड़वा; घासि कटिहें ।
केई तोरा मइया के; आरती उतरिहें ॥२॥
हम राउर बालक घोड़वा घासि काटबि ।
बहुवा[4] हमार राउर; आरति उतरिहें ॥३॥

जब माता घोड़े पर सवार होकर अपने स्थान को जाने लगीं तब किसी भक्त ने उनसे कहा कि ऐ माता! आप मेरे घर में आकर वास लीजिये (रहिये) ॥ १ ॥

तब माता देवी ने उत्तर दिया कि मेरे घोड़े के लिये कौन घास काटेगा और मेरी आरती कौन उतारेगा ॥ २ ॥

तब भक्त ने उत्तर दिया कि मैं आपका बालक हूँ। मैं आपके घोड़े के लिये घास काटूँगा और मेरी स्त्री आपकी आरती उतारेगी ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—शीतला माता को अपने घर बुलाने के लिये किसी स्त्री की प्रार्थना

(१५७)

कथि[5] बिनु सुन भइली बगिया; कथिय बिनु आँगन हो ।
कथि बिनु सुन[6] देव घरवा; घारावा हमरो ना भावे[7] हो ।
कोइलरि बिनु सुन भइली बगिया; बालकवा बिनु आँगन हो ।
ए मइया रउरा बिनु सुन देव घरवा; घारावा हमरो न भावे हो ॥१॥

---

[1]लगाम। [2]क्यों नहीं लेती। [3]निवास। [4]वधू। [5]किस वस्तु। [6]शून्य। [7]अच्छा लगता है।

कोइलरी[1] बोले लागली बोलिया; बालकवा ढुरे[2] आँगन हो ।
ए मइया रउरा ना गरजीं देव घरवा; हमरो दीप जरेला हो ॥३॥

कोई स्त्री अपनी सखी से कह रही है कि किस वस्तु के बिना मेरा घर और आँगन सूना पड़ा हुआ है । मेरा घर क्यों सूना है ? मुझे यह घर अच्छा नहीं लगता ॥ १ ॥

तब सखी ने उत्तर दिया कि कोयल के बिना बाग, बालक के बिना आँगन और माता देवी के बिना घर सूना लगता है ॥ २ ॥

सखी से वह स्त्री कहती है माता देवी के प्रसाद से मेरे बगीचे में कोयल बोलने लगी । आँगन में अब लड़का खेल रहा है । ऐ माता ! मेरे घर में दीप जल रहा है, आप आकर अब रहिये ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—वन्ध्या स्त्री को पुत्र-प्राप्ति के लिये शीतला से प्रार्थना

(१५८)

काहें लागी ठाढ़ भइली, बारी भगतिया[3] ए मइया ।
आवाला मोरी जोगिनिया[4] ए मइया; काहे लागी ठाढ़ ॥१॥
काहे लागी ठाढ़—टेक
जस[5] लेहु ठाढ़ भइली बारी भगतिया ए मइया, पूत[6] लागी ठाढ़ ।
आवाला मोरी मन राखनी[7] मइया; पूत लागी ठाढ़ ॥२॥
आन्हारा[8] के आँख देहु, कोढ़िया के काया देहु; बाझिनि के पूत देहु जी ।
जस लेहु जस लेहु भगतिया ए मइया; पूत लागी ठाढ़ ॥३॥

माता देवी के द्वार पर बहुत सी भक्तिन खड़ी हैं । तब देवी उनसे पूछती हैं कि तुम लोग यहाँ क्यों खड़ी हो ॥ १ ॥

एक भक्तिन इसका उत्तर देती हुई कहती है कि ऐ माता ! हम लोग पुत्र-प्राप्ति के लिये खड़ी हैं । ऐ भक्तों की इच्छाओं की पूर्ति करने वाली माता ! आप हमें पुत्र देकर यश की भागी बनिये ॥ २ ॥

---

[1]कोयल । [2]खेलता है । [3]भक्तिन । [4]योगिनी । [5]यश । [6]पुत्र । [7]मन को रखने वाली अर्थात् मन की इच्छाओं की पूर्ति करने वाली । [8]अन्धा ।

आप अन्धों को आँख दीजिये, कोढ़ी को सुन्दर शरीर दीजिये और बन्ध्या स्त्री को पुत्र दीजिये। ऐ माता आप हमें पुत्र देकर यश प्राप्त कीजिये ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—शीतला माता के द्वारा वाटिका में पुष्प-चयन

(१५६)

सिंकिया[1] ही चीरि मइया करेली दिउलिया[2];
आरे बीनेली[3] पंचरंग डलिया रे ना ॥ १ ॥
डलिया ही लेइ मइया चलली फुलवरिया;
आरे लोहेंली[4] चम्पा के फुलवा रे ना ॥ २ ॥
फूलवा लोहीं मइया भरेली चंगेलिया[5];
आरे आइ गईलि मालिनि बिटिया रे ना ॥ ३ ॥
रोवेले मालिनि बिटिया, धुनेले कपारवा[6];
आरे फुलवा के कइलु विधनसवा[7] रे ना ॥ ४ ॥
जनि रोउ मालिनि बिटिया, जनि धुनु कपरा;
आरे बिहने[8] से उगिहें[9] काचानारवा[10] रे ना ॥५॥

पतली सींकों को चीर करके माता देवी ने स्वयं पाँच रंग की एक डाली बीन कर तैयार किया ॥ १ ॥

उस डाली को लेकर वे फुलवारी में चली गईं और चम्पा का फूल चुनने लगीं ॥ २ ॥

जब उन्होंने फूल चुनकर अपनी टोकरी भर ली, उसी समय मालिन की लड़की वहाँ आगई ॥ ३ ॥

वह यह दृश्य देखकर रोने लगी तथा अपना सिर पीटने लगी और उसने माता देवी से कहा कि आपने मेरे बगीचे को आज विध्वंस कर दिया ॥ ४ ॥

---

[1]सींक। [2]पतली। [3]तैयार किया। [4]चुनती है। [5]टोकरी। [6]सिर। [7]विध्वंस, नष्ट करना। [8]सबेरे। [9]खिलेगा। [10]कचनार का फूल।

तब माता देवी ने उसे सान्त्वना देते हुए कहा कि ऐ मालिन की पुत्री रोओ मत और अपना सिर मत पीटो। कल सवेरे ही तेरे बगीचे में कचनार के फूल खिल जायेंगे ॥ ५ ॥

सन्दर्भ—वेला का रस चूस कर भौंरे का शीतला के पास जाना

(१६०)

केकरा[1] हि आँगाना वेइलिया[2], वेइलिया हो लाल।
रसे[3] ही रसे रस चुवे, रसकलिया[4] हो लाल ॥ १ ॥
मलिया आँगनवा ऐ सेवका; वेइलिया हो लाल।
रसे रसे रस चुवे; रसकलिया हो लाल ॥ २ ॥
रसे ही रसे रस पीये ले; भाँवारा मतवलवा हो लाल।
माती[5] गइले सीतली मइया के, दरबरवा हो लाल ॥ ३ ॥

कोई स्त्री पूछ रही है कि किसके आँगन में वेला का फूल खिला है। उससे रस धीरे-धीरे चू रहा है ॥ १ ॥

तब कोई स्त्री कहती है कि माली के आँगन में वेले का फूल खिला है। उससे रस चू रहा है ॥ २ ॥

भँवरा धीरे-धीरे उसके रस को चूस कर पीता है तथा पीकर मतवाला हो जाने पर माता देवी के समीप जाकर घूमता फिरता रहता है ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—अपनी प्रबल भक्ति के कारण मालिन के द्वारा शीतला की कृपा से पुनः पुत्र प्राप्ति

(१६१)

सँउसे[6] नगर मइया घुमि फिरि अइलों; केहुना[7] जागेला सारी राती।
एक त जागेले मालिनि बिटिया; हारावा गुथेले सारी राती ॥ १ ॥

---

[1]किसके। [2]बेला का वृक्ष। [3]धीरे-धीरे। [4]रस से भरी कली। [5]मतवाला हो गया। [6]समग्र, सब। [7]कोई नहीं।

मोहि तोहि पूछेले मालिनि बिटिया; गोद के बालाकवा काइ[1] भइले।
गोद के बालाकवा मइया हवे बदमसवा[2]; खेलन गइले रनबनवा ॥२॥
गोद के बालाकवा मालिनि हम भछि[3] गइलीं;
रोदन के मत करु पवनार[4] ॥ ३ ॥
रोवति जाले मालिनि बिटिया, हकरत[5] जाला मलहोरिया।
चुप होखु चुप होखु मालिनि बिटिया; फेनसे[6] बालक तोहिं देवहु ॥४॥
हँसति आवेले मालिनि बिटुइया; बिहँसत[7] आवे मलहोरिया[8] ॥ ५ ॥

कोई स्त्री कह रही है कि मैंने सारे नगर में घूम फिर कर देख लिया कोई सारी रात नहीं जगा है। एक केवल मालिन की लड़की फूल की माला गूँथती हुई सारी रात जग रही है ॥ १ ॥

माता देवी उससे पूछती हैं कि तुम्हारी गोद का बालक क्या हुआ ? तब मालिन उत्तर देती है वह लड़का बदमाश था और किसी कारण मर गया ॥२॥

इस पर माता देवी कहती हैं कि मैंने तेरे लड़के को खा लिया है। तुम रोओ नहीं ॥ ३ ॥

मालिन की लड़की रोती जाती है और माली विलाप कर रहा है। तब माता देवी कहती हैं कि ऐ पुत्री ! तुम रहो मैं फिर से तुम्हें पुत्र दूँगी ॥ ४ ॥

इस पर मालिन की लड़की अत्यन्त प्रसन्न हो गई और माली बिहँसने लगा (क्योंकि माता के प्रसाद से उसकी लड़की ने पुत्र-रत्न को प्राप्त किया ॥५॥

सन्दर्भ—झूले पर झूलती हुई प्यासी शीतला को मालिन का पानी पिलाना तथा प्रसन्न होकर माता का आशीर्वाद

(१६२)

नीमिया[9] की डाढ़ी[10] मइया लावेली हिलोरवा[11];
कि झुलि झुलि मइया गावेली गीत ॥१॥

---

[1]क्या हो गया। [2]बदमाश। [3]भक्षण कर दिया। [4]अधिक जल। [5]विलाप करना। [6]फिर से। [7]हँसना। [8]माली। [9]नीम। [10]शाखा। [11]झूला।

झुलत झुलत मइया का लगली पियसिया[१];
कि चलि भइली मलहोरिया[२] आवास ॥२॥
सुतलु बाड़ू[३] कि जागलि ए मालिनि;
उठि के मोहि के पनिया पिआउ[४] ॥३॥
कइसे में पनिया पियावों ए सीतली मइया;
मोरा गोदी बाड़े लरिका[५] तोहार ॥४॥
मोरा गोदी लरिका सुताउ ए मालिनि;
तब उठि पनिया पिआउ ॥५॥
मालिनि उठि के एक हाथ लेले झंझर पनिया;
दूसर हाथ गेडुवा जुड़ हो पानी ॥६॥
अब बइठि पनिया पियहु ए सीतली मइया;
बोलुना नगर कुसलात[६] ॥ ७ ॥
तोहरी नगरिया मालिनि कुसल से बाटे,
कुसल मालिन चाहिले तोहार ॥८॥
जइसनि मालिनि हमें जुड़ववलु[७];
कि ओइसन[८] तोरि पतोहिया[९] जुड़ासु ॥९॥
धियवा त बाड़ी मइया आपाना ससुरवा;
पतोहिया मोर आपन नइहरवा ॥१०॥
धियवा जुडासु मालिन आपन ससुरवा;
पतोहिया तोर[१०] जुड़ासु नइहरवा ॥११॥

नीम के पेड़ की शाखा पर माता देवी ने झूला लगाया और उस पर झूल-झूलकर गीत गाने लगीं ॥ १ ॥

झूलते-झूलते माता को प्यास लग गई और वे पानी पीने एक मालिन के घर चली गईं ॥ २ ॥

---

[१]प्यास। [२]मालिन। [३]है। [४]पिलाओ। [५]लड़का। [६]कुशल समाचार। [७]सन्तुष्ट कर दिया। [८]उसी प्रकार। [९]पुत्रवधू। [१०]तुम्हारा।

वहाँ जाकर माता ने मालिन से पूछा कि तुम सोई हो अथवा जगी हो ? मुझे उठकर पानी पिलाओ ॥ ३ ॥

मालिन ने उत्तर दिया कि आपके प्रसाद से प्राप्त किया गया मेरी गोदी में एक बालक है। इसलिये मैं आपको पानी कैसे पिला सकती हूँ ॥ ४ ॥

माता देवी ने कहा कि मेरी गोदी में बालक को सुला दो और तब उठ कर मुझे पानी पिलाओ ॥ ५ ॥

तब मालिन ने उठ कर एक हाथ में झंझर का पानी लिया और दूसरे हाथ में ठंडा पानी लिया ॥ ६ ॥

उसने माता से कहा कि अब आप जल पीजिये और मेरी नगरी का कुशल समाचार कहिये ॥ ७ ॥

माता ने कहा कि ऐ मालिन तुम्हारे नगर में सब कुशल हैं और मैं तुम्हारा कुशल चाहती हूँ ॥ ८ ॥

ऐ मालिन ! तुमने जल पिला कर जैसे मुझे सन्तोष प्रदान किया है उसी प्रकार से तुम्हारी पुत्रवधू सन्तुष्ट हो ॥ ६ ॥

मालिन ने कहा ऐ माता मेरी लड़की अपनी ससुराल है और पुत्रवधू मायके में है ॥ १० ॥

माता ने कहा कि ऐ मालिन तुम्हारी लड़की अपनी ससुराल में सुख पूर्वक रहे और तुम्हारी पुत्रवधू मायके में सन्तुष्ट रहे ॥ ११ ॥

शीतला माता की पुजारिन मालिन समझी जाती है। जब कभी शीतला माता का प्रकोप होता है तब मालिन ही आकर झाड़ फूँक करती है। अतः दोनों में बड़ा घनिष्ट संबंध है। इसलिये इस गीत में प्यासी हुई शीतला देवी का पुजारिन मालिन के घर जाने का वर्णन किया गया है।

सन्दर्भ—शीतला माता की कृपा से बन्ध्या स्त्री की पुत्र-प्राप्ति का वर्णन

(१६३)

सिंकिया चिरिय चिरि बीन लों डलियवा हो।
आरे डलिया लिहले ठाढ़; भइलों मइया दरबरिया हो ॥१॥

सब के डलियवा ए मइया; आरे लिहलू परीछी हो।
आरे हमरी अभागिन के डलिया; काहें फिरि[1] आइलि हो ॥२॥
आरे आरे बाँझि[2] तिरियवा; आरे डलिया तो असुद्ध हो।
आरे तोहारे असुधवा[3] ए बाँझिनि; आरे डलिया तोर असुद्ध हो ॥३॥
पइसबि[4] ननन[5] बनवा; आरे छेवड़बि[6] चानानावा[7] हो।
आरे चिरिया[8] साजि मरबों; मइया अपजस[9] तोरा होई हो ॥४॥
जनि पइसु ननन बनवा; जनि छेड़ु चानानावा हो।
आरे चिरिया साजि जनि जरहु; अपजस जनि देहु हो ॥५॥
आरे आरे बाँझि तिरियवा; आरे जनि रोई मरहु हो।
आरे आपन बालकवा ए बाँझिनि; तोहरा के देवों हो ॥६॥
पनिया भरत भरत ए मइया; चनिया[10] खियाइल[11] हो।
आरे देव घर लिपत[12] ए मइया; हथवा खियाइल हो ॥७॥
आरे तब हू ना छुटेले ए मइया; बाँझिनि केरि नंइयां[13] हो ॥८॥
सूतल[14] देवमुनि आरे उठेले चिहाइ[15] हो।
आरे कवना चरित्रे[16] ए मइया; बाँझिनि घरवा बालक हो ॥९॥
का तुहुँ देव मुनि आरे उठल चिहाइ हो।
आरे मइया का चरित्रे ए देवमुनि; बाँझिनि घरवा बालक हो ॥१०॥

कोई वन्ध्या स्त्री पुत्र की प्राप्ति के लिये शीतला माता का व्रत करके उनकी पूजा के लिये सामान एकत्रित करती हुई कह रही है कि मैंने सींक को पतली पतली चीर करके एक डाली तैयार किया है। मैं उस डाली को लेकर शीतला माता के दरबार में गई और वहाँ जाकर खड़ी हो गई ॥२॥

वह स्त्री कहती कि ऐ माता तुमने सब की डाली को स्वीकार कर लिया लेकिन मुझ अभागिन की डाली को तुमने क्यों लौटा दिया ॥ २ ॥

---

[1]लौट आई। [2]वन्ध्या। [3]अशुद्ध होने से। [4]प्रवेश करूँगी। [5]नन्दन बन। [6]काटूँगी। [7]चन्दन। [8]चिता। [9]अपयश। [10]सिर का ऊपरी भाग। [11]घिस गया। [12]लीपते लीपते। [13]नाम। [14]सोते हुए। [15]आश्चर्यित होकर। [16]प्रभाव।

इस पर माता कहती है कि ऐ बन्ध्या स्त्री ! तुम्हारी डाली अशुद्ध है। चूँकि तुम्हें लड़का नहीं है अतः तुम अशुद्ध हो और इसी कारण से तुम्हारी डाली भी अशुद्ध है ॥ ३ ॥

तब स्त्री कहती है कि आज मैं नन्दन बन में जाकर चन्दन का वृक्ष काटूँगी और अपनी चिता बनाकर मैं उसमें जल मरूँगी। इस प्रकार ऐ माता ! आपको बहुत बड़ा अपयश मिलेगा ॥ ४ ॥

माता ने उत्तर दिया कि तुम नन्दन बन में मत जाओ, चन्दन के पेड़ मत काटो और अपनी चिता जलाकर मत जलो। तुम मुझे अपयश मत दो ॥ ५ ॥

ऐ बन्ध्या स्त्री ! तुम रो-रो कर मत मरो। मैं अपना पुत्र तुम्हें दूँगी ॥ ६ ॥

तब स्त्री ने कहा कि पुत्र-प्राप्ति के लिये ऐ माता ! पानी भरते-भरते मेरा सिर घिसकर चिकना हो गया। देवता का घर लीपते-लीपते मेरा हाथ घिस गया ॥ ७ ॥

तो भी ऐ माता ! पुत्र न होने के कारण मेरा बन्ध्या नाम नहीं गया अर्थात् लोग मुझे बन्ध्या कहते ही रहे ॥ ८ ॥

इस प्रार्थना से माता प्रसन्न हो गईं और उन्होंने तत्काल उस स्त्री को एक पुत्र-रत्न दिया। इस अलौकिक बात को देखकर देवता और मुनि आश्चर्यित हो उठे और उन्होंने माता देवी से पूछा कि किस अलौकिक चरित्र के कारण इस बन्ध्या स्त्री के घर बालक पैदा हुआ है ॥ ९ ॥

तब माता ने उत्तर दिया कि आप लोग आश्चर्यित क्यों हो रहे हैं। माता देवी के चरित्र अथवा प्रभाव के कारण ही इस बन्ध्या स्त्री को पुत्र-रत्न पैदा हुआ है ॥ १० ॥

इस गीत में किसी बन्ध्या स्त्री की दुर्दशा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया गया है। घर की स्त्रियाँ तो उसे बन्ध्या कहकर पुकारती हैं बल्कि माता देवी जैसी देवता भी उसे अशुद्ध तथा अछूत समझती हैं और उसकी डाली स्वीकार नहीं करती। अन्त में वह स्त्री आत्महत्या करने के लिये तैयार हो जाती है। पुत्र-प्राप्ति के लिये उसकी कठोर तपस्या अत्यन्त मर्मस्पर्शी है।

अपने वन्ध्या नाम को दूर करने के लिये उसका चित्त अत्यन्त व्याकुल है जो स्वाभाविक ही है।

सन्दर्भ—चेचक से पीड़ित बालक को नीरोग करने के लिये शीतला देवी से माता की प्रार्थना

(१६४)

मइया दाया ना करीं। टेक—
कहाँवा[1] उपजेला मइया के झालरी[2] विरवा ए मइया।
काहाँवा उपजेला बाँगाला[3] पान; मइया दाया ना करीं ॥१॥
कुरुखेते[4] उपजेला मइया के झालरी विरवा ए मइया।
मलिये वगीये उपजेला[5] बाँगाला पान ॥२॥ मइया दाया०
कइसे पटइवों[6] तोर झालरि विरवा ए मइया।
कइसे पटइवों बाँगाला पान ॥३॥ मइया दाया०
पनिये पटइवों मइया के झालरि विरवा।
दुधवे पटइवों बाँगाला पान ॥४॥ मइया दाया०
रूपे छुड़िया[7] कटइवों मइया झालरि विरवा।
सोने छुड़िया कटइवों बाँगाला पान ॥५॥ मइया दाया०
केई मोरा खइहें मइया झालरि विरवा।
केई मोरा खइहें बाँगाला पान ॥६॥ मइया दाया०
बचवा[8] ने खइहें मइया झालरि विरवा हो।
सीतली[9] मइया खइहें[10] बाँगाला पान ॥७॥ मइया दाया०

कोई भक्त स्त्री माता देवी से प्रार्थना करती हुई कहती है कि झालरी पौधा और पान कहाँ उत्पन्न होता है ॥ १ ॥

माता देवी उत्तर देती हैं कि कुरुक्षेत्र में झालरि विरवा उत्पन्न होता है और माली के वगीचे में पान पैदा होता है ॥ २ ॥

---

[1]कहाँ। [2]एक प्रकार का पौधा। [3]बंगाल का पान। [4]कुरुक्षेत्र। [5]उपजता है। [6]सीचूँगी। [7]चाकू। [8]लड़का। [9]शीतला। [10]खायेंगी।

ऐ माता ! मैं इस पौधे और पानी को कैसे सींचूँगी। माता ने कहा कि पानी से इस पौधे को सींचना और दूध से इस पान को सींचना ॥३।४॥

ऐ माता ! मैं चाँदी के चाकू से इस पौधे को काटूँगी और सोने के चाकू से इस पान को काटूँगी। लेकिन इस पौधे तथा पान को कौन खायेगा ॥ ५ । ६ ॥

फिर वह स्त्री स्वतः उत्तर देती है कि मेरा लड़का इस पौधे को खायेगा और शीतला माताजी इस पान को खायेंगी ॥ ७ ॥

सन्दर्भ—वन्ध्या स्त्री का मार्मिक दुःख तथा शीतला की कृपा से पुत्र-प्राप्ति

(१६५)

ससुरा के रूसलि[1] तिरिया; आरे नइहर चलले जाले हो।
आरे ताहि बीचे सीतली[2] हो मइया; खेलसु मन्दिलवा में हो ॥१॥
किया[3] तोरे आहो ए तिरिया; सासु दुःख दिहली हो।
किया तोरे आहो ए तिरिया; सामी गइलें बिदेसवा हो ॥२॥
आरे कवना करनवे ए तिरिया; नयेना ढरे लोरवा[4] हो ॥३॥
नाहीं मोरा आहो ए मइया; सासु दुःखवा दिहली हो।
नाहीं मोरा आहो ए मइया; सामी[5] गइलें बिदेसवा हो ॥४॥
आरे कोखिया[6] कारनवे[7] ए मइया; हम बउरइनी[8] हो।
आरे लिरवे[9] ढरत नयेनवा; रहतियो[10] ना सूझेला हो ॥५॥
बालाकावा हम देबों ए तिरिया; आरे गोदवा भरि देबों हो।
आरे हमरा के आहो ए तिरिया; किया तू चढ़इबु[11] हो ॥६॥
आरे हमरा के पूजवा ऐ तिरिया; किया तू चढ़इबु हो ॥७॥
बालाका जाहु देबू[12] ए मइया; आरे गोदवा भरि देबू हो।
आरे तोहरा के आहो ए मइया; जइया[13] से पूजबि हो ॥८॥

---

[1]क्रुध। [2]शीतला माता। [3]क्या। [4]आँसू। [5]स्वामी। [6]कोख। [7]कारण [8]बावली। [9]आँसू। [10]रास्ता। [11]चढ़ाओगी। [12]दोगी। [13]जई। [14]पूजूँगा।

ससुराल से कोई स्त्री क्रुद्ध होकर अपने मायके चली आ रही थी। इसी बीच में उसने शीतला देवी का मन्दिर देखा जिसमें माता देवी खेल रही थीं ॥ १ ॥

माता देवी ने उस स्त्री से पूछा कि क्या तुमको सास ने दुःख दिया है अथवा तुम्हारा स्वामी (पति) परदेश चला गया है ॥ २ ॥

माता ने पूछा ऐ स्त्री! किस कारण तुम्हारी आँखों से आँसू गिर रहे हैं ॥३॥

स्त्री ने उत्तर दिया कि ऐ माता! न तो मेरी सास ने मुझे दुःख दिया और न मेरा पति ही परदेश गया है ॥ ४ ॥

ऐ माता! पुत्र न होने के कारण से ही मैं बावली हो रही हूँ। मेरी आँखों से आँसू गिर रहे हैं और इस कारण मुझे रास्ता भी नहीं सूझ रहा है ॥ ५ ॥

तब माता देवी ने उसके दुःख से द्रवित होकर कहा कि ऐ स्त्री! मैं तुम्हें पुत्र-रत्न देकर तुम्हारी गोद भर दूँगी। परन्तु तुम मुझे क्या चढ़ाओगी और मुझे क्या पूजा दोगी ॥ ६ । ७ ॥

स्त्री ने कहा कि ऐ माता यदि आप मुझे पुत्र देंगी तो मेरी गोदी भर जायेगी और ऐ माता! मैं तुम्हें भीगे हुए चने से पूजूँगी ॥ ८ ॥

इस गीत में पुत्र-विहीन स्त्री की दुर्दशा का पुनः बहुत ही करुणा-जनक चित्र खींचा गया है। पुत्र न होने से इस स्त्री की आँखों से आँसुओं की झड़ी लगी हुई है। कितना कारुणिक दृश्य है। वास्तव में हिन्दू समाज में स्त्री का वन्ध्या होना एक अभिशाप है। इसीलिये यह स्त्री माता देवी की प्रार्थना करती है और अन्त में पुत्र-रत्न प्राप्त कर प्रसन्न होती है।

---

१०. झूमर

झूमर उन मिश्रित गीतों को कहते हैं जो विभिन्न अवसरों पर गाये जाते हैं। कभी तो ये यज्ञोपवीत के अवसर पर सुनाई पड़ते हैं और कभी विवाह के अवसर पर गाये जाते हैं। इसीलिये इनको जनेऊ तथा विवाह के गीतों से मैंने पृथक् कर दिया है। विषय की दृष्टि से विचार करने पर यद्यपि ये विवाह के गीतों के अन्तर्गत आ सकते हैं परन्तु इन गीतों में अन्य विषयों का भी मिश्रण होने के कारण विवाह के अन्तर्गत इन्हें रखना मैंने उचित नहीं समझा।

झूमर के गीतों में संयोग तथा वियोग दोनों प्रकार के शृङ्गार का वर्णन पाया जाता है। कहीं पर पति के साथ भोग-विलास करने का वर्णन पाया जाता है तो कहीं पर वियोग के कारण विरह-विधुरा स्त्री का प्रलाप पाषाण-हृदय को भी पिघला देता है। पति के परदेश जाते समय एक स्त्री का अपने पति से निवेदन कितना मर्मस्पर्शी है।

"पियवा जे चलेला उतरि बनिजरिया, कि केई रे छइहें ना।
मोरा उजड़ल बँगलवा, कि केई रे छइहें ना॥"

जहाँ पर वियोग की विषाद-रेखा नहीं है वहाँ पर बड़े ही मनोरंजक भाव देखने को मिलते हैं। अपनी नाक की झूलनी के भूल जाने पर कोई स्त्री कहती है कि:—

"ना जानो यार झूलनी मोरा काहाँ गिरा।
पनिया भरन जाऊँ राजा ना जानो;
वहाँ गिरा न जानो, यहाँ गिरा ना जानो॥"

कहीं पर संयोग और वियोग के पचड़े को छोड़कर हम किसी बाज़ार का रोचक वर्णन इन गीतों में पाते हैं। जैसे—

"कदम बजार में क्या क्या बिकतु है,
एक निबुआ, एक अनार दिल जनिया।

काई करन को निबुआ विकतु है,
काई करन को अनार दिल जनिया।'

यहाँ पर कुछ चुने हुए झूमर पाठकों के सन्मुख प्रस्तुत किये जाते हैं—

सन्दर्भ—परदेश जाते हुए पति से स्त्री की प्रार्थना तथा दुष्ट देवर की निन्दा

(१६६)

पियवा जे चलेला उतर बनिजरिया,[1] कि केई रे छइहें ना।
मोरा उजड़ल बँगलवा, कि केई रे छइहें[2] ना ॥१॥ टेक॰
घरवा त बाड़ी धनी छोटका रे भइया; कि उहे छइहें ना।
तोरा उजड़ल बँगलवा, कि उहे छइहें ना ॥२॥
देवरा के छावल मन ही ना भावे,[3] कि तीलि[4] तीलि ना।
देवर बूना[5] टपकावे, कि तीलि तीलि ना ॥३॥
जब तुहुँ ए पिया जइब विदेसवा, कि केई रे सोइहें ना।
मोरा डासलि[6] सेजिया, कि केई रे सोइहें ना ॥४॥
घरवा त बाड़े धनी छोटका देवरवा, कि उहे रे सोइहें ना।
तोरी डासलि सेजिया, कि उहे रे सोइहें ना ॥५॥
देवरा के सोवला मन ही ना भावे कि तीलि तीलि ना।
देवरा डाँड़वा[7] चलावे, कि तीलि तीलि ना ॥६॥
जब तुहुँ ए पिया जइब बिदेसवा कि केई रे चभिहें[8] ना।
मोरा लावल बिरवा, कि केई रे चभिहें ना ॥७॥
धारावा त बाड़े धनी छोटका देवरवा, कि उहे[9] रे चभिहें ना।
तोरा लावल बिरवा, कि उहे रे चभिहें ना ॥८॥
देवरा के चाभल मन ही ना भावे, कि तीलि तीलि ना।
देवर मुसुकि[10] चलावे, कि तीलि तीलि ना ॥९॥

---

[1]बनजारा, व्यापार करने के लिये। [2]मरम्मत करेगा। [3]अच्छा लगता है। [4]बारबार। [5]बूँद। [6]बिछायी हुई। [7]कमर। [8]खायेगा। [9]वही। [10]मुस्करा करके।

किसी स्त्री का पति परदेश जा रहा है। तब वह स्त्री कह रही है कि पति उत्तर देश को वाणिज्य कर्म अर्थात् व्यापार करने को जा रहा है। मेरे उजड़े हुए बँगले की कौन मरम्मत करायेगा ॥ १ ॥

तब पति ने उत्तर दिया कि घर में मेरा छोटा भाई है। वही तुम्हारे उजड़े हुए बँगले की मरम्मत करा देगा ॥ २ ॥

स्त्री ने कहा कि देवर के द्वारा की गई मरम्मत मुझे अच्छी नहीं लगती क्योंकि बँगला मरम्मत करने पर भी चूता रहता है और उससे बूँदे गिरा करती हैं ॥ ३ ॥

स्त्री ने फिर पूछा कि जब तुम विदेश जाओगे तब मेरे पास कौन सोवेगा। मेरी बिछाई हुई सेज को कौन सुशोभित करेगा। पति ने कहा कि घर में तुम्हारा देवर है वही तुम्हारे साथ सोयेगा ॥ ४ । ५ ॥

इस पर स्त्री ने उत्तर दिया कि देवर के साथ सोना मुझे अच्छा नहीं लगता। वह मेरे मन को नहीं भाता। क्योंकि वह सुरत के अवसर पर बार बार अपने डाँड़ (कमर) को चलाया करता है ॥ ६ ॥

स्त्री ने फिर पूछा कि जब तुम विदेश जाओगे तब मेरे द्वारा लगाये गये पान के बीड़े को कौन खायेगा। पुरुष ने कहा कि घर में तुम्हारा छोटा देवर है। वही उस पान को खायेगा ॥ ७ । ८ ॥

स्त्री ने उत्तर दिया कि देवर का पान खाना मुझे अच्छा नहीं मालूम होता। क्योंकि वह बार-बार मुझे देख कर मुसकराता रहता है ॥ ६ ॥

सन्दर्भ—पति के धन कमाने पर स्त्री का शृङ्गार तथा धन न रहने पर शृङ्गार का अभाव

(१६७)

जब रे सोनरवा के लगली नोकरिया; उठावे लगले कोठा बँगलवा रे।
सियावे लगले चोली बन्द अँगिया; गढ़ावे लगले बाजुबन अँगिया रे॥१॥
जब रे सोनरवा के छुटली नोकरिया; ढाहाए लगले कोठा बाँगाला रे।
बेचाये लगले चोली बन अँगिया रे; तुरावे लगले बाजुबन तिलरी रे॥२॥

जब सोनार की नौकरी लग गई तब वह कोठा और बँगला उठाने लगा। अपनी स्त्री के लिये चोली सिलाने लगा और बाजूबन्द गढ़ाने लगा ॥ १ ॥

जब सोनार की नौकरी छूट गई तब वह गरीबी के मारे कोठा और बँगला ढहाने लगा, और उसने चोली बेंच दी तथा हाथ का बाजू बन्द तुड़वा दिया ॥ २ ॥

सन्दर्भ—पत्नी की पति से सुन्दर घर बनाने की प्रार्थना

(१६८)

चार महीना जाड़ाकाल पड़तु है; थर थर काँपे करेजवा।
बलमु[1] जड़ा कोठा उठा दो जी ॥१॥
चार महीना गरमी पड़तु है; टप टप चुवेला[2] पसेनवा।
बलमु जड़ा[3] पंखा डोला[4] दो जी ॥२॥
चार महीना बरसात पड़तु है; टप टप चुवेला बुनवा[5]।
बलमु जड़ा बंगला छवादो[6] जी ॥३॥

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि चार महीना सख्त जाड़ा पड़ता है और मेरा कलेजा थर-थर काँपता है। अतएव ऐ पति! मेरे लिये एक कोठा उठा दो जिसमें मैं सुख-पूर्वक रह सकूँ ॥ १ ॥

वह फिर कहती है कि चार महीना गर्मी पड़ती है और टप-टप पसीना चूता रहता है। ऐ पति! जरा पंखा झला करो ॥ २ ॥

चार महीने तक वर्षा होती रहती है। वर्षा के कारण पानी की बूँदें गिरती रहती हैं। घर में रहने का स्थान नहीं है अतएव ऐ पति! मेरे बँगले की मरम्मत करवा दो जिससे सुख पूर्वक रहूँ ॥ ३ ॥

---

[1]पति। [2]चूता है, गिरता है। [3]ज़रा। [4]हिलाना। [5]पानी की बूँदें। [6]मरम्मत करा दो ॥

सन्दर्भ—प्रोषितपतिका का विरह वर्णन

(१६६)

आकड़ि फोरि फोरि महला उठवलों; कंचन के दरवाजा हो ।
नाहिं आवे नाहिं आवे; नहिं आवे सहिजादा[१] हो ॥१॥
आपु ना आवे पिया चिठियो[२] ना भेजे; मोरे जियरा[३] ललचावे हो।
नाहीं आवे पक्की सड़क पर घोड़ा; दउरावे[४] पगड़ी के पेचवा हो ॥२॥
नाहीं आवे सुरुकी चिलमिया[५] तलफी; तमकुवा[६] गुड़गुड़ावे हो ।
नाहिं आवे नाहिं आवे; नाहिं आवे सहजादा हो ॥३॥
लँवग चुनि चुनि सेज डसायों;[७] ओपर फूल छितरावे हो ।
सेजियो ना सोवेला, मुखहुँ ना बोले; मोर जियरा ललचावे हो ॥४॥
नाहिं आवे नाहिं आवे; नाहिं आवे सहजादा हो ॥

किसी स्त्री का पति परदेस चला गया है। उसके वियोग में वह कह रही है मैंने बड़े परिश्रम से महल उठाया। उसमें सोने का दरवाजा लगाया। परन्तु फिर भी मेरा पति नहीं आता है॥ १ ॥

न तो वह स्वयं आता है और न कोई चिट्ठी ही लिखता है। मेरे चित्त को वह ललचाता है। पक्की सड़क न होने से इस गाँव तक घोड़ा भी नहीं आ सकता (जिस पर चढ़ कर मेरा पति आ सके)। न मालूम कहाँ वह घूमता फिरता होगा॥ २ ॥

वह यहाँ नहीं आ रहा है। कहीं पर वह गुड़-गुड़ करता हुआ तम्बाकू पी रहा होगा। वह कितना हू बुलाने पर नहीं आता॥ ३ ॥

स्त्री कहती है कि मैंने लवँग के फूलों को चुन-चुन कर यह सेज डसाया है और उन फूलों को इस सेज पर बिखरा दिया है। न तो मेरे सेज पर सोता है और न मुख से बोलता है॥ ४ ॥

---

[१]शाहजादा (कुँवर)। [२]पत्र। [३]हृदय। [४]दौड़ाता है। [५]चिलम। [६]तम्बाकू। [७]बिछाया।

सन्दर्भ—सौत को लेकर परदेश से लौटे हुए पति को पत्नी का उलाहना

(१७०)

आरे बरहो बरिस पर आना; पींजड़ा लिये साथ ॥१॥
दिल का दरद ना जाना—टेक ।
आरे पिजड़ा खुटिन[1] पर टाँगो; जहाँ रहो तहाँ साथ ॥२॥
दिल का दरद०
आरे बरहो बरिस पर आना; गजरा लिये साथ ॥३॥
दिल का दरद०
आरे यह गजरा[2] खुटिन पर टाँगो; जहाँ रहो तहाँ साथ ॥४॥
दिल का दरद०
आरे बरहो बरिस पर आना; सवतिनि[3] लिये साथ ॥५॥
दिल का दरद०
आरे सवती महल बैठाया; जहाँ रहो वहाँ साथ ॥६॥
दिल का दरद ना जाना ।

कोई स्त्री अपने परदेस से आये हुए पति से कह रही है कि तुम अपने साथ पिंजड़ा लेकर आज बारह वर्ष के बाद आ रहे हो । तुम मेरे दिल के दर्द को नहीं जानते हो ॥ १ ॥

उस पिंजड़े को खूँटी पर टाँग दिया है और जहाँ जाते हो साथ लिये फिरते हो ॥ २ ॥

तुम बारह वर्ष के बाद आये और अपने साथ सुन्दर माला लेते आये हो ॥ ३ ॥

इस माला को खूँटी पर टाँग दिया है और जहाँ जाते हो साथ लिये फिरते हो ॥ ४ ॥

---

[1]खूँटी । [2]माला । [3]सपत्नी ।

तुम तो बारह वर्ष के बाद आये और उस पर भी अपने साथ मेरी एक सौत लेते आये हो तुम मेरे दिल के दर्द को बिलकुल नहीं जानते हो ॥ ५ ॥

तुमने सौत को महल में रख दिया है और जहाँ जाते हो उसे अपने साथ लिये फिरते हो इस प्रकार तुम मेरे दिल के दर्द को बिल्कुल ही नहीं जानते हो ॥ ६ ॥

इस गीत में कितनी करुणा भरी हुई है। करुणरस की धारा से यह आप्लावित हो रहा है। पति का स्त्री के जीते हुए सौत को लाना उसकी हृदय-हीनता का सूचक है। इसके लिये स्त्री का उपालम्भ कितना मधुर तथा व्यङ्ग्य पूर्ण है।

सन्दर्भ—एक सखी की उक्ति दूसरी भाग्यशालिनी सखी के प्रति

(१७१)

गोरी के ससुर कचहरी में झलकेला; जइसन डिपिटी दरोगा।
गोरिया तोरे नैना नींद भये मतवाले ॥ टेक ॥
गोरी के भसुर कचहरी में चमकेला, जइसन वलिस्टर दरोगा।
गोरी तोरे नैना० ॥२॥
गोरी के देवर शहरिया में झलकेला; जइसन कलट्टर दरोगा।
गोरिया तोरे नैना नींद भये मतवाले ॥ ३ ॥

एक सखी किसी से कह रही है कि इस स्त्री का ससुर कचहरी में काम करते हुए ऐसा सुशोभित होता है जैसे डिप्टी और पुलिस के दारोगा अच्छे लगते हैं। ऐ गोरी! तेरी आँखें नींद के कारण मतवाली हो रही हैं ॥ १ ॥

इस गोरी का भसुर बैरिस्टर और दारोगा की तरह और इसका देवर शहर में ऐसा अच्छा लगता है जैसे कलक्टर और दारोगा अच्छा लगते हैं ॥ २ । ३ ॥

सन्दर्भ—अन्यत्र दुःख पूर्वक दिन काटकर भी बुरे शहर में न रहने का एक सखी का दूसरी सखी को उपदेश

(१७२)

बदनामी सहरिया[1] में ना रहना ॥ टेक ॥
पुड़ी मिठाई के गम[2] मत करना; सुखली सतुइया[3] गुजर करना ।
बदनामी०
साला, दोसाला को गम मत करना; लुगरी[4] फटहिया गुजर करना ।
बदनामी०
कोठा अमारी के गम मत करना; टुटही मेड़ुकिया[5] गुजर करना ।
बदनामी सहरिया०

जिस शहर में रहने से बदनामी हो उसमें नहीं रहना चाहिये । पूड़ी और मिठाई की चिन्ता नहीं करनी चाहिये बल्कि सत्तू खाकर ही अपना गुजर कर लेना चाहिये ॥ १ ॥

शाल तथा दोशाले की परवाह न कर फटे हुए कपड़े पहिन कर समय बिताना अच्छा है परन्तु बदनामी शहर में नहीं रहना चाहिये ॥ २ ॥

कोठा तथा सुन्दर मकान में रहने की चिन्ता नहीं करनी चाहिये बल्कि टूटे हुए छोटे मकान में ही अपना गुजर कर लेना चाहिये लेकिन जिस शहर में रहने से बदनामी हो वहाँ कदापि न रहे ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—झूलनी का कहीं गिर जाना । स्त्री की उक्ति पति के प्रति

(१७३)

ना जाने यार झुलनी[6] मोरा काहाँ गिरा ॥ टेक ॥
पनिया[7] भरन जाऊँ, राजा ना जानो ।
यहाँ गिरा ना जानो, वहाँ गिरा ना जानो ॥
ना जानो यार डोरिये[8] में लिपट गया ॥ १ ॥

---

[1]शहर । [2]चिन्ता । [3]सत्तू । [4]फटा कपड़ा । [5]टूटा मकान । [6]नाक का गहना । [7]पानी । [8]रस्सी ।

रोटिया पोवन[1] जाऊँ, राजा ना जानो।
यहाँ गिरा ना जानो; वहाँ गिरा ना जानो ॥
ना जानो यार बेलने[2] में लिपट गया ॥ २ ॥
सेजिया सोवे जाऊँ, राजा ना जानो।
यहाँ गिरा ना जानो, वहाँ गिरा ना जानो ॥
ना जानो यार सेजिया[3] में लिपट गया ॥ ३ ॥
ना जानो यार झुलनी मोरा काहाँ गिरा ॥

किसी स्त्री की नाक की झुलनी खो गयी है। इस पर वह कह रही है कि मैं नही जानती कि मेरी झुलनी कहाँ गिर गई। वह कहती है कि ऐ पति! मैं पानी भरने के लिये कुंवे पर गई थी। शायद मेरी झुलनी रस्सी में लिपट कर गिर गई ॥ १ ॥

ऐ पति! मैं रोटी पकाने के लिये गई थी। मुझे यह नहीं मालूम कि मेरी झुलनी कहाँ पर गिर पड़ी। शायद वह बेलने में लिपट गई हो ॥ २ ॥

ऐ पति! मैं सेज पर सोने के लिये गई थी। शायद मेरी झुलनी चारपाई के बिस्तर में कहीं लिपट गई है। अतः मुझे मालूम नहीं कि मेरी झुलनी कहाँ खो गई है ॥ ३ ॥

इस गीत में जो मिठास है उसे इस जड़ लेखनी द्वारा व्यक्त करना कठिन है। इसकी मिठास का अनुभव तभी हो जब दो-चार स्त्रियाँ कोरस में इसे गावें।

सन्दर्भ—किसी कुलटा का कुकर्म वर्णन

(१७४)

माह सड़क पर बाँगाला[4], चढ़ि बइठे नवाब।
कइसे के मारो नजरिया ॥ टेक ॥

---

[1]रोटी बनाना। [2]रोटी बेलने का लम्बा, चिकना गोला काठ-खण्ड। [3]सेज (चारपाई)। [4]बँगला।

बैरी सब लोग, बैरी सब लोग, कइसे के मारो नजरिया।
बारह बने की अँगिया, बन[1] लागे हजार ॥ १ ॥
कइसे के मारो नजरिया ॥
सासु का अइली जड़इया[2]; ननदी का बोखार[3]।
सइयाँ का होला रतवन्ही[4]; दिन सूझे न राति ॥ २ ॥
कइसे के मारो नजरिया ॥
कथी[5] से झाड़ों जड़इया; कथी से झाड़ों बोखार।
कथी से झाड़ों रतवन्ही; दिन सूझे न राति ॥ ३ ॥
कइसे के मारो नजरिया ॥
झाड़ू से झारों जड़इया, बढ़नी से बुखार।
योवन[6] से झारों रतवन्ही; दिन सूझे न राति ॥ ४ ॥
कइसे के मारो नजरिया ॥

कोई स्त्री कहती है कि सड़क के ठीक ऊपर नवाब साहब का बँगला है जिसमें वह बैठा रहता है अतः मैं अपने कटाक्ष से किसी को कैसे मारूँ ॥

मेरे कपड़े में हज़ारों बन्द लगे हुए हैं। सब लोग मेरे वैरी हो गये हैं, अतः नज़र कैसे चलाऊँ ॥ १ ॥

मेरी सास को जाड़ा लग गया है—जड़ैया आ रही है। ननद को बुखार आ रहा है। पति को आँख से दिखाई नहीं पड़ता अतः दिन, रात में कुछ भी नहीं सूझता ॥ २ ॥

मैं जड़ैया किस चीज़ से झाड़ूँ। बुखार को कैसे उतारूँ। किस चीज़ से अपने पति की रतौंधी दूर करूँ क्योंकि उसे दिन तथा रात में कुछ भी नहीं सूझता है ॥३॥

फिर कुढ़ कर वह कहती है कि मैं सास की जूड़ी तथा ननद के बुखार को झाड़ू से उतारूँगी। अपने स्तनों के द्वारा पति की रतौंधी (अन्धेपन) को दूर करूँगी ॥ ४ ॥

---

[1]बन्द। [2]जूड़ी। [3]बुखार। [4]रात को कम दिखाई पड़ने वाला रोग। [5]किस वस्तु से। [6]जवानी या स्तन।

सन्दर्भ—मार्ग में जाते समय पत्नी की उक्ति पति के प्रति

(१७५)

रसिया[1] गाड़ी चलत मोरा भूख लगतु[2] है, पेड़ा है मथुरा को।
रसिया गाड़ी चलत मोरा प्यास लगतु है; गडुवा[3] है गंगा को ॥ १ ॥
रसिया गाड़ी चलत मोरा ओठ सुखतु है; ककड़ी है आगरे को।
रसिया गाड़ी चलत मोरा नींद लगतु है; सेज[4] है पटने को ॥ २ ॥

कोई स्त्री कह रही है कि ऐ प्रेमी पति ! गाड़ी चलते समय मुझे भूख लग रही है। तब पति कह रहा है कि मथुरा का पेड़ा रक्खा है, उसे खाओ। फिर स्त्री कहती है कि मुझे प्यास लगती है तब पति उसे गंगाजल पीने को देता है ॥ १ ॥

पत्नी के यह कहने पर कि मेरा ओठ सूख रहा है पति उसे आगरे की ककड़ी खाने को देता है। जब स्त्री नींद लगने की बात कहती है तब पति कहता है कि पटना से पलँग मँगा कर मैंने रक्खा है उस पर सो जाओ ॥ २ ॥

इस गीत में भौगोलिक महत्त्व की एक वस्तु है और वह है अनेक शहरों में होने वाली प्रसिद्ध चीज़ों का नाम। पति ने मथुरा से पेड़ा, आगरा से ककड़ी, पटना से पलंग तथा गंगाजल मँगाकर रक्खा है। आज भी ये उपर्युक्त स्थान इन वस्तुओं के लिये प्रसिद्ध हैं। मथुरा के पेड़े को कौन नहीं जानता ? इनकी प्रसिद्धि दूर तक फैली हुई है। आगरे की ककड़ी पतली तथा मुलायम होने के लिये बहुत दिनों से प्रसिद्ध है। आज से कई सौ वर्ष पहिले होने वाले उर्दू के एक कवि ने निम्नांकित पंक्तियों में आगरे की ककड़ी का क्या ही सुन्दर वर्णन किया है।

"हैं कैसी प्यारी प्यारी ये आगरे की ककड़ी—टेक
लैला की अँगुलिया हैं, मजनूँ की पसलियाँ है।
हैं कैसी प्यारी प्यारी, ये आगरे की ककड़ी ॥"

---

[1]प्रेमी। [2]लगता है। [3]जल। [4]पलंग।

सन्दर्भ—स्त्री के शरीर तथा लावण्य का वर्णन पति की उक्ति पत्नी के प्रति

(१७६)

तुम्हें कोई ले ना जाई—टेक
केसिया[1] तो है तोरे रेसम के लरछा[2], तेलवा के वड़ी अतिवार[3]।
आँख तो है तोरे आम के कतरा, सुरुमा के वड़ी अतिवार ॥ १ ॥
तुम्हें कोई०
दाँत तो हैं तोरे अनार के दाना, मीसिया[4] के वड़ी अतिवार।
जोवन तो है तोरे सुइया नखुनवा[5], चोलिया के वड़ी अतिवार ॥ २ ॥
तुम्हें कोई ले ना०
डाँड़[6] तो है तोरे सींकी[7] अइसन[8] पातर[9], लाहाँगा[10] के वड़ी अतिवार
तुम्हें कोई ले ना जाई ॥ ३ ॥

कोई पति अपनी प्रेमिका से कह रहा है कि मुझे डर है कि कोई तुम्हारे सौन्दर्य पर मुग्ध होकर ले कर न चला जाय। ऐ प्रिये! तुम्हारे बाल तो रेशम के सूत के समान लम्बे हैं जिनमें तेल लगाने पर बड़ा सुन्दर मालूम होता है। तुम्हारी आँख आम के टुकड़े के समान है जिनमें सुरमा बड़ा अच्छा लगता है ॥ १ ॥

तुम्हारे दाँत अनार के दाने के समान हैं जिनमें काली मिस्सी अच्छी लगती है। तुम्हारे स्तन सुई के समान तेज तथा नोकीले हैं जो चोली पहिनने पर सुन्दर लगते हैं ॥ २ ॥

ऐ प्रिये! तुम्हारी कमर इतनी पतली है जितनी सींक जो लहँगा पहिनने पर अत्यधिक सुशोभित होती है। इन्हीं सुन्दरताओं के कारण मुझे डर है कि कोई तुम्हें लेकर भाग न जाय ॥ ३ ॥

---

[1]बाल। [2]लम्बा सूत। [3]अच्छा लगना। [4]दाँत में लगाने का काला पाउडर। [5]नाखून, तीक्ष्ण। [6]कमर। [7]सरकण्डा। [8]ऐसा। [9]पतला। [10]लहँगा।

सन्दर्भ—पति-पत्नी का कलह वर्णन

(१७७)

सँवलिया से हम से नाहीं बनी रे। टेक—
बोलाव सोनरा के गढ़ाव ककना रे।
बोलाव दरजी के सियाव चोलिया रे॥ १॥ सँवलिया०
बोलाव मलिया के गुहाव गजला रे।
बोलाव देवरा के लगाव बीड़वा रे॥ २॥ सँवलिया०
बोलाव ननदी के डँड़िया फानाव रे
हम जाइब नइहरवा आजु रे॥ ३॥ सँवलिया०

स्त्री कहती है कि पति से मुझ से नहीं पटती है। दरजी को बुला कर मैं अपनी चोली सिलाऊँगी तथा सोनार को बुला कर ककना बनवाऊँगी॥ १॥

माली को बुलाकर माला तथा देवर को बुलाकर पान का बीड़ा बनाऊँगी॥ २॥

ननद को बुलाकर पालकी में बैठ जाऊँगी क्योंकि आज मैं अपने मायके जाऊँगी॥ ३॥

सन्दर्भ—कुलटा का चरित्र-चित्रण

(१७८)

बेर बेर बरजों[1] यार निबुआ[2] जनि लगाव रे। टेक—
नीबू चार गिरे यार मोरे अँगनइया[3]।
निबुआ के डाढ़[4] यार मोरे अँगनइया॥ १॥
बेर बेर बरजों यार मोरे अँगनइया।
बेर बेर बरजों यार कुँइयाँ[5] जनि खनाव[6] रे।
घरिल[7] चार गिरे यार मोरे अँगनइया॥ २॥
बेर बेर बरजों यार पोखरा[8] जनि खोनाव रे।
धोती चार गिरे यार, मोरे अँगनइया॥ ३॥

---

[1]मना किया। [2]नीबू। [3]आँगन में। [4]शाखा। [5]कुँआ। [6]खनाना। [7]घड़ा। [8]तालाब।

वेर वेर बरजों यार, बहिन जनि बोलाव रे।
गुण्डा चार आवें यार मोरे अँगनिया ॥ ४ ॥

अर्थ स्पष्ट है। अन्तिम दो पंक्तियों में पत्नी की परिहास-प्रियता देखने योग्य है।

सन्दर्भ—प्रेमी-प्रेमिका का वार्तालाप

(१७९)

तोरे कारन बदनाम रे सँवलिया—टेक
जैसे कचहरी में कलम चलतु है।
वैसे चलवि तोरा साथ रे सँवलिया ॥१॥
जैसे सड़क पर एक्का चलतु है।
वैसे चलवि तोरा साथ रे सँवलिया[1] ॥२॥
जैसे कुँवन[2] में घड़ा डुबतु है।
वैसे डुबवि[3] तोरे साथ रे सँवलिया ॥३॥
तोरे कारन बदनाम रे सँवालिया ॥

कोई प्रेमिका अपने प्रेमी से कह रही है कि मैं तुम्हारे कारण ही इतनी बदनाम हो गई हूँ।

जिस प्रकार कचहरी में कलम सदा चलती रहती है अर्थात् हाथ में लगी हुई चलती है उसी प्रकार मैं तुम्हारे संग में लगकर साथ-साथ चलूँगी ॥ १ ॥

जिस प्रकार सड़क पर इक्का चलता है उसी प्रकार मैं तुम्हारे साथ चलूँगी ॥२॥

जिस प्रकार कुँए में घड़ा डूब जाता है उसी प्रकार मैं तुममें डूब जाऊँगी अर्थात् तुममें तल्लीन हो जाऊँगी ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—किसी कुलटा का कामुक से निवेदन

(१८०)

ए राजा पइयाँ परूँ। टेक
मुझे दे दो एक सुन्दर रूमाल, ए राजा पइयाँ परूँ।

---

[1] प्रियतम। [2] कुआँ। [3] डूब जाऊँगी।

खाने को चाही राजा पूड़ी मिठाई, पिये को चाही सराब ॥१॥
ए राजा पइयाँ परूँ।
सोने को चाही राजा लाली पलँगिया, उस पर सुन्दर जवान।
मुझे दे दो एक सुन्दर रूमाल, ए राजा पइयाँ परूँ ॥२॥

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि ऐ पति मैं तुम्हारे पैरों पर पड़ती हूँ। मुझे एक सुन्दर रूमाल दे दो। ऐ राजा मुझे खाने के लिये पूड़ी और मिठाई चाहिये और पीने के लिये शराब चाहिये ॥ १ ॥

मुझे सोने के लिये एक लाल पलँग चाहिये और उस पर मेरे साथ सोने के लिये तुम्हारे समान एक सुन्दर जवान चाहिये। मैं तेरे पाँव पड़ती हूँ। मेरी इस इच्छा की पूर्ति कर दो ॥ २ ॥

सन्दर्भ—पत्नी का पति से निवेदन

(१८१)

मोरे जाड़ा लागेला—टेक
गवना करवले, घर बइठवले, अपने चलेले परदेश।
जाड़ा लागेला महाराज जी, मोके बैदा[1] बोला[2] द ॥१॥
काहाँवा के हवे रे बैदा छोकड़ावा,[3] काहाँवा के हवे हकीम।
मोरे जाड़ा लागेला ॥२॥
कासी के हवे बैदा छोकरवा, दिल्ली के हवे[4] हकीम।
बैदा बोलादे महाराज जी, मोरे जाड़ा लागेला ॥३॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरा पति गवना करा करके और मुझे घर बैठा करके स्वयं परदेश चला गया है। वह रसोइया से कहती है कि मुझे जूड़ी बुखार आ रहा है। अतः कोई वैद्य अथवा हकीम बुला दो ॥ १ ॥

मालकिन के कहने पर महाराज ने वैद्य तथा हकीम को बुला दिया। तब वह स्त्री पूछती है कि यह नवयुवक वैद्य तथा हकीम कहाँ के रहने वाले हैं ॥२॥

[1]वैद्य। [2]बुला दो। [3]नवयुवक। [4]है।

महाराज ने उत्तर दिया कि वैद्य जी काशी के हैं और हकीम जी दिल्ली से बुलाये गये हैं ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—धन गर्विता स्त्री का पति से निवेदन

(१८२)

मैं राजा रानी की बेटी; कहो जुरबाना करा दो जी।
पक्की सड़क पर कंकड़ बिछा दो; उस पर चले मोटर गाड़ी ॥१॥
दिल्ली से खबरिया मँगा दो जी।
बाग लगा दो, बगइचा लगा दो; उस पर बैठा दो कोईलिया जी।
प्रेम की सबदिया सुना दो जी ॥२॥

मैं राजा तथा रानी की बेटी हूँ। मैं किसी पर जुर्माना करा सकती हूँ। ऐ पति! पक्की सड़क पर कंकड़ बिछा दो और उस पर मेरी मोटर गाड़ी चला दो। दिल्ली से नई नई खबरें मँगा दो ॥ १ ॥

ऐ पति! मेरे लिये बाग लगा दो तथा उस पर एक सुन्दर कोयल बैठाओ जिससे मैं उसकी प्रेम भरी मधुर आवाज़ सदा सुन सकूँ ॥ २ ॥

सन्दर्भ—किसी कुलटा का अपने रूप का वर्णन

(१८३)

मोरा गोरा बदन पर सब ललची[1]। टेक—
बगइचावा[2] में जाऊँ बगइच ललची।
बजरिया[3] में सब लोग ललची ॥ १ ॥
मोरा गोरा बदन०
राह चलत सब लोग ललची।
आँगन चलत तो देवरवा ललची ॥ २ ॥
मोरा गोरा बदन०
सेजिया पर जाऊँ तब सइयाँ ललची।
जब पान खाऊँ बलमुआँ[4] ललची ॥ ३ ॥
मोरा गोरा बदन पर सब ललची ॥

---

[1]लालच करना। [2]वाटिका। [3]बाजार। [4]प्रेमी पति।

कोई रूप गर्विता स्त्री कह रही है कि मेरे सुन्दर बदन को देखकर सब लोग लालच करते हैं। जब मैं बगीचा में जाती हूँ तब बगीचा का रक्षक मुझे देखकर लालायित होता है तथा बाजार में जाने पर सब लोग लालच करते हैं ॥ १ ॥

रास्ते में चलते समय सब लोग लालायित होते हैं तथा जब आँगन में घूमती हूँ तो दुष्ट देवर भी देख कर लालच करता है ॥ २ ॥

जब शय्या पर सोने के लिये जाती हूँ तब मेरा पति ललचता है और मेरे पान खाने पर बलमा मुझे पाने की इच्छा से लालायित रहता है ॥ ३ ॥

इस स्त्री का सौन्दर्य कितना अधिक है जिसे पाने के लिये सब लोग लालच करने लगते हैं।

सन्दर्भ—कन्या का ससुराल के कष्टों का वर्णन

(१८४)

नइहरवा में ठंडी बयार, ससुरवा मैं ना जाऊँ हो।
ससुरा में मिलेला जउवा[1] के रोटिया; नइहरवा में पूड़ी हजार ॥१॥
ससुरवा मैं ना जाऊँ हो।
ससुरा में मिलेला साग सतुइया[2]; नइहरवा में धाने[3] के भात।
नइहरवा में अजब बहार; ससुरवा मैं ना जाऊँ हो ॥ २ ॥
ससुरा में मिलेला फटही लुगरिया[4]; नइहरवा में सोरहो सिंगार।
नइहरवा हमेसा[5] बहार; ससुरवा मैं ना जाऊँ हो ॥ ३ ॥
ससुरा में मिलेला लात[6] अवरू मूका[7], नइहरवा में मीठी सी बात।
नइहरवा में भरल[8] उछाह[9], ससुरवा मैं ना जाऊँ हो ॥ ४ ॥

किसी स्त्री का विवाह एक गरीब घर में हो गया है। वह वहाँ के कष्टों का वर्णन करते हुए यह कहती है कि मैं अब अपनी ससुराल नहीं जाऊँगी

---

[1]जौ। [2]सत्तू। [3]चावल। [4]कपड़ा [5]सर्वदा। [6]पैर। [7]घूँसा। [8]भरा हुआ। [9]आनन्द।

क्योंकि मायके में ठण्डी हवा खाने को मिलती है परन्तु ससुराल में पर्दे में रहने के कारण हवा भी कभी शरीर में नहीं लगने पाती है ॥ १ ॥

मेरी ससुराल में जौ की सूखी रोटियाँ खाने को मिलती है परन्तु मायके में पूरी प्रचुर मात्रा में भोजन के लिये मिलती है। ससुराल में साग और सत्तू (भुने हुए चने का आटा) मिलता है परन्तु मायके में चावल का भात (जौ, सांवां आदि का नहीं) खाने को मिलता है, इस प्रकार मायके में अजब बहार रहती हैं ॥ २ ॥

ससुराल में पहिनने को फटा हुआ कपड़ा मिलता है परन्तु मायके में सोलहो शृंगार की वस्तुएँ उपलब्ध हैं। इस प्रकार मायके में सर्वदा बहार रहती है ॥ ३ ॥

ससुराल में ननद और सास सदा पैर और घूसे से मारती रहती हैं परन्तु मायके में सर्वदा मीठी-मीठी बातें सुनने को मिलती हैं। इस प्रकार मायके में सर्वदा आनन्द ही आनन्द रहता है। अतः अपनी ससुराल मैं अब कभी नहीं जाऊँगी ॥ ४ ॥

इस गीत में किसी स्त्री की दुःखी आत्मा पुकार रही है। स्त्री के द्वारा ससुराल का दिया गया वर्णन कितना दुःख-जनक है। जहाँ न खाने को अन्न मिलता है और न पहिनने को सुन्दर कपड़ा, ऐसे स्थान को न जाना उस स्त्री के लिये अत्यन्त स्वाभाविक ही है। उस पर भी सास तथा ननद का लात और घूँसा ऊपर से खाने को मिलता है। कितना दुःखी जीवन है !

सन्दर्भ—पति-पत्नी का मिलन

(१८५)

नदिया तक हरी जी साथे चलीं। टेक—
उस नदिया पर भूख लगतु है, घीव के लडुइया लेकर चलीं !
उस नदिया पर प्यास लगतु है, गडुआ के पानी लेकर चलीं ॥ १ ॥
नदिया तक हरी जी०

उस नदिया पर ओठ सुखतु है, पान के बीरा लेकर चलीं।
उस नदिया पर नींद लगतु है, तोसक तकिया लेकर चलीं ॥ २ ॥
नदिया तक हरी जी साथे चलीं।

इसका अर्थ अत्यन्त स्पष्ट है।

सन्दर्भ—पिता के घर से विदा होती हुई कन्या का पति से निवेदन

(१८६)

बलमुआ नइहरवा छोड़ा दिया रे। टेक
आमा छोड़ा दिया, बाबा छोड़ा दिया; चाचा छोड़ा दिया रे।
काका छोड़ा दिया, काकी छोड़ा दिया; भइया छोड़ा दिया रे ॥ १ ॥
बलमुआ नइहरवा०
भइया छोड़ा दिया, भऊजी छोड़ा दिया; सखिया छोड़ा दिया रे।
गाँव छोड़ा दिया, नगर छोड़ा दिया; सब कुछ छोड़ा दिया रे ॥ २ ॥
बलमुआ नइहरवा छोड़ा दिया रे ॥

जब किसी स्त्री का पति अपना गवना कराकर अपनी स्त्री के साथ जा रहा है तब वह स्त्री कह रही है कि मेरे पति ने मेरी माता, पिता, चाचा, काका, काकी तथा भाई से मेरा वियोग करा दिया ॥ १ ॥

उसने मुझे अपने भाई, भावज, सहेलियाँ, गाँव तथा नगर सब से पृथक् कर दिया क्योंकि वह आज मुझे अपने साथ लिये जा रहा है ॥ २ ॥

वास्तव में विवाह के बाद जब लड़की की बिदाई होती है तब लड़की को बड़ा ही दुःख मालूम होता है। अपने माता-पिता तथा सगे-संबंधियों के संग को छोड़ कर एक नवीन, अपरिचित युवक से नाता जोड़ना असंभव सा प्रतीत होता है। स्त्री के हृदय के उपर्युक्त भाव कितने स्वाभाविक हैं।

सन्दर्भ—गर्मी के कारण वधू का ससुर से पंखा माँगना

(१८७)

सँकरी[1] मोरी अँगनइया[2] हवा नहीं आवे। टेक—
कही पठाओ ओहि बारे ससुर से, घरवा में पंखा लगावे।
कही पठाओ ओहि बारे भसुर से, दुअरा[3] पर कोठा उठावे ॥ १ ॥
सँकरी मोरी०
कही पठाओ ओहि बारे देवर से, कोठा पर पंखा डोलावे[4]।
कही पठाओ ओहि बारे बालम से, फूल के सेजिया डसावे[5] ॥ २ ॥
सँकरी मोरी अँगनइया हवा नहीं आवे।

कोई स्त्री कह रही है कि मेरा आँगन बहुत ही छोटा है उसमें जरा भी हवा नहीं आती है। वह नौकर से कह रही है कि जाकर ससुरजी से कह दो कि घर में पंखा लगवा दो तथा भसुरजी को यह सूचित कर दो कि वे द्वार पर (मैदान में) मेरे लिये पक्का मकान बनवा दें ॥ १ ॥

देवर से जाकर कहो कि कोठा पर मुझको पंखा झले तथा पति को सूचित कर दो कि मेरे लिये एक सुन्दर पलंग बिछा दें जिस पर आराम से मैं सो सकूँ ॥२॥

सन्दर्भ—पति से पत्नी की बात-चीत

(१८८)

काहाँ से कूच किया, काहाँ पड़ाव किया;
काहाँ डेरा डाल दिया, हाय रे सँवलिया ॥१॥
छपरा से कूच किया, आरे पड़ाव किया;
बकसर डेरा डाल दिया, हाय रे सँवलिया ॥२॥
आटा भी सान दिया, पूड़ी भी छान दिया;
ऊपर मिठाई दिया, हाय रे सँवलिया ॥३॥
सेज भी डास दिया, नींद से सो लिया;
सवती सब रस ले लिया सँवलिया ॥४॥

---

[1]तंग। [2]आँगन। [3]दरवाजा। [4]झलना। [5]बिछाना।

अर्थ स्पष्ट है।

इस गीत में बिहार प्रान्त के तीन शहरों के नाम आये हैं। वे हैं छपरा, आरा और बक्सर। यदि छपरा से यात्रा की जाय तो पटना होकर पहिले आरा आना होता है फिर बक्सर मिलता है। अतः इस गीत में वर्णित यात्रा का क्रम बिल्कुल ठीक है।

सन्दर्भ—पति के द्वारा परित्यक्ता स्त्री का अपना हक लेने के लिये मुकदमा करना

(१८६)

सुन हो[1] सखि हम तो अदालत[2] करबों। टेक—
पहिली अदालत बक्सर में करबों; ससुर राउर माला उतार हम लेबों।
दूसरी अदालत आरा में करबों; भसुर राउर टोपी उतार हम लेबों ॥१॥
सुनहो सखि हम०
तीसरी अदालत पटना में करबों; देवर राउर पगरी[3] उतार हम लेबों।
चौथी अदालत कलकत्ता में करबों; सइयाँ राउर सेखी[4] उतार हम लेबों[5]॥२
सुन हो सखि हम तो अदालत करबों।

अपने घर वालों से सतायी हुई कोई नितान्त दुःखिता स्त्री कह रही है कि ऐ सखि! सुनो आज मैं (अपने पालन-पोषण के लिये उचित धन पाने के लिये) कचहरी में मुकदमा करूँगी। पहिला मुकदमा मैं बक्सर में करूँगी और अपने ससुर की माला (मर्यादा) को नष्ट कर दूँगी। दूसरा मुकदमा आरे में करूँगी तथा भसुर की टोपी उतार लूँगी अर्थात् उन्हें बेइज्जत करूँगी ॥ १ ॥

तीसरा मुकदमा मैं पटने में करूँगी तथा देवर की पगड़ी (इज्ज़त) उतार लूँगी। चौथा मुकदमा मैं कलकत्ता में करूँगी और अपने पति के घमण्ड को चूर-चूर कर दूँगी ॥ २ ॥

[1]सुनो। [2]मुकदमा। [3]इज्जत। [4]शेखी (घमंड)। [5]लूँगी।

देहातों में कभी-कभी ऐसी मुकदमेबाज़ियाँ देखने में आती हैं जहाँ एक पक्ष में एक धर्षिता अबला रहती है और दूसरी ओर उसके ससुर, भसुर और देवर आदि सारा परिवार। वह मुकदमेबाजी होती है एक बहुत ही तुच्छ वस्तु के लिये और वह है स्त्री के लिये भोजन खर्च का देना जिसे हमारी पूरब की भोजपुरी बोली में "खोरिस" कहते हैं।

सन्दर्भ—अन्य स्त्री के प्रेमपाश में फँस जाने के डर से कामुक पति से बगीचे या बाज़ार में न जाने के लिये स्त्री का निवेदन

(१६०)

मोह लेगी मलिनियाँ तुमको। टेक
सजन तुम बाग में मति जाना, मलिनियाँ[1] तुमको।
मोह लेगी मलिनियाँ तुमको॥ १॥
पेन्हाई[2] के फूल के गजरा[3] रे, आपन दिल तुमको।
कर लेगी मलिनियाँ तुमको॥ २॥
सजन तुम चौक में मति जाना, तमोलिनि[4] तुमको।
मोह लेगी तमोलिनि तुमको॥ ३॥
चभाई[5] के पान के बिरवा[6] रे, आपन दिल तुमको।
कर लेगी तमोलिनि तुमको॥ ४॥
सजन तुम चौक में मति जाना, पतरिया[7] तुमको।
मोह लेगी पतरिया तुमको॥ ५॥
सुलाई के फूल के सेजिया[8] रे; आपन दिल तुमको।
कर लेगी पतरिया तुमको॥ ६॥
मोह लेगी मलिनियाँ तुमको॥

कोई स्त्री अपने प्राण प्रिय पति से कह रही है कि ऐ पति! तुम बगीचा

---

[1]मालिन। [2]पहना कर। [3]माला। [4]तमोलिन (पान बेचने वाली स्त्री)। [5]खिला कर। [6]बीड़ा। [7]वेश्या। [8]शय्या (सेज)।

(वाटिका) में मत जाना क्योंकि वहाँ की सुन्दर मालिन तुम्हारे मन को मोह लेगी ॥ १ ॥

फूल की सुन्दर तथा सुगन्धित माला पहिना कर वह तुम्हारे हृदय को अपने वश में कर लेगी ॥ २ ॥

ऐ पति ! तुम चौक में मत जाना क्योंकि वहाँ की तमोलिन (पान बेचने वाली स्त्री) तुम्हारे मन को मोह लेगी ॥ ३ ॥

वह पान का बीड़ा तुम्हें खिला कर तुम्हारे दिल को अपने वश में कर लेगी ॥ ४ ॥

ऐ पति ! तुम चौक में मत जाना क्योंकि वहाँ सुन्दरी वेश्यायें तुम को मोह लेंगी ॥ ५ ॥

तुमको सुन्दर सेज पर सुलाकर, सब प्रकार का आनन्द देकर तुम्हारे हृदय को अपने वश में कर लेंगी ॥ ६ ॥

सती स्त्री की अपने पति को पथ-भ्रष्ट न होने देने की चिन्ता कितनी मर्मस्पर्शिनी है । इस गीत से मधुरता तथा सरसता चूई पड़ती है ।

सन्दर्भ—कुलटा के द्वारा किसी राही को मोह लेना तथा राही का उससे निवेदन

(१६१)

चलत मोसाफिर[1] मोह लिया रे पींजड़े वाली मुनिया । टेक०

उड़ उड़ बइठि हलुवइया दोकनिया[2], आरे बरफी के सब रस ले लिया रे।
पींजड़े वाली मुनिया ॥१॥

उड़ उड़ बइठि बाजाजवा दोकनिया, आरे कपड़ा के सब रस ले लिया रे।
पींजड़े वाली मुनिया ॥२॥

चलत मोसाफिर मोह लिया रे, पींजड़े वाली मुनिया ॥३॥

उड़ उड़ बइठि पनहेरिया[3] दोकनिया, आरे बीरा के सब रस ले लिया रे।
पींजड़े वाली मुनिया ॥४॥

---

[1]मुसाफिर (राही) । [2]दूकान । [3]पनहेरी (पान बेचने वाला) ।

उड़ उड़ बैठि साहुकारवा[1] दोकनिया; आरे छतिया के सब रस दे दिया रे।
पींजड़े वाली मुनिया[2] ॥५॥

चलत मोसाफिर मोह लिया रे; पींजड़े[3] वाली मुनिया ॥६॥

कोई पथिक पुरुष राह चलते समय किसी स्त्री को देखकर मोहित हो जाने पर उससे कह रहा है कि पींजड़े अर्थात् घर रूपी पींजड़े में रहने वाली मुनिया (स्त्री) तुमने मुझ राह चलते मुसाफिर के मन को मोह लिया है।

तुमने हलुवाई की दूकान पर बैठकर बरफी आदि सारी मिठाइयों का स्वाद चख लिया है ॥ १ ॥

बज़ाज की दूकान पर बैठ तुमने कपड़े का रस लिया है अर्थात् सुन्दर सुन्दर कपड़ों को पहिन कर आनन्द उठाया है ॥ २ ॥

ऐ परदे में रहने वाली स्त्री! तुमने मेरे जैसे मुसाफिर के चित्त को भी मोह लिया है ॥ ३ ॥

तुमने पान बेचने वाले की दूकान पर बैठ कर खूब पान खाया है और उसका स्वाद चखा है ॥ ४ ॥

तुमने धनी साहुकार की दूकान पर बैठ कर उसके साथ उपभोग कर बड़ा ही आनन्द उठाया है ॥ ५ ॥

ऐ परदे में रहने वाली स्त्री! तुमने मुझ राह चलते मुसाफिर के चित्त को मोह लिया है ॥ ६ ॥

सन्दर्भ—किसी स्त्री का अपने पति से निवेदन

(१६२)

मैं अलबेली खड़ी हो अकेली; हलुवइया गलिन में जी। टेक०

हमको खिला दो जरा पूड़ी मिठाई; मन राखो गलिन में जी ॥१॥
मैं अलबेली०

हमको पिला दो जरा गड़ुवा के पानी; मन राखो गलिन में जी।

हमको सुलादो जरा फूल की सेजिया; मन राखो गलिन में जी ॥२॥
मैं अलबेली०

---

[1]साहुकार (सेठ)। [2]मुनिया-पक्षी (स्त्री)। [3]परदा।

हमको चभा दो जरा पान के बीरा, मन राखो गलिन में जी।
मैं अलबेली खड़ी हो अकेली, हलुवइया गलिन में जी ॥३॥

कोई स्त्री कह रही है कि मैं अकेली हलुवाई की गली में खड़ी हूँ। वह कहती है कि मुझे पूड़ी और मिठाई खिला दो और मेरा मन रक्खो ॥ १ ॥

वह फिर कहती है कि मुझे पानी पिला दो, फूल की सेज पर मुझे सुला दो तथा मुझे पान का बीड़ा खाने के लिये दो और इस प्रकार मेरे मन को रक्खो ॥ २ । ३ ॥

सन्दर्भ—किसी राही का कुलटा स्त्री के यौवन का वर्णन

(१६३)

जेलखाना में ठाढ़[१] गोरी का करेलू। टेक
आरे चलत मुसाफिर के जान मारेलू ॥१॥ जेलखाना०
आरे छोटे छोटे जोबना[२] उतान[३] चलेलू ॥२॥ जेलखाना०
आरे भुवर भुवर[४] अँखिया नजर मारेलू[५] ॥३॥
जेलखाना में ठाढ़ गोरी का करेलू ॥

जेलखाना अर्थात्, घर के परदे में रहने वाली ऐ स्त्री। तुम यह क्या करती हो ॥

तुम चलते हुए मुसाफिरों को मोहित करके उनके प्राण को हर लेती हो ॥ १ ॥

तुम अपने छोटे-छोटे स्तनों को आगे निकाल करके चलती हो ॥ २ ॥

तुम अपनी सुन्दर आँखों के द्वारा कटाक्ष चला कर लोगों को घायल करती हो। इस प्रकार परदे में रह कर भी तुम बड़ा अनर्थ कर रही हो ॥ ३ ॥

घर को जेलखाना कहना कितना व्यङ्ग्य पूर्ण है।

---

[१]खड़ी। [२]स्तन। [३]निकाल कर। [४]सुन्दर आँखें। [५]मारती हो ॥

सन्दर्भ—सौत को लेकर परदेश से आये हुए पति को देख, स्त्री की आत्महत्या का प्रयत्न

(१६४)

जब हम रहितीं जी वारी[१] लिड़िकिया; ए राजा, ए राजा, ए राजा हो।
सँइया माँगे गवनवा ॥१॥
बरहो[२] बरिस पर हरि[३] मोर अइलें; ले अइलें, ले अइलें, ले अइलें हो।
हमरे पर सवतिया[४] ले अइलें हो ॥२॥
सवतीहि लेइ सामि[५] सुतले अँगनवा; ना माने,[६] ना माने, ना माने हो।
गुलजारी[७] नयनवा ना माने हो ॥३॥
देहू ना सासू हो छुड़िया[८] कतरिया[९]; हति घलबों[१०], हति घलबों, हति घलबों हो।
सासु आपन परानवाँ[११] हति घलबों हो ॥४॥
काहे के हतबे[१२] बहुआ[१३] आपन परानवाँ; तोरे सामी, तोरे सामी, तोरे सामी हो।
बहुआ बाड़ें[१४] निमनका[१५] तोरे सामी हो ॥५॥

कोई स्त्री कह रही है कि जब मैं छोटी लड़की थी उसी समय मेरा पति गवना कराने के लिए कहने लगा ॥ १ ॥

जब गवना करा कर वह मुझे घर लाया तब वह स्वयं परदेश चला गया। बारह वर्ष के बाद वह परदेश से लौटकर आया और अपने साथ हमारी सौत लेता आया ॥ २ ॥

मेरी सौत को लेकर मेरा निर्लज्ज पति आँगन में सो गया। वह सुन्दर आँख वाला पति कितना मना करने पर भी नहीं माना ॥ ३ ॥

तब दुःखी होकर अपने पति के कुकर्मों से पीड़ित होकर वह स्त्री अपनी

---

[१]छोटी। [२]बारह। [३]पति। [४]सौत। [५]पति। [६]नहीं मानता है। [७]सुन्दर। [८]चाकू। [९]कटार। [१०]मार डालूँगी। [११]प्राण। [१२]मारोगी। [१३]वधू। [१४]है। [१५]अच्छा, योग्य।

सास से कह रही है कि ऐ सास ! मुझे चाकू और कटार दो । मैं अपने प्राणों को आज अपने हाथों ही नष्ट कर दूँगी ॥ ४ ॥

इस पर सास उसे समझाती हुई कहती है कि ऐ वधू ! तुम अपने प्राणों को क्यों नष्ट कर रही हो ? तुम्हारा पति बड़ा ही योग्य तथा अच्छा आदमी है ॥ ५ ॥

इस गीत में अपने पति के बुरे चरित्र से लज्जित तथा पीड़ित होने वाली एक स्त्री की मानसिक वेदना की झाँकी हमें मिलती है, जिससे प्रेरित होकर वह स्त्री आत्महत्या करने पर उतारू हो जाती है। पति की निर्लज्जता का सुन्दर चित्रण हुआ है ।

सन्दर्भ—सौत को लेकर परदेश से लौटे हुए पति को स्त्री का उपालम्भ

(१६५)

मैं तो तोरे गले को हार राजावा, काहे को लायो सवतिया । टेक
जाहु हम रहितीं बाँझ बँझिनिया[1]; तब आइति[2] सवतिनिया ।
राजावा हमरो दो दो है लाल[3]; काहे को लायो सवतिया ॥१॥
जब हम रहितीं लँगड़ लूझी[4]; तब आइति सवतिनिया ।
राजावा हमरो सोटा[5] अइसन देह; काहे को लायो सवतिया ॥२॥
जब हम रहितीं काली कोइलिया[6]; तब आइति सवतिनिया ।
राजावा हमरो लाले लाले गाल; काहे[7] को लायो सवतिया ॥३॥
मैं तो तोरे गले को हार राजावा[8], काहे को लायो सवतिया ।

कोई दुश्चरित्र पुरुष परदेश से एक स्त्री को ब्याह लाया है । इस पर उसकी पहली स्त्री दुःखी होकर कहती है कि ऐ पति ! मैं तो तेरे गले का हार थी अर्थात् तुम मुझको बहुत प्यार करते थे, तब तुम इस सौत को क्यों लाये ।

यदि मैं बन्ध्या होती अर्थात् मेरे बाल-बच्चे पैदा न होते तो तुम

---

[1]बन्ध्या । [2]आती । [3]पुत्र । [4]लुञ्ज । [5]लाठी । [6]कोयल । [7]किसलिये । [8]पति ।

सन्तानोत्पत्ति के लिये सौत को ला सकते थे। परन्तु ऐ पति! मेरे एक नहीं दो-दो सुन्दर पुत्र हैं। ऐसी दशा में तुम इस सौत को क्यों लाये ॥ १ ॥

यदि मैं लुञ्ज-पुञ्ज होती और गृहकार्य करने में असमर्थ होती तो तुम सौत ला सकते थे। परन्तु मेरा शरीर तो लाठी के समान सुडौल और मजबूत है फिर तुम सौत क्यों लाये? ॥ २ ॥

यदि मैं कोयल के समान काली-कलूटी होती तो तुम सौत को ला सकते थे। परन्तु ऐ पति! मेरे तो गाल लाल-लाल हैं अर्थात् मैं अत्यन्त सुन्दर हूँ। ऐसी दशा में मेरी सौत को तुम किसलिये लाये? ॥ ३ ॥

इस गीत में कितनी करुणा भरी हुई है। एक हिन्दू स्त्री की आत्मा करुण क्रन्दन कर रही है। इस गीत में उस दुखिया स्त्री का मार्मिक चित्रण किया है जिसका पति उसके जीते रहते ही एक सौत को घर में ला बैठाता है। ऐसी घटनायें आजकल साधारण हो गई हैं।

सन्दर्भ—बंगालिन के द्वारा मोह लिये जाने के कारण पति को परदेश न जाने का स्त्री का आग्रह

(१६६)

कलकत्ता तू जनि जा राजा, हमार दिल कइसे लागी। टेक

ओहि कलकत्ता हलुवाइनि बिटिया; बरफी खिलावे दिन राती ॥१॥
हमारा दिल कइसे०

ओहि कलकत्ता पनेहेरिन बिटिया, बीरा चभावे दिन राती।
हमार दिल कइसे० ॥२॥

ओहि कलकत्ता बंगालिन बिटिया, जादो चलावे दिन राती।
हमार दिल कइसे लागी ॥३॥

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि ऐ पति! तुम कलकत्ता मत जाओ क्योंकि तुम्हारे बिना मेरा दिल नहीं लगेगा।

उस कलकत्ता में हलुवाई की लड़कियाँ रहती हैं जो रात-दिन मिठाई खिलाकर लोगों का मन मोह लेती हैं ॥ १ ॥

उस कलकत्ते में पान बेचनेवाली की लड़कियाँ रहती हैं जो पान खिला कर लोगों को अपने वश में कर लेती हैं ॥ २ ॥

उस कलकत्ते में बंगालिनि की लड़कियाँ रहती हैं जो जादू करके लोगों के मन को वशीभूत कर लेती हैं। अतएव ऐ पति! तुम कलकत्ते मत जाओ नहीं तो वे तुमको भी अपने वश में कर लेंगी ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—कामुक पति का नायिका के रूप का वर्णन

(१९७)

गोरी पिछुआरा को जाना छोड़ि द। टेक

तोर बार[1] जइसे काली नगिनिया[2]; गोरी अतरे[3] को लगाना छोड़ि द।
गोरी के आँख जइसे आम के फारी[4] गोरी सुरमा के लगाना छोड़ि द॥१॥
गोरी पिछुआरा०
गोरी के दाँत जइसे[5] अनार के दाना; गोरि मिसिया[6] के लगाना छोड़ि द॥२
गोरी पिछुआरा[7] के जाना छोड़ि द।

कोई पुरुष अपनी स्त्री से कह रहा है कि तुम गाँव में इधर उधर जाना छोड़ दो। ऐ स्त्री! तुम्हारे बाल काली साँपिन के समान हैं, उनमें इत्र का लगाना छोड़ दो। तुम्हारी आँखें आम के टुकड़े के समान हैं अतः उनमें सुरमे का लगाना छोड़ दो॥ १ ॥

ऐ स्त्री! तुम्हारे दाँत अनार के दाने के समान सुन्दर हैं। उनमें मिस्सी (काला पाउडर) का लगाना छोड़ दो। नहीं तो लोग तुम्हारी सुन्दरता पर मुग्ध हो जायँगे ॥ २ ॥

सन्दर्भ—पति-संभोग से सुखी स्त्री का अपने मायके न जाना

(१९८)

अब ना जाइबि नइहरवा जान। टेक

मथवा बन्हवलों, मँगिया टिकवलों; चढ़ि गइले राजा अटरिया जान।

---

[1]केश। [2]नागिन। [3]इत्र। [4]टुकड़ा। [5]जिस प्रकार। [6]मिस्सी। [7]मकान का पीछे का भाग।

आ गइल डोली, आ गइल कँहरवा; आ गइलें भइया हजरिया जान ॥१॥
अब ना जाइबि०

दिनवा में मोर पिया चीनिया गलावे; रतिया बनावे लड्डुइया जान ॥२॥
खूब माजा देले अटरिया जान; अब ना जाइवि नइहरवा जान ॥२॥
अब ना जाइबि०

दिनवा में मोर पिया रुइया धुनावे; रतिया भरावे रजइया जान।
तनियेक घिच घाच हमको ओढ़ावे; खूब मजा देला रजइया जान ॥२॥
अब ना जाइवि नइहरवा जान।

कोई स्त्री कह रही है कि अब मैं अपने मायके नहीं जाऊँगी। मैंने अपना बाल बँधाया, अपनी माँग में सिन्दूर भर लिया। मेरा पति मुझे लेकर महल में चला गया। इतने में मेरा भाई कहार और पालकी लेकर चला आया। परन्तु अब मैं अपने मायके नहीं जाऊँगी॥ १ ॥

दिन में मेरा पति चीनी तैयार करता है और रात में लड्डू बनाता है। उस पति के साथ अटारी पर मुझे बड़ा आनन्द आता है अतः मैं मायके नहीं जाऊँगी॥ २ ॥

दिन में मेरा पति रुई धुनवाता है और रात में वह अपनी रजाई (लिहाफ) को रुई से भरवाता है। वह उस रजाई को थोड़ा मुझे भी ओढ़ने को देता है। उसकी रजाई में साथ सोने पर मुझे बड़ा आनन्द आता है। अतः अब मैं अपने मायके नहीं जाऊँगी॥ ३ ॥

सन्दर्भ—पत्नी के मना करने पर भी पति का परदेश जाना।

(१६६)

सोने के थाली में जेवना[1] परोसलों[2]; जेवना ना जेवें अलबेला[3]।
बलमु[4] कलकत्ता निकल गयो जी ॥१॥

झाँझर गड़ुवा[5] गंगाजल पानी, पनिया ना पिये अलबेला।
बलमु कलकत्ता० ॥२॥

---

[1]भोजन। [2]परोसा गया। [3]सुन्दर पति। [4]पति। [5]लोटा।

फूलवा चुनि चुनि सेजिया डसवलों, सेजिया ना सोवे अलबेला।
लागल जोबनवा के धाका[1], बलमु कलकत्ता निकल गयो जी ॥३॥

अर्थ स्पष्ट है। पति के परदेश जाने का वर्णन है।

सन्दर्भ—नौकरी न छोड़ने के लिये माता, पिता का अपने पुत्र को पत्र लिखना

(२००)

पहिले ही चिट्ठी चाचा भेजायो, बबुआ[2] नोकरि[3] जनि छोड़।
रुपया बड़ा ही चीज ॥ १ ॥
दूसरी ही चिट्ठी चाची भेजायो; बचवा नोकरि जनि छोड़।
तीसरी ही चिट्ठी आमा भेजायो; बबुआ नोकरि जनि छोड़ ॥ २ ॥
रुपया बड़ा ही चीज ॥
चौथी ही चिट्ठी पिता भेजायो, बबुआ नोकरि जनि छोड़।
रुपया बड़ा ही चीज ॥ ३ ॥
पाँचवा ही चिट्ठी धनिया भेजायो; सइयाँ नोकरि तुम छोड़।
रुपया है कुछ ना चीज ॥ ४ ॥
धनिया[4] के चिट्ठी सुनि सँइया जी अइले, सबके मन को तोड़।
रुपया है कुछ ना चीज ॥ ५ ॥

कोई पति परदेश में जाकर नौकरी कर रहा था। संभवतः उसके नौकरी छोड़ने की इच्छा को जान कर उसके चाचा और चाची ने यह लिखा कि ऐ बेटा! नौकरी मत छोड़ना क्योंकि रुपया बहुत बड़ी आवश्यक वस्तु है ॥१।२॥

जब उसके ऊपर कुछ असर न हुआ तब उसके माता और पिता ने इसी बात को फिर लिख भेजा कि रुपया बहुत जरूरी चीज़ है अतः नौकरी मत छोड़ो ॥ ३ ॥

पाँचवी चिट्ठी उसकी स्त्री ने भेजा जिसमें यह लिखा था कि आप नौकरी छोड़ घर चले आइये। रुपया कुछ भी चीज़ नहीं है ॥ ४ ॥

---

[1]धक्का। [2]बेटा, बच्चा। [3]नौकरी। [4]स्त्री।

यह पत्र पढ़ते ही वह पति अपनी स्त्री के अनुरोध से अपने माता, पिता की आशाओं पर पानी फेरता हुआ और उनके मन को तोड़ता हुआ घर आ पहुँचा ॥ ५ ॥

इस गीत में पति का उत्कट पत्नी-प्रेम दिखलाया गया है। जो असर उसके माँ, बाप के पत्र न कर सके पत्नी का पत्र उसके विपरीत असर कर दिखलाता है। परन्तु यह कार्य माता, पिता की आज्ञा के विरुद्ध है अतः आदरणीय नहीं कहा जा सकता। फिर भी इस पति का प्रेम उत्कट अवश्य है।

सन्दर्भ—पत्नी का पति से प्रेम होना

(२०१)

पहिली इयारी[1] रसोइया में लागे, हमें चौखट को चोट लागे।
हमें न इयरिया नीक[2] लगे ॥ १ ॥
दूसरे इयारी बेलनवा पर लागे; हमें बेलनन को चोट लागे,
हमें न इयरिया० ॥ २ ॥
तीसरी इयारी सेजरिया पर लागे; हमें फुलनन[3] को चोट लगे
हमें न इयरिया० ॥ ३ ॥

कोई स्त्री कहती है कि पति के साथ प्रथम मित्रता रसोई घर में भोजन कराते समय होती है परन्तु वहाँ की मित्रता चौखट से चोट लग जाने के कारण मुझे अच्छी नहीं लगती ॥ १ ॥

दूसरी मित्रता रोटी बनाते समय बेलना पर होती है परन्तु बेलना से चोट लग जाने से मुझे वहाँ की मित्रता भी अच्छी नहीं लगती ॥ २ ॥

तीसरी मित्रता पति से सेज के ऊपर होती है। परन्तु उस पर फूल बिछे होने के कारण मुझे चोट लगती है। अतः मुझे सेज पर की मित्रता भी पसन्द नहीं है ॥ ३ ॥

इस गीत में मित्रता के क्रम में व्यतिक्रम दिखाई पड़ता है। मेरी समझ में तीसरी मित्रता सर्वप्रथम होती है।

---

[1] मित्रता। [2] अच्छा। [3] फूलों का।

सन्दर्भ—रुष्ट पति का अन्न जल न ग्रहण करना

(२०२)

सोने के थारी में जेवना परोसलों, जेवना ना जेवें मोर।
पपिहरा काहे मचायो सोर ॥ १ ॥
आमावा में डाड़ी कोइलिया बोले; बानावा में बोले मोर।
पपिहरा काहे मचायो सोर ॥ २ ॥
झंझर गड़ुवा गंगाजल पानी, पियवा ना पीये मोर।
पपिहरा काहे मचायो सोर ॥ ३ ॥

कोई स्त्री कहती है कि सोने की थाली में मैंने भोजन परोसा परन्तु मेरा पति उसे नहीं खाता है ॥ १ ॥

आम के बन में कोयल बोल रही है और बन में मोर बोल रहा है। ऐ पपीहा ! तुमने क्यों शोर मचा रक्खा है ॥ २ ॥

लोटे में गंगाजल भरा पड़ा है परन्तु मेरा पति उसे नहीं पीता है। ऐ पपीहा ! तुमने इतना शोर क्यों मचाया है—क्यों इतने ज़ोर से बोल रहे हो ॥३॥

सन्दर्भ—बधू की अँगूठी का गिरना और सास, ससुर के द्वारा उसे खोजना

(२०३)

कलकत्ता बाज़ार में मोरे अँगुठी गीरे रे। टेक—
सासु मोरे खोजे[1], ननद मोरे खोजे; सइयाँ खोजे रे।
मसाल[2] दिया बारी बारी सइयाँ खोजे रे ॥ १ ॥
सासु मोरा पीसे, ननद मोरे पीसे, सँइया पीसे रे।
बहियाँ गले डाल डाल, सइयाँ पीसे रे ॥ २ ॥
सासु मोरा मारे, ननद मोरा मारे, सइयाँ मारे रे।
बबूर[3] डण्टा[4] तानि[5] तानि, सइयाँ मारे रे ॥ ३ ॥

---

[1]खोजना। [2]मशाल। [3]बबूल का वृक्ष। [4]डण्डा। [5]उठाकर।

कलकत्ता बाज़ार में मोरे अँगुठी गीरे[1] रे।
सासु मोरा रोवे, ननद मोरा रोवे, सइयाँ रोवे रे।
रुमाल मुख डाल डाल, सइयाँ रे ॥ ४ ॥

कोई स्त्री कहती है कि कलकत्ता शहर के बाज़ार में मेरी अँगूठी खो गई। उस अगूँठी को मेरी सास और ननद खोजने लगीं और मेरा पति भी मसाल और दीपक जलाकर उसे खोजने लगा ॥ १ ॥

मेरी सास आटा पीसती है, ननद भी पीसती है और मेरा पति भी मेरे गले में हाथ डालकर मेरे साथ आटा पीसता है ॥ २ ॥

अगूँठी को खो देने के कारण मेरी सास मुझे मारती है, ननद भी मारती है और मेरा निर्दयी पति भी बबूल वृक्ष के डण्डे को तानकर मुझे पीटता है ॥३॥

कलकत्ते में अगूँठी के गिर जाने के दुःख से दुःखी होकर मेरी सास तथा ननद रोती हैं और मेरा पति भी मुख में रुमाल देकर (जिससे अधिक आवाज़ न निकले) खूब रोता है ॥ ४ ॥

इस गीत में पति के प्रेम तथा निर्दयता—दोनों—का वर्णन किया गया है। एक छोटे से अपराध के कारण उसे इतनी यातना देना कहाँ तक उचित है? ऐसी घटनायें साधारण होने के कारण यह वर्णन अत्यन्त स्वाभाविक प्रतीत होता है।

सन्दर्भ—किसी कुलटा का कामुक पति से निवेदन

(२०४)

अब तुम ए यार सहर को जाना; दोना के बरफी ले आना।
ताखे[2] ऊपर रख जाना ए यार तुम; हमरी गली होके जाना ॥ १ ॥
जाहु जाहु ए यार बाग को जाना; फुलवा के गजला[3] ले आना।
खूँटिन ऊपर रख जाना ए यार तुम; हमरी गली होके जाना ॥ २ ॥
जाहु जाहु ए यार सहर को जाना; आरे सुन्दर सेज[4] ले आना।
पलँग ऊपर रख जाना ए यार तुम; हमरी गली होके जाना ॥ ३ ॥

---

[1]गिर गई। [2]दियरखा (आखा)। [3]माला। [4]बिछौना।

जाहु मोरा ए यार आवे जड़इया[1]; आरे कासी के बैदा[2] बोलाना।
नटिक[3] हमारो धरवाना ए यार तुम; हमरी गली होके जाना ॥ ४ ॥
जाहु हम ए यार मरि हरि[4] जइबों; आरे हड्डी के चूना बनवाना।
बाकस[5] के भीतर रख जाना ए यार तुम, हमरी गली होके जाना ॥५॥

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि ऐ यार जब तुम शहर को जाना तब दोना में मेरे खाने के लिये बरफी लेते आना। उसे लाकर ताखा पर रख देना और हमारी गली में होकर जरूर जाना ॥ १ ॥

ऐ पति ! जब तुम बगीचे में जाना तब मेरे लिये एक सुन्दर माला लेते आना और उसे ले आकर मेरे घर की खूँटी पर टाँग देना ॥ २ ॥

ऐ पति ! जब तुम शहर को जाना तब मेरे लिये सुन्दर बिछौना लाना और उसे लाकर मेरे पलंग पर रख जाना तथा मेरी गली में जरूर आना ॥३॥

जब मुझे जूड़ी, बुखार आवे तब तुम काशी से वैद्य बुलाना और मेरी नाड़ी को उसे जरूर दिखलाना ॥ ४ ॥

ऐ पति ! जब मैं मर जाऊँगी, तब मेरी हड्डी से बने हुए चूने को सुन्दर बाक्स के भीतर रख देना और मेरी गली में सदैव आते जाते रहना ॥ ५ ॥

इस गीत में स्त्री की मनोभिलाषा का क्या ही सुन्दर चित्रण किया गया है। मरने पर भी वह यही चाहती है कि उसका पति उसे सदा स्मरण किया करे। प्रेम की सचमुच यह उत्कट सीमा है।

सन्दर्भ—पति-पत्नी का रति-वर्णन

(२०५)

काहाँ से घाटा उमड़इले, काहाँ जल बरिसे हो।
धीरे धीरे कहाँ जल बरिसे हो ॥ १ ॥
पूरब से घाटा उमड़इले, पछिम जल बरिसे हो।
धीरे धीरे पछिम जल बरिसे हो ॥ २ ॥

---

[1]जूड़ी। [2]वैद्य। [3]नाड़ी। [4]नष्ट हो जाना। [5]ट्रंक।

खोल पिया सोबरन[1] केवड़िया[2], अकेला डर लागे हो।
धीरे धीरे अकेला डर लागे हो ॥ ३ ॥
ओढ़ाव पिया लाली रजइया[3], करेजा मोर काँपे हो।
धीरे धीरे करेजा[4] मोर काँपे हो ॥ ४ ॥

कहाँ से यह घटा उमड़ कर आयी है और कहाँ आज जल बरसेगा। धीरे-धीरे कहाँ जल बरस रहा है ॥ १ ॥

पूरब से घटा उमड़ कर आई है और पश्चिम में जल बरसा रही है। धीरे-धीरे पश्चिम में जल बरस रहा है ॥ २ ॥

स्त्री अपने पति से कह रही है कि तुम केवाड़ को खोलो। मुझे अकेले में डर मालूम हो रहा है ॥ ३ ॥

ऐ पति ! अपनी रजाई को थोड़ा हमको भी ओढ़ाओ, शीत तथा वर्षा के मारे मेरा कलेजा काँप रहा है ॥ ४ ॥

सन्दर्भ—पति का सौत लाना, कुलटा का कदाचरण

(२०६)

जब रे मेंहदिया[5] बोवन लागे राजा; चलेलें परदेसवा रे।
जब रे मेंहदिया में पाता[6] लागेला; राजा नयन[7] रस लेइ रे ॥ १ ॥
जब रे मेंहदिया फरन[8] लागे; राजा ले आवे सवतिवा रे।
बेरिहि बेरि तोहि बरजों[9] ननदिया; नील चुनरि जनि पेन्हु रे ॥ २ ॥
ननदी नील के चुनरि जब पेन्हबे; राजा दुआरे जनि जाऊ रे।
राजा दुआरे बनारस के गुण्डा; ताके गरभ[10] रहि जाई[11] रे ॥ ३ ॥

अर्थ स्पष्ट है। इस गीत में काशी के गुण्डों का उल्लेख है जिनकी प्रसिद्धि आज भी वैसी ही है।

---

[1]सोना। [2]दरवाजा (किवाड़)। [3]रजाई। [4]कलेजा, हृदय। [5]मेहँदी। [6]पत्ता। [7]आँखों से देखता है। [8]फल। [9]मना किया। [10]गर्भ। [11]रह जायेगा।

सन्दर्भ—प्रेमी पति के द्वारा स्त्री की इच्छा-पूर्ति

(२०७)

दाल भात खइबु की पूड़ी मँगा दीं; मोर जीव व्याकुल कइलु पतरको।
भुइयें चलबु कि पालकी मँगा दीं; मोर जीव हलचल कइलु पतरको ॥१॥
हमरा संगे सोइबु कि भइया बोला दीं; मोर जीव व्याकुल कइलु पतरको।
भुइयें सुतबु कि पलँग मँगा दीं; मोर जीव व्याकुल कइलु परतको ॥२॥

कोई पति अपनी स्त्री से पूछ रहा है कि तुम दाल, भात खाओगी या तुम्हारे लिये पूड़ी मँगा दूँ। तुमने मेरे चित्त को व्याकुल कर दिया है। तुम पैदल चलोगी या तुम्हारे लिये पालकी मँगा दूँ। तुमने मेरे जी में हलचल पैदा कर दिया है ॥ १ ॥

ऐ स्त्री! तुम मेरे साथ सोओगी कि अपने भाई के साथ। कहो तो उसे बुला दूँ। तुम जमीन पर सोओगी कि तुम्हारे लिये पलँग मँगा दूँ। तुमने मेरे चित्त को व्याकुल कर दिया है ॥ २ ॥

सन्दर्भ—पत्नी का दुष्ट पति के साथ ससुराल न जाना

(२०८)

तोरा संगे ना जइबों, तोरा संगे ना जइबों[1]; भूखन[2] मरि जइबों।
मोरा बाबा का पूड़ी मिठाई; तोरा संगे ना जइबों, तोरा संगे ना जइबों ॥१
प्यासनि[3] मरि जइबों।
मोरा बाबा का कोठा[4] अमारी; तोरा संगे ना जइबों, तोरा संगे ना जइबों।
मोरा बाबा का लाली पलँगिया; तोरा संगे ना जइबों, तोरा संगे न जइबों ॥२॥
भूखन मरि जइबों।

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि मैं भूखों मर जाऊँगी परन्तु तुम्हारे साथ ससुराल नहीं जाऊँगी। मेरे पिता के यहाँ पूड़ी और मिठाई खाने को मिलती है अतः मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगी ॥ १ ॥

---

[1]नहीं जाऊँगी। [2]भूख। [3]प्यास। [4]ऊंचा मकान।

मेरे पिता का मकान कई मञ्जिल का है। उसमें मेरे सोने के लिये लाल पलँग बिछी हुई है। अतएव मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगी चाहे मैं भूख और प्यास के कारण मर ही जाऊँ ॥ २ ॥

सन्दर्भ—सुरत-संभोग से दुर्बल स्त्री का पति को उपालम्भ

(२०६)

सोनवा अइसन हम पियरी रे; पातर कई दिहल।
मोरे राजा पातर[1] कई दिहल ॥ १ ॥
फुलवा अइसन हम सुनरी रे; धुमिल[2] कई दिहल[3]।
मोरे राजा धुमिल कई दिहल ॥ २ ॥
पानावा अइसन[4] हम पातरि रे; कमर लचकवल।
मोरे राजा कमर लचकवल ॥ ३ ॥
आपना मैं बाबा के दुलारी रे; नइहरवा[5] छोड़वल।
मोरे राजा नइहरवा छोड़वल ॥ ४ ॥

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि मैं सोने के समान पीली थी परन्तु तुमने मेरे साथ उपभोग कर मुझे पतली बना दिया ॥ १ ॥

मैं फूल के समान प्रसन्न और सुन्दर थी परन्तु तुमने मुझे मसल कर कान्तिहीन बना दिया ॥ २ ॥

मैं पान के समान पतली थी परन्तु तुमने मेरी कमर को टेढ़ा कर दिया ॥३॥

ऐ पति ! मैं अपने पिता की प्यारी लड़की हूँ। परन्तु तुमने गवना कराकर मेरा मायका छुड़ा दिया ॥ ४ ॥

सन्दर्भ—रूपगर्विता स्त्री का सौन्दर्य वर्णन

(२१०)

टीकवा[6] है अतरस की मोती; बाचावा[7] झोंपेदार[8]।
मोर मन ले गया बंसी; तुम अइह इयार[9] ॥ १ ॥
मोर मन ले गया बंसी।

---

[1]पतली। [2]कान्ति हीन। [3]कर दिया। [4]तरह। [5]मायका। [6]सिर का गहना। [7]कान का गहना। [8]घूघूर लगा हुआ। [9]मित्र।

नथिया[1] है अतरस की मोती; झूलनी[2] झोंपेदार।
मोर मन ले गया बंसी; तुम अइह[3] इयार ॥ २ ॥
मोर मन०

कँठवा[4] है अतरस की मोती; तीलरी[5] झोंपेदार।
मोर मन ले गया बंसी; तुम अइह इयार ॥ ३ ॥
मोर मन०

काड़वा[6] है अतरस की मोती; छड़वा[7] झोंपेदार।
मोर मन ले गया बंसी[8]; तुम अइह इयार ॥ ४ ॥
मोर मन ले गया बंसी ॥

अर्थ स्पष्ट है। स्त्री अपने विभिन्न आभूषणों का वर्णन कर रही है।

सन्दर्भ—परदेस से बहुत दिनों पर लौटे हुए पति से स्त्री की बातचीत

(२११)

गवना कराइ सइयाँ घर बइठवलें[9]; अपने चलेला परदेस।
बरहो बरिस पर पिया मोर अइलें; अब ना जइहें[10] बिदेस ॥ १ ॥
गोरिया[11] रस चुवेला।
दुरु दुरु[12] कुकुरा[13] रे, दुरु रे बिलरिया[14]; दुरु रे सहरवा[15] के लोग।
गोरिया रस चुवेला ॥ २ ॥
नाहिं हम हईं रे कुकुरा, बिलरिया; नाहिं रे सहरवा के लोग।
आरे हम त जे हईं रे नान्हें[16] बियहुवा[17]; तोरा साथे करबि[18] उपभोग।
गोरिया रस चुवेला ॥ ३ ॥

---

[1]नाक का गहना। [2]नाक का गहना। [3]आना। [4]गले का गहना। [5]हार। [6]पैर का गहना। [7]पैर का गहना। [8]बंशी बजाने वाला। [9]बैठा दिया। [10]जायेगा। [11]स्त्री। [12]दूर भगो। [13]कुत्ता। [14]बिल्ली। [15]शहर। [16]बच्चा। [17]विवाहित। [18]करूँगा।

जाहु तुहुँ ह्वे रे नान्हें के बियहुवा; भिति[1] में से चिपरी[2] ओदार[3] ।
चिपरी ओदरइति काली बिछि[4] मरलसि; सइयाँ करेला पुकार ॥
गोरिया रस चुवेला ॥ ४ ॥

आरे कहिया[5] के बदला सधवलु[6] ऐ गोरिया; कहिया के देवता मनाव ।
गवना कराइके घर बइठवले; ओहि दिन के बदला[7] सधाव ॥
गोरिया रस चुवेला[8] ॥ ५ ॥

कोई स्त्री कह रही है कि मेरा पति गवना कराकर और मुझे घर बैठा कर स्वयं विदेश चला गया है। आज बारह वर्ष के बाद लौट कर आया है। अब कभी विदेश नहीं जायेगा ॥ १ ॥

पति ने आकर स्त्री के घर का दरवाजा खटखटाया। इस पर सशंकित होकर वह कहती है कि कुत्ता हो या बिल्ली दूर भग जाओ। यदि शहर का कोई बदमाश आदमी है तो वह भी चला जाय ॥ २ ॥

इस पर पति उत्तर देता है कि न तो मैं कुत्ता हूँ और न बिल्ली और न शहर का ही कोई बदमाश आदमी हूँ। मैं तो बचपन में व्याहा गया तुम्हारा पति हूँ तथा परदेश से तुम्हारे साथ उपभोग करने के लिये आया हूँ ॥ ३ ॥

स्त्री ने कहा कि यदि तुम मेरे पति हो तो मेरी दिवाल में उपले (गोंइठा) चिपके पड़े हैं। उन्हें उससे अलग निकालो। उपले को निकालते समय पति को काले बिच्छू ने काट खाया और वह ज़ोर से रोने लगा ॥ ४ ॥

उसने स्त्री से पूछा कि तुम किस दिन के अपराध का बदला चुका रही हो तथा किस कारण इस दिन के देवता को प्रसन्न कर रक्खा था? स्त्री ने उत्तर दिया कि तुमने मेरा गवना कराकर मुझे घर में बैठा दिया और स्वयं परदेश चले गये। उसी दिन का बदला मैं आज चुका रही हूँ ॥ ५ ॥

---

[1]दिवाल। [2]उपला। [3]अलग करो। [4]बिच्छू। [5]किस दिन का। [6]निकालना। [7]वैर, शत्रुता। [8]चूता है।

सन्दर्भ—युवती ननद को देख भौजाई का सास, ससुर से उसके लिए पति खोजने की प्रार्थना

(२१२)

सभवा बइठल रउरा ससुरा बढ़इता,
ननदो जोगे खोजु बर सेयान। कठिन दिन सावन हो ॥ १ ॥
अइसन बोलिया जनि बोलिह हे बहुआ,
मेरी बेटी लरिका नदान। कठिन दिन सावन हो ॥ २ ॥
मचिया बइठल रउरा सासु बढ़इतिन,
ननदो जोगे खोजु बर सेयान। कठिन दिन सावन हो ॥ ३ ॥
अइसन बोलिया जनि बोलिहे रे बहुआ,
मेरी बेटी लरिका नदान। कठिन दिन सावन हो ॥ ४ ॥
हरवा जोतइते मेरा सामी हो बढ़इता,
ननदो जोगे खोजु बर सेयान। कठिन दिन सावन हो ॥ ५ ॥
पुरुब खोजलों में पछिम खोजलों, कतहुँ ना मिले बर सेयान।
कठिन दिन सावन हो ॥ ६ ॥
गइलों में गइलों में तिरहुत देसवा, ओतही जे मिले बर सेयान।
कठिन दिन सावन हो ॥ ७ ॥
उनहीं के तिलक चढ़ाव, कठिन दिन सावन हो ॥ ८ ॥

इस गीत में भौजाई अपनी ननद को सयानी देख कर पहले अपने ससुर और बाद अपनी सास और पति से कहती है कि सभा में बैठे हुए ऐ मेरे श्रेष्ठ ससुर! मेरी ननद के लिए तुम वयस्क वर खोजना। क्योंकि सावन का महीना बड़ा ही कष्ट दायक होता है ॥ १ ॥

ससुर उत्तर में कहता है कि ऐ मेरी वधू! तुम ऐसी बात मत कहो क्योंकि मेरी लड़की बहुत छोटी है ॥ २ ॥

तब बहू सासु से कहती है कि मचिया पर बैठने वाली ऐ मेरी सास! मेरी ननद सयानी है। इसके लिए युवा वर खोजना ॥ ३ ॥

सास उत्तर देती है कि तुम ऐसी बात मत कहो मेरी लड़की बहुत छोटी है ॥ ४ ॥

अपने पति को सम्बोधित करके कहती है कि ऐ मेरे हल जोतने वाले पति। मेरी ननद के लिए सयाना पति खोजना ॥ ५ ॥

पति उत्तर में कहता है कि मैंने पूर्व और पश्चिम दोनों दिशा में वर खोज लिया परन्तु कहीं भी सयाना वर नहीं मिला ॥ ६ ॥

मैं तिरहुत देश में गया और वहीं पर सयाना वर मिल गया ॥ ७ ॥

उसी को मैंने तिलक चढ़ा दिया अर्थात् वर के रूप में स्वीकृत कर लिया ॥ ८ ॥

टिप्पणीः—उपर्युक्त गीत से पता चलता है कि प्राचीन काल में भी युवती कन्या के लिए युवा वर खोजने की प्रथा थी। तिरहुत में युवा वर मिलने से पता लगता है कि उस प्रान्त में प्रौढ़ विवाह की प्रथा प्रचलित थी।

सन्दर्भ—पत्नी के द्वारा घर न छोड़ने की पति से प्रार्थना परन्तु दुष्ट पति की अस्वीकृति

(२१३)

साँप छोड़ेले साँप केचुलि गंगा छोड़ेलि अरारि।
तूहूँ सैयाँ तेजल निज ग्रिह धनी अरारि ॥१॥
घोड़वा का देबों घोड़सरिया[1] हथिया के देबों हथिसार[2]।
तूहू प्रभु देबों अटरिया रहबों नैना के हजूर ॥२॥
घोड़वा के देबहुँ महेलवा[3] हथिया के लवँग कपूर।
तुहुँ प्रभु देबों घिउ[4] खीचड़ कर जोरि रहबों हजूर ॥ ३ ॥
नैया तोर बूड़ो महा धरवा बरदी[5] ले जासु चोर।
तुहुँ प्रभु मारे बटवरवा होइबों चौकवा[6] के राँड़ ॥३॥

---

[1]घोड़े के रहने के स्थान। [2]हाथी के रहने के लिये जगह। [3]उत्तम भोजन [4]घी। [5]बैल। [6]विवाह होते ही (बाल-विधवा)।

नैया मोर लगिहें सुरुज घाट बरदी उतरेले पार ।
धनि बेचबों मोगल हथवा दूसर करबों बिआह ॥५॥

सर्प अपनी केंचुल को छोड़ता है और गंगाजी अपने किनारे को छोड़ती है। मेरे प्रियतम अपने प्रिय स्त्री को छोड़ते हैं और अपने स्थान को भी छोड़ देते हो ॥ १ ॥

मैं घोड़ों के लिये घुड़सार दूँगी और हाथियों के लिये हाथीखाना दूँगी। हे प्रभु मैं तुमको अटारी दूँगी और इस तरह सर्वदा तुम्हारे नेत्रों के सामने रहूँगी ॥२॥

मैं घोड़ों के लिए उत्तम भोजन दूँगी और हाथी के लिए लवँग और कपूर दूँगी। मैं तुमको घी और खिचड़ी दूँगी तथा सर्वदा हाथ जोड़ कर खड़ी रहूँगी ॥ ३ ॥

तुम्हारा जहाज बड़े समुद्र में डूब जाय, बैल को चोर चुरा ले जाय, तुम्हें डाकू मार डाले, हे प्रिय मैं विधवा हो जाऊँगी ॥ ४ ॥

मेरा जहाज सूरजघाट पर लग जायेगा और बैल नदी को पार कर लेगा। हे प्रिये! मैं तुम्हें मुगल के हाथ बेच दूँगी और फिर दूसरी शादी कर लूँगा ॥ ५ ॥

सन्दर्भ—किसी कामुक का कुलटा स्त्री से निवेदन

(२१४)

काहे मन मारी खड़ी गोरी अँगना । टेक
धरती के लहँगा, बादरी के चोली ।
जोन्हीं के बटम, कसबी दुनों जोबना ॥ काहे मनमारी०
रूपे के बाजू बन, सोने के कँगना ।
रेशम के चोली, ढकबी दुनों जोबना ॥ काहे मनमारी०
टुटी जइहें बाजूबन, फूटी जइहें कँगनवा ।
फाटी जइहें चोली, लटकी जइहें जोबना ॥ काहे मनमारी०

बनी जाई बाजूबन, जुटी जाइ कँगना।
सिया जाई चोली, उठाई देवों जोवना ॥ काहे मनमारी०

शृंगार रस का कैसा सुन्दर वर्णन किया गया है। गाने का भाव बड़ा ही मनोहर है ! अर्थ सीधा है। इसलिए अर्थ नहीं दिया जाता है। पाठकगण इसे पढ़कर आनन्द लूटें।

सन्दर्भ—पत्नी की उक्ति पति के प्रति

(२१५)

पूरुब जइह राजा पछिम जइह।
आरे टिकुली ले अइह राजा चमके लिलार हो ॥१॥
आरे जलदी से अइह राजा जड़वा की राति हो।
नथिया ले अइह राजा झुलनी लगाइ हो ॥२॥
अँगवा के पातरि धनिया, मुँहवा के ढुरुहुर हो।
आरे तोके कइसे तेजबों राजा जड़वा की राति हो ॥३॥
हँसुली ले अइह राजा हलका लगाइ हो।
बजुआ ले अइह राजा झबिआ लगाइ हो ॥४॥
अँगवा के पातरि धनिया; मुँहवाँ के ढुरहुर हो।
आरे तोहि कइसे छोड़बि धनिया; जड़वा की राति हो ॥५॥

पत्नी पति से कहती है कि यदि तुम परदेश जाना तो मेरे लिये अमुक अमुक वस्तुयें ले आना। परन्तु पति कहता है कि ऐ सुन्दरी स्त्री ! मैं तुम्हें जाड़े की रात में अकेले छोड़कर परदेश कैसे जा सकता हूँ ?

११. बारहमासा

'बारहमासा' उन गीतों को कहते हैं जिनमें बारहों महीनों का वर्णन रहता है। भोजपुर प्रान्त में बारहमासा का प्रचुर प्रचार है। देहात के लोग इन गीतों को गाना और सुनना बहुत पसन्द करते हैं क्योंकि उन्हें एक साथ ही बारहों महीने के सुख-दुःख का दृश्य सामने दिखाई पड़ने लगता है। बारहमासा प्रायः करके आषाढ़ मास के वर्णन से प्रारम्भ होता है और ज्येष्ठ मास के वर्णन से समाप्त होता है। इन बारहमासों में कहीं तो प्रिय के परदेश चले जाने से पत्नी की विरह-वेदना का मार्मिक चित्रण पाया जाता है तो कहीं संयोग शृङ्गार का हृदय हारी वर्णन। शृङ्गार रस में ओत-प्रोत होने के कारण ये बारहमासे किस के मन को बरबस नहीं हरते ! पाठक अब कुछ बारहमासों का आनन्द लें।

सन्दर्भ—परदेश जाने के लिये उद्यत पति को रोकने के लिये स्त्री की प्रार्थना तथा पति का उसे स्वीकार न करना

(२१६)

बरिसहु[1] आहो ए देव; आरे घरी[2] रे पहर[3] राती।
आरे पिया के पायेतावा[4]; घरे बेलमावहु[5] रे की ॥१॥
जाहु तुहुँ आहो ए धनिया; देव कें मनइबु[6]।
आरे छातावा लगाइबि; पंथ हम जाइबि रे की ॥२॥
आरे कहाँवा हउवे[7] रे; डोम[8] रे डोमिनिया।
आरे कावाना सहरिया; छातावा बीनेला[9] रे की ॥३॥

---

[1]वर्षा करो। [2]घटी। [3]प्रहर। [4]प्रस्थान (यात्रा)। [5]रोक दो। [6]प्रार्थना करना। [7]है। [8]भंगी। [9]बुनता है।

पुरुब नगरिया के; डोम रे डोमिनिया ।
आरे पछिम सहरिया; छातावा बीनेला रे की ॥४॥
लेहु ना रे डोमवा भइया; डाल[1] भरि सोनवा ।
आरे पिया हाथे छातावा; जनि वेचहु रे की ॥५॥
जाहु तुहुँ आहो ए धनिया; आरे डोमवा बरिजबु[2] ।
आरे भीजत भीजत पंथ; जाइबि रे की ॥६॥
लेहु ना मलहवा भइया; आरे डाल भरि सोनवा ।
आरे पियवा तू नइया; जनि चाढ़ावहु रे की ॥७॥
जाहु तुहुँ आहो ए धनिया; आरे मलहवा बरिजबु ।
आरे अवरी[3] पँवरि पन्थ हम जाइबि रे की ॥८॥

किसी स्त्री का पति परदेश जा रहा है। उसकी स्त्री उसे मना कर रही है परन्तु वह नहीं मानता है। इस पर वह प्रार्थना कर रही है हे देव! एक प्रहर रात्रि से ही तुम वर्षा करने लगो जिससे मेरे पति का प्रस्थान घर में ही रुक जाय अर्थात् वह वर्षा के कारण यात्रा न कर सके ॥ १ ॥

तब वह पुरुष कहता है कि ऐ स्त्री! यदि तुम भगवान की प्रार्थना कर वर्षा बरसा कर मेरी यात्रा रोकना चाहती हो तो मैं छाता लगा कर परदेश चला जाऊँगा ॥ २ ॥

वह पुरुष कहता है कि डोम और डोमिन कहाँ रहती हैं और किस शहर में बाँस का छाता बुनती हैं ॥ ३ ॥

पूरब के नगर में डोम और डोमिन रहती हैं और पच्छिम के शहर में छाता बुनती हैं ॥ ४ ॥

स्त्री उस डोम से कह रही है कि ऐ मेरे भाई डोम! तुम मुझसे एक डाली सोने की ले लो और मेरे पति के हाथ छाता मत वेचो। नहीं तो उसे लेकर वर्षा होने पर भी वह परदेश चला जायेगा ॥ ५ ॥

तब पति ने उत्तर दिया कि ऐ स्त्री यदि तुम डोम को छाता देने से मना कर दोगी तब मैं भींगते ही परदेश चला जाऊँगा ॥ ६ ॥

[1]डाली या छबड़ी। [2]मना करना। [3]तैर करके।

स्त्री मल्लाह से कहती है कि ऐ भइया मैं तुमको भी डाल भर सोना दूँगी। तुम मेरे पति को अपनी नाव पर चढ़ा कर पार मत करना ॥ ७ ॥

तब पति कहता है कि ऐ स्त्री यदि तुम मल्लाह को मना करोगी तब मैं तैर कर नदी पार कर लूँगा और परदेश चला जाऊँगा ॥ ८ ॥

इस गीत में स्त्री का उत्कृष्ट पति-प्रेम बड़ी सुन्दर रीति से दर्शाया गया है। पत्नी पति को परदेश जाने से मना कर रही है और उसके न मानने पर नाना प्रकार के प्रयत्न करती है। वह इस काम के लिए डाल भर सोना भी देने के लिये तैयार है। धन्य है स्त्री का यह आदर्श प्रेम। जहाँ इस गीत में पत्नी का उत्कृष्ट प्रेम दर्शाया गया है वहाँ पति की निष्ठुरता भी स्पष्ट रूप से झलक रही है।

सन्दर्भ—बारहों महीने की विशेषताओं का वर्णन। प्रोषित-पतिका स्त्री की उक्ति अपनी सखी के प्रति

(२१७)

प्रथम मास असाढ़[1] सखि हो; गरजि गरजि के सुनाई।
सामी के अइसन कठिन जियरा[2]; मास असाढ़ नहिं आय ॥ १ ॥
सावन रिमिझिमि बुनवा[3] बरिसे; पियवा भींजेला परदेस।
पिया पिया कहि रटेले कामिनि; जंगल बोलेला मोर ॥ २ ॥
भादो रइनी[4] भयावन सखि हो; चारु ओर बरसेला धार[5]।
चकवी त चारु[6] ओर मोर[7] बोले; दादुर सबद[8] सुनाई ॥ ३ ॥
कुवार[9] ए सखी कुंवर बिदेसे गइलें; दे गइलें तीनि निसान।
सीर सेनुर[10], नयन काजर; जोबन जीव के काल ॥ ४ ॥
कातिक ए सखी कतिकी[11] लगतु हैं; सब सखि गंगा नहाय।
सब सखि पहिरे पाट पीतम्बर; हम धनि लुगरी[12] पुरान[13] ॥ ५ ॥

---

[1]आषाढ़। [2]हृदय। [3]बूँद। [4]रात। [5]पानी की धारा। [6]चारों ओर। [7]मेरे। [8]शब्द। [9]आश्विन। [10]सिन्दूर। [11]कार्तिक का स्नान। [12]फटा कपड़ा। [13]पुराना।

अगहन ए सखि गवना करवलें; तब सामी गइलें परदेस ।
जब से गइलें सखि चिठियो ना भेजलें; तनिको खबरियो[1] ना लेस[2] ॥६॥
पुस[3] ए सखि फासे फुसारे[4] गइलें; हम धनि बानी अकेली ।
सून मंदिलवा, रतियो ना बीते; कब दों ना होइहें बिहान[5] ॥ ७ ॥
माघ ए सखि जाड़ा लगतु है; हरि बिनु जाड़ो ना जाई ।
हरि मोरा रहितें त गोद में सोवइतें[6]; असर ना करिते जाड़[7] ॥ ८ ॥
फागुन ए सखि फगुआ मचतु है; सब सखि खेलत फाग ।
खेलत होली लोग करेला बोली; दगधत[8] सकल सरीर ॥ ९ ॥
चैत मास उदास सखि हो; एहि मासे हरि मोर जाई ।
हम अभागिनि कालिनि साँपिनि; आवेला समय बिताई ॥ १० ॥
बइसाख[9] ए सखि उखम[10] लागे; तन में से ढरेला[11] नीर ।
का कहों अहि जोगिनिया के; हरिजी के राखेले लोभाई ॥ ११ ॥
जेठ मास सखि लूक[12] लागे; सर[13] सर चलेला समीर ।
अवहूँ ना सामी घरवा लवटेला[14]; ओकरा[15] अँखियो ना नीर ॥१२॥

कोई स्त्री जिसका पति परदेश चला गया है अपनी सखी से कहती है कि ऐ सखी यह पहिला महीना आषाढ़ का है। बादलों का गरजना सुनाई पड़ रहा है। परन्तु मेरे पति का हृदय इतना कठोर है कि वह इस महीने में भी नहीं आया ॥ १ ॥

ऐ सखी ! सावन के महीने में रिमझिम करके बूँदें बरस रही हैं। मेरा पति परदेश में कहीं भीगता होगा। मैं पिया-पिया करके रट लगा रही हूँ और जंगल में मोर बोल रहा है ॥ २ ॥

ऐ सखी ! भादों की रात बड़ी भयानक लगती है और चारों ओर से पानी की धारा गिर रही है। मेरे चारो ओर चकवी बोल रही है और मेढक का शब्द सुनाई दे रहा है ॥ ३ ॥

[1]खबर, परवाह। [2]लेता है। [3]पौष। [4]पानी बरसता है। [5]सवेरा। [6]सुलाता। [7]जाड़ा। [8]जलाता है। [9]बैसाख। [10]उष्मा, गर्मी। [11]गिरता है। [12]लू। [13]जोर से। [14]लौटता है। [15]उसको।

ऐ सखी ! कुवार (आश्विन) के महीने में मेरा पति विदेश चला गया तथा जाते समय वह सिर में सिन्दुर, आँखों में काजल और स्तन ये तीन चीज़ें चिह्न के रूप में दे गया है ॥ ४ ॥

ऐ सखी ! कार्तिक के महीने में गंगा-स्नान का मेला लगता है और हमारी सखियाँ गंगा-स्नान कर रही हैं। वे तो पीताम्बर वस्त्र पहिनती हैं और मैं पति-वियोग के कारण फटा-पुराना वस्त्र पहिनती हूँ ॥ ५ ॥

ऐ सखी ! पति ने अगहन के महीने में गवना कराया और गवना कराते ही वह परदेश चला गया। जब से पति गया है तब से कोई भी पत्र उसने नहीं भेजा। वह मेरी कुछ भी खोज खबर नहीं लेता ॥ ६ ॥

ऐ सखी ! पौष के महीने में कभी-कभी बारिश हो जाती है। मैं अकेली हूँ, मेरा घर सुनसान पड़ा है। दुःख के कारण मेरी रात भी नहीं कटती। न मालूम सवेरा कब होगा ॥ ७ ॥

ऐ सखी ! माघ के महीने में बहुत जाड़ा लगता है। पति के साथ बिना सोये जाड़ा नहीं जाता। यदि मेरा पति घर में होता तो मैं उसे अपनी गोद में अवश्य सुलाती। तब जाड़ा मुझे ज़रा भी असर नहीं करता ॥ ८ ॥

ऐ सखी ! फाल्गुन के महीने में फगुआ (होली) होता है और सब सखियाँ फाग खेल रही हैं। मेरी सखियाँ होली खेलते हुए मुझ से बोली अर्थात् मज़ाक करती हैं जिससे मेरा सारा शरीर जला जाता है ॥ ९ ॥

ऐ सखी ! चैत्र का महीना बड़ा उदास लगता है। वसन्त ॠतु के इसी सुखी समय में पति परदेश चला गया है। मैं अभागिन काली सर्पिणी के समान हूँ। मेरा पति बसन्त का समय बिताकर घर आयेगा ॥ १० ॥

ऐ सखी ! बैशाख के महीने में बड़ी गर्मी लगती है और शरीर में से पसीना गिरता रहता है। मैं उस योगिनी को क्या कहूँ जिसने मेरे पति को परदेश में लुभा रक्खा है ॥ ११ ॥

ऐ सखी ! जेठ के महीने में लू लगती है क्योंकि हवा बड़े ज़ोरों से चल रही है। परन्तु मेरा पति अभी तक भी घर लौट कर नहीं आया। मालूम होता है कि उसकी आँखों में अब पानी (शर्म) नहीं रहा ॥ १२ ॥

इस एक ही गीत में बारहों महीनें का वर्णन बड़ी सुन्दर रीति से किया गया है। यह वर्णन आषाढ़ के महीने से शुरू होकर जेठ में समाप्त होता है। भिन्न भिन्न ऋतुओं के आने पर विरह-विधुरा इस स्त्री के हृदय में जो-जो मधुर भाव उठते हैं उसका बहुत ही सुन्दर वर्णन यहाँ मिलता है। पौष की रात्रि सचमुच बड़ी होती है फिर पति-वियोग से दुःखिता स्त्री के लिये उसे बिताना तो नितान्त कठिन है। ऐसी ही एक वियोगिनी स्त्री के दुःख का वर्णन करते हुए हिन्दी के एक कवि ने लिखा है—

"बीती औधि आवन की, लाल मनभावन की।
डग भई बावन की, सावन की रतियाँ॥"

माघ के महीने में स्त्री कहती है कि पति के बिना जाड़ा नहीं जाता यह कथन अंशतः ठीक है। देहातों में एक कहावत प्रचलित है कि "जाड़ जाई दुई कि रुई कि धूई" अर्थात् जाड़ा जोड़े (स्त्री और पुरुष) के एक साथ मिलकर सोने से जाता है अथवा रुई अर्थात् लिहाफ से जाता है अथवा धुई अर्थात् अग्नि से भागता है। इस स्वतः सिद्ध तथ्य में भला किसे सन्देह हो सकता है॥

सन्दर्भ—विरहिणी स्त्री के द्वारा बारहमासे का वर्णन

(२१८)

प्रथम मास आसाढ़ हे सखि, साजि चलले जलधार हे।
सबके बलमुआ राम-घर-घर अइलें, हमरो बलमु परदेस हे॥१॥
सावन हे सखि सरब सोहावन, रिमिझिमि बरसले देव हे।
बारि उमिरि परदेस बालम, जीअयों कवना अधार हे॥ २॥
भादों हे सखि रइनि भयावन, सूझले आर ना पार हे।
लवका जे लवके राम बिजुली जे चमकेला, कड़केला जीअरा हमार हे॥३॥
आसिन हे सखि आस लगायल, आसो न पूरल हमार हे।
आस जे पूरे राम कुबरी जोगिनिया के जिन कन्त राखे बिलमाय हे॥४॥

कातिक हे सखि पुनित महीना, सखि सब चले गङ्गा असनान हे।
सब सखि पेन्हे राम पाट पीताम्बर, मैं धनि लूगरी पुरानी हे॥ ५॥
अगहन हे सखि अगर सोहावन, चहुँ दिसि उपजेला धान हे।
हंस चकेउआ राम केर करतु हैं, तइसे जग संसार हे॥ ६॥
पूस हे सखि ओस परतु हैं, भिजेला अँगिया हमार हे।
एक त जे भींजे राम नवरंग चोलिया. दूसरे भीजेला लामी केस हे॥७॥
माघ हे सखि पाला पड़तु है, बिना पियां जाड़ो ना जाइ हे।
पिया जे रहितें घरे रुइया भरइतें, खेपि जइतों मघवा के जाड़ हे॥८॥
फागुन सखि सब फाग खेलतु हैं, घर-घर उड़ेला अबीर हे।
सब सखि खेले राम अपना बलमु-संग, हमरो बलमु परदेस हे॥९॥
चइते हे सखि चित मोरा चञ्चल, जिअरा[1] जे भइलें उदास हे।
कलिया[2] में चुनि-चुनि सेजिया डसवलों, पिया बिनु सेजिया उदास॥१०
वैसाख हे सखि बँसवा कटाइले, रचि-रचि बँगला छवाई हे।
डुनि[3] पिया राम लाली पलँगिया[4], हम धनि बेनिया[5] डोलाई हे॥११।
जेठ हे सखि भेंट भइले, पूरि गइलें बारहमास मास हे।
रामनरायन, सूरदास गायन, गाइ-गाइ[6] सखि समुझाई हे॥ १२॥

किसी स्त्री का पति परदेश चला गया है उसके विरह में वह स्त्री अपने एक सखी से कह रही है कि ऐ सखि! आषाढ़ का पहला महीना आ गया, जल की धारा जोरों से चलने लगी अर्थात् वर्षा ऋतु आगई। सब स्त्रियों के प्रियतम अपने घर पर आ गए परन्तु मेरा पति परदेश में ही है॥ १॥

ऐ सखि! सावन का महीना बड़ा सुहावना लगता है। रिमझिम पानी बरसता है। मेरी यौवनावस्था आगई है परन्तु प्रियतम परदेश में है। मैं किस अवलम्ब से जीऊँगी॥ २॥

ऐ सखि! भादों की रात्रि भयावनी होती है। आर पार कुछ भी नहीं

---

[1]हृदय। [2]कली। [3]सोना। [4]पलंग। [5]पंखा। [6]गाकर।

दिखाई देता। बिजुली के चमकने ही पर कुछ दिखाई पड़ता है। परन्तु बिजुली के कड़कने से प्रिय के लिए मेरा हृदय भी तड़पने लगता है ॥ ३ ॥

ऐ सखि! आश्विन के महीने में मुझे आशा थी कि प्रियतम घर आवेंगे। परन्तु वह मेरी आशा पूरी नहीं हुई। मालूम होता है कि उस कुवड़ी स्त्री की आशा पूरी होगई—जिसने मेरे पति को अपने माया-जाल में फँसा रखा है ॥ ४ ॥

ऐ सखि! कार्तिक महीना बड़ा पवित्र है। सब लोग गङ्गा-स्नान के लिए जाते हैं। सब लोग रेशमी और पीताम्बर वस्त्र पहनते हैं। परन्तु मैं गरीबिनी फटी पुरानी साड़ी पहनती हूँ ॥ ५ ॥

ऐ सखि! अगहन का महीना बड़ा सुहावना है। इस समय चारों दिशाओं में धान पैदा होता है। हंस और चकोर क्रीड़ा करते हैं तथा संसार के लोग भी आनन्द मनाते हैं ॥ ६ ॥

ऐ सखि! पौष मास में ओस पड़ती है—जिससे मेरी अँगिया [पहनने का वस्त्र] भींग जाती है। एक तो मेरी चोली भींग जाती है और दूसरे मेरे लम्बे-लम्बे केश ॥ ७ ॥

ऐ सखि! माघ में जाड़ा पड़ता है। बिना प्रियतम के जाड़ा नहीं जाता। अगर मेरे पति घर होते तो मेरे लिहाफ में रुई भरवाते और मैं माघ के जाड़े को इस प्रकार सह लेती ॥ ८ ॥

ऐ सखि! फागुन के महीने में फाग खेला जाता है। घर-घर गुलाल लगाया जाता है। सब स्त्रियाँ अपने पति के साथ फाग खेल रही हैं। परन्तु दुख है कि इस समय मेरा पति परदेश में है ॥ ९ ॥

ऐ सखि! चैत के महीने में मेरा चित चञ्चल है तथा मेरा मन अत्यन्त उदासीन है। कलियों को चुन-चुन कर मैंने सेज सजाया था। लेकिन प्रियतम के बिना मेरी शय्या उदास मालूम होती है ॥ १० ॥

ऐ सखि! वैशाख में बाँस को कटवा कर मैं एक सुन्दर बँगला बनवाऊँगी। जब मेरे पति आकर पलङ्ग पर बैठेंगे तो मैं धीरे-धीरे पंखा करूँगी ॥ ११ ॥

ऐ सखि! ज्येष्ठ का महीना आगया। प्रियतम को परदेश गये अब पूरे बारह मास हो गये। परन्तु फिर भी वे लौट कर नहीं आए। अब मैं सूरदास आदि कवियों के पदों को गा-गाकर अपने हृदय को सान्त्वना दूँगी ॥ १२ ॥

टिप्पणी—उपर्युक्त गीत में प्रोषितपतिका स्त्री का कितना सुन्दर चित्र चित्रित किया गया है। पति के वियोग में उसे सारी प्रकृति ही भयावनी मालूम पड़ती है तथा सावन का मनभावन महीना भी उसे सुहावना नहीं मालूम पड़ता। यह विरह-वर्णन कितना मर्मस्पर्शी तथा हृदय द्रावक है। इस गीत में विरह का वर्णन कितना सादा और स्वाभाविक है।

सन्दर्भ—विरहिणी स्त्री के द्वारा प्रकृति की भयंकरता का वर्णन

(२१६)

भादों भवन सोहावन न लागे। आसिन मोहि न सोहाइ।
कातिक कन्त बिदेस गइल हो। समुझि समुझि पछताईं ॥१॥
अगहन आइल न कहि गइल ऊधो। पूस बितल भरि माँस।
माघ माँस जोबन के मातल। कैसे धरब जिउ[1] आस ॥२॥
फागुन फरकेले नैन हमार। चैत मास सुनि पाइ।
पियवा जे अइतन एहि बइसाखे। फुलवन सेजवा बिछइतीं ॥३॥
जेठ माँस बेआकुल[2] जइसे राधे। नहिं है शाम हमार।
तुलसिदास प्रभु तोहर दरस[3] के। कइसे खेपों[4] माँस असाढ़[5] ॥४॥

पति परदेश चला गया है। उसके वियोग में कोई भी महीना सुहावना नहीं लग रहा है। यहाँ तक की श्रावण का महीना उसके लिए शत्रु हो गया है—

भादों के महीने में मुझे घर सुन्दर नहीं लगता है। आश्विन मास भी मुझे सुहावना नहीं लगता। कातिक महीने में मेरा प्रेमी दूर चला गया है। जब मैं उसे बार-बार स्मरण करती हूँ तब मुझे बहुत उदास होना पड़ता है ॥१

[1]जीव (प्राण)। [2]व्याकुल। [3]दर्शन। [4]बिताना। [5]आषाढ़।

ऐ ऊधो अगहन मास में उसने आने के लिए कहा था। लेकिन नहीं आया। पूरा पूस महीना बीत गया। माघ के महीने में मैं यौवन से मतवाली हो गई। अतः मैं किस तरह से जीवन की आशा कर सकती हूँ॥ २॥

फाल्गुन मास में मेरे नेत्र फड़कने लगते हैं और मैं चैत्र के महीने में समाचार सुनती हूँ। यदि प्रियतम इस बैशाख में आ जाते तो मैं फूल की सेज तैयार करती॥ ३॥

जेठ में राधे के सदृश मैं व्याकुल हो जाती हूँ क्योंकि मेरे श्याम (पति) उपस्थित नहीं हैं। तुलसीदास प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु तुम्हारा दर्शन कैसे होगा। किस तरह से आषाढ़ मास व्यतीत होगा॥ ४॥

१२. कजली

सावन के मनभावन महीने में जो गाने गाये जाते हैं उन्हें 'कजली' कहते हैं। इन गीतों का वर्ण्य विषय पति-पत्नी का प्रेम होता है। इनमें नायिका के विरह का बड़ा ही मार्मिक चित्रण पाया जाता है। संयोग तथा विप्रलम्भ-शृंगार का बड़ा ही सुन्दर वर्णन इनमें होता है।

सावन का महीना सचमुच ही बहुत सुहावना होता है। नीले आकाश में बादल घिरे रहते हैं। घटायें हाथियों के समूह के समान क्षितिज पर से उमड़ती हुई चली आती हैं। वायु के द्वारा वे एक ओर से दूसरी ओर उड़ाई जाती हैं। बीच-बीच में बक-पंक्ति की शोभा चित्त को मोहे लेती है। कभी-कभी घटा घहराती है, बिजली चमकती है, रिमझिम-रिमझिम बूँदें गिरने लगती हैं। वृक्ष, लता और पौधे धुल जाते हैं। सबके पत्ते निखर आते हैं। खेत और जंगल सब हरियाली से भर जाते हैं। इस समय का दृश्य ऐसा सुहावना लगता है जिसका वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। जिन लोगों ने किसी पहाड़ी प्रदेश में रहकर सावन का महीना बिताया है वे इसके आनन्द का अच्छी तरह से अनुभव कर सकते हैं। पहाड़ी प्रदेशों में वर्षा में न तो कहीं कीचड़ दिखाई पड़ता है और न किसी प्रकार की गन्दगी ही रहती है।

परन्तु गाँवों का दृश्य कुछ दूसरा ही दिखाई पड़ता है। इस समय नाले बहने लगते हैं। नदियाँ उमड़ पड़ती हैं और तालाब भर जाते हैं। पृथ्वी पर तरह-तरह के नये जीव पैदा हो जाते हैं। सब अपनी-अपनी बोलियाँ बोलने लगते हैं। झींगुर की 'झीं' 'झीं' और मेढ़क की 'टर्र' 'टर्र' की आवाज से दिशायें गूँज उठती हैं। पशु कलोल करने लगते हैं। पक्षी कलरव करते हैं। कहीं मोर जंगल में कलरव करता हुआ नाचने लगता है तो कहीं पपीहा 'पी'-'पी' की रट लगाता है। पक्षियों के कलरव से जंगल में ऐसा जान पड़ता है मानों सोई हुई प्रकृति जाग पड़ी हो।

किसान अपने हरे-भरे खेत के किनारे अपने भविष्य की कल्पनाओं में मस्त दिखाई पड़ता है। ग्वाला मैदान में अपनी गाय और भैंस को चराता हुआ बिरहा गाने में बेसुध रहता है। कहार डोलियों में कन्याओं को उनके नैहर की ओर लिये जाते हुए और मर्म-वेधी गीत गाते हुए दिखाई पड़ते हैं।

इस प्रकार से सावन के महीने में प्रकृति सर्वत्र हरी दिखाई पड़ती है और मेघों के आगमन के साथ ही साथ प्रकृति में एक विचित्र तरह की मादकता पाई जाने लगती है। संभवतः महाकवि कालिदास ने "मेघालोके भवति सुखिनोप्यन्यथा वृत्तिचेतः" लिख कर इसी मादकता या मस्तीपन की ओर संकेत किया है। महाकवि सूरदास को तो सारी प्रकृति ही हरी-हरी सूझ रही है—आप कहते हैं—

"जित देखो तित स्याम मयी है।
स्याम कुंज, वन, यमुना स्यामा ;
स्याम स्याम नव घटा छई है॥
जित देखो तित स्याम मयी है।

सावन के महीने में हर एक गाँव में, बाग में या तालाब के किनारे झूले लगाये जाते हैं जिनमें गाँव के स्त्री-पुरुष झूला झूलते रहते हैं। इन झूलों को लगाने के लिये बड़ी तैयारी की जाती है। सुन्दर रंगीन रस्सी होती है और काठ के तख्ते में उसे बाँधकर पेड़ की किसी शाखा से लटका देते हैं। इसी सुसज्जित झूले पर बैठ कर नर-नारी आनन्द उठाते हैं और सावन के गीत गाते जाते हैं। कोई पुरुष झूले पर खड़े होकर उसे झटका देकर ज़ोर से चलाता रहता है इसे पेंग बढ़ाना कहते हैं। इस प्रकार सावन में झूले का दृश्य बड़ा ही आनन्द-दायक होता है।

सावन के मनभावन महीने में भोजपुर प्रान्त में भी कजली गाने का बहुत प्रचार है। मिर्जापूर जिले की कजली प्रसिद्ध है। वहाँ सावन के दिनों में कजली के दंगल भी हुआ करते हैं जिनमें दो पार्टियाँ बड़ी अदा के साथ कजली सुनाती हैं। सचमुच ही यह दृश्य देखने योग्य होता है। जब गवैये अपने

मधुर कण्ठ से "घिरी आई री बदरिया सावन की" गाने लगते हैं तब वास्तव में समा बँध जाता है।

नीचे कजली के जो गीत दिये जाते हैं उनमें कहीं तो सावन के सुहावन महीने में झूला झूलने का वर्णन किया है तो कहीं इस आनन्दोत्सव पर प्रियतम के विरह के कारण दुःख की व्यञ्जना की गई है। सखियों के साथ झूला झूलने में जो आनन्द मिलता है उसका बड़ा ही सुन्दर वर्णन है परन्तु साथ ही पति के वियोग से उत्पन्न व्यथा का वर्णन भी कुछ कम मनोरम नहीं है। नीचे हम पाठकों के मनोरंजन के लिये कुछ कजली दे रहे हैं:—

सन्दर्भ—स्त्री के द्वारा पति से काम-क्रीड़ा की प्रार्थना

(२२०)

सोने के थारी[1] में जेवना[2] परोसलों[3]; जेवना ना जेवें[4]।
राजावा लागल फूलन को तोसक; मुझको हवा खिला दो ना ॥१॥
हवा खिला दो, सहर घुमा दो; राजवा बेसरि[5] गीरे मधुबन में,
मुझको हवा खिला दो ना ॥ २ ॥
झंझर गडुवा, सुराही के पानी; पनिया[6] न पीये।
राजावा झूला लागे मधुवन में; मुझको झूला झुला दो ना ॥३॥
झूला झुला दो, सहर घुमा दो, राजावा बेसर गीरे मधुबन में,
मुझको हवा खिला दो ॥४॥

कोई स्त्री कह रही है कि मैंने सोने की थाली में अपने पति को भोजन दिया था परन्तु उसने उसे नहीं खाया। ऐ पति! सेज पर फूल बिछे हैं; मुझे टहलाने के लिये ले चलो ॥ १ ॥

मुझे हवा खिलाओ और शहर में घुमाओ। ऐ पति! मेरी नाक का बेसर वृन्दावन (मधुवन) में गिर गया है उसे ढूँढ़ लाओ ॥ २ ॥

सुराही का पानी मैंने तुमको पीने के लिये दिया है परन्तु तुम उसे नहीं पीते हो। ऐ पति! मधुवन में झूला लगा हुआ है। मुझे झूले पर हिलाओ ॥ ३ ॥

[1]थाली। [2]भोजन। [3]परोसा। [4]खाता है। [5]नाक का गहना। [6]पानी को।

मुझे झूला झुला दो और शहर में घुमा दो और मुझे हवा खिलाओ ॥४॥

सोने की थाली में भोजन देने की कल्पना बड़ी ही भव्य तथा सुन्दर है। स्त्री अपने पति के लिये किसी भी वस्तु को अनमोल नहीं समझती। यह उसके उत्कट प्रेम का परिणाम है।

सन्दर्भ—साथ साथ काम-क्रीड़ा न करने के कारण स्त्री का पति को उलाहना

(२२१

सोने के थाली में जेवना परोसलों; जेवना ना जेवे।
जेवना जेवें राधिका प्यारी; साथे गिरधारी ॥१॥
चनन के पीढ़ई रेसम के डोरी; झूलना ना झूले।
झूलवा झूलें राधिका प्यारी; साथे गिरधारी ॥२॥
फूलवा हजारी के सेजिया डसवलों; सेजिया ना सोवे।
झूलवा झूलें राधिका प्यारी; साथे गिरधारी ॥३॥

सोने की थाली में भोजन परोसा गया है परन्तु पति भोजन नहीं करता है। राधिकाजी कृष्ण के साथ भोजन कर रही हैं ॥ १ ॥

चन्दन का पीढ़ा है और उसमें रेशम की डोर लगी हुई है। उस झूले पर बैठ कर राधिका जी कृष्ण के साथ झूला झूल रही हैं ॥ २ ॥

हजारों फूलों को चुनकर सेज डसाया गया है। परन्तु कृष्णजी उस पर नहीं सोते हैं और राधिकाजी के साथ झूला झूलते हैं ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—सावन के महीने में प्रोषितपतिका स्त्री की व्याकुलता का वर्णन

(२२२)

बादल बरसे बिजुली चमके, जियरा ललचे मोर सखिया।
सइयाँ घरे ना अइलें पानी; बसरन लागेला मोर सखिया ॥१॥
सब सखियन मिलि धूम मचायो मोर सखिया।
हम बैठी मनमारी[1] रंग, महल में मोर सखिया ॥२॥

[1] चित्त को उदास किये हुए।

सावन का महीना है। बादल बरस रहे हैं और बिजुली चमक रही है। पति अभी तक परदेश से लौटकर नहीं आया। उसके लिये मेरा हृदय तरस रहा है ॥ १ ॥

सावन में आनन्द के कारण सब सखियाँ शोर मचा रही हैं और मैं अपने महल में पति-विहीन होने के कारण चित्त को खिन्न किये बैठी हूँ ॥ २ ॥

सचमुच सावन में पति का वियोग असह्य होता है।

सन्दर्भ—ससुर की अपनी वधू के ऊपर कुदृष्टि

(२२३)

सासु के दाँत रे बतीसी;[१] बहू का बाँही गोदना[२]।
ससुर जेवना ना जेंवेलें; मोर नीहारें[३] गोदना ॥१॥
जाहु हम जनीतीं ससुर, नीहरब तू गोदना।
ससुर नाहीं रे गोदइतों; आपन बाहीं गोदना ॥२॥

सासु के दाँत में मिस्सी (काला पाउडर) लगा हुआ था और बधू के हाथ में गोदना गोदा हुआ था। ससुर जब खाने के लिये घर आया तब उसकी दृष्टि बधू के गोदने के ऊपर गयी और उसे टकटकी लगा कर देखने लगा ॥ १ ॥

बधू ने कहा कि यदि मैं जानती कि तुम मेरा गोदना देखोगे तो मैं अपने हाथ में गोदना बिल्कुल नहीं गोदवाती ॥ २ ॥

सन्दर्भ—अल्पवयस्का स्त्री को घर छोड़ पति का परदेश जाना

(२२४)

सोने के थाली में जेवना परोसलों; जेवना ना जेवे।
हरि मोरा चलले बांगाला ॥१॥
दर्जी बेटवना[४] चोलिया सियवलीं[५]; डिठिया[६] जनि लगाऊ।
मोके लरिका रे गदेलवा[७]; हरि छोड़ि गइले ना ॥२॥

---

[१]मिस्सी। [२]काली पक्की शरीर में खिंची रेखा। [३]देखता है। [४]लड़का, बेटा। [५]सिलाया। [६]दृष्टि। [७]छोटा बच्चा।

सोने की थाली में मैंने भोजन परोसा था परन्तु मेरा पति बिना भोजन किये ही बंगाल चला गया ॥ १ ॥

स्त्री दर्जी के लड़के से अपनी चोली सिला रही है और उससे कहती है कि तुम मेरे ऊपर दृष्टि न गड़ाओ। मेरा पति मुझे छोटी अवस्था में घर छोड़ कर आप परदेश चला गया है ॥ २ ॥

सन्दर्भ—सावन मास में बाहर न निकलने की पति की प्रार्थना स्त्री से

(२२५)

जनिया[1] मति खोलु खिरकिया[2], अइली सावन की बहार।
सावन महिनवा में बड़ी रे धुधेड़ी[3]; लेई जइहें उड़ाई[4] ॥ १ ॥
जनिया मति खोलु०
पुड़ी, मिठाई अवरू कचौड़ी, जनिया लेके अइबों ना।
जानि मति खोलु खिरकिया, अइली सावन की बहार ॥ २ ॥

पति अपनी स्त्री से कह रहा है कि सावन मास का आनन्द अब आ गया है अतः खिड़की मत खोलो। सावन के महीने में बड़ी धूम मचती है कोई तुम्हें लेकर चला न जाय ॥ १ ॥

मैं तुम्हारे लिये पूड़ी, मिठाई और कचौड़ी खाने के लिये लाऊँगा अतः तुम खिड़की मत खोलो ॥ २ ॥

सन्दर्भ—प्रोषितपतिका स्त्री की सावन मास में व्याकुलता का वर्णन

(२२६)

सोने के थारी में जेवना परोसलों; जेवना ना जेवे हो।
सखिया साझे भये बेरी[5] बिसवे[6]; सामी घरे ना अइलें हो ॥ १ ॥

[1]स्त्री। [2]खिड़की। [3]धूम। [4]भगा ले जायेगा। [5]बेला, समय। [6]व्यतीत गया।

बोलु बोलु कागवा रे सुलछन[1] बोलिया।
घेरि घेरि आयो रे बादरवा[2]; घाटा कारी[3] कारी ना॥ २॥
बरसे बरसे रे बदरवा; बिजुरी चमके ना।
काली काली रे अँधेरिया; हरि ना अइलें ना॥ ३॥

सोने की थाली में भोजन दिया था परन्तु पति ने उसे नहीं खाया तथा वह परदेश चला गया। ऐ सखि! आज शीघ्र ही सूर्यास्त हो गया परन्तु पति घर नहीं लौटा॥ १॥

स्त्री कहती है कि ऐ कौआ! तुम सुन्दर बोली (पति का आगमन-सूचक) बोलो। ऐ सखी! अब काली-काली घटायें घिर आईं॥ २॥

वह सखी से कहती है कि बादल बरस रहे हैं और बिजुली चमक रही है। काली-काली अँधेरी रात छाई हुई है परन्तु हाय! पति अभी तक नहीं आया॥३॥

सन्दर्भ—प्रोषितपतिका स्त्री का विरह-वर्णन

(२२७)

घिरि आइलि रे बादरिया[4] सावन की। टेक
सावन की मनभावन की; घिरि आइलि रे बादरिया सावन की॥१॥
रिमझिम रिमझिम बुनवा[5] बरसे।
आजु अवधि पिया आवन की॥ २॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की।
बादर बरसे, बिजुली तड़पे।
आवत मोहि डरावन की॥ ३॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की।
कड़कड़ गरजे, पड़पड़[6] बरसे।
धीरज मोर नसावन की॥ ४॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की॥

[1]सुलक्षण, सुन्दर। [2]बादल। [3]काली काली। [4]बादल। [5]बूँद। [6]ज़ोर से।

भई अँधियारी, कुछु नाहिं सूझै[1] ।
जियरा[2] मोर कँपावन की ॥ ५ ॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की ॥
अति निरमोही[3] पिय ना अइलें ।
आसा अब ना आवन की ॥ ६ ॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की ॥
प्रीतम आज बिदेसे बइठल ।
पाती[4] ना पायो मनभावन[5] की ॥ ७ ॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की ॥
बन में आजु पपीहा बोले ।
पी, पी नाहिं सुहावन की ॥ ८ ॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की ॥
दादुर दुरमुख[6] टर टर बोलत ।
साहस मोर भगावन की ॥ ९ ॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की ॥
सखियाँ झूला हिलि मिलि झूलत ।
मोर जियरा बरसावन[7] की ॥ १० ॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की ॥

सावन के बादल घिर आये । मन को सुहावने लगने वाले बादल घिर आये ॥ १ ॥

बादल रिमझिम-रिमझिम करके बरसने लगे । आज हमारे प्रियतम के आने का समय है (इसी सावन के महीने में उन्होंने आने को कहा था) ॥ २ ॥

बादल बरस रहे हैं और बिजुली कड़-कड़ की आवाज़ ज़ोरों से कर रही है । ये बादल मुझे डराने के लिये चले आ रहे हैं ॥ ३ ॥

---

[1]दिखाई पड़ता है । [2]हृदय । [3]निर्मोही, निर्दयी । [4]चिट्ठी । [5]पति । [6]दुर्मुख, दुष्ट । [7]तरसना, ललचाना ।

बिजुली आवाज कर रही है और बादल मूसलाधार वृष्टि कर रहे हैं। ये मेरे धीरज को नष्ट कर रहे हैं ॥ ४ ॥

चारों तरफ अन्धेरा हो गया है और कुछ दिखाई नहीं पड़ता। मेरा हृदय डर से और प्रियतम के न आने की आशंका से काँप रहा है ॥ ५ ॥

मेरा प्रियतम अत्यन्त निर्दयी है क्योंकि वह अब तक लौट कर नहीं आया। अब उसके आने की बिल्कुल ही आशा नहीं है ॥ ६ ॥

मेरा पति आज परदेश में बैठा हुआ है। उसने अभी तक अपनी कुशल का एक भी पत्र नहीं भेजा ॥ ७ ॥

वन में आज पपीहा पी, पी बोल रहा है परन्तु उसका बोलना मुझे ज़रा भी अच्छा नहीं लगता है ॥ ८ ॥

आज कठोर शब्द उच्चारण करने वाला मेढक 'टर टर' की आवाज लगा रहा है। इस कारण मेरा बचा हुआ साहस और भी नष्ट होता चला जा रहा है ॥ ९ ॥

आज मेरी सखियाँ हिल-मिल करके झूले पर झूल रही हैं तथा मेरे हृदय को वे तरसा रही हैं क्योंकि पति-वियोग के कारण मेरा चित्त दुःखी है और मैं झूला झूलने में असमर्थ हूँ ॥ १० ॥

इस गीत में विरह-विधुरा स्त्री का बड़ा सुन्दर वर्णन किया गया है। सचमुच सावन के सुहावने महीने में प्रियतम का वियोग असह्य होता है।

१३. चैता या घाँटो

वसन्त का आगमन कितना मनोहर होता है। इस बात को दुहराने की आवश्यकता नहीं है। भीषण जाड़ा के अनन्तर ऋतु परिवर्तन नितान्त हृदयहारी प्रतीत होता है। इस समय भोजपुर प्रदेश की देहात में चित्त बहलाने के लिए जो गीत गाये जाते हैं वे चैता या घाँटो के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन गीतों के गाने का ढंग भी बिलकुल निराला होता है। इनके आरम्भ में "रामा" और अन्त में "हो रामा" शब्दों का प्रयोग किया जाता है। आरम्भ उच्चस्वर से किया जाता है, बीच में अवरोह (उतराव) आता है और फिर अन्त में आरोह (चढ़ाव) आता है। स्वरों के इस आरोहावरोह क्रम से इन गायनों की संगीत-माधुरी श्रोताओं के कानों में आनन्दोल्लास प्रकट करती है और विरहिणियों के दुःखित हृदय को प्रफुल्लित बनाने में विशेष रूप से सफल होती हैं। भोजपुरी गीतों में चैता अपनी मधुरिमा तथा कोमलता में सानी नहीं रखता। इसके गाने में एक विशेष प्रकार की हृदय-द्रावकता रहती है जो श्रोताओं के चित्त को मुग्ध कर देती है। चैत मास में होने वाले भोजपुरी मेलों में जब कोई चैता गाने लगता है और जब

"आरे हमरी अटरिया हो रामा.
सुगना बोले हो।"

का राग अलापने लगता है तब श्रोताओं की भीड़ लग जाती है। ये चैता के गीत अशिक्षित जनता के हृदय को स्पर्श करने में जितने समर्थ होते हैं उतने अन्य गीत नहीं। इसीलिये ये गीत इतने सर्वप्रिय हैं।

सन्दर्भ—क्रुद्ध हो कर सोये हुए पति को जगाने के लिये भावज की अपनी ननद से प्रार्थना।

(२२८)

राम साँझहि के सूतल, फूटलि किरिनिया ॥ हो रामा ॥
तबो नाहिं जागेलें हमरो बलमुआ ॥ हो रामा ॥१॥

राम चुर-बीचीं मारलीं पइरिया-घींची मारलीं ॥ हो रामा ॥
तबो नाहिं जागेलें सैयाँ अभागा ॥ हो रामा ॥२॥
राम गोड़ तोरा लागोला लहुरि ननदिया ॥ हो रामा ॥
रचि एक आपन भैया देहू ना जगाई ॥ हो रामा ॥३॥
राम कैसे के भौजी भैया के जगाइबी ॥ हो रामा ॥
हमरो भैया निंदिया के मातल ॥ हो रामा ॥४॥
राम तोरा लेखे ननदी तोर भैया निनिया के मातल ॥ हो रामा ॥
मोरा लेखे चान सुरुज दूनो छपित भइलें ॥ हो रामा ॥५॥
राम चढ़ले चैत घाँटो गावे ॥ हो रामा ॥
गाइ गाइ बिरहिन सखि समुझावे ॥ हो रामा ॥६॥

यह वियोग का गाना है। स्त्री और पुरुष के क्षणिक वियोग का कैसा सुन्दर वर्णन किया गया है—

पति (शाम) संध्या को ही सो गया। इस समय सूर्य की किरणें निकल रही हैं। लेकिन इस समय तक मेरे प्रिय सोये हुए हैं ॥ १ ॥

खाट के चूर को निकाल कर मारती है और तेल के निकालने की पैरी से भी मारती है। तब भी मेरे पति जागते नहीं ॥ २ ॥

ऐ छोटी ननद मैं तुम्हारे पैरों पर गिरती हूँ। ज़रा जाकर अपने भाई को जगा दो ॥ ३ ॥

ननद कहती है कि मेरा भाई अच्छी तरह सोया हुआ है। अतः उसे मैं कैसे जगा सकती हूँ ॥ ४ ॥

स्त्री कहती है कि तुम्हारे लिए तुम्हारा भाई नींद से मतवाला हो गया है। मेरे लिए चन्द्रमा और सूर्य दोनों छिप गये हैं ॥ ५ ॥

चैत्र मास के चढ़ने पर घाँटो गाया जाता है। गा-गाकर सखी बिरहिन को समुझाती हैं ॥ ६ ॥

नोट—घाँटो—चैत्र मास में गाने योग्य गीत। इसे कोई "चैता" और कोई घाटों कहकर पुकारते हैं।

सन्दर्भ—ननद और भावज का पानी भरने जाना और किसी कामुक का उनके साथ व्यभिचार करने का प्रयत्न

(२२६)

रामा ननदी भौजिया दुनु पनिहारिन ॥ हो रामा ॥
मिलि जुलि सागर पानि भरे चलली ॥ हो रामा ॥ १ ॥
रामा भरि घूठि पनिया घरिलवो ना डूबे ॥ हो रामा ॥
कौन रसिकवें घरिल जुठिअवले ॥ हो रामा ॥ २ ॥
रामा घरिला भरि भरि अररा चढ़वलीं ॥ हो रामा ॥
केहूँ नाहिँ घरिला मोर अलगावे ॥ हो रामा ॥ ३ ॥
रामा घोड़वा चढ़ल आवे हन्सराज ॥ हो रामा ॥
रचि एक घरिला मोर अलगाव ॥ हो रामा ॥ ४ ॥
रामा एक हाथ हन्सराज घरिला अलगवलें ॥ हो रामा ॥
दूजा रे हाथे आँचर धई बेलमावे ॥ हो रामा ॥ ५ ॥
राम छोड़ छोड़ हन्सराज मोर अँचरवा ॥ हो रामा ॥
मोरा घरे सासु ननदि बाड़ी दारुन ॥ हो रामा ॥ ६ ॥
रामा जो तोर सुन्दरी, सासु ननदि घरवा दारुन ॥ हो रामा ॥
काहे लागि सागर पनिया के अइलू ॥ हो रामा ॥ ७ ॥
रामा देवरा भुखाइल आरे भैया पाहुन ॥ हो रामा ॥
ओहि लागि सागर पनिया के अइलीं ॥ हो रामा ॥ ८ ॥
रामा चढ़ला चइतवा चइत-घाँटो गावे ॥ हो रामा ॥
गाइ गाइ बिरहिन सखि समुझावे ॥ हो रामा ॥ ९ ॥

ननद और भौजाई अपने शिर पर जलकुम्भ रखकर एक साथ पानी लेने के लिए तालाब को जा रही हैं ॥ १ ॥

घुटने भर तक पानी था। इसलिए घड़े में पानी नहीं भर सकता था। वह कौन रसिक था जिसने मेरे घड़े को जूठा कर दिया ॥ २ ॥

मैंने घड़े को भर कर किनारे पर रख दिया लेकिन उसको उठाने वाला कोई नहीं दिखाई पड़ता ॥ ३ ॥

इतने में हन्सराज घोड़े पर चढ़कर आये और मैंने घड़ा उठाने के लिए उनसे कहा ॥ ४ ॥

एक हाथ से उसने घड़ा उठा दिया और दूसरे हाथ से मेरा आँचल पकड़ मुझको रोक रखा ॥ ५ ॥

मैंने कहा कि हन्सराज मेरा आँचल छोड़ो। घर पर मेरी सासु और ननद बड़ी क्रूर-हृदया हैं ॥ ६ ॥

इस पर उसने कहा कि ऐसी बात है तो तुम पानी भरने क्यों आई ? मेरा देवर भूखा है और भाई पाहुन बनकर आया है। उन्हीं के लिए मैं पानी भरने के लिए आई ॥ ७ । ८ ॥

चैत का महीना लगा है। इस ऋतु के अनुरूप घाँटो गा-गा कर लोग विरहिन को समझा रहे हैं ॥ ९ ॥

सन्दर्भ—किसी ग्वालिन का दही वेंचने जाना एवं किसी कामुक कुँवर की उस पर कुदृष्टि

(२३०)

रामा छोटि मुटि ग्वालिनि सिर तो मटुकिया[1] ॥ हो रामा ॥
चलि भइलि मथुरा नगर दही वेंचन ॥ हो रामा ॥ १ ॥
रामा जहाँ जहाँ ग्वालिनि धरेले मटुकिया ॥ हो रामा ॥
तहाँ जहाँ कुँअर तमुआ[2] तनावे ॥ हो रामा ॥ २ ॥
रामा आगू होख आगू होख राजा के कुँअरवा ॥ हो रामा ॥
परि जइहें दही के छिटिकवा ॥ हो रामा ॥ ३ ॥
रामा तोरा लेखे ग्वालिनि दही के छिटिकवा ॥ हो रामा ॥
मोरा लेखे अगर चनन देव बरिसे ॥ हो रामा ॥ ४ ॥

---

[1]मटका (दधि-पात्र)। [2]तम्बू।

रामा चढ़ले चइतवा, चइत-घाँटो गावे ॥ हो रामा ॥
गाइ गाइ बिरहिन सखि समुझावे ॥ हो रामा ॥ ५ ॥

छोटी आयु की ग्वालिन शिर पर मटका [दधि-पात्र] लेकर दधि बेचने के लिए मथुरा नगर में जा रही है ॥ १ ॥

जहाँ-जहाँ ग्वालिन अपना मटका रखती है तहाँ-तहाँ कुँअर अपना तम्बू तानता है ॥ २ ॥

ए राजा के कुँअर ! आगे चलो, आगे चलो [मुझे रोको मत] नहीं दधि का छींटा तुम्हारे ऊपर पड़ जायेगा ॥ ३ ॥

कुँअर ने उत्तर दिया कि हे ग्वालिन ! तेरे ही लिए दधि के छींटे हैं। मेरे लिए तो जान पड़ता है कि देवता लोग अगर [अगुरू] और चन्दन बरसा रहे हैं ॥ ४ ॥

चैत का महीना है। लोग घाँटो गा-गाकर विरहिन को समझा रहे हैं ॥५॥

सन्दर्भ—मूँग को लेने वाली स्त्री के साथ खेत के रखवार का अनाचार वर्णन

(२३१)

रामा नदिया किनरवा मुँगिया बोअवलीं ॥ हो रामा ॥
सेहू मुँगिया फरेले घवघवा[1] ॥ हो रामा ॥ १ ॥
रामा एक फाँड़[2] तुरलीं दोसर फाँड़ तुरलीं ॥ हो रामा ॥
आइ गइलें खेत रखवरवा[3] ॥ हो रामा ॥ २ ॥
रामा एक छड़ी मारले दोसर छड़ी मारले ॥ हो रामा ॥
लूटि लेले हन्स परेउआ[4] दूनो जोबना[5] ॥ हो रामा ॥ ३ ॥
रामा दास बुलाकी चैत घाँटो गावे ॥ हो रामा ॥
गाइ गाइ बिरहिन सखि समुझावे ॥ हो रामा ॥ ४ ॥

---

[1]गुच्छ। [2]आँचल, अंचल। [3]खेत की रखवाली करने वाला अर्थात् मालिक। [4]कबूतर। [5]स्तन।

मैंने मूँग नदी के किनारे बोया है और मूँग गुच्छ का गुच्छ पैदा हुआ है ।।१

हे राम ! एक आँचर भर मूंग के दानों को तोड़ लिया और फिर दूसरे आँचर में भी पूरा तोड़ लिया। तब तक खेत का मालिक आ गया ॥ २ ॥

आकर उसने एक छड़ी मुझ को जमाया और फिर दूसरी छड़ी भी चलाया और मेरे हंस और कबूतर, दोनों स्तनों को लूट लिया ॥ ३ ॥

बुलाकीदास चैत्र मास में घाँटो गाते हैं और इस गीत को गा-गाकर सखियाँ बिरहिन को समझा रही हैं ॥ ४ ॥

---

१४. बिरहा

बिरहा भोजपुरी गीतों में विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। बरसात के दिनों में तथा शादी आदि के शुभ अवसरों पर अहीर लोग बिरहा गाकर अपना तथा श्रोताओं का पर्याप्त मनोरंजन करते हैं। यह बड़ा ही उत्साहवर्धक होता है परन्तु वीर-रस के समान अन्य रसों का भी समावेश इनमें दीख पड़ता है। इनमें अहीरों के जीवन—सादी रहन सहन, गौओं की चरवाही, उनके लिए तत्परता—की मधुर झाँकी दिखाई पड़ती है। इनके विषय में विशेष जानने के लिए भूमिका में 'बिरहा की बहार' देखिये।

सन्दर्भ—कमल के पौधे की ईश्वर से प्रार्थना

(२३२)

पुरइन[१] बिनवेलि[२] एकल राम के;
दहवा[३] में परलीं अकेलि।
पतवा तूरि तूरि[४] जाला भोज-सरवा[५];
फूल चढ़े तेकर महादेव ॥

कमलिनी राम से प्रार्थना करती है कि मैं तालाब में अकेली पड़ी हुई हूँ। राम ने उसकी प्रार्थना सुन ली। उसका पत्ता भोजनालय में पवित्र समझ कर जाने लगा और उसका फूल महादेव के सिर पर चढ़ाया जाने लगा।

नोट—पुरैन का पत्ता भोजन के लिये पत्तल के रूप में प्रयोग किया जाता है तथा बड़ा पवित्र माना जाता है।

---

[१]कमलिनी। [२]प्रार्थना करती है। [३]तालाब। [४]तोड़-तोड़ करके। [५]भोजनशाला (रसोई घर)।

सन्दर्भ—सेमल के वृक्ष का अपनी निरुपयोगिता पर दुःख प्रकट करना

(२३३)

मने मने झाखेला[1] फेड़वा[2] सेमरवा[3] के;
काहे फूलवा मोर लाल।
काहे फुलवा ना चढ़े इसरी[4] देवलवा के;
काहे मलिया ना गुहे[5] माल॥

सेमल (शाल्मली) का वृक्ष अपनी निरुपयोगिता पर हृदय में खिन्न होकर कह रहा है कि मेरा फूल लाल क्यों हुआ ? क्यों यह दुर्गा के मस्तक पर नहीं चढ़ाया जाता और माली इसका हार क्यों नहीं गूँथता ?

नोट—सेमल का फूल खूब लाल, मनोमोहक तथा सुन्दर परन्तु गन्धहीन होता है। इसीलिये वह भड़कीली परन्तु बेकाम की चीज़ों का उपमान माना जाता है।

सन्दर्भ—देवी को पिलाने के लिये दूध लाने का प्रयत्न

(२३४)

हमरी देबिया भुखइली रे भइया;
माँगेली पियनवा[6] के दूध।
बरवा[7] दूहों कि बरोहिया[8] रे यरवा[9];
मोरि गइया गइलि बा बड़ी दूर॥

कोई भक्त अपने मित्र से कह रहा है कि ऐ भाई ! मेरी ही बार देवी को भूख लगी है और वह पीने के लिये दूध माँग रही है। ऐ मित्र ! मैं बट वृक्ष को दूहूँ या बरोह को ? मेरी गायें बड़ी दूर चली गई हैं अर्थात् यदि गायें होती तो दूध मिल सकता था। बरोह दूहने से दूध थोड़े निकल सकता है।

---

[1]दुःख करता है। [2]पेड़। [3]सेमल। [4]ईश्वरी (दुर्गा)। [5]गूँथता है। [6]पीने के लिये। [7]बरगद का पेड़। [8]बरोह अर्थात् बरगद के पेड़ से लटकने वाली लम्बी जटायें। [9]मित्र।

सन्दर्भ—भक्त के द्वारा सरस्वती को दूध देने की प्रार्थना

(२३५)

देविया देविया पुकारे देवी सारदा;
देवी सरगे[1] में मँडराइ[2] ।
तोहरा के देवों देवी दूधवा के धारावा;
सरग लेना[3] उतरि ना आउ[4] ॥

भक्त पुकार कर कह रहा है कि हे देवी शारदे! आओ परन्तु देवी स्वर्ग में घूम रही हैं। फिर भक्त कहता है कि हे देवी! मैं तुम्हें दूध की धारा दूँगा, तुम स्वर्ग से उतर आओ।

सन्दर्भ—ग्राम-देवता की पुकार

(२३६)

डिहवा[5] डिहवा पुकारे डिहवरवा[6] ।
डीह सुतले हा निरभेद[7] ॥
तोहरा गरभ[8] चढ़ि अइलीं रे डिहवा ।
पहिल बोलिया ना राखे मोर ॥

ग्राम का देवता पुकार कर कह रहा है—गाँव, गाँव। परन्तु गाँव अचेत सो रहा है। इस पर देवता कह रहे हैं कि तुम्हारे अभिमान पर ही तो मैं यहाँ आया; तुम मेरी पहली ही बोली का जवाब नहीं दे रहे हो।

सन्दर्भ—कृष्ण का गोपी-प्रेम-वर्णन

(२३७)

बने बने गइया चरावेलें कन्हइया ।
घरे घरे जोरेलें पिरीति ॥
अनका मउगि,[9] के सानि[10] मारि अइले ।
आखिरो त जाति अहीर ॥

[1]स्वर्ग। [2]चक्कर काटना। [3]से। [4]आओ। [5]गाँव। [6]ग्राम के देवता। [7]अचेत। [8]गर्व। [9]स्त्री। [10]इशारा।

कृष्ण जी बन-बन में जाकर गौ चराया करते हैं और प्रत्येक घर से प्रेम जोड़ा करते हैं। दूसरे की स्त्री के ऊपर इशारा करते हैं। ठीक ही है वे तो जाति के अहीर ही हैं।

सन्दर्भ—कलि में धर्म की विपरीतता का वर्णन

(२३८)

सुअरिया गंगा जुठारलि, ए रामा।
भगत भइले चमार॥
राम जी का हथवा का तुलसी के मलवा।
कलऊ जपेला कलवार॥

कलियुग में क्या क्या होता है। इसका वर्णन किया गया है। गंगाजी के जल को सूअर जूठा कर देती है। चमार (शूद्र जाति) ईश्वर के भक्त होते हैं। कलवार हाथ में तुलसी की माला लेकर राम राम जप रहा है।

सन्दर्भ—स्त्री के गोदना गोदाने का वर्णन

(२३९)

गोरि गोरि बँहियाँ गोरि गोदना गोदावेले।
सुइया साले अल्हर[1] करेज।
अइसन गोदना गोदू गोदनरिया।
जइसे चूँनरी रंगेला रँगरेज॥

गोरी (सुन्दरी) अपने गोरे-गोरे हाथों पर गोदना गोदा रही है। सुई उसके सुकुमार हृदय को छेद रही है। इतने कष्ट होने पर भी वह गोदना गोदने वाली से कह रही है कि ऐसा गोदना गोदो जैसे रँगरेज चूँदरी रँगता है। इसी विषय में पद्माकर की यह सुन्दर सवैया अत्यन्त प्रसिद्ध है जिसमें राधा गोदने वाली से अपने शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों पर कृष्ण के भिन्न-भिन्न रूप को गोद देने की प्रार्थना कर रही हैं—

---

[1]सुकुमार।

दे लिख बाँहन में ब्रजचन्द्र गोल कपोलन कुंज बिहारी।
त्यों पद्माकर याही हिये, हरि गो से गोविन्द गरे गिरिधारी॥
या विध से नख से सिखलों लिख नाम अनन्त भवैभव प्यारी।
साँवरे की रंग गोद दे गात अरी गुदनान की गोदनहारी॥

सन्दर्भ—कामुक के द्वारा चौर्य्यरति वर्णन

(२४०)

पिसना के परिकल[1] मुसरिया तुसरिया।
दुधवा के परिकल बिलारि॥
आपन आपन जोवना सम्हारिहे वेटिउआ।
रहरि में लागल व हुँड़ार[2]॥

चूहे वगैरह आटा खाने के आदी होते हैं। बिल्ली दूध पीने की आदी होती हैं। ऐ लड़कियो अपने-अपने जोबन को हुशियारी से रक्खो। अरहर के खेत में भेड़िया छिपा हुआ है।

सन्दर्भ—स्त्री के यौवन का वर्णन

(२४१)

आमवा के लागेले टिकोरवा, रे संगिया।
गुल्लरि फरेले हड़-फोर॥
गोरिया का उठले हो छाती के जोबनवा।
पिया के खेलवना रे होई॥

हे मित्र! आम में छोटे-छोटे फल लगते हैं। प्रत्येक पेड़ में गूलर फूलता है। गोरी के वक्षस्थल पर यौवन उठ रहा है। वह प्रियतम का खेलवना होता है।

सन्दर्भ—युवती स्त्री के ऊपर किसी कामी की कुदृष्टि

(२४२)

बगसर से गोरिया अकसर चलली।
भरि माँग मोतिया गुहाई॥

[1]अभ्यस्त। [2]भेड़िया।

कवना चेलिकवा के नजरी परली,
मोरि मोतिया गिरेले भहराई ॥

माँग भर मोती गुहाकर स्त्री (गोरी) बगसर से अकेले जा रही है। किस रसिक की नजर उस पर पड़ गई कि घबड़ाहट में मेरे मोती टूट-टूट कर जमीन पर गिरने लगे।

सन्दर्भ—कुलटा का अन्य पति से प्रेम-वर्णन

(२४३)

बहे पुरुवइया अइली जम्हुअइया[1]।
ठाढ़ि देहिया रे माहियाए।
कवना चेलिकवा[2] के नजरी परली।
मोरा घरवा बनवा एको ना सोहाए।

पुरवैया हवा बह रही है और जम्हाई आ रही है। मेरा शरीर आलस्य युक्त है। न जाने किस रसिक की नजर मेरे ऊपर पड़ गई है कि मुझे न घर, न बन कोई भी सुहावना नहीं लगता।

सन्दर्भ—पुत्र न होने से युवती स्त्री का दुःख करना

(२४४)

कछुई बिअइलि हा कछुआ, ए रामा।
गंगाजी बिअइलि हा रेत।
छोटि छोटि बेटिया तँ बेटवा बिअइलि हा।
बजरि परीना एहि पेट।

कछुई कछुआ को पैदा करती है। गंगा जी रेत को पैदा करती है। छोटी लड़कियाँ पुत्रों को पैदा करती हैं। हमारी कोख पर वज्र पड़े क्योंकि इससे कोई भी लड़का नहीं पैदा हुआ।

---

[1]जम्हाई। [2]रसिक।

सन्दर्भ—कामुक पति से युवती स्त्री की प्रशंसा

(२४५)

बड़ निक लागेले गइया के गएरिया।
जौं त भुँइयाँ परती होए॥
बड़ निक लागेले मेहरी के गोदवा।
जब ले लरिकवा नाँ होए॥

गाय की चरवाही बड़ी ही अच्छी लगती है जब कि चरागाह बहुत ही लम्बा होता है। स्त्री की गोद बहुत ही सुन्दर लगती है जब तक पुत्र उत्पन्न नहीं होता अर्थात् वह युवती बनी रहती है। 'प्रसवान्तं हि यौवनम्' के सिद्धान्त पर यह उक्ति अवलम्बित है।

सन्दर्भ—धन गर्विता स्त्री की उक्ति

(२४६)

बइठलि साजेले बटलोहिया गोरिया।
तूरेले गेड़ुअवा[1] पर तान॥
जेतिनाँ के सइयाँ हमार करले नोकरिया।
हम ओतिनाँ के कचरीला पान॥

गोरी (स्त्री) बैठी हुई है और बटलोही (भोजन-पात्र) साफ़ कर रही है और गेड़ुवा बजाकर गा रही कि जितना उसका पति नौकरी करके रुपया कमाता है, उतना वह पान खाने में ही खर्च कर देती है।

सन्दर्भ—स्त्री का पूर्वानुराग वर्णन

(२४७)

पिया पिया कहत पीअरि भइलि देहिया।
लोगवा कहेला पिंड़-रोग॥
गँउआ के लोगवा मरमिओ न जानेले।
भइले गवनवाँ ना मोर॥

---

[1] बड़ा जलपात्र।

पिय का नाम लेते-लेते हमारा शरीर पीला पड़ गया है। पड़ोसी कहते हैं यह पियरी का रोग हो गया है। परन्तु गाँव के लोग इस मर्म को नहीं जानते कि गवना न होने के कारण ही ऐसी मेरी दशा है।

सन्दर्भ—गृहहीन अहीर की दुर्दशा का वर्णन

(२४८)

गैया के छूटलि गएरिया गएरिया।
गङ्गा जी के छुटले नहान॥
पकड़ी तर के छुटले उठका बइठका।
तीनों ना छोड़वले भगवान्॥

गृह-हीन अहीर अपनी दुर्दशा पर रो रहा है कि गायों की रखवाली अब मेरी छूट गई। गङ्गास्नान भी छूट गया और पकड़ी के पेड़ के नीचे की बात-चीत (उठना बैठना) छूट गया। भगवान् ने इन तीनों चीजों को मुझसे छीन लिया है।

सन्दर्भ—रमते योगी की पवित्रता का व्यंग्य से वर्णन

(२४६)

गङ्गा जी हँवीं मर-खौकी[1] ए रामा।
काँचे पकले मर खाई॥
गङ्गा जी के हवी ना निरमल जलवा।
राति दिनवा बहि जाई॥

गङ्गा मरे हुए शरीर को खाती हैं और कच्चे पक्के माँस को खाती हैं। तौ भी गङ्गाजी का जल निर्मल रहता है क्योंकि वह दिन रात बहा करता है। इस बिरहे में घर छोड़ कर इधर-उधर घूमने वाले साधु सन्त के जीवन को निर्मल होने का कारण अच्छे ढंग से बताया गया है।

---

[1] मरे को खाने वाली।

सन्दर्भ—पति का स्त्री को घोड़े पर ले जाना

(२५०)

हथवा में डारले बरेंउआ[1] रम-रेखवा;
गरवा में डारले रुद्राछ[2] ।
ललकी पगरिया बान्हि के थरवा;
जानी के उढ़रले वा जात ॥

रामरेखा अपने हाथों पर कड़ा (बरेखी) पहने हुए है और गले में रुद्राक्ष की माला है। प्रियतम अपने माथे पर लाल पगड़ी बाँधकर अपनी प्यारी को उड़ाए लिए जा रहा है।

सन्दर्भ—अहीर के बालक का वर्णन

(२५१)

धुरिया लगावे धुरियाहावा कहाले;
गिरही मारेले फरिवाह ।
उलटा दोकछवा मारे अहिरा बलकवा;
जिनकर बटुरि नँवेले करिहाँव[3] ॥

यह अहीर के लड़के का वर्णन है। धूर लगाने पर वह धूरिआह कहलाता है। गिरह मारने पर वह 'फरिवाह' कहलाता है। अहीर का बालक जब लँगोटा कस कर पीछे नवता है तब उसकी कमर झुक जाती है।

सन्दर्भ—युवती स्त्री के स्तनों को देखकर किसी कामुक की उक्ति

(२५२)

गोरि के छतिया पर उठेला जोबनवा;
हँसेला सहरिया के लोग ।
लेबू गोरि दमवा देबू हो जोबनवा;
तोरा से जतनवा ना होई ॥

---

[1]बरेखी (हाथ का कड़ा)। [2]रुद्राक्ष। [3]कमर।

गोरी स्त्री के वक्षस्थल पर यौवन का उदय होता है। शहर के रहने वाले लोग उस पर हँसते हैं। हे गोरी दाम ले लो और अपना यौवन मुझे दे दो क्योंकि तुमसे उसके लिए यत्न नहीं हो सकता।

सन्दर्भ—मुग्धा की उठती हुई जवानी का वर्णन

(२५३)

आमवा के लागेले टिकोरवा, रे सँगिया;
गुल्लरि फरेले हड़-फोर।
गोरिया का उठले हा छाती के जोवनवा;
पिया के खेलवना रे होई॥

इसका अर्थ स्पष्ट है। यौवन का वर्णन कैसे सुन्दर शब्दों में किया गया है। उपमा कितनी सुन्दर है।

---

१५. भजन

स्त्रियाँ केवल शृङ्गार और करुणरस के ही गीत नहीं गातीं बल्कि समय समय पर भक्ति से ओत-प्रोत भजन भी गाया करती हैं। जहाँ उनका हृदय शृङ्गार तथा करुण रसों से लबालब भरा रहता है वहाँ उसमें भक्ति की भी कुछ कम मात्रा नहीं रहती। घर के झंझटों से जब उन्हें अवकाश मिलता है तब वे भगवान् की स्तुति में दो चार भजन बड़े प्रेम से गाती हैं। ये भजन या तो रात को सोने के पहिले गाये जाते हैं अथवा प्रातःकाल। जब स्त्रियाँ तीर्थ-यात्रा को अथवा गंगा नहाने रेल या बैलगाड़ी में बैठकर जाती हैं तब प्रायः वे भजन ही गाया करती हैं। उनके कलकण्ठ से इन भजनों को सुनकर भक्ति का जैसा उद्रेक मनुष्य के मन में होता है उसका वर्णन करना अत्यन्त कठिन है।

ये भजन भक्ति से ओतप्रोत होते हैं जिनमें भगवान् की स्तुति रहती है। कहीं पर इन भजनों में किसी तीर्थ-यात्रा में चलने का वर्णन है तो कहीं राधिका और कृष्ण का मिलन। कहीं पर भगवान् के नाम-स्मरण करने का उपदेश है तो कहीं पर पापी मन को भगवान् का भजन न करने के लिये कोसा गया है। उदाहरण के लिये एक भजन ही पर्याप्त है:—

ऐ मनवा पापी भजन कब करबे।
जिनगी बितानी भजन कब करबे॥

× × × ×

राम् नाम मुख बोलु ऐ भाई।
छोड़ु अब जग चतुराई॥

इस प्रकार से ये भजन बड़े ही सुन्दर तथा भक्ति का उद्रेक करने वाले हैं। इनको जितना ही पढ़ा जाय उतना ही आनन्द आता है।

सन्दर्भ—राम के वन जाते समय सीता का विलाप-वर्णन

(२५४)

ठुमुकि ठुमुकि जानकी नाचसु, दसरथ जी आँगानवाँ।
राम हमारे तपोवन चलले, कइसे के रहो भवनवाँ ॥ १ ॥
आरे केकरा पर करबों सोरहो सिंगारवा, केकरा पर पहिरबि गहनवाँ।
राम हमारे तपोवन चलले०.................................. ॥ २ ॥
रामे पर पहिरबि सोरहो सिंगरवा, रामे पर पहिरबि गहनवाँ।
राम हमारे तपोवन चलले०.................................. ॥ ३ ॥

ठुमुक ठुमुक कर दशरथ के घर में व्याकुल होकर इधर उधर घूमती हुई जानकी जी कह रही हैं कि हमारे राम अब कैकेई की आज्ञा का पालन करने के लिये वन को जाने वाले हैं। अब मैं घर में कैसे रह सकती हूँ ॥ १ ॥

अब मैं किसके ऊपर शृङ्गार करूँगी तथा किसकी प्रसन्नता के लिये गहना पहिनूँगी क्योंकि रामचन्द्र वन को जा रहे हैं ॥ २ ॥

मैं राम के लिये ही शृङ्गार करूँगी और राम के लिये ही आभूषण पहिनूँगी। मेरे राम अब जंगल को जा रहे हैं अब मैं कैसे घर पर रहूँगी ॥३॥

सन्दर्भ—गोपी-कृष्ण वार्तालाप

(२५५)

ए पार गोलाघाट ओह[1] पार मठिया,
बीचे बहेले चानारावति[2] नदिया[3] ॥ १ ॥
बिसरत नाहीं बिहारी जी के मठिया।
आरे राउर मटुका[4] अपन सिरे धरिलें,
आपाना बारावा[5] के बीठा[6] बनाइलें ॥ २ ॥
आरे राउर पटुका अपन सिरे धरबी,
आपन अँचरा रउरा के ओढाइबि ॥ ३ ॥

---

[1]उस। [2]चन्द्रावती। [3]नदी। [4]घड़ा। [5]बाल। [6]घड़ा रखने की बिठई।

रउरा सांगवा[1] साम[2] बँसिया वजइवों
अरु दहि बेचे चलवि हो मथुरा नगरिया ॥ ४ ॥
बिसरत नाहीं विहारी जी के मठिया।

कोई गोपी कृष्ण जी से कह रही है कि इस पार तो गोलाघाट है और उस पर रहने के लिये एक झोपड़ी बनी हुई है। बीच में चन्द्रावती नदी वह रही है। हे कृष्ण तुम्हारी झोपड़ी मुझे विस्मरण नहीं होती है ॥ १ ॥

ऐ कृष्ण अपने बालों का बीठा बनाकर मैं तुम्हारे घड़े को अपने सिर पर रखकर ले चलूँगी ॥ २ ॥

तुम्हारा वस्त्र अपने सिर पर रक्खूँगी और अपना अँचरा तुम्हें ओढाऊँगी ॥३

हे कृष्ण तुम्हारे साथ मैं बंशी बजाऊँगी तथा तुम्हारे साथ ही मथुरा को दधि बेंचने चलूँगी ॥ ४ ॥

कृष्ण के प्रति इस गोपी का प्रेम जो स्वाभाविक और निस्वार्थ है देखते ही बनता है।

सन्दर्भ—माता-पिता के बिना घर की और सास, ससुर के बिना ससुराल की निःसारता का वर्णन

(२५६)

बाप, भइया जाहाँ माता नाहीं,
तवन नइहरवा तियागे के परी ॥ १ ॥
आपाना मानावा के धीरज धरे के परी।
सासु, ससुर, जाहाँ सामीजी नाहीं,
तवन ससुरवा तियागे के परी ॥ २ ॥ आपना०
तोसक तकिया जाहाँ गलइचा डासी;
अब बनवा में खरई डासावे के परी ॥ ३ ॥ आपना०
टिकरी, जलेबी जाहाँ बरफी बनी,
अब बनवाँ में बनफल खाये के परी ॥ ४ ॥ आपना०

---

[1]साथ। [2]कृष्ण।

जहाँ पर माता, पिता तथा भाई न हों उस मायके को छोड़ना पड़ता है तथा अपने मन में धीरज रखना पड़ता है ॥ १ ॥

जहाँ सास, ससुर और पति न हों ऐसी ससुराल भी छोड़नी पड़ती है ॥२॥

जहाँ पर सुख के दिनों में तोसक, तकिया और कालीन बिछे रहते थे वहीं अब दुर्दिन आने पर जंगल में झोपड़ी लगानी पड़ती है ॥ ३ ॥

जहाँ पहिले टिकरी, जलेबी तथा बरफी (मिष्ठान्न) खाने को मिलती थी वहाँ अब जंगल में कन्दमूल फल खाना पड़ता है ॥ ४ ॥

समय के परिवर्तन का कितना विषम परिणाम इस गीत में दिखाया गया है।

सन्दर्भ—गुरु के उपदेश से प्रबुद्ध शिष्य के हृदय में पुण्य-कर्म न करने से पश्चात्ताप का वर्णन

(२५७)

सूतल[1] रहलों ओसारावा[2] हो; गुरुजी दीहलें जागाई।
गवना के दिन नियरा[3] गइलें हो, मन गइलें घबराई ॥१॥
गुरुजी गुरुजी पुकरलीं हो, गुरुजी सरन[4] तोहार।
रचे एक दीहितीं हुकुमवा हो, धऊरल[5] कर अइतीं दान ॥२॥
आरे पानबटा[6] भरल गाहना छोड़ि अइलों, कुछु ना कइलों दान।
रचे[7] एक दीहितीं हुकुमवा हो, धऊरल करि अइतीं दान ॥३॥
कोठिला[8] भरल बाटे चउरा[9] हो, गुरुजी करि अइतीं दान।
बाकस भरल बाटे कपड़ा हो, गुरुजी करि अइतीं दान ॥४॥
संग ही सखिया उतर गइलीं पार, हम बैतरनी में ठाढ़[10]।
रचे एक दीहितीं हुकुमवा हो, गुरुजी करि अइतीं दान ॥५॥

कोई स्त्री कह रही है कि मैं अपने बरामदे में सोई हुई थी। इतने में मेरे

---

[1]सोयी हुई। [2]बरामदा। [3]नज़दीक आ गया। [4]शरण। [5]दौड़ करके। [6]गहना रखने का बाक्स। [7]थोड़ी देर के लिये। [8]अन्न रखने का स्थान। [9]चावल। [10]खड़ा।

गुरु जी आये और उन्होंने मुझे जगा दिया अर्थात् सद्गुरु के उपदेश से मेरी मोह निद्रा भंग हो गई। गवना का दिन नज़दीक आ गया है अर्थात् परम प्रियतम परमात्मा के पास जाने का समय करीब है इस बात को सोच कर मेरा मन घबरा गया। क्योंकि अभी तक मैं सांसारिक मोह माया में फँसी थी और मैंने कुछ भी पुण्य-कार्य नहीं किये थे ॥ १ ॥

मैं उठी और 'गुरु जी', 'गुरु जी' पुकारने लगी तथा कहा कि ऐ गुरु जी मैं आप की शरण में हूँ। अर्थात् हे परमेश्वर मैं आपकी शरण में हूँ, मुझे अपनाइये। यदि आप थोड़ी देर के लिये आज्ञा दें मैं दौड़कर कुछ दान-पुण्य कर लेती ॥ २ ॥

मैंने पनबट्टे में अपना सारा गहना छोड़ दिया है। मैंने कुछ भी दान-पुण्य नहीं किया है। यदि आपकी आज्ञा हो तो दान कर आऊँ ॥ ३ ॥

हे गुरु जी मेरे कोठिला में चावल तथा बाक्स में कपड़ा भरा पड़ा है। मुझे दान कर लेने दीजिये ॥ ४ ॥

हमारे संग की सारी सखियाँ इस भवसागर से पार उतर गईं परन्तु मैं दान-पुण्य न करने के कारण अभी तक वैतरणी में खड़ी हूँ (अर्थात् अभी तक पार नहीं जा सकी)। हे गुरु जी यदि आप आज्ञा दें तो मैं दान कर लेती ॥५॥

इस गीत में हमें सच्चे रहस्यवाद की एक मनोहर झाँकी मिलती है। परमेश्वर को पति के रूप में देखना तथा इस संसार से अन्तिम प्रयाण को परम प्रियतम परमेश्वर से मिलने के लिये गवने का रूपक देना सच्चे रहस्यवादियों की प्राचीन परम्परा रही है। सद्गुरु के उपदेश से ही सच्ची जागृति होती है इसे भी रहस्यवादी मानते हैं। हिन्दी के प्राचीन कवियों में—विशेष कर जायसी और कबीर में इस प्रकार का वर्णन अधिक पाया जाता है।

सन्दर्भ—मनुष्य जीवन की नश्वरता का वर्णन

(२५८)

का देखि के, मन भइले हो दिवाना का देखि के। टेक पद
मानुख देह देखि जनि भूल, एक दिन माटी होई जाना ॥१॥
　　　　　　　　　　　　　　　　　का देखि के०

आरे ई देहिया कागद[1] की पुड़िया, बून[2] पड़त मिहिलाना[3] ॥२॥
का देखि के०

एहि देहिया के मलि मलि धोवलों, चोवा चनन लगाई।
ओहि देहिया पर कागा भिनके, देखत लोग घिनाई[4] ॥३॥
का देखि के०

ऐ मन तुम किस वस्तु को देखकर आज मतवाले बने हुए हो। मनुष्य के शरीर को देखकर उसकी क्षण-भंगुरता को तनिक देर के लिये भी मत भूलो क्योंकि यह एक दिन मिट्टी में मिल जायेगा ॥ १ ॥

यह शरीर कागज की पुड़िया की तरह कोमल तथा क्षण-भंगुर है। पानी की बूँद पड़ते ही यह नष्ट हो जायेगा, इसी प्रकार से हमारा शरीर भी मृत्यु के तनिक झँकोरे से नष्ट हो जाने वाला है ॥ २ ॥

इस शरीर को चन्दन आदि सुगन्धित द्रव्यों को लगा कर रोज मल-मल कर हम धोते हैं परन्तु मृत्यु के बाद उसी शरीर के ऊपर कौए बैठकर चोंच चलाते हैं जिसे देखकर सब लोग घृणा करते हैं। इसलिये हे मन तू घमण्ड न कर ॥ ३ ॥

इस गीत में कितना मार्मिक उपदेश भरा पड़ा है।

सन्दर्भ—राम के वन-गमन के अवसर पर माता सीता का विलाप

(२५६)

आरे पिता बचन प्रभु मान लियो जी, जाइ रथ पर बइठे।
माता कोसीला[5] बियाकुल[6] भइली, दसरथ प्रान तियागे ॥१॥
एहि तन से कब अइब ए रघुवर कताना दिनन पर आरे।
माता हामारे प्रान तियागे[7], पिता मरन को तयार।
लोग धावेला नगर अजोधा, बियाकुल भइल सब ठाढ़ ॥२॥

---

[1]कागज। [2]बूँद। [3]नष्ट हो जाना। [4]घृणा करना। [5]कौशिल्या। [6]व्याकुल। [7]छोड़ देना।

इस गीत का अर्थ स्पष्ट है।

सन्दर्भ—गंगा स्नान करने से पुण्य-प्राप्ति का वर्णन

(२६०)

मीलहु सखिया रे मीलहु सलेहरी;
आरे सुनु सखिया चल देखे गांगाजी के लहरिया ॥१॥
देस देस से जात्री अइहें, राजा अइहें नयपलिया,
आरे सुन सखिया चल देखे गांगाजी के लहरिया ॥२॥
गांगा नहइला से पाप कटीत होइहें, निरमल होइहें देहिया,
आरे सुन सखिया चल देखे गांगाजी के लहरिया ॥३॥

ए सखियों! आज आओ हम सब लोग मिल करके गंगाजी की लहर को देखने चलें ॥ १ ॥

वहाँ पर देश-देश के यात्री आयेंगे और नैपाल देश का राजा भी आयेगा ॥ २ ॥

गंगाजी में स्नान करने से पाप कट जायेगा तथा शरीर निर्मल हो जायेगा अतएव हे सखि! चलो गंगा स्नान आज कर आवें ॥ ३ ॥

इस गीत में गंगा के मेले के अवसर पर नैपाल के राजा का सम्मिलित होना 'अखण्ड हिन्दुस्तान' का द्योतक है।

सन्दर्भ—राम के वन से लौटकर अयोध्या आने पर कौशिल्या की प्रसन्नता तथा भरत आदि से राम की भेंट

(२६१)

जब आवन सुने कोसीला माता दूध से आँगन लिपाई;
सोने के कलसा धराइबि अवध में सोर भयो
गीरिहि[1] आवत लछुमन राम अवध में सोर भयो ॥१॥
पहिले भेंट भरत सब भाई, तब कौसिला माई;
तेकरा पीछे सन्तन[2] सब, नीहुरि[3] के हिरदय[4] लगाई ॥२॥

[1]गृह। [2]सन्त लोग। [3]झुक करके। [4]हृदय।

देखन को नारी घर से निकलीं, हाथ कंचन की थारी,
मुठी मुठी हीरा लुटाओ, राम लछुमन बलिहारी ॥३॥

रामचन्द्र तथा लक्ष्मण बन से अयोध्या को लौट रहे हैं उसी समय का यह वर्णन है। जब कौशिल्या ने सुना कि राम, लक्ष्मण अयोध्या को आ रहे हैं तब वह गोबर के बदले दूध से ही आँगन को लिपाने लगीं तथा उस आँगन में सोने का घड़ा राम के स्वागत के लिए रखने लगीं। रामचन्द्र और लक्ष्मण घर आ रहे हैं इस समाचार के कारण सारी अयोध्या में हल्ला मच गया ॥१॥

राम ने पहिले अपने प्रिय भ्राता भरत से भेंट की। फिर अपनी माता कौशिल्या से मिले। उसके बाद अयोध्या के सब सज्जनों से मिले और उन्हें झुककर हृदय से लगाया ॥ २ ॥

रामचन्द्रजी के दर्शन के लिये पुरजन की स्त्रियाँ अपने हाथों में सोने की थाली लेकर घर से निकल पड़ीं। राम के आने की खुशी में उन्होंने मुट्ठी भर-भर के हीरा, जवाहिरात लुटाया तथा अपना भाग्य सराहा ॥ ३ ॥

इस गीत में कौशिल्या का पुत्र-प्रेम उमड़ा पड़ता है। दूध से आँगन लिपाने में कितना भाव भरा पड़ा है। अयोध्या की स्त्रियों की राम-दर्शन-लालसा भी अद्वितीय है। उनके आने की खुशी में हीरा लुटाना स्त्रियों के गाढ़ प्रेम को डंके की चोट से बतला रहा है। माताओं को छोड़कर राम का भरत से पहिले भेंट करना उनके प्रगाढ़ भ्रातृ-प्रेम का परिचय दे रहा है।

सन्दर्भ—राधा का कृष्ण के पास उद्धव के द्वारा सन्देश भेजना

(२६२)

राधे जी चललीं साम[1] मिलन को, बीच में जमुना धार;
बिनु रे कन्हइया नइया डगमग करे, कइसे के उतरबि पार ॥१॥
अब त कन्हइया गीरिहि छाड़ि देलें, लेलें हो मथुरा में बास;
हमरो सुरति[2] बिसरा देलें हो, लिहलें मथुरा में बास ॥२॥
सुख सब अपना साथ ले गइलें हो, दुख दे गइलें गात;
दुसह बिरह सोके दे गइलें हो, तलफे[3] दिन रात ॥ ३ ॥

[1]कृष्ण। [2]स्मृति। [3]कष्ट पाना।

ऊधो जी हमरो सनेसिया[1] हो, तू त मथुरा में जाई;
हरि से कहिह समुझाइके हो, कवन चूकिया[2] हमार ॥४॥
ऊधो जी हमरो सनेसिया हो, तू त गोकुल में जाई;
धनिया[3] से कहिह समुझाइके हो, कवनो चूकि ना तोहार ॥५॥
धिरिजा[4] धरहु मोरे राधाजी हो, सुख होइहें[5] मुरार ॥६॥

राधाजी कृष्णजी से मिलने के लिये चलीं परन्तु बीच में जमुना की धारा आ पड़ी। नाव पर चढ़ने पर वह कहने लगीं कि कृष्ण के बिना मेरी नाव डगमग कर रही है, अब मैं पार कैसे उतरूँगी ॥ १ ॥

अब तो कृष्ण ने घर (गोकुल) आना छोड़ दिया है और अब वे मथुरा में रहने लगे हैं। हमारी स्मृति को भी उन्होंने भुला दिया है। अब जरा सुधि भी नहीं लेते ॥ २ ॥

वे सारा सुख अपने साथ लेते गये और मेरे शरीर को दुःख दे गये। उन्होंने मुझे न सहने योग्य विरह दिया। जिसके कारण से मेरा हृदय दिन-रात व्याकुल रहता है ॥ ३ ॥

राधाजी कहती हैं कि ए ऊधो ! तुम मेरा सन्देश लेकर मथुरा में जाओ। और कृष्ण से समझा करके कहना कि मेरा कौन सा दोष है (जिसके कारण उन्होंने मेरी सुधि बिसार दी है ॥ ४ ॥

ऊधो ने राधा का सन्देश कृष्ण को सुनाया। उसके उत्तर में कृष्णजी कहते हैं कि ऊधो तुम गोकुल में जा करके मेरा यह सन्देश राधा से कह देना कि तुम्हारा कोई भी दोष नहीं है ॥ ५ ॥

ऐ मेरी राधा ! तुम धैर्य को धारण करो। तुम्हें सुख अवश्य होगा ॥६॥

सन्दर्भ—राम के वन जाने पर कौशल्या का विलाप

(२६३)

सावन बरसे भादों गरजे, पवन बहे चउवाई[6]।
कवन बिरिछ[7] तर भींजत होइहें, राम लखन सिया लाई ॥ १ ॥
बानावा के दीहल रे माई ॥ टेक

---

[1]सन्देश। [2]दोष। [3]स्त्री। [4]धैर्य। [5]होगा। [6]चारों तरफ से। [7]वृक्ष।

राम बिना मोर सून[1] अजोधा, लछुमन बिनु ठकुराई।
सीता बिनु मोर सून रसोइया, के मोरा भोजन बनाई ॥२॥
बानावा के दीहल[2] रे माई ॥

रामचन्द्रजी अयोध्या से बनवास के लिए चले गये हैं उनके विरह में कौशिल्या जी विलाप करती हुई कहती हैं—

सावन के दिन में बादल बरस रहे हैं तथा भादों मास में बादल गरज रहे हैं। हवा चारों ओर से चल रही है। किस वृक्ष के नीचे राम, लक्ष्मण और सीता भींगते होंगे? ऐ माता! राम को वनवास किसने दिया ॥ १ ॥

राम के बिना अयोध्या मेरे लिए शून्य हो रही है और लक्ष्मण के बिना ठकुराई व्यर्थ है। सीता के बिना मेरा रसोई-घर सूना दिखाई दे रहा है क्योंकि अब मुझे कौन भोजन बना के खिलायेगा ॥ २ ॥

इस गीत में माता का पुत्र के प्रति स्वाभाविक प्रेम कितना मार्मिक है। माता की ममता अवर्णनीय है।

सन्दर्भ—वन गमन के समय राम का माता से आज्ञा माँगना; कौशिल्या तथा सीता का विलाप

(२६४)

सोने का खरउवाँ[3] राजा रामचन्द्र, ठाढ़ बाड़े माँह आँगाना।
राम हुकुम दीहिंना हमरी माताजी, हम जइबों बनरटना[4] ॥ १ ॥
जाहु तुहुँ जइब हो बनरटना।
कढ़बो में रघुपति छुरिया, में हतबों पारान[5] आपाना ॥ २ ॥
जब राजा रामचन्द्र नगर से बाहर भइलें।
फिरि के ना चितवें मन्दिल[6] आपाना ॥ ३ ॥
राम मन्दिर हमरी उदास सिया जी करेली रोदना ॥ ४ ॥

---

[1]शून्य। [2]दिया। [3]खड़ाऊँ। [4]बन में घूमना। [5]प्राण। [6]घर।

गर में से गढ़ले पटुकवा[१], सीयाजी के लोर[२] पोंछि कहले फीरिजा ना।
जाहु अपना बावा[३] घर, नाहीं तुहुँ मरि जइबु अन्न बिना॥ ५॥
आगि लगइबों में नगर अजोधा, वजर परसु दसरथ अँगना।
जेकर राम अइसन पति वन गइलें, ओकरो धिरिक[४] जियना[५]॥ ६॥
तुलसीदास सँगही रहना रे सँगही रहना।
जे विधि लिखल लिलार से भुगुत[६] करन आपाना॥ ७॥

रामचन्द्रजी वन में जाने के लिए तैयार हैं। वे अपनी माता से आज्ञा लेना चाहते हैं। उसी समय का यह वर्णन है।

सोने के खड़ाऊँ के ऊपर रामचन्द्रजी खड़े होकर आँगन के बीच में विराजमान हैं। अपनी माता से वे कहते हैं कि ऐ माता मुझे वन में जाने की आज्ञा दो॥ १॥

तब उनकी माता कहती हैं कि ऐ राम! यदि तुम वन को जाओगे तो मैं छुरी से अपने प्राणों को नष्ट कर दूँगी॥ २॥

जब रामचन्द्र जी अयोध्या से बाहर निकलने लगे तब उन्होंने फिर अपने घर को एक बार भी नहीं देखा॥ ३॥

कौशिल्या जी उनसे कहती हैं कि ऐ राम! तुम्हारे बिना हमारा घर उदास दिखाई दे रहा है तथा सीता रो रही है॥ ४॥

तब राम ने सीता की यह दशा देखकर अपनी रूमाल निकाल कर सीता के आँसू पोंछे और उनसे कहा कि तुम वन को न जाओ तुम मेरे पिता जी के पास चली जाओ नहीं तो मेरे साथ वन में अन्न के बिना मर जाओगी॥५॥

तब सीता ने कहा कि मैं अयोध्या नगरी में आग लगा दूँगी तथा दशरथ के घर में वज्र पड़ जाय (क्योंकि मुझसे अब क्या संबंध)! जिसका राम जैसा पति वन को चला जाय उसका जीना भी धिक्कार ही है॥ ६॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि पति के संग में ही रहना अच्छा है तथा ब्रह्मा ने जो ललाट में लिख दिया है उसे भोगना ही पड़ता है॥७॥

---

[१]वस्त्र। [२]आँसू। [३]पिता। [४]धिक्कार। [५]जीना। [६]भोगना।

इस गीत में पुत्र के प्रति माता की ममता तथा सीता का पति-प्रेम दर्शनीय है। सचमुच सीता जैसी पति-परायण स्त्री का मिलना दुर्लभ है। इसमें 'तुलसी दास' का नाम आया है वह इस गीत में प्राचीनता का पुट देने के लिये ही है। ये तुलसी, गोस्वामी तुलसीदास से सर्वथा भिन्न हैं।

सन्दर्भ—राम नाम का महत्त्व तथा लौकिक चतुराई की निःसारता

(२६५)

राम राम मुख बोलु ए भाई। टेक
राम नाम मुख बोल ए भाई, छोडु अब जग चतुराई ॥१॥
जग चतुराई बहुत दुःख पाई, गादाहा सरीखे जम्हु आई ॥२॥
राम राम०
मारि काटि जब बोझा बन्हले, ले नरकन में डुबाई ॥३॥
राम राम०
राम नाम में बहुत सुख होइहें, गुरू सरीखे जम्हु आई ॥४॥
राम राम०
माला फ़ेरत तुम्हें लेई जइहें, ले पलँगे बइठाई ॥५॥
राम राम०

हे भाई संसार की सब चतुरता को छोड़ कर अपने मुँह से राम का नाम बोलो ॥ १ ॥

संसार की चतुरता के कारण बड़ा दुःख होता है तथा यमराज गदहे के समान आता है ॥ २ ॥

और मनुष्य को बाँधकर नरक में ले जाकर ढकेल देता है। जहाँ वह पड़ा दुःख सहता है ॥ ३ ॥

राम के नाम लेने से सुख होता है और यमराज गुरु के समान आता है ॥४

वह मनुष्य को पलँग में बैठाकर, बड़े आराम से माला फेरते समय स्वर्ग को ले जाता है ॥ ५ ॥

सन्दर्भ—शिव के मन्दिर में पूजा करने के लिये जाना

(२६६)

चल देखि आईं भोला के लाल गली। टेक
चल देखि आईं भोला के सोलह गली ॥१॥
केहू चढ़ावेला अच्छत चन्दन,
केहू चढ़ावेला सुन्दर चूनरी ॥२॥ चल देखि०
राजा चढ़ावेला अच्छत चन्दन,
रानी चढ़ावेली सुन्दर चूनरी ॥३॥ चल देखि०
राजा चढ़ावेला फूल के गजरा,
रानी चढ़ावेली सुन्दर चूनरी ॥ ४ ॥ चल देखि०

इसका अर्थ अत्यन्त स्पष्ट है।

सन्दर्भ—राम नाम लेने का उपदेश

(२६७)

रस पीओ ए सन्तो जल नाम हरी। टेक
सब सन्तन के लागल कचहरी, रस पियावत घोरी घोरी ॥१॥
पीयत सुभागा[1] तजत अभागा[2], खल नाहीं पीयत घूँट भरी ॥२॥
रासावा के पियले गगन[3] चढ़ि गइले। रस पीओ०
जातो नाहीं लागेला घंटा भरी ॥३॥ रस पीओ०

ऐ सज्जन मनुष्यो अथवा भक्त लोगो! हरि के नाम रूपी रस का पान करो अर्थात् भगवान के नाम को भजो। सब सन्त लोगों का समाज इकट्ठा हुआ है तथा वे लोग भगवान् के नाम को घोल-घोल कर बड़े प्रेम से पीते हैं ॥१॥

सज्जन तथा भक्त लोग भगवान् के नाम रूपी रस को पीते हैं परन्तु अभागे आदमी उसे नहीं पीते हैं। तथा दुष्ट मनुष्य तो रस को एक घूँट भी नहीं पीते हैं, अर्थात् भगवान् का नाम जरा भी नहीं लेते ॥ २ ॥

[1] सौभाग्यवान्। [2] अभागा। [3] स्वर्ग।

राम नाम रूपी रस को पीने से भक्त लोग स्वर्ग को प्राप्त कर लेते हैं जहाँ जाने में एक घंटा भी नहीं लगता ॥ ३ ॥

इस गीत में राम-नाम की महिमा का वर्णन है। कलियुग में नाम कीर्तन ही श्रेयस्कर है "कलौ तद्धरि कीर्तनात्"।

सन्दर्भ—राम के बालरूप के स्मरण की प्रार्थना

(२६८)

रउरा रामजी हरी, रउरा नाहीं बिसरीं घंटा भरी। टेक
छोटे छोटे बालक साँवर रूप, बड़ी बड़ी अँखिया सुरति अनूप।१।
बायाँ हाथे धेनुही दहिना हाथे तीरवा;
खेलत खेलत गइलों सरजू के तीरवा ॥२॥ रउरा राम०
टुटि जइहें धेनुही टुटि जइहें तीरवा,
रोवत आवेलें माहाबीर अइसन बीरवा ॥३॥
रउरा राम जी हरी, रउरा नाहीं बिसरी घंटा भरी।

हे रामचन्द्र जी! तुम्हारा एक घंटे के लिये भी कभी विस्मरण न हो। तुम छोटे बालक हो तथा तुम्हारा रूप साँवला है। आँखें बड़ी-बड़ी हैं तथा तुम्हारा सौन्दर्य अलौकिक है ॥ १ ॥

ऐसा सुन्दर बालक बायें हाथ में धनुष लेकर तथा दाहिने हाथ में तीर (बाण) लेकर सरयू नदी के किनारे खेलते-खेलते गया ॥ २ ॥

परन्तु खेल में वह धनुष तथा बाण टूट गया। तब बालक राम एक वीर की भाँति रोता घर चला आया है। ऐसा राम मेरे मन से एक क्षण के लिये भी विस्मृत न हो ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—पापी मन को भजन करने का उपदेश तथा भजन न करने से नीच योनि में जन्म

(२६९)

ऐ मनवा पापी भजन कब करबे। टेक
जिनगी[1] बितानी भजन कब करबे ॥१॥

[1] जिन्दगी।

धोबी का घरे गादाहा होइबे, छीलल[1] घास नाहिं पइबे ।
देस देस के नरक बटोरबे, ले घटिया[2] पहुँचइबे ॥२॥ ऐ मनवा पापी०
तेली का घरे नादा[3] होइबे, दुनों आँखि छोपनी[4] दीअइबे ।
मदारी के घरे बानर होइबे, नाक कान छेदवइबे ॥३॥ ऐ मनवा पापी०
सकल पंच में दाँत चिअरबे[5], माँगत भीख गिरि परबे ॥४॥ ऐ मनवा०
बालापन में खेलि गँवइबे, तरुना[6] में जोरु रमइबे ।
बिरिधा[7] में तन काँपन लागे, समुझि समुझि पछतइबे ॥५॥ ऐ मनवा०

'ऐ पापी मन ! तुम भगवान् का भजन कब करोगे । सारी जिन्दगी बीत गई, अब तुम ईश्वर को कब भजोगे ॥ १ ॥

भजन न करने के कारण से ऐ पापी मन ! तुम धोबी के घर गदहा बनोगे और खाने को घास भी नहीं मिलेगी । देश-देश से गन्दे कपड़े को अपनी पीठ पर लादकर तुम्हें धोबी के घाट पर ले जाना होगा ॥ २ ॥

ऐ मन ! भजन के अभाव में तुम तेली के घर में बैल बनोगे तथा तुम्हारी दोनों आँखों पर परदा लगा दिया जायेगा जिससे कोल्हू को अच्छी तरह से खींच सको । मदारी के घर में तुम बन्दर बनोगे तथा तुम्हारी नाक और कान छेदा जायेगा ॥ ३ ॥

मदारी तुम्हें लेकर नचायेगा; उस दशा में तुम्हें अपना दाँत निपोरना होगा । तुम बन्दर का खेल दिखलाते समय लोगों से भीख माँगते समय गिर-गिर पड़ोगे ॥ ४ ॥

ऐ पापी मन ! तुमने बाल्यावस्था को खेल ही में बिता दिया; युवावस्था में स्त्री के साथ भोग विलास में फँसे रहे । जब वृद्धावस्था में शरीर काँपने लगेगा तब तुम अपने कुकर्मों को सोच सोच कर पछताओगे (कि हमने व्यर्थ ही अपना जीवन गवाँ दिया तथा भगवान् का कुछ भी भजन नहीं किया) ॥५॥

इस गीत में भगवान् से विमुख जनों के लिये कितनी गहरी चेतावनी दी गई है । परन्तु इस पर भी कोई न चेते तो उसकी फिर कोई भी दवा नहीं है ।

---

[1]काटी हुई । [2]घाट । [3]बैल । [4]परदा । [5]निपोरना । [6]युवावस्था । [7]वृद्धावस्था ।

जैसा पहिले कहा गया है कलियुग में भगवान् के भजन की महिमा बहुत अधिक है। यहाँ चेतावनी की भाषा हृदय पर चोट करने वाली तथा दिल में चुभने वाली है। इसी आशय का एक श्लोक भगवान् शंकराचार्य की 'चर्पट-पंजरिका' स्तोत्र में है जिसको यहाँ उद्धृत करना कुछ अनुचित न होगा।

"भज गोविन्दं भज गोविन्दं; गोविन्दं भज मूढ़मते !
प्राप्ते सन्निहिते मरणे, नहि नहि रक्षति डुकिञ् करणे ॥ १ ॥
बालस्तावत् क्रीड़ासक्तः, तरुणस्तावत् तरुणीरक्तः।
वृद्धस्तावत् चिन्तामग्नः, परमे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः ॥ २ ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दम्" ॥

सन्दर्भ—कृष्ण के विरह में यशोदा का विलाप

(२७०)

मोहन विना सून[1] लागेला भवनवा ए हरी ॥ टेक ॥
दूध औंटलों, दही जमवलों, अमृत जोरन लाई।
कवन लाल दहिया मोरे खहिहें मनवा लगाई ॥ १ ॥
केकरा के मखन चोराइबि मोहन विना,
केकरा के सीतल बेनिया डोलाइबि मोहन विना ॥ २ ॥
सोने के गड़वा[2] गंगाजल पानी, कवन लाल मोरे पीहें ॥ ३ ॥
सोने के थारी में जेवना[3] परोसलों, चनन[4] ठहर दीआई।
कवन लाल जेवना मोरे जेइहें, सीतल बेनिया डोलाई ॥ ४ ॥
मोहन खातिर बिरवा[5] लगवलों, ओ में लवंग लगाई।
कवन लाल मोरे बिरवा चभिहें, प्रेम की बतिया बनाई ॥ ५ ॥
कलिया चुनि चुनि सेजिया[6] डसवलों,
ओह पर फुलवा छितराई ॥ ६ ॥
कवन लाल सेजिया मोरि सोइहें,
सीतल बेनिया डोलाई ॥ ७ ॥

---

[1]शून्य। [2]लोटा। [3]भोजन। [4]चन्दन। [5]पान। [6]शय्या।

माता यशोदा अपने पुत्र के प्रेम में विवश होकर कह रही हैं कि मुझे बिना कृष्ण के सारा घर सूना मालूम पड़ रहा है। मैंने दूध गर्म किया है और उसमें अमृत का जोरन डालकर दही जमाया है। मेरा पुत्र इसी दही को मन लगा कर कब खायेगा ॥ १ ॥

बिना कृष्ण के मैं किसके लिये मक्खन रखूँगी तथा किसको शीतल पंखा झलूँगी ॥ २ ॥

सोने के लोटे में गंगाजल भर करके तथा चन्दन का चौका लगाकर सोने की थाली में मैंने भोजन परोसा है। देखें मेरा लड़का उसे कब आकर खाता है ॥ ३ । ४ ॥

कृष्ण के लिये मैंने लँवग लगाकर पान का बीरा तैयार किया है। प्रेम की बातें करता हुआ कृष्ण ! उसे कब खायेगा ॥ ५ ॥

कलियों को चुन-चुनकर, मैंने सेज डसाया है तथा उस पर फूलों को छितरा दिया है ॥ ६ ॥

मेरा पुत्र उस सेज पर शीतल पंखा झलते हुए कब सोयेगा ॥ ७ ॥

सन्दर्भ—राम को बनवास देने के कारण कैकेयी को कौशल्या के द्वारा भर्त्सना

(२७१)

आछा[1] काम ना कइलू ऐ केकई
आछा काम ना कइलू जी। टेक०
तू भली बान से मरलू[2] ऐ केकई
आछा काम ना कइलू जी ॥ १ ॥
हमरा लछुमन राम के धववलू[3] ऐ केकई
आछा काम ना कइलू जी ॥ २ ॥
ए जी पूछेली कोसिला रानी सुनो ऐ केकई,
हम तोहार कुछ ना बिगरनी जी ॥ ३ ॥

---

[1]अच्छा, शुभ। [2]मारा। [3]दौड़ाया (भेजा)।

बसल[1] भवनवा उजरलू ऐ केकई
आछा काम ना कइलू जी ॥ ४ ॥
हमरा लछुमन राम के धववलू ऐ केकई
आछा काम ना कइलू जी ॥ ५ ॥
एक बर मँगितू दूसर बर मँगितू
माँगलेतू सोलहो सिंगार[2] ॥ ६ ॥
आपाना भरत जी के राजगदी देके
राख लेतू बचन हमार ॥ ७ ॥
आछा काम न कइलू०
जरि जाय घर, अरु जरि जाय सम्पति,
हरि बिना जरेला[3] अजोध्या जी ॥ ८ ॥
तुलसीदास बिसवास[4] राम के
भला बान से मरलू जी ॥ ९ ॥ आछा काम०
चित्रकूट दिखलवलू[5] ए केकई
आछा काम ना कइलू जी ॥ १० ॥

कैकेई के 'तापस भेस विशेष उदासी; चौदह बरस राम बनवासी' इस बर के कारण से रामचन्द्र जी वन को चले गये हैं उनके वियोग से दुःखी होकर कौशिल्या जी कैकेई से कह रही हैं ऐ कैकेई! तुमने राम को बन में भेजकर अच्छा काम नहीं किया। तुमने मुझे तीखे वाणों से मारा है क्योंकि राम-वियोग का दुःख मुझे तीखे बाणों की तरह दुःख दे रहा है ॥ १ ॥

ऐ कैकेयी तुमने मेरे प्रिय लक्ष्मण और राम को बनवास देकर उन्हें खूब दौड़ाया। इस प्रकार तुमने अच्छा काम नहीं किया ॥ २ ॥

रानी कौशिल्या कैकेई से पूछ रही हैं कि हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था? (जिसके कारण तुमने मेरे पुत्र को बनवास दे दिया) ॥ ३ ॥

ऐ कैकेई तुमने मेरा बसा हुआ घर उजाड़ कर अच्छा काम नहीं किया ॥४॥

[1]बसा हुआ। [2]शृङ्गार। [3]जल रहा है। [4]विश्वास। [5]दिखलाया।

ऐ कैकेई तुमने मेरे लछुमन और राम को बड़ा ही घवाया अर्थात् वनवास देकर परेशान किया ॥ ५ ॥

तुम एक वर मांगती, दूसरा वर भी माँग लेती तथा सोलहो शृङ्गार भी माँग लेती (तो मुझे कुछ भी दुःख न होता) ॥ ६ ॥

तुम अपने पुत्र भरत को राजगद्दी दिलाकर मेरे वचन की (अर्थात् रामचन्द्र वन न जायँ) रक्षा कर लेती । (राम को वन न भेजती) ॥ ७ ॥

घर जल जाय, सारी सम्पत्ति जल जाय; राम के वियोग के कारण तो मुझे सारी अयोध्या जलती दिखाई दे रही है ॥ ८ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं अब केवल राम ही का विश्वास है अर्थात् उन्हीं के लौटने पर शान्ति मिलेगी । ऐ कैकेई तुमने मुझे तीखे वाणों से मारा है ॥९॥

ऐ कैकेई तुमने राम को व्यर्थ ही चित्रकूट दिखलाया अर्थात् वनवास दिया । इस प्रकार तुमने अच्छा काम नहीं किया ॥ १० ॥

इस गीत में माता का पुत्र के प्रति स्वाभाविक प्रेम छलका पड़ता है । कौशिल्या का पुत्र-प्रेम भारतीय इतिहास में अपना सानी नहीं रखता । पुत्र के प्रति यही अकृत्रिम प्रेम भारतीय माताओं की अपनी खास विशेषता है ।

भोजपुरी-शब्द-कोष

अ

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
अइसन	ऐसा	१७६	८
अउसना	गर्मी के कारण किसी वस्तु का खराब होना	६४	५
अगिला	अग्रिम	१४८	१२
अजोरिया	उजाली, ज्योत्सना	८०	१
अठिली	गुठली	२५	७
अतना	इतना	१७	२
अतर	इत्र	१६२	२
अतरस	वस्त्र विशेष	६७	१
अतवार	रविवार	१३६	२
अतिवार	विश्वास	१७६	४
अदितमल	आदित्य, सूर्य	१४२	१
अधही	आधा	३	४
अनघा	बहुत	२३	१४
अनन	आनन्द	६२	७
अनसुन	शून्य, निश्चल	५	६
अनोर	अंधेरा	११४	४
अन्हरा	अन्धा	१४०	४
अन्हार	अन्धकार	११०	२
अन्हियारी	अँधेरी	६१	४

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
अरार	किनारा	२२६	५
अलगाना	बोझ उठाना, अलग करना	२२६	६
अलफी	सुकुमार	१२४	१४
अलोत	परदा, आड़	१७	४
अलोपित	लुप्त, छिपजाना	२६	१०
अल्हर	छोटा, कोमल	२३६	२
अवरु	और	५	१२
असवार	सवार	१५०	१
असवारी	सवारी	८६	५
असाढ़	आषाढ़	२१६	८
असों	इस वर्ष	१४८	११
अँकवार	आलिंगन	८३	१२
अँगवना	सहना	३३	२
अँवटना	गर्म करना	५५	८

आ

आगू	आगे	२३०	५
आछातवा	अक्षत	१४३	१
आनका	अन्य	२५	६
आरार	किनारा	६	१
आराराना	गिरना	१०५	६
आसापति	गर्भवती	५	१६

इ

इसरी	ईश्वरी	२१३	६

उ

उखम	उष्ण, गर्मी	२१७	२१

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
उगरह	ग्रहण से रहित	८१	२
उछाह	आनन्द	१०	१२
उछाहल	प्रसन्न	१२५	१४
उड़ासना	हटाना	१३७	२२
उतरही	उत्तर की हवा	२५	१
उतराहुत	उत्तर की ओर	५	१३
उनुकर	उनका	२७	३०
उपराजना	कमाना	१४४	२
उमर	पति	११८	४
उरेहना	चित्र खींचना	५	३
	ए		
एहवात	सौभाग्य	५	६
	ओ		
ओइसन	वैसा	१६	२
ओखद	दवा	३०	५
ओगसुल	अलग	६३	४
ओटिनी	बकवादी	११३	१
ओठघाना	रखना	१३८	३६
ओढन	ओढ़ना	७	१२
ओढ़निया	चादर	६	४
ओदर	पेट	५	५
ओदारना	अलग करना	२११	१०
ओबरि	अँधेरा घर	६	३
ओरमाना	झुकाना	५६	४
ओरहन	उलाहना	२६	८
ओराइल	समाप्त	६८	४

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
ओरिचन	अदवाइन	११५	६
ओरी	छप्पर का अगला भाग	६३	३
ओलरना	झुकना	१३४	३
ओसारा	दालान	३	७
ओहार	पालकी का परदा	५	२४
	क		
ककही	कंघी	११२	१
कचरना	खाना	२४६	४
कचोरा	कटोरा	११६	२
कतिकी	कार्तिकी	२१७	६
कथक	गवैया	२२	१२
कनिकी	आटा	११६	२
करसिनि	करीष, सूखा गोबर	११४	१
करइलिया	करैला	१	२
करिया	काला	८५	३
करिहाव	पेट	२५१	४
करेजवा	कलेजवा	७	२६
कलसवा	घड़ा	११	४
कलसूप	छोटा सूप	१४१	१
कवरा	कोना	३०	१४
कसबिनि	वेश्या	२२	११
काकाना	कंकण	१०	६
कापार	सिर	५	५
काँच	कच्चा	१४०	१
काँहार	एक जाति	१०	३
किरिनिया	किरण	२२८	१

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
किरिया	शपथ	८६	८
कीनना	खरीदना	११२	१२
कुकुर	कुत्ता	२११	३
कुटनहरि	कूटने वाली	२८	१३
कुठेठि	झगड़ा	२७	१५
कुनेला	बनाया	५२	८
कुबति	शक्ति	१३	१३
कुसुम	कुसुम्भ	१	१४
कुसुमिया	कुसुम्भी रंग	३१	२
केकर	किसका	४६	२
केन	क्रेय वस्तु	११२	१०
कोखिया	कुक्षि	१६५	६
कोठिला	अन्न स्थान	२५७	७
कोरा	गोद	१०४	६
कोहनाना	क्रुद्ध होना	६२	७
कोहबर	भीतरी घर जहाँ वर-वधू साथ बैठते हैं	६६	८
	ख		
खखनवा	इच्छा	३६	६
खरचिया	खर्चा	६८	४
खियाना	घिसना	१६३	१३
खुदियन	टूटा चावल	६६	१७
खुखुड़ी	अन्नरहित भुट्टा	१६	१०
खेपना	निबहना	२१६	८
खोरि	गली	१४१	२
खोंइछा	अञ्चल	१४३	१

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
खोरा	कटोरा	३०	६

ग

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
गउरा	गौरी	१४६	१
गजरा	माला	१७०	८
गड़ुआ	लोटा	१७५	१
गड़ोरना	एकटक देखना	७६	६
गदेलवा	नादान	२२४	४
गम	दुःख, परवाह	१७२	४
गमक	गन्ध	१	२
गयरिया	चरवाही	२४५	१
गयेया	समीप	७३	३
गह्राना	बनाना	१५	४
गह्रुवा	भारी	७	५
गवाँना	खोना	६३	६
गँहकी	ग्राहक	६६	५
गाछी	वृद्ध	५	१४
गाजाओबर	अँधेरा घर	५	४
गाहागहि	प्रकाशित	२६	६
गिहिथिनि	चतुर गृहस्थिन	८५	७
गुजारना	आवाज करना	१३१	२
गुनना	विचारना	७३	१०
गुरदेलि	धनुष	१३०	१४
गूहना	गूँथना	१७३	२
गोजर	जीवविशेष	१२	११
गोठहुल	उपले रखने का स्थान	२८	१६

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
गोड़	पैर	११५	१०
गोतिनि	दायादिन	१	१८
गोदंनरिया	गोदने वाली	२३६	४
गोदना	गोदना	२३६	१
गोनतारी	खाट के पैर वाला स्थान	१०२	२
गोनिया	रस्सी	१२७	१६
गोबिन	पुत्र	१०	८
गोसइयाँ	पति	२३	१२
गोहारना	पुकारना	६४	२
	घ		
घरील	घड़ा	२१	२
घरुवरिया	घरेलू	७२	४
घवद	फलों का झुण्ड	११	४
घाम	धूप	५४	१२
घिनावन	घृणा	७१	४
घींचना	खींचना	२२८	३
घुरुमना	चक्कर करना	३	३
घूठि	घुटना	२२६	२
घूर	कूड़ा, करकट	१२५	५
	च		
चउखंड	चतुष्कोण	१३७	६
चउपरिया	चौपाल	३४	२
चउवाई	चारों ओर की	२६३	१
चकई	चकवी	६६	१
चनिया	चाँदी	१६२	१२

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
चबोल	मज़ाक	६६	४
चाभना	खाना	१६६	१३
चिचुहिया	पक्षी विशेष	८०	४
चिरकुट	फटा कपड़ा	७०	८
चिरिया	वस्त्र, पक्षी	१६३	८
चिलिकना	दुःखना	५	५
चिहाना	आश्चर्यित होना	६१	३
चीखना	स्वाद लेना	१२०	३
चीन्हना	पहिचानना	१२	१०
चुक्रिया	भूल, गलती	२६२	८
चुभुकना	डूबना	११५	१३
चूँदरी	चुनरी	२३६	४
चेरिया	स्त्री	५	१
चेलिक	युवक	१२	३
चंगेली	छबड़ी	२	३

छ

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
छनिया	छप्पर	१३	१२
छपित होना	अस्त होना	८६	७
छवाना	मरम्मत करना	१३	१२
छाहाराना	गिरना बरसना	६५	५
छितराना	बिखराना	६४	४
छीलना	तराशना	१४४	४
छूँछ	खाली	११२	४
छेंकना	रोकना	१४५	४
छेवड़ना	काटना	१६३	७

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
छोपनी	आँखों का ढक्कन	२६६	३

ज

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
जइया	जई	१६५	६४
जनि	मत, नहीं	२	८
जनिया	स्त्री	२२५	१
जम्हु	यम	२६५	२
जम्हुअइया	जम्हाई	२४३	१
जरिछार	खाक	११८	२०
जलिया	जाल	१२	८
जामना	जम जाना	७६	१०
जार	शान, दुःख	१५	५
जियरा	हृदय	२१७	२
जीरवा गोनिया	डेरा डण्डा	१३२	६
जुड़	ठंढा	१४३	१
जुड़ाना	ठंढा होना	५२	१
जूझना	काम में लगे रहना	१३८	३४
जेवना	भोजन	२२०	१
जेंवनार	भोजन	५५	७
जोखना	तौलना	३०	१२
जोन्ही	तारा	२१४	३
जोरन	जामन	२७०	२
जोहना	खोजना	१३३	८

झ

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
झपरना	लहरना	१६	१
झहरना	लहराना	६२	१

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
झालरि	किनारा	१६४	१
झाखना	कष्ट प्राप्त करना	२३३	१
झीन	पतला	१२२	३
झोंप	फलों का झुण्ड	१०१	३

ट

टट्टर	टाट	५	१५
टनकना	दुःखना	५	५
टिकाना	ठहराना	८५	२
टिकोरा	छोटा आम	२४१	१
टूँगना	ऊपर से काटना	६	४

ठ

ठनकना	दुःखना	७१	६
ठनगन	हठ	४	५
ठुमुकना	बच्चों का रोना	२	५

ड

डहरिया	रास्ता	२६	५
डागा	बड़ा	२३	११
डाल	छबड़ी	२१६	६
डासना	बिछाना	३	१
डील डाबर	निवास स्थान	१०	५
डीह	ऊँचा खण्डहर	२७	१६
डीहवार	डीह का मालिक	२३६	१
डुगुरना	धीरे से चलना	७७	२
डोटी	डोंटी, धार	६४	७

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
	ढ		
ढुनमुनि	सुन्दर	२४	१
ढुनमुनु	धीरे धीरे	२	१
ढुरहुर	सुन्दर	१	३
ढूरना	नाचना	१५७	५
ढेबुआ	पैसा	१४५	५
ढेर	अधिक	६	५
	त		
तड़िवन	गहना	८४	८
तलफना	गर्म होना	२६२	६
तवाँना	नष्ट होना	१४८	६
तानना	फैलाना	२०३	६
तास	झिड़कना	४	५
तीतील	तित्तिर	१५०	४
तीवई	स्त्री	११५	११
तुमवा	तुमड़ी (कमण्डल)	१३६	४
तुराना	बन्धन से रहित होना	१६७	४
तूरना	तोड़ना	२३२	३
	थ		
थार	थाल	४८	६
	द		
दगधना	जलाना	२१७	१८
दल	पत्ता	१४०	६
दह	तालाब	१६	७
दिउलिया	पलली	१५६	१

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
दियरा	दीप	३३	१
दुरदुर	हट, हट	२७	१६
दुलरी	हार	१०	९
दुलरुवा	प्यारा	४२	३
दुलारना	प्यार करना	१७	५
दूबर	पतला	१०३	६
देहवा	सरयू नदी	१२६	१०
दोकछा	धोती काछना	२५१	३
दोहाई	बड़ाई	९६	११
	ध		
धगड़िनि	धाय	५	८
धनि	स्त्री	५	४
धनिया	स्त्री	१३	१३
धपधप	सफेद	८५	८
धवरना	दौड़ना	१३	८
धवरवा	दौड़	७६	३
धियवा	लड़की	२८	१५
धुघेड़ी	धूम	२२५	२
धुरियाद	धूसरित	२५१	१
धुरे	पास	१४६	३
धूमिल	उदास	६४	४
	न		
नइहर	मायका	६०	१२
नउजी	मत	१३६	८
ननदिया	ननद	३४	११
ननदोइया	ननद का पति	३३४	१२

शब्द
नन्दन वन
नउगुन
नाटा
नार
निनरि
निसरा
निपराना
निरबंसी
निरमेद
निरेखना
निसुराति
निहारना
निहुरना
नीक
नीकि
नीमन
नीबु
नेग
नेवतना
नोनिया
पइयाँ
पहरी
पहसना
पछिमाहुत

त संख्या	पंक्ति संख्या
३३	१
२७	१६
१०	९
४२	३
१७	५
१०३	६
१२६	१०
२५१	३
९६	११
५	८
५	४
१३	१३
८५	८
१३	८
७६	३
२८	१५
२२५	२
२५१	१
१४६	३
६४	४
६०	१२
१३६	८
३४	११
३३४	१२

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
ननन बन	नन्दन बन	१६३	७
नवगुन	जनेऊ	४८	३
नाटा	ठिगना	२६९	३
नार	नाभि	१८	८
निनरि	नींद	१६	६
नियरा	समीप	१२२	५
नियराना	समीप आना	२५७	२
निरबंसी	पुत्रहीन	३०	१९
निरभेद	निश्चिन्त	२३६	२
निरेखना	देखना	१२	२
निसुराति	निस्तब्ध रात्रि	११३	१०
निहारना	देखना	२३३	२
निहुरना	झुकना	९२	२
नीक	अच्छा	२४५	३
नीखि	प्रत्युपकार	६६	८
नीमन	सुन्दर	१	१६
नीसु	अत्यन्त	९१	४
नेग	उपहार	८४	७
नेवतना	निमन्त्रण देना	४५	६
नोनिया	मिट्टी का घर बनाने वाला कारीगर	१२२	११
	प		
पइयाँ	पैर	१८०	१
पइरी	माप विशेष	२२८	३
पइसना	घुसना	१३१	१३
पछिमाहुत	पश्चिम की ओर	५	१३

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
पटडेहरि	चौखट	१४	३
पटहेरा	गहना गूँथने वाला	१२	७
पटीहट्टिया	पलंग	११५	६
पट्टुका	वस्त्र	६६	५
पटोरवा	वस्त्र या सूत	११६	३
पठिया	बछड़ी	१४६	३
पतरिया	वेश्या	१६०	१३
पतियाना	विश्वास करना	२७	२५
पयेंड़िया	पैर	१२७	५
पराना	भागना	८४	१४
परिकना	अभ्यस्त होना	२४०	१
परीछना	लोढ़ा घुमाना	५१	४
परेउआ	कबूतर	२३१	६
परोजन	उत्सव	११४	६
पवनार	पनाला	१६१	५
पसगियाँ	पांसग	१६	६
पहरुवा	पहरा देने वाला	७१	६
पाइंच	उधार	३२	६
पाख	दीवाल का पक्ष	६४	६
पाग	पगड़ी	१५६	२
पातर	दुबला पतला	२४	१
पायेतवा	पाँयत	३	७
पाराते	प्रातःकाल	१०६	३
पाँयेत	पाँयत	२१६	२
पिछुआरा	घर का पृष्ठभाग	४३	१
पिण्डरोग	पाण्डुरोग	२४७	२

शब्द
पियराना
पिराना
पिसनहरी
पीरवा
पुतरी
पुवरा
पुरल
पुरहथ
पुलुई
पूजनार
पेन्हाना
पेवारना
पेहान
पोवना
फानना
फारठा
फारी
फाँह
फींचना
फुदेना
फुफड़
फुफुनी
फुसारना
फूहर

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
पियराना	पीला होना	२८	११
पिराना	दुःखना	१४२	११
पिसनहरी	पीसने वाली	२८	१३
पीरवा	दुःख	१३	२
पुतरी	चित्र	८	२
पुवरा	पुआली	२५	२०
पुरल	पूरा होना	४१	२
पुरहथ	पूर्ण हस्त, चौक पूरने का आटा	६०	८
पुलुई	अग्रभाग	७६	१
पूजनार	पूजा	२४	६
पेन्हाना	पहिनना	६०	४
पेवारना	बिखेर देना	५	१५
पेहान	ढक्कन	११०	६
पोवना	पकाना	१७३	५
	फ		
फानना	कूदना	७	७
फारठा	फटा हुआ बाँस	१२६	६
फारी	टुकड़ा	१५७	३
फाँड	आँचल	२	३
फींचना	निचोड़ना	४८	३
फुदेना	सूत का फूल	७०	४
फुफड़	आँचल	२	३
फुफुनी	फुफुन्दी	१३८	४४
फुसारना	पानी बरसना	२१७	१३
फूहर	फूहड़	१६	४

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
फेकरना	रोना	३१	४
फेड़	पेड़	६१	४
फेन	गाज	१६१	८

ब

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
बउराह	पागल	६०	३
बएकल	पति	१३२	१
बछरू	बछड़ा	१०४	१
बटइनि	बटोही, रास्ता	५	६
बटवार	दुष्ट	२६	४
बटोरना	एकत्रित करना	१००	३
बढ़इता	श्रेष्ठ	११७	१
बढ़निया	झाड़ू	१५२	३
बतास	हवा	६४	१
बतीसी	दाँत	२२३	१
बधाव	आनन्द	२२	१०
बनजरिया	बनजारा	१६६	१
बनरटना	वन जाना	२६४	२
बनसपति	वन के वृक्ष	७	१०
बरजना	मना करना	२६	६
बरधी	बैल	६२	१
बरिनिया	जाति विशेष	६	१
बरुआ	ब्रह्मचारी	४१	२
बरेउवा	बरेखी (हाथ का कड़ा)	२५०	१
बरोहि	बड़ की लटकती पतली शाखा	१५३	३
बसफोरिन	जाति विशेष	१४६	२
बसवारि	बांसों का जन्म-स्थान	१२५	१

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
बसहर	बांस का बना	२८	१८
बसहा	बैल	६४	२
बसुलिया	बाँसुरी	६८	१
बसेढ़	रहना	१४४	२
बहतर	वस्त्र	१८	११
बहारना	झाड़ू देना	१४१	२
बहुरि	फिर	२३	४
बँहगी	बीवध, (काँवर)	१४०	१
बाँगाला	बँगला	१७४	१
बाजूबन	एक गहना	२१४	६
बाँझिनि	वन्ध्या	१७	२
बाढ़ना	उन्नति करना	६६	१२
बारना	जलाना	३३	१
बारी	पारी	८७	३
बाव	हवा	२५	१
बाँचना	पढ़ना	८	५
बिचरवा	विचार	८६	१०
बिटिया	लड़की	१४२	५
बिनवना	प्रार्थना करना	२३२	१
बिनुली	बिन्दी	७६	१८
बिरवा	पौधा, बीड़ा	१३	९
बिरह	वियोग	२३	६
बिरहिया	व्यङ्ग्य	१२६	६
बिलम	विलम्ब	१५३	२
बिसनीयार	रूठने वाला	२८	२
बिसभोर	भूल जाना	१८	१२

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
बिसमाघल	बिस्मित	३८	२४
बिसवना	भूलना, व्यतीत होना	२२६	२
बिसाघल	क्रुद्ध	३२	४
बिहान	सबेरा	१४२	३
बीखे	बीड़ा	१०	१
बीछन	चुनाव	७	८
बीछना	चुनना	२११	११
बीठा	घड़ा रखने की बिठई	२५५	४
बीनना	बुनना	२१६	६
बीरन	भाई	२६	५
बीरीति	वृत्ति	४६	१
बीहरना	फटना	११२	१४
बुनवा	बूंद	२८	४
बूकना	पीसना	५९	८
बेइलिया	बेला का वृत्त	१६०	१
बेटवना	लड़का	१२	१०
बेतवा	नदी विशेष	३४	१७
बेदनिया	कष्ट	३३	२
बेदिल	उदासीन	१३५	५
बेनिया	पंखा	२१८	२२
बेरिया	बारी	६२	६
बेलतर	वृत्त के नीचे	५	३
बेसाहना	खरीदना	१४६	१
बोरसी	अंगीठी	२४	१२
	भ		
भगतिया	भक्तिन	१५८	१

शब्द
भटन
भइसल
भभूति
भयनवा
भाकर
भाराहा
भावना
भिनुसार
भिहिलाना
भुइयाँ
भुभुत
भुवर
भोजसार
मइल
मउगी
मउरि
मचिया
मटुक
मदागिन
मधुवन
मनावनि
मनुहारि
मरखौकी
मलहोरिन

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
माड़ो	मण्डप	७३	७
मातल	मतवाला	२१६	४
मायरि	माता	१३९	१
मायेनवा	माता	११७	१
माह	महीना	६०	१४
मिसिश्रा	मिस्सी	२६	१२
मुनिया	लड़की	१६१	१२
मुसुकरि	मुसकरान	२६	१
मूसना	चुराना	१४	२
मेड़ुकी	छोटा घर	१७२	६
मेरांना	मिलाना	३७	६
मेहरि	स्त्री	२४५	३
मोजरि	मौल, मञ्जरी	१३०	१
मोटरिया	गठरी	१३	११
	य		
यार	मित्र	२२४	३
	र		
रखवार	रक्षक	२३१	४
रचि	थोड़ी देर	६६	३
रतवन्ही	रात को न दिखाई पड़ना	१७४	६
रतिया	रात्रि	२६	६
रसना	चूना	१६०	१
रसिया	प्रेमी	१७५	१
रहतिया	रास्ता	१६५	१०
रहसि	एकान्त में	७	२५

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
रातुल	लाल	५१	२
रूसना	रूठना	३	१
रेहुवा	मछली	१	६

ल

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
लइया	निन्दा	७	३
लखरांव	लक्षाराम, बगीचा	२३	४
लट	बाल	१३२	१
लड़वनी	लड़ाने वाली	१३	७
लबजी	झूठी	२७	२५
लरछा	गुच्छा	१७६	२
ललना	बच्चा	४६	५
लहुरा	छोटा	१३५	५
लाछ	लाख	४६	१२
लाड़	प्यार	२०	२
लापरि	अञ्चल	४५	२
लामी	लम्बी	२१८	१४
लाहारा	झोंका	१२३	१
लाहास	नखरा	५४	३
लाँगा	नंगा, नीच	७	४
लीली	बछेड़ा	१५५	२
लुगरी	फटी साड़ी	१७२	८
लुबिया	बकवादिनी	३८	४
लुलुही	केहुनी	१०	६
लूक	लू	२१७	१३
लूझी	उलझना	१६५	५

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
लेखे	समान, लिये	३१	५
लोकनी	नौकरानी	१०६	१
लोचन	सन्देश	७	१३
लोर	आँसू	१६५	६
लोढ़ना	चुनना, सेवना	६८	१

स

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
सजइतवा	पति	१३	५
सनेहरि	सहेली	१३१	२०
समतूल	जल्दी	६६	२
समोधना	सन्तोष देना	६६	१३
सयरा	चारों ओर	३१	३
सरसउवा	सरसों	३८	१
सरिखवे	समान	१३७	८
सलाना	छीलना	६३	२
सलेहरि	सहेली	२६	६
सवति	सपत्नी	१५	६
सवनइया	सावन की हवा	१	१
सहत	सस्ता	२७	११
सहेजना	ठीक करना	८८	६
सँगेरना	सजाना	१३१	७
सँचना	एकत्रित करना	१२४	१०
सँवारना	सुन्दर बनाना	८७	१४
साई	बयाना	१०१	२
साटी	डण्डा	१४२	२
साध	श्रद्धा, इच्छा	६	६

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
सान मारना	इशारा करना	२३७	३
सानाजाय	तोई	११६	६
सार	श्यालक, साला	१०७	५
सालना	दुःख होना	७	२६
सिरहाना	चारपाई का सिर का भाग	१४	३
सींकि	हल्की वस्तु	७१	१
सींझना	पकना	१३६	२२
सुकवा	शुक्र तारा	८०	१
सुकवार	कोमल	२४	२
सुनरी	सुन्दरी	५६	१
सुनुगाना	आग का धीरे-धीरे जलना	२४	१२
सुपुली	छोटा सूप	२६	३
सुरहिया	सुरभी गाय	५७	५
सुहइया	स्त्री	५	१६
सुहवा	स्त्री	५७	१
सूतना	सोना	३७	११
सूल	कष्ट, दर्द दुःख	७	२८
सेवइत	सेवा करने वाला	६६	१०
से हो	वह	२४	६
सोहरना	लटकना	१००	१
संकर	चीनी, शकर	१५५	१
संकट	दुःख	१६	४

ह

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
हकारना	पुकारना	१०	३
हड़फोर	हड्डी फोड़ कर फलना	२४१	२

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
हथहर	डोंटी वाला बड़ा लोटा	६४	७
हथिसार	हस्ति शाला	१०	५
हालना	झुलना	३८	१
हालरि	हिलोरे लेना	७६	१
हाली हाली	जल्दी जल्दी	४२	४
हाँकना	हटाना, हिलाना	५६	२
हाँक पारना	बुलाना	२२	५
हिरदा	हृदय में	३४	६
हिलोरा	झूला, लहर	१६२	१
हुँड़ार	भेड़िया	२४०	४
हुदुकाना	तंग करना	१४८	६
हेरना	खोजना	७८	३
होरिला	पुत्र	३६	६